वर्ष-14,15 अंक- 49,50,51,52 अप्रैल-2024-मार्च-2025 (संयुक्तांक)

मूल्य ₹120/-

A Peer Reviewed Refereed Journal

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

चर्चित दलित लेखक रूपनारायण सोनकर के उपन्यास, आत्मकथा, कहानी, नाटक और कविता पर विशेषांक

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

वर्ष 14,15. अंक 49,50,51,52 अप्रैल 2024- मार्च 2025 (संयुक्तांक)

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NaagfaniRNINo.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर
सह संपादक
डा.शैली सोनकर
कार्यकारी संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor (English)
Prof. Rajesh Karankal
Dr. Santosh Kumar Sonkar

वर्ष 14,15. अंक 49,50,51,52 अप्रैल 2024- मार्च 2025 (संयुक्तांक)

सलाहकार मण्डल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विजय रोडे पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोबिन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.बलबिंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगना)
डॉ. ओम प्रकाश सैनी,कैथल (हरियाणा)
डॉ.सुनील कुमार मिश्रा ,रायपुर (छत्तीसगढ)

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

==========

जगनंदिनी पैलेस , डांडा लखोंड सहस्त्रधारा रोड देहरादून,उत्तराखंड 249013
Mob- 8279789405, 7819081807
email- Sonkar.roopnarayan@gmail.com
sonkarroopnarayan52@gmail.com

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-फोन पे-8279789405 बैंक A/C-Name –NAAGFANI
A/C-41588126927 IFS CODE –SBIN 0010633 SWIFT SBI- COLLECTORATE COMPOUND DEHRADUN UTTARAKHAND 248001

मुख पृष्ठ– डॉ.आजम छ.संभाजीनगर (महाराष्ट्र)

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।**'नागफनी'**में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।**'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gmail.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

वर्ष 14,15. अंक 49,50,51,52 अप्रैल 2024- मार्च 2025 (संयुक्तांक)

नागफनी

वर्ष-14 अंक 49,50,51अप्रैल-दिसंबर 2024 (संयुक्तांक)

अनुक्रम | पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय 1

जीवन परिचय 2

साहित्यिक विमर्श 3

1.द रिवेंज ऑफ द पिग्स: रूप नारायण सोनकर द्वारा दलित कथा साहित्य में उत्तर आधुनिक रणनीतियां-घिरार्डी वेरोनिका - 4-6

2. रूप नारायण सोनकर की कविताएँ 7-9

3.बजारवाद के आइने में सुअरदान' उपन्यास का विश्लेषण-डॉ. अजय कुमार 10-12

4.भटकटैया : उम्मीद की उजास है !-प्रो.रामाश्रय सिंह 13-17

5. 'नागफनी'–सामाजिक क्रांति का दस्तावेज़-डॉ. अभय परमार 18-19

6. कथ्य और शिल्प की नवीनता का उपन्यास 'डंक'-डॉ.हेना 20-24

7.नागफनी : दलित प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज-डॉ.जितेंद्र विसारिया 25-27

8.मानवता और परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति-सुअरदान-डॉ.गायत्रीदेवी जे. लालवानी 28-33

9.'गोदान' के मिथ का विरोधी उपन्यास रूपनारायण सोनकर का उपन्यास 'सूअरदान' --प्रो.ओम राज 34

10.पहली स्त्री को बिना तलाक दिए दूसरी शादी रचाने की एक डिप्टी कलेक्टर के क्रूरता की कहानी है नाटक 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर '- डॉ. शैली सोनकर 35-36

11.आधुनिकता एवं विलासिता में मग्न दलित एवम अन्य वर्ग के उच्च अधिकारीयों को आइना दिखाता बेजोड़ 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर 'नाटक -सुनील कुमार 37-41

12. रूपनारायण सोनकर के नाटको में दलित चेतना--डा.धीरज भाई आर.वणकर 42-47

13.आर्थिक-सांस्कृतिक चेतना और व्यवस्था परिवर्तन को प्रतिबद्ध: सूअरदान-डॉ. अजमेर सिंह काजल 48-50

14.'सूअरदान' आत्मचेतना की सशक्त अभिव्यक्ति -डॉ.सत्यप्रकाश पाल 51-53

15. सूअरदान बनाम गोदान''- प्रो. रमेश चंद मीणा 54-58

16. हिन्दी साहित्य की प्रमुख दलित आत्म-कथाएँ-डॉ दिलीप मेहरा 59-61

17. सद्गति: एक विश्लेषण-डॉ. पान सिंह 62-64

18.समकालीन दलित साहित्य में रूपनारायण सोनकर की उपस्थिति -डॉ.जी.वी. रत्नाकर 65-69

19.समाज की गहन पड़ताल करता उपन्यास: सूअरदान-डॉ. धनंजय कुमार चौबे 70-73

20. नागफनी' का समाजशास्त्रीय अध्ययन-एक वृतांत-.झबलू राम 74-75

21.दलित साहित्य में बड़ा परिवर्तन -रवि शर्मा 76-77

22. यार सत्ता का नया अविष्कार --रूपनारायण सोनकर 78-80

23. प्रेमचंद व रूपनारारायण सोनकर की 'कफन' पर एक विश्लेषण -डॉ.सी.वसन्ता 81-82

24.गोदान पर भारी सूअरदान-शालनी पाण्डे 83-84

25.डॉ.अम्बेडकर से आगे की सोच है उपन्यास 'सूअरदान' में -कँवल भारती 85-93

26.'गोदान' और 'सूअरदान' ग्रामीण और दलित जीवन की व्यथा-कथा का प्रमाणिक दस्तावेज -डॉ.पान सिंह 94-100

27.सूअर दान: एक अध्ययन-प्रोफेसर राजमुनि 101-104

28.नागफनी : जाति के जंगल में साहस की विकल्प गाथा- मूलचंद सोनकर 105-109

29. डंक : विषैली बरैयों के छत्तों को जलाने का औपन्यासिक प्रयास-प्रो.ओमराज 110-116

30.डंक उपन्यास और हाशिए का समाज -डॉ. सुमा.टी.आर. 117-120

31.छायावती-सत्ता के गलियारे में दलित स्त्री का हस्तक्षेप -कल्पना पन्त 121-123

32.बाजार में गाय का मोल -सुरेश पंडित 124-127

33.संवैधानिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति : 'सूअरदान'-डॉ अलका नारायण गडकरी

साहित्य समीक्षा

आत्मकथा -भटकटैया- रुपनारायण सोनकर 128-137

उपन्यास

सोलह सौ किलोमीटर-रुपनारायण सोनकर 138-145

कहानी

1.अटेंडेंट-रुपनारायण सोनकर 146-147

2.कफन नाटक-रुपनारायण सोनकर 148-156

नागफनी

वर्ष-14 अंक 49,50,51अप्रैल-दिसंबर 2024 (संयुक्तांक)

अनुक्रम पृष्ठ क्रमांक

3.कफन-रुपनारायण सोनकर 157-162
4.सद्गति-रुपनारायण सोनकर 163-166
5.दूध का दाम-रुपनारायण सोनकर 167-171
6.दो देश--रूपनारायण सोनकर 172-173
7.कफन बनाम कफन (मुंशी प्रेमचंद बनाम सोनकर) – डॉ.पान सिंह 174-176
8.जूता पालिस-रूपनारायण सोनकर 177-178

English

1.CM OF THE VILLAGE-Roop Narayan Sonkar 179-184
2.Gift of a pig is a novel of science fiction. It eradicates blind faith and hypocrisy from the society-Dr. Shelly Sonkar 185-188

संपादकीय .....

फियरलैंड का इलेक्शन यूरोप में बसा एक करोड़ की आबादी वाला एक अनभिज्ञ राष्ट्र है.जिस तरह कोलंबस और वास्कोडिगामा ने नए नए राष्ट्रों की खोज की थी उसी तरह हितोमा एक जापानी नेविगेटर है जिसने फियर लैंड की खोज की है।यह एक भारत जैसा ही राष्ट्र है जिसमें हिंदू और मुसलमान रहते हैं मुसलमानों की संख्या हिंदुओं से ज्यादा है। भारत और पाकिस्तान के बंटवारे के समय हिन्दू और मुसलमान एक सुनसान जगह पहुंच गए थे।उस जगह का नाम फियरलैंड रखा था। दोनों समुदाय के लोग बड़े ही शांतिपूर्वक आपस में मिल जुल कर रह रहे थे । हिंदुओं ने वहां से मुसलमानों को बाहर निकालने के लिए एस एस आर नामक अराजनैतिक संगठन बना लिया। हिंदू पार्टी के दो लीडर और उसने इलेक्शन के दौरान पुलिस फोर्स को लगा दिया ताकि मुसलमान वोट न डाल सके आईडीओम और एचएशा जो राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति थे , गैर कानूनी ढंग से अपनी सत्ता स्थापित कर ली। तीन बार वह अनैतिक रूप से सत्ता हथियाते रहे। प्रजातंत्र राष्ट्र को उसने अराजकता में बदल दिया। जिस शहरों के वह मेयर नियुक्त करता था उनसे मोटी मोटी रकमे लेता था। विकास की जितनी भी योजनाएं जैसे सड़क, अस्पताल,कॉलेज निर्माण की मेयर के अंडर में आती थी उन योजनाओं में से आधा पैसा मेयरों से राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति ले लेता था। अधूरा निर्माण कार्य होता था। एक जननायक लहुरा उभर कर सामने आया ।लोगों को अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। उसने पूंजीपतियों और कॉरपोरेट घरानों के विरुद्ध आवाज उठाई। उसने गरीबों और बेसहारा लोगों का पक्ष लिया। वह इलेक्शन में जीतने वाला था । इलेक्शन बैलेट पेपर से करने का निश्चय किया गया। सरकार ने एक संगठन के आदमी को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया।उसने तीस साल पहले मरे लोगों की एक लिस्ट निकाली। उसने सरकार की मदद से पहचान पत्र पर जिंदा लोगों की फोटो मरे हुए लोगों के स्थान पर लगवा दी। लाखों की संख्या में अपने संगठन और पार्टी के लोगों में वितरित कर दी। उसने देश भर के वोटरों की संख्या बढ़ा दी। वह चौथी बार राज्यों और केंद्र के इलेक्शन बंपर मेजॉरिटी से जीतने में कामयाब रहा। विरोधी नेताओं ने इस बात को पकड़ा और न्यायालय की शरण में गए। मरे हुए लोग कई कई बार कैसे वोटिंग कर सकते हैं। वहां की न्यायालय ने दोष सिद्ध होने पर सर्वोच्च चुनाव अधिकारी ,राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति को देश से धोखा देने को आधार मानकर गिरफ्तार कर लिया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

*****

जीवन परिचय

रूप नारायण सोनकर
बर्थ प्लेस - ग्राम नसेनियाँ
पोस्ट ऑफिस - डिघरुवा
तहसील -बिन्दकी
जिला - फतेहपुर, उत्तर प्रदेश
प्रारंभिक शिक्षा - प्राइमरी पाठशाला ग्राम नसेनियाँ
जूनियर हाई स्कूल -डिघरुवा
हाई स्कूल - नेहरू इंटर कॉलेज बिन्दकी
इंटरमीडिएट - आस्तिक मुनि इंटर कॉलेज कोरियां परास, तहसील घाटमपुर जिला कानपुर
B. A . LL. B.
इलाहबाद यूनिवर्सिटी इलाहाबाद
पिता - श्री एम.पी. सोनकर
माता - श्रीमती जगनंदिनी सोनकर
पत्नी -श्रीमती सपना सोनकर
बेटियां - डॉ.शैली, छवि(मैनेजर इन इंटरनेशनल कंपनी),सोनम (मैनेजर इन इंटरनेशनल कंपनी, यूनाइटेड किंगडम)
ब्रदर्स - डॉ. बद्री प्रसाद
श्री राजाराम सोनकर ASSTT COMMISSIONER SUGAR
ROOP NARAYAN SONKAR
PCS (ALLIED), ASSTT, COMMISSIONER, STAMP
अजय KUMAR DEPUTY COMMISSIONER INCOME TAX
सिस्टर्स -श्रीमती चंद्रकली देवी
श्रीमती नानकी देवी

BOOKS

1- जहरीली जड़ें (कहानी संग्रह)
इसकी कहानियां निम्न वि वि मे पढ़ाई जा रही है
इलाहाबाद
लखनऊ
टोरीनो, इटली
नागफनी (आत्मकथा)
निम्न वि वि मे पढ़ाई जा रही है
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू वि वि हैदराबाद
इलाहाबाद वि वि इलाहाबाद
गुजरात वि वि अहमदाबाद उसस्मानिआ वि वि हैदराबाद
स्वामी रामतीर्थ मराठावाड़ा वि वि नांदेड़
शिवाजी वि वि कोल्हापुर
(यह आत्मकथा UGC NET /JRF EXAMS. 2013 मे स्थान पा चुकी है)

उपन्यास

डंक
(प्रिंसिपल डॉ. इस्पाक अली, LBS PG Collge Banglore ने अपने D. Litt. के रिसर्च वर्क मे शामिल किया था)

उपन्यास

सूअरदान
यह उपन्यास निम्न विश्वविद्यालयों मे पढ़ाया जा रहा है
सौरष्ट्र वि वि राजकोट
गुजरात वि वि अहमदाबाद
कर्नाटका स्टेट यूनिवर्सिटी मैसूर
(यह उपन्यास वर्ष 2012 मे UGC NET /JRF EXAMS 2012 मे स्थान पा चुका है. विदेशी वि वि में मुंशी प्रेमचंद के गोदान और रूप नारायण सोनकर के उपन्यास सूअरदान पर तुलनात्मक शोध कार्य जारी है,)
गटर का आदमी (उपन्यास)
इस पर M. Phil हो चुकी हैं
सोलह सौ किलोमीटर (उपन्यास)
यह नवीनतम उपन्यास वर्ष -2024 मे प्रकाशित हुआ है.
भटकटैया (आत्मकथा - दूसरा भाग)
नौकरी मे जाति के आधार पर भेद भाव के विरुद्ध अकल्पनीय संघर्ष.

नाटक

एक दलित डिप्टी कलेक्टर
यह नाटक सोलापुर यूनिवर्सिटी सोलापुर मे पढ़ाया जा रहा है. इस नाटक पर बहुत सारे मंचन हुये है.
छायावती (नाटक)
उत्तर प्रदेश की पूर्व CM मायावती पर आधारित है) इस पर दिल्ली मे मंचन हुआ था. इसको देखने के लिये सुश्री मायावती मौजूद थी.
महानायक (नाटक)
साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने वाला एक अनूठा प्ले
रहस्य (नाट्य संग्रह)
इस नाटक का विमोचन पूर्व प्रधान मन्त्री श्री वी.पी. सिंह ने किया था. उन्होंने कमेंट किया था,-
" रूप नारायण सोनकर, हिन्दू - मुस्लिम एकता, समानता, साम्प्रदायिक सौहार्द पर लिखने वाले एक युवा साहित्यकार हैँ.
जहरीली जड़े (कहानी संग्रह,)व नागफनी (आत्मकथा) का लोकार्पण करते हुये प्रोफेसर नामवर सिंह ने क्षेत्र था
"नागफनी की भाषा, शैली, बिम्ब सराहनीय है. सोनकर सबसे बड़े दलित लेखक हैँ.और दलित लेखक बाहर अन्य लेखकों की तलाश कर रहे हैँ. सोनकर के साथ घर का जोगी जोगड़ा आना गाँव का सिद्ध वाली कहावत चरितार्थ न करे.,"
तत्कालीन हंस पत्रिका के संपादक श्री राजेंद्र यादव ने उसी समारोह मे नागफनी के बारे मे कहा था -
" अभी तक जितने भी दलित लेखकों की आत्मकथाएं आयी हैँ उनमें हाय! मार डाला की चीखें सुनाई पड़ती हैं लेकिन सोनकर की आत्मकथा नागफनी में चिटकारें नही सुनाई पडती हैं बल्कि संघर्ष है जिसको अंग्रेजी भाषा में साइलेंट रेवोलुशन कहा जाता है."
प्रोफेसर अजय नावरिया ने कहा था
VERY EXICELLENT यह आत्मकथा है.
विश्व प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक रुस्किन बॉन्ड ने एक दलित डिप्टी कलेक्टर, छायावती और महानायक नाटकों का विमोचन करते हुये कहा था -
"सोनकर सिविल सेवा में रहते हुये लगातार बहुत अच्छा लिख रहे हैं."

अवार्ड

(1)तत्कालीन मुख्यमन्त्री दिल्ली श्रीमती शीला दीक्षित ने 'डॉक्टर अम्बेडकर राष्ट्रीय साहित्य सम्मान' प्रदान किया।
(2)तत्कालीन महामहिम राज्यपाल उत्तराखंड डॉ. सुरजीत सिंह बरनाला ने ' साहित्यमहोपाध्य (डी. लिट.) की उपाधि प्रदान की।
(3) तत्कालीन महामहिम राज्यपाल उत्तराँचल श्री सुदर्शन अग्रवाल ने नाट्य रत्न की उपाधि प्रदान की।
(4) पूर्व प्रधान मन्त्री श्री वी. पी. सिंह ने रूप नारायण सोनकर का नाम पदम् श्री पाने के लिये भारत सरकार को RECOMEND किया था।
सोनकर को किसी कारणवश पदम श्री नही मिल पायी लेकिन पूर्व प्रधान मन्त्री द्वारा संस्तुति करना पदम् श्री से बढ़कर है।

द रिवेंज ऑफ द पिग्स: रूप नारायण सोनकर द्वारा दलित कथा साहित्य में उत्तर आधुनिक रणनीतियां

-घिरार्डी वेरोनिका -
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरिनो, ह्यूमैनिटीज़, टोरिनो, इटली

पैनल: 35 - जाति और मूलनिवास का उत्तर आधुनिक आख्यान

सारांश: उत्तर आधुनिक सोच बहुलतावाद को मुख्य सिद्धांत के रूप में सामने रखती है. यह उन सभी स्थापित विचारों को खारिज करती है, जो समय और स्थान के अंतर के बावजूद, हमेशा मानव अस्तित्व को सीमित करते रहे हैं. इस तथ्य के आलोक में, दलित लेखन को भारतीय स्थानीय साहित्य में उत्तर आधुनिकता की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि वह जातिवाद और प्रतिबंधात्मक साहित्यिक सिद्धांतों के खिलाफ संघर्ष करता है. शैलीगत प्रयोगों की कमी होने के बावजूद अपने यथार्थवादी स्वरूप के साथ, हिंदी दलित लेखन नई सहस्राब्दी में अपनी सामाजिक और साहित्यिक आलोचना को आवाज़ देने के लिए, उत्तर आधुनिक रणनीतियों की एक श्रृंखला को आत्मसात करता है.

इस पेपर के माध्यम से मेरा उद्देश्य रूप नारायण सोनकर की कहानियों, खास तौर पर उनके विचारोत्तेजक उपन्यास 'सुअरदान' (सुअर का उपहार) पर चर्चा करना है, जिसमें अलग-अलग पृष्ठभूमि के पाठ को जोड़ने के शिल्प और सुअर फार्म को एक अलग ही दुनिया के तौर पर दिखाए जाने पर ध्यान केंद्रित करूंगी, जो कि असल दुनिया की कमियों का पूरक है. यह उपन्यास न सिर्फ स्पष्ट रूप से प्रेमचंद की उत्कृष्ट कृति गोदान (गाय का उपहार) की प्रतिध्वनि करता है, बल्कि यह महाभारत से लेकर ऑरवेल की रचना 'एनिमल फार्म' तक कई परिकल्पनाओं के संदर्भों से भरा पड़ा है. सोनकर सुअर फार्म को एक वैकल्पिक दुनिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं (यह संयोग नहीं है कि उपन्यास के अंग्रेजी अनुवाद के पिछले कवर पर इसे विज्ञान-कथा के रूप में परिभाषित किया गया है) एक ऐसी दुनिया जो यथार्थ की बदरूप दुनिया से अलग है, लेकिन वास्तविक है, और जहां अंबेडकरवादी मूल्य पनप सकते हैं, जिससे पूरे समुदाय में समृद्धि आ सकती है.

*****

रूप नारायण सोनकर की कविताएँ

गर्म हवा

यह गर्म हवा कैसी आई?
यह गर्म हवा क्या संदेशा लाई
इस गर्म हवा में है तेज बहुत
इस गर्म हवा में है वेग बहुत
इस गर्म हवा में है रंग बहुत
इस गर्म हवा में है खून बहुत
सतयुग ,त्रेता,द्वापर से
चलते चलते कलयुग में आई
अपने साथ सांप्रदायिक
ज़हर ले आई
यह गर्म हवा कैसी आई?
रामायण युग में मैने इसको बहते देखा
इसके ही कारण मैने
सोने की लंका ढहते देखा
स्वर्ग विजेता रावण का
घमंड दहन होते देखा
बलशाली मेघनाथ और कुंभकर्ण को
तड़प तड़प कर मरते देखा
यह गर्म हवा कैसी आई?
यह गर्म हवा अहंकार की चिंगारी लाई
महाभारत युग में
तीव्र गति से चलते बाणों की गति से भी ज्यादा बहते देखा
समुद्र पाताल सुखाते देखा सूरमाओं की गदाये टकराते देखा
भाई का राज्य हड़पते देखा
नारी को नंगा करते देखा
श्रीकृष्ण को राजनीति करते देखा
यह गर्म हवा कैसी आई?
राजनीति में कूटनीति और बेइमानी का आगाज ले आई
जब जब इन गर्म हवाओं ने
विदेशी आक्रांताओं को उकसाया
तब तब इस धरती का स्वाभिमान
उबाल आया
कोई न कोई जांबाज योद्धा उभर आया
राजा पुरु सिकंदर से टकराया
सिकंदर बहुत घबड़ाया
अंत में अपने प्राण गवाया
यह गर्म हवा कैसी आई ?
यह गर्म हवा राजा
अंभी द्वारा देश द्रोह का प्रचलन लाई
इन गर्म हवाओं का संहार करो
इन गर्म हवाओं को बंद करो
इन गर्म हवाओं का रुख मोड़ो
इन गर्म हवाओं से ही
दुश्मन की आँखें फोड़ों

जो दुश्मन ने चाल चली
नहीं लूटेगी इस चमन की कोई कली
इन गर्म हवाओं से ही भर दो
दुश्मन की गली गली
दुश्मन चक्र जाए
इन गर्म हवाओं में ही
उसका सारा साम्राज्य समा जाए

*****

जय हिन्द

वह रिक्शा चला रहा था
तेज बुखार से उसका बदन
तप रहा था
वह शाम को
भूखे बच्चों को
रोटी खिलाना चाहता था
एक मोटा सेठ
जोर जोर से
रिक्शा चलने को
कह रहा था
जर्जर शरीर
रिक्शा न थाम सका
सड़क पर गिर पड़ा था
मरते मरते
जय हिन्द जय हिन्द
कह रहा था

******

तिरंगे झंडे में लिपटाया जाऊं

नहीं चाहता एटम बॉम्ब बनकर
दुनिया को दहलाऊं
नहीं चाहता प्रकृति बनकर
सृष्टि का खेल रचाऊं
मै चाहता हूं रोटी बनकर
भूखों की भूख मिटाऊं

मै चाहता हूं कपड़े बनकर
वस्त्रहीनों के तन ढक जाऊं

मै चाहता हूं फुटपाथ पर
सोने वालों की छत बन जाऊं

अंतिम इच्छा है मेरी
समर भूमि का सैनिक बनकर
सीमाओं का प्रहरी बनकर
दुश्मन से लड़ते लड़ते
मर जाऊं
तिरंगे झंडे में लिपटाया जाऊं

*****

जूता - पालिश

चौराहों,बस अड्डों ,रेलवे स्टेशनों में
सोलह सत्रह साल के लड़के
जूतों में पालिश करते मिलेंगे
बाबू जी जूतों में पालिश करवा लो
आवाज लगाते दिखेंगे
ये सभी दलित परिवार के
लड़के होते हैं
एक सवर्ण जाति का इंजीनियर
एक लोहे के स्टैंड पर आकर
अपने पैर का जूता खड़े खड़े
रखता है
ऐ! पालिश करने वाले लड़के
मेरे जूतों में तुरंत पालिश कर दे
जी बाबू जी कहकर उसके जूतों में
पालिश करता है
इंजीनियर पैरों में जूता पहने ही
पालिश करता है
पालिश करने के बाद लड़का
एक सफेद कपड़े से जूतों को
बारी बारी से रगड़ता है
दोनों जूतों को चमकाता है
इंजीनियर पांच रुपए फेंककर कहता है
ये लो पालिश करने के पैसे
लड़का कहता है
बाबू जी ,दस रुपए होते हैं
साले! मुझे लूट रहा है
बाबू जी गाली मत देना
पालिश और ब्रश मंहगे हैं
मुझसे जवांन लड़ता है
चमार के बच्चे
लड़का स्वाभिमानी था
चमार शब्द सुनकर
वह बौखला जाता है
अपने अन्य पालिश करने वाले
साथियों को बुला लेता है
सभी इंजीनियर को घेर लेते हैं
लड़का विशाल
इंजीनियर राघव पांडे के
दोनों हाथ पकड़ कर
उसको अपने स्थान पर
बैठा देता है
तुमको मेरे जूतों में पालिश करना होगा
इंजीनियर बोला
मै उच्च जाति का हूं
मै ऐसा नीच काम नहीं कर सकता
लड़का बोला
तुम दूसरों से ऐसा नीच काम करा सकते
हो
खुद नहीं कर सकते हो
वह बोला
जिसका जो काम होता है
उसी को शोभा देता है
लड़का बोला
कहा लिखा है
पालिश करना केवल चमारों का काम है
आज कल जो भी आदमी परेशान है
सभी जाती के लोग
जूतों में पालिश करते हैं
इंजीनियर ने कहा
तुम लोग पढ़े लिखे नहीं हो
इसीलिए पालिश करते हो
लड़के ने बताया
हम सभी लोगों ने
इण्टर मीडिएट प्रथम श्रेणी में
पास किया है
हम लोग जूतों में पालिश करके
पैसा इकट्ठा कर रहे हैं
ताकि उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके
हमारे मां बाप गरीब है
मै यह घृणित काम नहीं कर सकता हूं
इंजीनियर ने कहा
तुमको मेरे जूतों में
पालिश करना पड़ेगा
मैने तुम्हारे जूतों मे पलिश किया है
स्वाभिमानी लड़के ने उत्तर दिया
इंजीनियर ने अपने सजातीय तीन
इंजीनियर घटना स्थल पर
बुला लिए
लड़के ने पंद्रह रुपए उसको दिए
चारों इंजीनियर मुंह नीचा किए हुए
अपने कार्यालय की ओर चले जा रहे थे।

*****

बजारवाद के आइने में सुअरदान' उपन्यास का विश्लेषण

डॉ. अजय कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशाम्बी (उ. प्र.)
EMAIL dr.ajaykumarhindi@gmail.com
Mo 9455624397

समाज में अविरल गति से परिवर्तित होता है। समाज और साहित्य का अर्न्तरसम्बंध बहुत आत्मीय और पुराना है। एक दौर था कि साहित्य के अनुसार समाज ढला करता था। आज दौर यह है की समाज के अनुसार साहित्य रचा जा रहा है। आज समाज और साहित्य के बीच में बाजार घुसपैठ कर चुका है। पाठकों की माँग के हिसाब से लेखकों की रेटिंग तय हो रही है। रचनाकार अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति अपनी कृति में लिपि बद्ध कर रहा है। परन्तु उसके मन में कृति को लेकर तमाम असमंज उठ खड़े हो जाते है। श्याद यही करण कि हमारा समाज कुछ बाजारू लेखकों को भी पैदा कर रहा है। बाजार ने बेशक आधुतिक युग में क्रंति पैदा किया हो। वर्तमान समाज में रामचरित मानस, गीता, या अन्य कृतियाँ सिर्फ और सिर्फ धार्मिक रूप मं रह गयी है। मनुष्य पूजा-पाठ या अन्य धार्मिक क्रिया-कलाप तो कर रहा है किन्तु उनकी नियत और सीख पूजा घर तक ही सीमित रह गयी है। इन धार्मिक ग्रन्थों का महत्व पहले मानव जीवन को कर्तब्य निष्ठ, परिश्रमी और आत्मनिर्भर बनाना घ्येय हुआ करता था। परन्तु अब गलाकाट बाजार प्रतियोगिता में इनका चाल-चलन बाहरी दुनियाँ में एकदम विपरीत है। अर्थात मनुष्य बहुरूपीय हो गया है। वह समय की नजाकत को देखते हुए समय के अनुरुप अपने आप को ढाल लेता है। आज इन्टरनेट की दुनियाँ इतनी मायावी हो गयी है कि उसमें किसी भी प्रकार की समाग्री खोजी जा सकती है। आज मानव के जीवन के बाजार घुस गया है। मानव प्रत्येक क्षण बाजार से कंधासे कंधा मिलाकर चलना चाहता है।

'सुअरदान' उपन्यास, दलित लेखक, श्री रूपनारायण सोनकर जी द्वारा लिखित प्रसिद्व उपन्यास है। उपन्यास की कथावस्तु धार्मिक,बनाम आर्थिक है। जैसा की उपन्यास के नाम से प्रतीत हो रहा है की यह कृति दलित समाज की चेतना आज भूमण्डली के दौर में कितना विकसित हो गयी है। उपन्यास में व्यापार और धर्म के बीच कई जगह तीखी टकरहाट है। उपन्यास में रामचन्द्र त्रिवेदी, घसीटे चमार, सज्जन खटिक, और सलवंत यादव जैसे पात्र विदेश से पढाई पूरी किये है। इनका सपना परम्परागत सपनों से अलग है। ये तीनो समाज और समय का सच पहचानते है। जैसा की उपन्यास में लिखा गया है-''रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, घसीटे चमार, और सलवंत यादव विदेशों से उच्च तकनीकि शिक्षा ग्रहण कर अपने गाँव सिंहासन खेड़ा आये थे। रामचन्द्र त्रिवेदी ने एम0 बी0 ए0, सज्जन खटिक ने बी0 टेक0, सलवंत यादव ने बैटरनरी डॉ0 की डिग्री ली थी, घसीटे चमार ने बार-एट ला की डिग्री ली। इन सभी दोस्तों ने उच्च तकनीकी व कानूनी शिक्षा ग्रहण की थी। इन चारों को देश-विदेश में अच्छी नौकरियां मिल रहीं थी, लेकिन ये लोग कहीं भी नौकरी नहीं करना चाहते थे। चारो तरफ आतंक का वातावरण फैला हुआ है। चारो तरफ शहरों में मारकाट हो जाती है। सैकडों की संख्या में निर्दोष लोग मारे जाते है। वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते है जो अशिक्षित, शिक्षित, बेरोजगारों को नौकरी दे सके विशेषकर ग्रामीण नवयुवकों को। गाँव में एक ऐसा वतावरण बनाना चाहते थे जहाँ प्यार समानता भाईचारा हो। गाँव की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। जतिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बन्धुत्व पर यकीन करते थे।''[1] अर्थात वैश्विक परिवेश में जाति पाँति का काई स्थान नहीं है। उपन्यासकार ने अपने पात्रों के जरिये समाज में फैले जतिवाद के समक्ष पूँजीवाद को अधिक महत्व दिया। और ये सच भी है। यदि आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। तो आप लगभग सभी की नजरों में सम्माननीय है। और यदि आप के पास कुछ भी नहीं है अर्थात आप पूंजी विहीन है, तो आप सम्मान के पात्र नहीं है। इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। की अब पूजा-पाठ के भरोसे जीवन का निर्वाह नहीं हो सकता है। जीवनयापन करने के लिए कोई ठोस वा कारगर साधन खोजना होगा। अब हमं जमाने के हिसाब से अपनी सोच परिवर्तित करनी होगी। वर्तमान समय विज्ञान का समय है। अब पुरानी खोखली मन्याताओं का समय नहीं रहा। 'किसी दूसरे की उन्नति को देखकर कुढना। उसकी उन्नति के रास्ते में काटें बिछना। जाति के आधार पर किसी को हेय समझना। साम, दाम, दण्ड, और भेद से उसको पराजित करना। ये ही बुरे संस्कार हैं आज का युग कम्पीटन का है। आप जरा चूके तो अवसर आपके हाथ से निकल जायेगा।''[2]

रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, घसीटे चमार, और सलवंत

यादव मिलकर पिगरी फार्म खोलते है। चारों का कार्य बटा हुआ है। सभी मिलकर पिगरी फार्म खोलते है। किसी भी कार्य को सफलता तक पहुँचाने के लिये उसकी नियोजन विधि बहुत ही शानदार होनी चाहिए। 'सुअरदान' उपन्यास में भी चारों साझेदारों का कार्य बटा हुआ है। रामचन्द्र त्रिवेदी मार्केट का कार्य देखता है। देश-विदेश के व्यापारियों से उसकी अच्छी खासी जान- पहचान है। सज्जन खटिक, कम्प्यूटर आपरेट करता है। सुअरों से सम्बंधित सारी जानकारी कम्प्यूटर में दर्ज करता है। सलवंत यादव सुअरों को अच्छा भोजन उपलब्ध कराता है। घसीटे चमार कानून की जानकारी रखता है। वह व्यापारियों से किये हुये 'करार' को कानून की दृष्टि से पड़ताल करता है। इन चारों की कर्तव्य निष्ठा से पिगरी फार्म दिन-रात अपनी उन्नति में वृद्धि कर रहा है। ''पिगरी फार्म के अन्दर सूअरों को खाने के लिए सकरकन्दी कई हैक्टेयर खेंतों में लगाई गई। पानी के लिए ट्यूबेल की व्यवस्था की गई है। खेतों में तालाब बनाए गये। चारों का पिगरी फार्म आसमान की ऊचाँइयो को छूने लगा। पिगरी फार्म के अन्दर बहुत अलीशान वातानुकूलित कोठी बनायी गयी। जिसमे नौ कमरे थे। सूअरों की संख्यां छः हजार से उपर पहुँच गयी। चारों आदमियों के काम बटे थे। रमचन्द्र त्रिवेदी मार्केटिगं करता था। देश विदेश के व्यापारियों से सम्पर्क साधता था और सौदा तय करता था।''[3] सुअरदान उपन्यास में धर्म और पूँजीवाद के मध्य तमाम उतार चढाव आते है। कुछ सवर्ण रामचन्द्र त्रिवेदी का 'पिगरी फार्म' जैसा कार्य करने से खुश नहीं है। वे समय निकालते ही रामचन्द्र त्रिवेदी को समझाते बुझाते है। आज का समय बजार तय कर रहा। मनुष्य उस सुख की ओर दौड़ रहा जहाँ उसे लाभ-हानि का कोई संकट न हो। सुअरदान उपन्यास में उपन्यासकार ने गाय और सूअर की उपयोगिता और अन्तराष्ट्रीय मूल्यांकन की तबसीस की है। सिघ्ंालखेडा़ गाँव एक मध्यवर्गीय गाँव है। सम्पूर्ण गाँव में विविध प्रकार के क्रिया व्यापार हो रहे है। उसी गाँव में पुजारी, मन्दिर, रिश्वतखोरी दबंगो का बोल-बाला, और दलित विरोधी समीकरण भी। परन्तु गाँव में पिगरी फार्म संचालन ऐसे है जो विदेशों से शिक्षा प्राप्त करके आये है। और उनका सारा ध्यान व्यवसाय पर लगा हुआ है। यही कारण है की उनका व्यवसाय दिन-दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। समय-समय पर उन चारों पार्टनरों में क्रमशः देश-विदेश भ्रमण पर भी जाते रहते है। वर्तमान समय में शिक्षा का अर्थ मनुष्यता ज्ञान के साथ रोजगारपरक रूप ग्रहण कर लिया है। हमारे देश में आज बाजार का आतंक इस प्रकार कायम हो गया है की जैसे ये मल्टीनेशनल कम्पनियाँ मनुष्य के लिए अनिवार्य सत्य हो गयी है।

संकटा प्रसाद चिकवा ने बताया-''मैंने बैंक से लोन लिया है। खेतों में फल-फूल सब्जियाँ उगाने के लिए, मछली एवं मुर्गी पालन के लिए बैंको से एंव सरकार से मदद मिलती है। आपको मैं बैंको से लोन दिलाने एंव सरकारी सहायता दिलाने के लिए मदद करूँगा। यह एक एसा व्यवसाय है जिसमें आमदनी अच्छी होती है। भैंस पालन के लिये भी सरकार मदद देती है। शुद्ध-दुध भैंसो से मिल जाता है। दूध की आजकल बहुत अच्छी कीमत मिल रही है। देखो (एक आमदनी की ओर इशारा करते हुए) ग्रामीण बैंक के मनेजर सदानंद कन्नौजिया जी मेरीफसलें मुर्गी व मछली पालन देखने आ गयेहै।''[4] आज का मनुष्य विज्ञान की जानकारी हासिल करके अपने आपको अपडेट रखता है। इण्टरनेट की दुनियाँ में उसे बैंकिंग, बजार, कृषि सम्बन्धी जानकारी हासिल हो जाती है। 'सुअरदान' उपन्यास के पात्र वैज्ञानिक तकनीकों से अपना व्यवसाय उन्नति पथ पर अग्रसर है। आपसी सदभाव को बाजार अच्छी तरह समझता है। आज हम आधुनिकीकरण के जिद्दोजहद में जी रहे है। बाजार हमारी भूमिकाऐ तय कर रहा है। ''बाजार व्यापार के स्थान और अनिवार्य संसाधन प्रदान करता है। इस अर्थ में बाजार व्यापार का अधार है।''[5] बाजार में परिवर्तन की अद्भुत क्षमता होती है। अब समझने की बात यह है की उस परिवर्तन को विकास की संज्ञा दी जाय या उसे परिवर्तित रूप कहा जाए। रूपनारायण सोनकर जी ने 'सुअरदान' में दिखाया की पिगरीफार्म लोगों को रोजगार के द्वार खोल रहा है। वह पिगरीफार्म रात-दिन अपनी समृद्धि की गाथा स्वयं स्वर्ण अक्षरों में लिख रहा था। गाँवो की विरोधी ताकते उसके विरूद्ध किस प्रकार से आये दिन साजिशें रच रहे है। पूरे गाँव का वातावरण आपसी रंजिशों से प्रदूषित है। धूर्त पाखण्डी आपस में जनता को लड़ा रहे है। गाँव में सही जानकारी आने से सभी प्रकार के काले कारनामें बंद हो जाते है। अब मनुष्य अपने हानि-लाभ का आकलन स्वयं कर लेता है। वह अपना हित-अहित समझ रहा है। अब वह ज्योतिषाचार्य भाग्य के भरोसे कम बैठता है।

सुअरदान उपन्यास में सुअर के महत्व को रेखांकित किया गया है। ''सूअर को मानव सबसे निकृष्ट जानवर मानते है। लेकिन आर्थिक रुप में सबसे ज्यादा कीमती जानवर है सूअर ही होता है। देश की अर्थव्यवस्था सुधारने व भूखमरी मिटाने में इस जानवर का बहुत योगदान है। इसके बालों से स्टैण्र्ड टूथब्रश बनते है। उसका व्यापार प्रत्येक देश में अरबों डालर का होता है। जिस देश में सूअर पालन चरम पर होता है उस देश की आर्थिक स्थिति बहुत समृद्व होती है। इस रहस्य को चारों पार्टनर समझ गये थे। पुजारी दयाशंकर भी इस महत्वशाली जानवर सूअर की महिमा को भी जान गए थें। आर्थिक दृष्टि से सूअरों का यह एक चमत्कारिक व्यवसाय है।''[6] इस 'सुअर' की राजनीति से आर्थिक व्यापार की हलचल बढ़ जाती है। प्रतिवर्ष

करोडो डॉलर का कारोबार होता है। इस कारोबार से ग्रामवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। समाज सनुष्य की सबसे पुरानी संस्था है। ''जब सभ्यता बदलाव के किसी भी दौर के सम्मुखीन होती है। समाज उसकी ताकत बनके उभरता है।''[7] पिगरी फार्म का सदस्य बनने के लिए आज हर व्यक्ति इच्छुक है। परन्तु पिगरी फार्म के जनकल्याण के कुछ नियम है। जो समाज को और अधिक ताकतवर बनाते है। पिगरी की ओर आज प्रत्येक ग्रामवासी का मन ऐसे भाग रहा है। मानो उसके मिल जाने से मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी।

आज बाजार समाज के कोने कतरे में बैठे मानव को मुख्य भूमिका में ले आ रहा है। उपन्यासकार ने 'गाय' की संस्कृति और सुअर की औपनिवेशिक संस्कृति से तलना किया है। इसी उपन्यास में ही दिखाया जाता है की सुअर की उपयोगिता किस प्रकार से बढ़ रही है। उसके अपने ग्राहक है। धर्म, समाज और व्यापार के त्रिकोण रूप को उपन्यास लेकर चलता है। जिसमें परिवर्तित समाज की व्यापार निति का पर्दाफास हो जाता है। ''धर्म और बाजार के नव संश्रय में धर्म से अधिक ताकतवर और निर्णायक भी बाजार ही होता है''[8] लेखक ने उपन्यास मं समाज की पड़ताल भिति-दर भिति किया है। व्यापार और बाजार समाज मनुष्य और मनुष्य के बीच धर्म की दीवार गिरा देता है। 'धर्म' बाजार के आगे लाचार सा नजर आ रहा है। ''आज के युग में कोई भी व्यापार करना अर्धम नही होता हैं। मेहनत और ईमानदरी से किया गया कार्य उस कस्तुरी को प्राप्त करता है , जो मृग में रहती है।''[9] आज की पीढ़ी आर्थिक आकलन करती हुई समाजिक गतिविधियों का मुआयना करती है। सूअरदान उपन्यास में उपन्यासकार ने गाय की तुलना मे सूअर को उपयोगी बताया है। वर्तमान समय बाजार का समय का है। आज मानव के पास पूंजी है तो वह विश्व की किसी भी चुनौति को झेल सकता है।

सन्दर्भ- सूत्र

1.रूपनारायण सोनकरः सुअरदान पृ0 14 सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली द्वितीय संस्करण 2013।

2.वही पृ0 सं0 98

3.वही पृ0 सं0 15

4.वही पृ0 38

5.बाजारवाद और जनतंत्र, प्रफुल्ल कोलख्यान -21 आनंद प्रकाशन कोलकाता प्रथम संस्करण 2006।

6.स्ूाअरदान, रुपनारायण सोनकर, पृ0 सं0 86 सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2013।

7.बाजारवाद और जनतंत्र, प्रफुल्ल कोलख्यान 197

8.वही- 113

9. सुअरदान, रूपनारायण सोनकर पृ0 98 सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2013।

*****

भटकटैया : उम्मीद की उजास है !

-प्रो.रामाश्रय सिंह
हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)
मो.9555692184
ईमेल ramashryasingh@gmail.com

भूमंडलीकरण के बाद जो नई दुनियाँ बनी है, उसने आर्थिकी, सामाजिकी और राजनीति के साथ–साथ मानव मन को भी बहुत गहरे तक प्रभावित किया। मनुष्य गूगल मैप पर सुकून का टीला तलाशता हुआ भटक रहा है। किसी को यह टीला दिखता नहीं है। किसी को दिख रहा है तो देखकर भी चमक–चश्में की वजह से इसे पहचान नहीं पा रहा है। कोई अकड़ की जकड़ से नहीं निकल पा रहा है। किसी ने अपनी कमजोरी को ही कवच बना लिया है। इस नई विश्व व्यवस्था ने जहाँ लाभ–लोभ को बढ़ावा दिया है, वहीं अवसाद को भी प्रसाद की तरह बाँटा है। रूपनारायण सोनकर जी की आत्मकथा ''भटकटैया'' मनुष्य के बेचैन मन की उथल–पुथल का दस्तावेज है। जहाँ हतशा के गहन अंधेरे हैं, तो उम्मीद की उजास भी है।

''भटकटैया'' एक साथ कई सवालों को उठाती है। ग्रामीण भारत में आज भी लोग कच्चे घरों में रहते हैं। सर्दी गर्मी और बरसात में बेमौत मारे जाते हैं। तन ढ़कने के लिए कपड़ें नहीं हे। जवान बच्चे नंगे बदन रहते हैं। औरत. ` एक धोती और एक ब्लाउज में पूरा साल काट देती हैं, इससे खराब हालत पुरूषों की है। बच्चों को पढ़ने के लिए घरों में बिजली नहीं है।[1] रूपनारायण सोनकर जी जवाब चाहते है कि क्या ऐसे लोगों को जीने का अधिकार नहीं है। नहीं है तो क्यों नही? वे समतामूलक समाज का निर्माण चाहते हैं। उनका वितान काफी बड़ा है। अपने मनोभावों को इस संग्रह में बहुत गहराई के साथ व्यक्त किया है।

साहित्यिक अभिरूचियों के साथ–साथ लेखक एक अनथक यायावर भी हैं। नौकरी के दरमियान कई जगहों की यात्राओं के अनुभव उनके जेहन में कोठार की तरह जमा हैं। इसी अनुभव सम्पदा के जरिये वे आत्मकथाओं को जीवंत करते हुए पाठकों को एक यात्रा पर भी ले जाते हैं। ध्यान देने योग्य बातें है कि सिर्फ देश–विदेश ही नहीं घुमाती बल्कि मानव मन के अंधेरों और उजालों के बीच भी यात्रा करवाती है। एक और उल्लेखनीय पहलू है स्मृति की सशक्त उपस्थिति, स्मृतियों के धागों के बुने कथ. ानक में पाठक अपनी स्मृतियों के साथ कब दाखिल हो जाता है, पता ही नहीं चलता। उनकी बातें पाठकों के मन पर दस्तक देकर अतीत के भूले–बिसरे क्षणों को जीवंत कर देती हैं। इनकी आत्म कथा पाठक को कथानक में इस कदर शामिल कर लेती हैं कि ''भटकटैया'' पढ़ते हुए एक अवसाद सा घेरने लगता है, नौकरी के तबादले पढ़ते हुए रिश्तों की उष्मा और मन का उजाला अपने भीतर भी महसूस होने लगता है जैसे–सर मेरी बात सुनियें। अब क्या सुनाओगे। अपनी अक्षमता का परिचय दोगे। चुपचाप बैठ जाओं नही तो चेम्बर से बाहर निकाल दूँगा।[2] यूँ देखा जाय तो मनः स्थिति का चित्रण किस ओर संकेत कर रहा है। मुझे तो लगता है कि अधिकारी लेखक से क्या चाहता है। शायद यहीं चाहता है कि– **मेरे लहजे में हुजुर नहीं है। वरना मेरी कोई** कसूर नहीं है। एक ऐसे उदास मन की हताशा है, जिसे अपने मन के लिए सुकून के एक टुकड़े की तलाश है, पर इस उत्तर भूमंडलीयकृत समाज में यह एक कठिन तलाश है। वे आरोह–अवरोह को आत्मकथा में मशीन की तरह बहुत बारीकी से दर्ज करते हैं। यही नहीं भावनाओं का ज्वार और संयम का भाटा के बीच गजब का संतुलन बनाते नजर आते हैं। अलगाव, लगाव और पुनः लगाव के स्मृतियों में खास बात यह है कि कुछ दिनों के सघन साथ के बाद विदा की घड़ी में न तो उनके पास शब्द हैं, और नही मन में आकांक्षा का कोई बोझ था, गहरे मौन में बंधे वे उस क्षण अस्तित्व व इच्छा की परिधि से बहुत दूर चले गये थे, उदाहरार्थ– वह डॉटते हुए बोला–क्या तुम ताजमहल का भी रजिस्ट्री कर दोगें।[3] भाषिक सौंदर्य की झलक दिखते बनती है। कहना नहीं होगा इनकी आत्मकथा का एक सकारात्मक पक्ष है, पठनीयता जहाँ कहानी खत्म होती है, वहाँ से पाठक के मन में शुरू होती है। शिल्पगत वैशिष्टय के अलावा सामाजिक सरोकार की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। जहाँ मनुष्य के अन्तर्गत और बाह्य संसार के बीच आवा. जाही करती है। यही नहीं अनेक आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं से रूबरू कराती है। आत्मकथा को पढ़ते हुए पाठक न सिर्फ पात्रों के मन के अंधेरों उजालों को पहचानता है बल्कि युद्ध अपने मन की भी पड़ताल करता चलता है। मेरा मानना है कि यह आत्म पड़ताल मनुष्य को भीतर से थोड़ा और मनुष्य बनाने के लिए जरूरी है।

दरअसल सोनकर जी अपने आत्म कथा के माध्यम से प्रश्न उठाते हैं कि वृहत्तर मानवीय संवेदनाओं, मानवीय मूल्यों की पक्षधरता, जनजीवन के गहरे सरोकार, इतिहास बोध और बौद्धिकता के वैचारिक आयामों के पक्ष हैं, जो किसी भी ले खक को समझने की खिडकियां बनाते हैं। वह कहाँ

है? यहाँ यह प्रश्न भी विचारणीय है, कि वर्चस्ववादी ताकतों का वह दृष्टिकोण दोष भी उभरकर सामने आता है–सैमुअल इस्माइल का एक लेख ''एक फूल जंगल में खिलता है लेकिन झाडियों में खिलकर मुरझा जाता है। दूसरा फूल पंडित हार लाल नेहरू के गार्डन के सामने खिलता है और वह पंडित जवाहर लाल नेहरू के कोट में लगने का अवसर पाता है।''[4] लेखक बताना चाहता है कि सत्ता सभी अस्मिताओं को कुचल डालने को तत्पर रहती है। प्रश्न करने का अर्थ अपनी स्थिति पर विचार करना ही होता है। इसलिए सत्ता सबसे पहले साहस छीन लेना चाहती है।

यह आत्मकथा वर्चस्व वादी मन के साथ–साथ अपने समय व भीतर झाँकने की पारदर्शी नैतिकता का आह्वान भी है। आज जब हम उस समय में जी रहे है जहाँ पढ़ना, सुनना, गुनना और रचना तीनों में बड़ी फॉक पैदा हुई है। वही इस संक्रमण समय में सोनकर जी द्वारा किया किया गया प्रयास जातिवादी समर्थन को जाँचने व उसके सार्थक पाठ के लिए संकल्प बद्ध है। भटकटैया नई दृष्टि की पैरवी करने के साथ–साथ स्थितियों की भीतरी गुंजलकों को भी खोलता है, जहाँ से संभावनाएं बाहर आती हैं। जो विश्लेषणात्मक पाठ के सहारे किसी भी विमर्श को नई जीवन दायिनी उर्जा से भर देती है और फिर वह विमर्श समय के सत्य के साथ मिलकर अधिक प्रासंगिक होता चलता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सभी लोग सुख शांति से जीवन यापन कर सकेंगे। लोगों की निंदा, तिरस्कार, अपमान और घृणा को फूँक मारकर उड़ा देगें। ऐसा भटकटैया पढ़ते हुए मुझे यकीन है। उदाहरणार्थ–'तिरंगे झण्डे में',

लिपटाया जाऊँ–तिरंगे झण्डे में लिपटाया जाऊँ[5] कहना नहीं होगा जीवन में कभी–कभी घटनाएं इतनी तेजी से घटित होती हैं कि कुछ समझ नहीं आता, चारों ओर हताशा और निराशा का वातावरण पसरा रहता है। रोशनी की एक किरण दिखाई नहीं देती। विषम परिस्थितियों में दिमाक काम करना बंद कर देता है कुछ ऐसा ही रूपनारायण सोनकर जी के साथ होता है एक तरफ पारिवारिक कठिनाइयों का दबाव और द्वन्द्व तो दूसरी तरफ साथी अधिकारियों का उसे सशंकित नजरों से देखना तथा उसपर विश्वास न करना उसे भीतर तक झकझोर कर रख देता है।

दरअसल भटकटैया चक्र है। यह नुकिले काँटों से निर्मित चक्र है। यह तथा कथित काल्पनिक सुदर्शन चक्र है। शोषण करने वाले लोगों से लड़ने की हिम्मत है। अब तथाकथित श्री कृष्ण के हाथ में आ गया जो बलवान न्यायप्रिय शूद्र राजाओं का वध करता था, वर्तमान समय में भटकटैया चक्र मेरे हाथ में आ गया है जो शोषण, अत्याचार, गैर–बराबरी और असहाय बहिन माताओं और लड़कियों की इज्जत और आबरू बचाने के लिए प्रत्येक दलित, आदिवासी, पिछड़े लोगों के हाथों में भी भटकटैया चक्र आ गया है जो काल्पनिक नहीं है। भटकटैया वास्तविक है। इसके उत्तर साफ हैं कि शूद्रों के पास लड़ने के लिए औजार नहीं होते हैं, औजार के अभाव में परास्त हो जाते हैं। अब उनके हाथ में भटकटैया चक्र है, जो आज अत्याचारियों के साथ–साथ विदेशी हमलावरों का सामना कर सकते हैं।

यह औजार प्रकृति से बना है। इस औजार में प्रकृति की ताकत समाई हुई है। प्रकृति से निर्मित होने के कारण समस्त घातक औजारों से अधिक नुकीली है। प्रकृति सैदव अपने द्वारा निर्मित नेक इंसानों की रक्षा करती है। दुष्टों का संहार करती है। मेरा मानना है कि कमजोर लोगों का अपने खेत, खलिहानों के आस–पास भटकटैया के नुकेलेदार झाड़ियाँ तैयार करें। भटकटैया चक्र बनायें। यह चक्र आप की जीवन भर रक्षा करेगा। यही नहीं आने वाली पीढ़ियों के लिए रक्षा कवच बनेगा। यही नहीं संसार भर से जैविक और एटांमिक हथियार नष्ट हो जायेंगे अब केवल युद्ध भटकटैया चक्र से होगा। इस अद्भूत प्राकृतिक औजार के प्रयोग से समस्त मानवों की रक्षा होगी। हीरोशिमा और नाकाशाकी में प्रयोग किये गये एटामिक पावर से जापान व अन्य देशों की संतानें स्वस्थ्य पैदा होगी।[6] अपंग भी पैदा होगी तो ओ भी दिव्यांग होगी दिव्यांग का मतलब सुन्दर अंग दिखेगा। भटकटैया चक्र उन देशों की इच्छा पूर्ति में सहायक होगा जो उन देशों की इच्छापूर्ति में सहायक होगा जो प्रत्येक क्षण दूसरों से युद्ध करने में विश्वास करते हैं (इसी पुस्तक भटकटैया पृ0 150 से) पूरे देश के अन्दर भटकटैया रूपी वैज्ञानिक उपकरणों का जाल बिछा देना चाहिए। जहाँ–जहाँ आतंकवाद, देश के अन्दर दुश्मनों द्व ारा घुसपैठ की जा रही है। धार्मिक आतंकवाद का जहाँ–जहाँ नंगा नाच हो रहा हो भटकटैया के कांटे अपने आप उनको चुभने लगेंगे। भटकटैया का सही प्रयोग होने पर भटकटैया दवा बन जाती है। भटकटैया के काँटे एक्यूपंचर की तरह शरीर में चुभते हैं। अधिकतर बीम. ारियों को दूर करते हैं। भटकटैया मानव को पहचानती है। कौन समाज भक्ति, कौन गरीब भक्त, कौन अपराध भक्त, कौन इंसान, केवल भटकटैया सबको जानती है। जो असामाजिक तत्व हैं उस पर काँटे चुभती है। इंसान इंसान को नहीं पहचानता है, अपने नुकीले दाँतों, अपने नाखूनों से, इंसानों को मारती है। इंसान के नाखून भटकटैया को ना खूनों की तरह मानव कल्याण नहीं करते हैं, केवल दूसरों का खून बहाने में लगे रहते हैं। अब कारपोरेट जगत के पंजे खूनी हो गये हैं। देश के प्रशासकों को डराने लगे हैं। छोटे व्यापारियों, गरीबों का खून चूसने लगे हैं। यही हाल रहा तब कारपोरेट घराने ईस्ट इंडिया कम्पनी से आगे निकल जायेगें। अपनी खूंखार सत्ता स्थापित करेंगे। व्यापारी बाबा रामदेव जी जैसे लोग भटकटैया को काट काट कर ध ारती से विलुप्त कर देगें। इसी तरह सारी की सारी वन

सम्पत्ति इस धरती से नष्ट हो जायेगी।[7]

जाहिर है सोनकर जी सत्य घटनाओं को ही आधार बनाकर अपनी आत्म कथा लिखे हैं। जोखिमों से भिड़ना अपना नैतिक कर्तव्य समझते हैं। सही मायने में क्रूर समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। अभी तक जितनी भी आत्मकथाएं आई हैं। उनमें हाय–मार डाला की चीखें सुनाई पड़ती है। वाह रे सोनकर जी भटकटैया में संघर्ष को खाँचों में रखकर परोसा है, इसे शब्दों में कहें तो इसे साइलेंट रेव्यूलूशन कहा जा सकता है। मेरी समझ से है? जो विचारणीय है। अंध धार्मिकता, अंधविश्वास असहयोग, असंतुष्ट, अविवेकी, असहनीय, अमानवीय आदि ने देश को बहुत अक्षम बना दिया है। वैज्ञानिक तरीके से सोचने की शक्ति को पंगु बना दिया है। सामाजिक बुराइयों की वजह से भारत में समानता नहीं है। जातिवाद व छूआछूत पूर्णतया समाप्त होना चाहिए। सोनकर जी अपने आत्म कथा में सामाजिक असमानता, शोषण और अन्याय के खिलाफ स्वर मुखर करने वाले साहित्यकार और विचारक हैं। हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने वाले सोनकर जी की लेखनी में गहन चिन्तन, सामाजिक सरो. कार और मानवतावादी दृष्टिकोण की गूँज सुनाई देती है। हम सभी को पढ़ने के लिए प्रस्तुत है। ऐसा इसलिए कह रहा हूँ कि जरा विचार कीजिए कि आत्मकथा के भतर के संघर्ष और कोलाहल को जानिए। गौर करें तो उनका रास्ता अन्य व्यक्तिवादियों से अलहदा है। यानी अम्बेडकरवादी है। आत्मसंघर्ष है। अंतिम आदमी को लेकर वहीं बेचौनी, कहीं विद्रोह और कहीं करूण चित्कार है। समाज, देश और मनुष्य को लेकर समान छटपटाहट की अंतहीन करवटें हैं। जिन्हें आज पहचानने की जरूरत है। वह अपने आपमें मूल्यांकन का नया गवाक्ष खोलता है। वे जीवन और समाज में हमेशा उजाला लाने के लिए कृत संकल्प है। आडम्बर का विरोधी, त्रास और दुःख का अस्तित्व स्वीकार करता है। किन्तु वह स्वतंत्रता का सैनिक होता है। उसका विवेक उसकी आस्था है, उसका संशय उसकी ईमानदारी, उसका साहस उसके व्यक्तित्व की पूर्णता है और उसकी लघुता उसकी सार्थकता होगी? कंचन का दोष क्या, कसौटी ही काली है।

अन्ततः रूप नारायण सोनकर की समग्र आत्म कथा यात्रा एक बहस करते आदमी की सत की परीक्षा और साखी दोनों है। जिसने खुद के वारिस एकालाप शैली में खुद से संवाद, खुद से जिरह और जन संवाद के जरिए जमाने से लगातार बातचीत करने की कोशिश की है। जाहिर है कि यह कोशिश आने वाली पीढ़ियों के लिए सामाजिक कर्म की तरह जागरण और विद्रोह के लिए प्रेरित करेगी। सच में इनकी आत्म कथा अन्याय और दमन के विरूद्ध एक उठे, एक तने हुए हाथ की तरह है। सड़कों, चौराहों, गलियों सभा स्थलों में जनता के बीच जिरह और बहस में डूबी हुई। जाहिर है कि किसी भी विचार के फैलाव और विकास के लिए जन संगठन, जन सहयोग की जरूरत है। इस आवाज में बाबा अम्बेडकर साहेब की आवाज भी बोलती है। अपनी सम्पूर्ण मानवीय उष्मा को जग के सामने कोसते हुए अपनी व्यथा सुनाते हैं। आज कल की गिरती हुई साख के विरूद्ध सोनकर जी की आत्मकथा ईमान की साखी है। उन्होंने सिर्फ लेखक धर्म का निर्वाह नहीं किया, वरन मनुष्य होने का फर्ज भी अदा किया। जितना भी लिखा वह महत्वपूर्ण विमर्श के लिए पर्याप्त है।

यदि मैं संक्षेप में इन स्मृतियों की कोई फेहरिस्त बनाऊँ तो कुछ ये सब शामिल होगा–नैतिकता, सामाजिक चेतना, विवेक और विचार से निष्कर्ष पर पहुँचने की प्रवृत्ति, अनासक्ति,दो टूक बात करना–बौद्धिक प्रखरता, विनो दप्रियता कल्पनाशीलता, मौखिकता आडम्बर, विहीनता, साहस और सृष्टि के अंतिम सत्यों तक पहुँचने की चाह और उनकी कल्पना करने की क्षमता। उनका व्यक्तित्व कुछ आक्रमक या सख्त रहा होगा, पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। पर उनका साहस उनके व्यक्तित्व की पूर्णता है। उनकी लघ ुता उनकी सार्थकता है। ''भटकटैया'' उनकी नैतिकता है। समता मूलक समाज का निर्माण होगा। भारत मजबूत बनेगा। भारत की ताकत को दुनिया कबूल करेगी। यहीं आत्मकथा का सार है। सोनकर जी सच और न्याय की प्रशिक्षणशाला बनाना चाहता हैं। हारे हुए लोगों को अकेले नहीं छोड़ना चाहते। उनके पक्ष में खड़ा होना चाहते हैं। वे बार बार खोते जा रहे मूल्यों के साथ–साथ जीवन गढ़ने की कोशिश करते हैं। नए हिन्दूस्तान मे सच की तलाश कर रहे होते हैं।

संदर्भ सूची–

1.भटकटैया–रूपनारायण सोनकर, पृ0 04.
2.वही, पृ0 13.
3.वही, पृ0 18.
4.वही, पृ0 54.
5.वही, पृ0 71.
6.वही, पृ0 150.
7.वही, पृ0 53.

*****

'नागफनी'–सामाजिक क्रांति का दस्तावेज़

डॉ. अभय परमार
प्राचार्य,
आदिवासी आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज,संतरामपुर
जिला-महिसागर, गुजरात
मो. 9924655728
Email-abhayparmar728@gmail.com

साहित्य संवेदनाओं का संग्रह है। समाज की मुख्य समस्याओं को उठाना साहित्य के सरोकारों में सम्मिलित है। लोकहित और लोकमंगल साहित्य का परम्परागत रूप से मुख्य हेतु माना गया है। लेकिन क्या सही मायनों में समाज के साहित्यकारों द्वारा समाज के सभी वर्गो के हित और कल्याण को केन्द्र में रखते हुये सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हुआ है? आज साहित्य में विविध विमर्शो के आगमन का क्या कारण है? इसके अनेक कारण दिए जा सकते हैं लेकिन केन्द्र में रहा हुआ कारण यही है कि, वास्तव में समाज के सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व साहित्यकारों ने उस रूप में नहीं किया जिस रूप में होना चाहिये था। इसीलिए आज साहित्य की धारा में प्रवाहित होते हुये स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श, आदिवासी विमर्श, बाल विमर्श, विकलांग विमर्श, किसान विमर्श इत्यादि अस्मितामूलक विमर्शों का जन्म हुआ। इसी प्रकार दलित विमर्श से दलित साहित्य का जन्म हुआ।

हिन्दी साहित्य में एक के बाद एक दलित आत्मकथाएं आ रही हैं और चर्चा के केन्द्र में भी रही हैं। दलित आत्मकथाओं ने नए अनुभवों को पाठकों के समक्ष रखा है। वस्तुतः आत्मकथा लिखना साहस का काम है क्योंकि आत्मकथा की पहली शर्त है- 'यथार्थ लेखन और वह भी स्वयं के बारे में'। आत्मकथा में जिये हुए जीवन का, भोगे हुए क्षणों का, झेले हुए सुख-दु:खों का यथार्थ लेखा-जोखा आत्मकथाकार अपने समग्र जीवन के पुनःरीक्षण के रूप में प्रस्तुत करता है। इससे सिद्ध होता है कि, आत्मकथा सच्चे अर्थो में जीवन की आलोचना है। लेकिन दलित आत्मकथन लेखन उन सभी घाँवों को हरा करना होता है जो बचपन से ही लेखक के मन-मस्तिष्क को द्रवित करते आए हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि इस विषय पर अपनी आत्मकथा 'जूठन' की भूमिका में लिखते है– "दलित जीवन की पीड़ाएँ असहनीय और अनुभव–दग्ध हैं। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके। एक ऐसी समाज–व्यवस्था में हमने सांसे ली हैं, जो बेहद क्रूर और अमानवीय है। दलितों के प्रति असंवेदनशील भी। . . . . . .इन अनुभवों को लिखने में कई प्रकार के खतरे थे। एक लंबी जद्दोजहद के बाद मैंने सिलसिलेवार लिखना शुरू किया। तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़नाओं को एक बार फिर जीना पड़ा। उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाएँ मैंने भोगीं। स्वंय को परत–दर–परत उधेड़ते हुए कई बार लगा–कितना दुखदायी है यह सब। कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है।"[1]

सर्वप्रथम डॉ. भीमराव आंबेडकर का आत्मकथन मानी जाने वाली 'मी कसा झालो' से प्रेरणा लेकर मराठी दलित साहित्यकारों ने आत्मकथा लेखन का प्रारंभ किया। हिंदी में भी दलित लेखकों ने अपनी आत्मकथा द्वारा दलित समाज के यथार्थ को समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया। ये सभी आत्मकथाएं दलित समाज के जीवन की पीड़ा, वेदना, दर्द, दलन का प्रामाणिक दस्तावेज़ मानी जा सकती है। मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' भाग-१,२ में व्यक्त पिंजरे का सफर, इन दोनों भागों में सामाजिक शोषण, जातिगत दंश, दलितों में जातिगत भेदभाव को तोड़कर अर्थात स्वयं अपने पिंजरों को तोड़कर आगे बढ़ने का सफर, प्रसिद्ध साहित्यकार स्व-ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूठन-भाग-1, 2 में लेखक ने जो भोगा है, सहा है, उसका हृदयद्रावक चित्रण मिलता है। कौशल्या जी ने 'दोहरा अभिशाप' में स्त्री के दोहरे अभिशाप- एक स्त्री होने का और दूसरा दलित स्त्री होने की पीड़ा को उकेरा है। माताप्रसाद कृत 'झोपड़ी से राजभवन' में एक दलित का अर्थात माताप्रसाद का राजभवन तक पहुंचना एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि राजभवन तक की यात्रा उन्होंने झोपड़ी से प्रारंभ की इसीलिए यह आत्मकथा माताप्रसाद जी की राजनीतिक जीवन यात्रा का वृतांत भर नहीं है अिपतु ये आत्मकथा अभाव एवं उत्पीड़न के शिकार दलित समाज की पीड़ा, दर्द, संघर्ष, स्वाभिमान तथा जिजीविषा की कहानी है। सुशीला टाकभौरे कृत 'शिकंजे का दर्द', तुलसीराम की दो भागों में विभक्त 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका', सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'संतृप्त' और 'तिरस्कृत', श्यौराजसिंह बेचैन द्वारा लिखित 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर', डॉ. डी. आर. जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजिल', मार्टिन मेकवान की 'मेरी कथा: यातना, संघर्ष और भविष्य' में कई सारे प्रश्नों को आत्मकथाकर ने उठाया है। डॉ. अभय परमार की 'डेथ कान्ट स्टॉप मी' तत्पश्चात मोहनदास जी की आत्मकथा का तीसरा भाग 'रंग कितने संग मेरे' (2019) में पुत्र की मृत्यु के बाद की दशा का वर्णन है, साथ ही इसमें नैमिशराय जी ने अन्य

लेखकों- पाठकों के आए पत्रों का भी उल्लेख किया है। इसी प्रकार वरिष्ठ साहित्यकार रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा 'नागफनी' आदि दलित आत्मकथाओं ने हिंदी दलित साहित्य के विकास में वृद्धि की है।

रूपनारायण सोनकर के जीवन संघर्षो की यथार्थ गाथा है उनकी आत्मकथा 'नागफनी' । 'नागफनी' आत्मकथा शिल्पायन पब्लिशर्स, दिल्ली से 2011 में प्रकाशित हुई। रूपनारायण सोनकर जी ने दलित समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए, सदियों पुरानी समाज व्यवस्थाओं का विरोध करते हुए, पूर्वाग्रहों से मुक्त समाज की रचना हेतु समाज को चेतना प्रदान करने का प्रयत्न किया है। 'नागफनी' आत्मकथा का अनुवाद मराठी, अंग्रेजी, कन्नड, पंजाबी, तेलुगु आदि भाषाओं में हो चुका है। जातीय–व्यवस्था का शिकार दलित समाज नारकीय जीवन बिताने को मजबूर रहा है। "वर्ण–व्यवस्था ने भारत को बिखरा कर रख दिया है और एकता को बुरी तरह कुचल डाला है जिसके परिणामस्वरूप भारत की हजारों वर्षो की नासूर बनी गुलामी का इतिहास और विभाजन की त्रासदी से राहत पाना मुश्किल हो रहा है। भारत को आजादी के पूर्व दो घड़ों में बिखराने की कवायत के बाद भी श्रमजीवी समाज के लगभग बीस फीसदी हिस्से को दलित– अछूत कहकर तिरस्कृत किया जा रहा है। अपने ही देश की विशाल आबादी को अधिकार और आजादी से वंचित रखकर उस पर अन्याय–अत्याचार लगातार जारी है। चेतना शून्य दलित समाज के दमन और उत्पीड़न की प्रक्रिया, दुत्कार और मानसिकता थमने के, समाप्त होने के आसार नज़र नहीं आते परिणामस्वरूप समतामूलक समाज की आधारशीला और नींव हाशिए में अपने अस्तित्व के लिए छटपटा रही है।"[2] दलित समाज ने जातीय पीड़ा को हजारों वर्षो से सहा है।

'नागफनी' के आत्मकथाकार सोनकर जी प्रत्येक परिस्थिति में चाहे जो हालात रहे हो, फिर भी संघर्ष करते हुए उन्होंने अपने जीवन और समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया है। उसका यथार्थ वर्णन 'नागफनी' के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत किया है। वे स्वंय संघर्ष करते रहे हैं। उन्होंने अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठायी है। वे धर्म के ठेकेदारों को भी करारा जवाब देते है और समाज के मनुवादियों का सामना भी करते रहे हैं। दलित समाज का कदम–कदम पर दलन हुआ है एवं उन्हें पाशविक जीवन के लिए मजबूर किया गया है। वास्तविकता यह है कि, हजारों वर्षो में उन्हें कभी किसी ने उस पाशविक जीवन से उठाने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने स्वंय भी कभी इस जीवन से मुक्ति के लिए नहीं सोचा, सोचते भी किस प्रकार? शिक्षा संस्थानों के द्वार उनके लिए सदियों तक बन्द रहे तो चेतना किस प्रकार आ सकती थी? शिक्षा प्रगति के सारे मार्ग खोल देती है। लेकिन दलित समाज के जीवन में शिक्षा नामक सोना नहीं था। बाबा साहब ने दलित समाज के उत्थान के लिए उनमे चेतना जगाई, उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनकी शिक्षाओं से ही दलित समाज आगे आया है। रूपनारायण सोनकर जी लिखते है–"मैं आंबेडकर को प्रथम, लोहिया को द्वितीय और गांधी को तृतीय स्थान दूँगा। आंबेडकर ने दबे–कुचले और समाज से बहिष्कृत लोगों की आवाज उठाई थी। सवर्णो के सामने ऐसी आवाज उठाना अपनी जान गँवाने के बराबर था। सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों, छूआछूत को समाज से उखाड़ फेंकने के लिए जोरदार संघर्ष किया था। शायद वह विश्व के पहले जन नेता थे जिन्होंने सवर्णो के अत्याचारों से कराह रहे दलितों को मुक्ति दिलाने का द्वार खोला।"3 जब देश में आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी तब "भारत-मुक्ति ने दलित मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। जब हिंदुओं को पराधीनता सहन नहीं है तो दलितों को पराधीनता कैसे सहन हो सकती है? यदि अंग्रेजी सत्ता से भारत को मुक्ति चाहिए, तो हिंदू सत्ता से दलितों को भी मुक्ति चाहिए। भारत की स्वाधीनता तभी सुरक्षित रह सकती है, जब भारतवासी भी स्वाधीन हों। यदि भारत स्वाधीन हो गया और करोड़ों दलित भारतीयों को स्वाधीनता नहीं मिली, तो भारत की स्वाधीनता का कोई मूल्य नहीं है। वह पुन: कभी भी पराधीन हो सकता है। इस विचार के साथ डॉ. आंबेडकर ने दलित स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी"[4]

दलित समाज द्वारा अपने अस्तित्व की लड़ाई एक दिन में नहीं लड़ी जा सकती है। ये बाबा साहब अच्छी तरह जानते थे। अत: उन्होंने दलित समाज को "शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो" का सूत्र दिया। "डॉ. आंबेडकर की मान्यता थी कि सम्पत्ति की बराबरी ही वास्तविक सुधार नहीं है। समाजवादियों से उनका सवाल था कि क्या वे आर्थिक सुधार, सामजिक व्यवस्था में सुधार लाये बगैर कर सकते हैं? उन्होंने लिखा है कि समाजवादियों ने इस प्रश्न पर विचार ही नहीं किया है। वे आगे लिखते हैं कि समाजवादी या साम्यवादी यदि क्रांति से पूर्व जाति को महत्व नहीं देते, तो क्रांति के बाद अवश्य ही जाति पर ध्यान देने के लिये मजबूर हो जायेंगे। क्योंकि, जाति एक ऐसा राक्षस है, जो आप कहीं भी और किसी भी दिशा में जायें, वह आपका रास्ता जरूर काटेगा। अत: जब तक इस राक्षस को नहीं मार दिया जाता है, तब तक न तो कोई राजनैतिक सुधार किया जा सकता है और न ही आर्थिक सुधार किया जा सकता है"5

रूपनारायण सोनकर के जीवन को जाँतिवाद की जंजीरों ने सदैव जकड़े रखा। उन्होंने हर जगह संघर्ष किया, हर समस्या से जूझते रहे, लेकिन कभी भी सवर्णो के आगे झुके नहीं। फिर भी लेखक जब एल.डी.सी. की नौकरी इलाहाबाद में कर रहे थे तब आई.ए.एस की परीक्षा के लिए एक माह का लीव विदआउट पे के लिए प्रार्थनापत्र इंजीनियर साहब को देते हैं। तब बड़े बाबू को दिक्कत होती है। वो नहीं चाहते थे कि, लीव मंजूर हो। दूसरा सक्सेना को जब यह बात पता चलती है वे तुरन्त लीव मंजूर हो चुकी

फाइल लेकर इंजीनियर साहब से लीव केन्सल करवा देता है। लीव विदआउट पे कोई भी ले सकता है, यह कर्मचारी का अधिकार होता है। परन्तु जातिवादी विचारधारा के कारण उनकी यह लीव केन्सल करवा दी जाती है कि कहीं दलित समाज का रूपनारायण आई.ए.एस न बन जाये।

सोनकर जी के कैरियर को जातिवाद का काँटा खत्म कर देता है। वे लिखते है–"'नागफनी' से जुड़ा जातिवाद का काँटा मेरे कैरियर में चुभ गया था। वह काँटा आज भी मेरे आई.ए.एस. न बन पाने का दर्द देता रहता है। 'नागफनी' से जुड़े बहुत से असमानता, भेदभाव, छूआछूत, अत्याचार, शोषण के काँटे पढ़े–लिखे, गैर पढ़े–लिखे दलितों के शरीर, मन–मस्तिष्क को छेदते है। ग्रामीण भारत में 'नागफनी' अपने आप खेतों में पैदा होती है। शहरी भारत में बगीचों और घरों में 'नागफनी' गैर–दलितों द्वारा पनपाई जाती है। लेकिन काँटे दोनों के नुकीले होते हैं। दोनों दलितों के बदनों पर घाँव करते है। दलितों का लहू बहाते है।"[6] वाकई दलित समाज में ऐसे कितने रूपनारायण होंगे कि जिनके कैरीयर को जातिवाद के काँटों ने खत्म कर दिया होगा?

दलित समाज में जहाँ दलित कुछ पढ़–लिख जाते हैं तो उनके साथ जो व्यवहार होता है, उसका चित्रण करते हुए रूपनारायण सोनकर जी अपने भाई के साथ घटी घटना का वर्णन किया है। छोटे भाई अजय ने एम. ए. की डिग्री प्राप्त की, आई. ए. एस. की परीक्षा दी। लेकिन जब गांव आया तो ब्राह्मण हरिशंकर लेखक के भाई अजय को नीचा दिखाने के लिए उससे कंडे भी उठवाते हैं। वे लिखते है–"अजय मजबूर था। असहाय था। उसने सर पर कपड़े की गिंडी रख ली। कंडों से भरा झउआ सर पर लादकर सुबह से शाम तक ढोता रहा। ब्राह्मण हरिशंकर अवस्थी के मकान की दालान में जमा करता रहा। यह सब देखकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रदान की गई डिग्री रो रही थी"[7] इस प्रकार जाति के कारण ही पढ़े-लिखे अजय को ब्राह्मण के आगे झुकना पड़ा। सवर्ण समाज की मनुवादी मानसिकता नहीं बदलती। "'जाति' ही जहाँ मान–सम्मान और योग्यता का आधार हो, सामाजिक श्रेष्ठता के लिए महत्वपूर्ण कारक हो, वहाँ यह लड़ाई एक दिन में नहीं लड़ी जा सकती है। लगातार विरोध और संघर्ष की चेतना चाहिए जो मात्र बाह्य ही नहीं, आंतरिक परिवर्तनगामी भी हो, जो सामाजिक बदलाव को दिशा दे।"[8] वाल्मीकि जी का ये कथन बिल्कुल उचित है कि, एक दिन में मानसिक विचारों में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता, खाली दिखावे से परिवर्तन संभव नहीं उसका स्वरूप बाह्य और आंतरिक दोनों रूपों में होना चाहिए, मन–वचन–कर्म से एक होना चाहिए।

जातिवाद को स्वंय झेलने वाले सोनकर जी समाज में परिवर्तन के आकांक्षी हैं। वे सामंतशाही और मनुवादी परम्परा को जड़ों से उखाड़ फेंकना चाहते हैं, सोनकर जी अत्याचारों का विरोध निडरता से करते हैं। शिवपूजन अवस्थी जब उन्हें माफी माँगने को कहते है तो वे इसका विरोध करते हुये कहते है– "मैंने कहा–किस बात की माफी माँगू? दलित भाइयों के स्वाभिमान की रक्षा कर रहा हूँ उसकी माफी माँगू? जो तुम अत्याचार कर रहे हो उसकी माफी मागूँ? मैं अपने परिवार और रिश्तेदारों और दलितों के मान–सम्मान की रक्षा के लिए तुमसे टक्कर लूँगा मैं तुम्हारे अत्याचारों को बर्दास्त नही करूँगा।"[9] आज भी गांवों और शहरों में दलित समाज के प्रति घृणा के भाव है। सवर्णो की यही मानसिकता दलितों को हमेशा ही स्वंय से दूर रखकर, दूर अंधेरों में धकेल देती है और वे पूरा जीवन अंधकार में बिताने हेतु अभिशप्त हो जाता है।

रूपननारायण सोनकर जी ने दलित समाज की कई समस्याओं को उजागर किया है। गांवों में दलित समाज को अभी भी कुओं से पानी पीने के लिए किसी सवर्ण का इन्तजार करना पड़ता है क्योंकि वे स्वंय कुयें पर बँधी बाल्टी को छू नहीं सकते। छूआछूत की समस्या के कारण पानी जैसी बुनियादी जरूरत के लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। "सनातनी हिन्दू नेता ऐनापूरे शास्त्री ने कहा है कि, जिस तरह मनुष्य जूता पहनता है, पर जूता शरीर का अंग नहीं है, उसी तरह हिन्दू समाज अछूतों का उपयोग करते हैं, पर वे उनके अंग नहीं है। यह उपमा सचमुच बहुत सटीक है"[10] दलितों द्वारा कुंआ खुदाई का काम करवाया जा सकता है लेकिन उसी से पानी पीने के लिए वो स्वयं पानी पी ले तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाता है। लेखक एक बार अपने गाँव नसेनिया जाते हैं। पैदल यात्रा करने के कारण रास्ते में प्यास तो लगती ही है। सड़क के किनारे उन्हें एक कुँआ दिखता है जहाँ वह अपनी प्यास बुझाने के लिए जाते है। राहगीरों हेतु कुएं की जगत पर बाल्टी बँधी हुई थी जिससे लेखक ने स्वंय कुंए से पानी निकालकर अपनी प्यास बुझायी। इतने में वहाँ एक ब्राह्मण आया। जो लेखक पर बरस पड़ता है।– "साले तूने अपने आप कुएँ से पानी निकालकर बाल्टी में लोटा डालकर पी लिया। मैं तुझे जानता हूँ। कि तू अछूत है"।[11] बस इतना सुनते ही गाँव के अन्य मनुवादी भी सोनकर जी के पीछे लाठी लेकर टूट पड़ते है। तब लेखक को अभिमन्यु बनना पड़ता है जैसे अभिमन्यु ने रथ के पहिये से कौरवों पर वार किया था वैसे ही लेखक भी बाल्टी और रस्सी का सहारा लेते हुये सुदर्शन चक्र बना लेते है और ब्राह्मणों से मुकाबला करते है। वे हार नहीं मानते अपितु एक क्रान्ति की चिन्गारी दलित समाज में अवश्य जला देते है।

समाज के अंधविश्वासों, पाखंडीपन एवं सामाजिक विसंगतियों पर सोनकर जी सदैव व्यंग करते रहे हैं। सोनकर जी संघर्ष करते हुए रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ फेंकने का साहस रखते हैं। दलित समाज की परिस्थितियों में परिवर्तन हेतु अपने साहित्य लेखन के साथ स्वयं भी सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। धार्मिक पाखंडों की पोल खोलते हुये सोनकर जी लिखते है– "जहाँ–जहाँ इस तरह के अखण्ड पाठ होते हैं, वहाँ से धार्मिक प्रदूषण वायुमण्डल में फैल जाता है यह प्रदूषण इतना विषैला और कसैला होता है कि, इसकी एक–एक बूँद दलितों की एक–एक पीढ़ी को अपमानित करने

के लिए काफी होती है। लेकिन दलितों में भी ऐसे दलित शंकर होते है जो इस विष को पीकर दूसरे दलितों में नहीं फैलने देते है। गाँवो में होने वाले इसतरह के पाखण्ड वास्तव में ब्राह्मण लड़कों को धार्मिक बनाने की एक पाठशाला है। समाज में छूआछूत, ऊँच– नीच कायम रखने की एक ऐसी कोशिश है जो अनवरत समाज में चलती रहे।"[12]

'नागफनी' के लेखक रूपनारायण सोनकर जी धार्मिक आडंबरों से ऊपर उठकर दलित समाज द्वारा उसमें बदलाव के हक के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। वे बताते है कि, कुड़हा माई के मंदिर में ज्वारों का मेला साल में एक या दो बार लगता था। इसमें सवर्ण जौ के बीज छोटे–छोटे गमलों में उगाते थे। दलितों को ऐसा कार्य करने की मनाही थी। दलितों को, पिछड़ों को सांग छिदवाने के लिए ब्राह्मण सदैव प्रोत्साहित करते थे। सोनकर जी स्वयं भी सांग छिदवाते हैं। वे मेले की बात बताते हुए लिखते है कि, एक बार गाँव के सड़क पर सवर्ण महिला सिर पर पौंधों का कलश लेकर चल रही थी, अचानक वह गिर पड़ी। आत्मकथाकार की चाची भी उस औरत के पीछे चल रही थी, चाची ने दौड़कर कलश को अपने सिर ले लिया। इतने में एक ब्राह्मण आता है और चिल्लाकर कहने लगा–"ससुरी खटिकिन तेरी यह हिम्मत। देव के कलश को अपने सिर पर रखकर भ्रष्ट कर दिया।"[13] इस प्रकार लेखक की चाची का अपमान कर उन्हें पीटा गया। यहाँ एक बात यह भी है कि, जब चाची को पीटा गया तो सभी दलित एक जुट होकर अपमान का बदला लेने के लिए तैयार होते है एवं तब वह ब्राह्मण उनके एकत्व के आगे अपनी हार मानकर कलश लेखक की चाची के सिर पर रखता है। सदियों के बाद दलितों के प्रयत्नों से कुछ परिवर्तन संभव होता है।

जब अपनों के साथ अन्याय होता है तो सोनकर जी जल्दी से आक्रोश में आ जाते है, हरिशंकर अवस्थी जब भदइया भईया को निर्दयता से पीटता है तब लेखक सभी दलितों का टोला इकट्ठा करते है और सबसे कहते हैं–"मैंने कहा–आप लोग अपनी लाठी लेकर चलो। यदि आप लोगों ने भदइया भईया को नहीं बचाया तो वह मर जाएगा"[14] इस प्रकार अपने समाज को व्यवस्था के प्रति विरोध करने हेतु जागृत भी करते हैं।

लेखक की भाभी को जब शिवपूजन अवस्थी गालियाँ देता है और छेड़खानी करने की धमकी देता है, तो लेखक उसको चेतावनी देते है –"यदि तुमने भाभी की तरफ आँख उठाई तो मैं तुम्हारी गर्दन काट डालूँगा।"[15]

आत्मकथाकार ने होली के त्यौहार की घटना को भी बताया है कि, किस प्रकार दलित स्त्रियों का होली के त्यौहार में अपमान किया जाता, सवर्ण वर्ग उन्हें गालियाँ देकर होली का त्यौहार मनाता। यही उनकी परम्परा भी थी। आत्मकथाकार इस परम्परा को देखकर अपने समाज की स्त्रियों के बारे में सोचते हुये सवर्णो की औरतों का भी अपमान करके ब्राह्मणों को सबक सिखाते हैं। इस प्रकार दोनों ब्राह्मण और दलित आपस में लड़ने लग जाते हैं। अन्य पक्ष के लोग आकर उन्हें समझाते हैं कि, होली मिलझुल कर प्यार, मोहब्बत बरकरार रखने का त्यौहार है और आप लोग खून बहा रहे हैं। तब ब्राह्मण उरेरी मिश्र बोलता है– "ये साले खटिक, चमार, कोरी, पासी हमारी बराबरी कर रहें हैं। हम लोग दलित औरतों को गाली देकर खुशियाँ मना रहे हैं। ये साले हमारी माँ बहिनों को भी गाली देकर सदियों से चली आ रही परम्परा तोड़ रहे हैं।"[16]

इसप्रकार यहाँ औरतों को गालियाँ देने की बात कितने गर्व से की गई हैं यह सोचनीय है। क्योंकि स्त्रियों को गालियाँ देना ब्राह्मणों के लिए समस्या नहीं है लेकिन सदियों पुरानी परम्परा टूटी है, इसका गुस्सा अधिक है। इस बात से समाज में नारी के स्थान का पता चलता है। साथ ही सवर्ण नहीं चाहते कि, दलित समाज सिर उठाकर जियें। उनका विरोध करें। सवर्ण समाज तो चाहता है कि, दलित समाज हमेशा ही उनकी सेवा में लगा रहे, बेगारी करता रहे, दब्बुपन में जियें। साथ ही दलित समाज की स्त्रियों को तो सवर्ण खिलौना ही समझ लेते है। ऐसा ही एक पात्र आत्मकथा में आता है– इन्द्रजीत सिंह। लड़कियों की इज्जत से खिलवाड़ करना ही जिसका काम है और विरोध करने पर जिन्दगी से हाथ धोना पड़ता। लेखक लिखते हैं– "यह इन्द्रजीत सिंह हफ्ते पन्द्रह दिन में रोज बिटिया को टयूबवैल में रातभर रखता है, सुबह तड़के घर भेजता है। मना करने पर जान से मार डालने की धमकी देता है।"[17] इसप्रकार दलित समाज की स्त्रियों की स्थिति अंत्यंत दयनीय है। वे ना तो कुछ कर सकती हैं, ना कह सकती है। विरोध करने पर उनके पूरे परिवारों को ही नष्ट कर दिया जाता है। यहां दलित होने की पीड़ा और दलित स्त्री होने की पीड़ा स्त्री जीवन को अभिशप्तता से भर देती है। वर्तमान में समय बदला है फिर भी जाति दलित समाज के जीवन से जाती ही नहीं। स्व,. ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं- "वक्त बदला है। लेकिन कहीं कुछ है जो सहज नहीं होने देता है। कई विद्वानों से जानना चाहा कि, सवर्णों के मन में दलितों, शूद्रों के लिए इतनी घृणा क्यों है? पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों को पूजनेवाला हिंदू दलितों के प्रति इतना असहिष्णु क्यों है? आज जाति एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण घटक है। जब तक यह पता नहीं होता कि, आप दलित हैं, तो सब कुछ ठीक रहता है। जाति मालूम होते ही सब कुछ बदल जाता है। फुसफुसाहटें, सन्नाटे दलित होने की पीड़ा चाकू की तरह नस-नस में उतर जती है। गरीबी, अशिक्षा, छिन्न-भिन्न दारूण जिंदगी, दरवाजे के बाहर खड़े रहने की पीड़ा भला 'अभिजात' गुणों से संपन्न सवर्ण हिंदू कैसे जान पायेंगे?"[18]

लेखक बताते है कि, डॉ. आम्बेडकर से ही उन्हें संघर्ष करने की प्रेरणा मिली है। वे लिखते है– "डॉ. आंबेडकर अकेले थे। उन्होंने अकेले ही सारे देश से गैर–बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया था। उनके तेज के

सामने गाँधी, जवाहर की चमक भी धीमी पड़ गई थी। इन लोगों ने भी मानवता के प्रति किए गए डॉ. आंबेडकर के कार्यो को सही माना था। पीड़ीत बहुसंख्यक मानवता के प्रति हमदर्दी रखने वाले विश्व के एकमात्र जननायक आंबेडकर ही थे। यदि वे संघर्ष से डर जाते तो दलित जिस स्थिति में आज है, वे कभी न होते। डॉ. आंबेडकर के ये विचार मुझे बार–बार कचोट रहे थे। मुझे संघर्ष करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। मैंनें दलित नौजवानों की टोली बना ली थी।"[19] इस प्रकार लेखक ने बाबा साहब के मूलमंत्र–'शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो।' को अपने जीवन में अपना लिया था। "डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन ने सचमुच एक नई करवट ली थी। पूरे देश का दलित वर्ग इससे जुड़ा और हिन्दू व्यवस्था से टकराने की घटनाएं देश के कोने-कोने में घटने लगीं। दलितों ने गांवों में उन व्यवस्थाओं का उल्लंघन करना शुरू कर दिया, जो उन पर थोपी गई थीं। फलत: देशभर में दलितों को हिंदूओं की हिंसा का शिकार होना पड़ा, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाने लगा और उन्हें गाँवों से पलायन करना पड़ा। यह गुलामी के खिलाफ खुला विद्रोह था। इस विद्रोह में डॉ. आंबेडकर के इन शब्दों ने जैसे जान ही डाल दी थी, " दलितों तुम विद्रोह करो। तुम्हारे पास खोने के लिये गुलामी के सिवाय कुछ नहीं है, पर पाने के लिये आजादी है" "[20]

लेखक व्यक्तिगत नहीं समष्टिगत रूप से सोचते है। दलित साहित्य का केंद्रिय विषय मनुष्य है और उसका धर्म मानवता। मानवीय हकों हेतु कलम उठाना ही उनका मुख्य उद्देश्य है और इन्हीं हकों हेतु निजी जीवन से जुड़ी जमीनी, सर्वग्राह्य भाषा द्वारा पूरे समाज को समता, स्वतंत्रता और बंधुता हेतु जागृत करना ही है दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र। "विश्व में मनुष्य जैसी 'सत्य और सुंदर'दूसरी कोई चीज नहीं है। इसीलिए तो मनुष्य की समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व की चर्चा होनी आवश्यक है। मेरे विचार में यही चर्चा 'दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र की चर्चा होगी"[21]

सोनकर जी स्वंय भी गरीबी, भूखमरी को भोग चुके है। इसीलिए वे एक ही वक्त खाना खाते है। वे स्वंय लिखते है–"मैंनें मन में दृढ़ निश्चय किया कि, मैं दिन में खाना नहीं खाऊँगा। मैं केवल रात्रि में ही खाना एक बार खाऊँगा। मैं यह काम 24 सालों से कर रहा हूँ हालाँकि मेरे एक बार खाना खाने से भूखों का पेट नहीं भरेगा, हाँ यदि मेरी ही तरह केवल एक तिहाई लोग ऐसा करने लगे तो जरूर हिन्दुस्तान में कोई भी आदमी भूखा नहीं सोएगा।"[22]

निष्कर्षत: प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाले लेखक की आत्मकथा 'नागफनी' सामाजिक क्रान्ति का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। 'नागफनी' के आत्मकथाकार ने व्यवस्था के प्रति विद्रोह, विरोध के लिए अपनी लेखनी चलाई है। अत्याचारी आंतक से भयभीत न होकर उसे मुँह तोड़ जवाब आत्मकथाकार ने दिया है। इसमें लेखक का रूदन नहीं अपितु विरोधात्मक शैली से ईट का जवाब पत्थर से देने का साहस है, इन अर्थो में यह आत्मकथा सर्वश्रेष्ठ है।

'नागफनी' में लेखक ने अपने समाज की समस्याओं को प्रस्तुत किया है, साथ ही उन समस्याओं से वे कैसे लड़े हैं, किस प्रकार संघर्ष करके वे आगे आए है? संघर्ष के साथ चेतना का स्वर भी इस आत्मकथा में मुखरित हुआ है। दलित समाज सदियों से जातीय बंधन के पाश में बँधा हुआ है। जातीय अपमान उनके जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है। सोनकर जी ने उन सभी पहलूओं का विरोध किया है, 'नागफनी' में दर्द और अत्याचार की जीवंत तस्वीरें है लेकिन उन अत्याचारों से मुक्त होने का मार्ग भी लेखक ने प्रशस्त किया है। यह आत्मकथा पूरे दलित समाज के लिए प्रेरणारूप है। इसप्रकार रूपनारायण सोनकरजी की 'नागफनी' आत्मकथा दलित समाज में क्रान्ति का आह्वान करती है। दलित हक के लिए संघर्ष करें। गलत के सामने विरोध करे। पुरानी समाज व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए दलित समाज को नयी चेतना से भर देती है उनकी आत्मकथा 'नागफनी'।

संदर्भः–

1. जूठन–ओमप्रकाश वाल्मीकि–भूमिका से
2. आश्वस्त पत्रिका, फरवरी- 2020, पृष्ठ- 15
3. 'नागफनी'–रूपनारायण सोनकर,पृ–99
4. हरिजन से दलित-सं-राजकिशोर-पृ-67
5. दलित विमर्श की भूमिका-कंवल भारती-पृ-22
6. 'नागफनी'–रूपनारायण सोनकर,पृ–113
7. वही–पृ–49
8. जूठन–ओमप्रकाश वाल्मीकि–पृ–158
9. नागफनी–रूपनारायण सोनकर–पृ–30
10. दलित विमर्श की भूमिका-कंवल भारती-पृ-24
11. नागफनी–रूपनारायण सोनकर- पृ–25
12. वही–पृ–36
13. वही–पृ–17
14. वही–पृ–42
15. वही–पृ–31
16. वही पृ–59
17. वही–पृ–70
18. हरिजन से दलित-सं-राजकिशोर-पृ-25
19. नागफनी–रूपनारायण सोनकर- –पृ–57
20. दलित विमर्श की भूमिका-कंवल भारती-पृ-61-62
21. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र-शरणकुमार लिंबाले-अनु-रमणिका गुप्ता-पृ-34
22. नागफनी–रूपनारायण सोनकर- –पृ–111

कथ्य और शिल्प की नवीनता का उपन्यास 'डंक'

-डॉ.हेना
सह आचार्य,सरकारी ब्रेन्नन कॉलेज,
तलश्शेरी,कण्णूर, केरल
मो.९४४६३५३०३१

पूर्व की सभी आलोचनाओं और सिद्धान्तों से मुक्त होकर ही समकालीन दलित साहित्य की आलोचना संभव है। आलोचना में अपने एक लेख में अवधेश कुमार सिंह पाठ को और उसे पढ़ने को महत्वपूर्ण मानते हैं। जिस सही गलत और प्रामाणिकता की परिपाटी चली आ रही है, उससे मुक्त होना आवश्यक है। वे कहते हैं- "आज के जीवन का सत्य यह है कि प्रामाणिकता और स्वस्थता हमारे युग की सबसे बड़ी दुर्घटनाएँ हैं जिनसे आलोचनात्मक बोध के साथ पठन के द्वारा काफी हद तक बचा जा सकता है।"

दलित साहित्य भी अपने लिए नए सौंदर्यशास्त्र की माँग करता है। आलोचकों द्वारा शिल्प को कलात्मकता की कसौटियों पर कस कर इसका तिरस्कार ही किया है। किन्तु इन सारी अवमाननाओं के बीच भी अपने साहित्यिक संघर्ष को निरंतर लिखकर दलित लेखकों ने जीवित रखा है। अपनी अनुभूतियों, वेदनाओं, संवेदनाओं की बिना किसी कलात्मक सौंदर्य के यथार्थ परक अभिव्यक्ति उन्होंने की है। अपमान, तिरस्कार, शोषण की गहरी पीड़ा ही इन कृतियों की प्रभावान्वित बन प्रतिष्ठित हुई। इस प्रकार कई प्रचलित परिभाषाएँ बदल गई। कृति के कलात्मक सौंदर्य के प्रतिमानों में ऐसा कायापलट हुआ कि सहृदय एवं समीक्षक दोनों को ही पुन:विचार की आवश्यकता महसूस हुई।

अज्ञेय ने जब कहा था कि देवता कूच कर गये है इन प्रतीकों के तब शिल्प एवं भाषा के नये युग की शुरुआत हुई थी। इसी प्रकार समकालीन साहित्य, विशेषकर दलित एवं स्त्री साहित्य जो कि हाशियेकृत, दमित एवं शोषित है, सत्ताधारियों, अधिकारियों, संपन्न वर्ग की भाषा एवं शिल्प के प्रतिमानों पर नहीं चल सकता है। दलितों की वेदना, आक्रोश, मजबूरी ने ही साहित्य के क्षेत्र में नये सौंदर्यशास्त्र को रूपायित किया। ओमप्रकाश वाल्मीकी जी सही कहते हैं- "युगों युगों से प्रताड़ित, शोषित, साहित्यिक संस्कृति से वंचित मानस जब स्वयं को साहित्य के साथ जोड़ता है तो दलित साहित्य उसकी निजता को पहचानने की अभिव्यक्ति बन जाता है। हाशिये पर कर दिये गये इस समूह की पीड़ा जब शब्द बनकर सामने आती है तो सामाजिकता की पराकाष्ठा होती है। सदियों का दबा आक्रोश शब्द की आग बनकर फूटता है। तब भाषा और कला की परिस्थितियाँ उसे सीमाबद्ध करने में असमर्थ हो जाती है।"

यही कारण है कि दलित लेखकों ने बिना किसी लाग-लपेट के अपने जीवन यथार्थ को उसकी पूरी विद्रूपता और घिनौनेपन के साथ रखा और जाति दंश की पीड़ा को झेलने की वेदना का बेबाक चित्र प्रस्तुत किया। इन्हीं संदर्भों में रूपनारायण सोनकर जी का साहित्य मुख्यधारा साहित्य और यहाँ तक कि दलित साहित्य में भी अपनी विशष्टता के लिए पहचाना जाता रहा, साथ ही विवादों के घेरे में भी आता रहा। रूपनारायण सोनकर का उपन्यास 'डंक' कथ्य और शिल्प की दृष्टि से एक अभूतपूर्व उपन्यास है। 'डंक' उपन्यास का कथ्य ग्रामीण इलाकों, आदिवासियों की झोंपड़ियों के नग्न यथार्थ से लेकर शहरी धनाढ्य संस्कृति और भारतीयता का शोषण करती विदेशी संस्कृति सभी को अपने में समेटता है। सूचनाओं, सत्य चित्रों की ऐसी भरमार कम ही उपन्यासों में नज़र आती है। उनके उपन्यास के सभी यथार्थ चित्र अपने में गहरी अभिव्यंजकता और जीवन दर्शन लिये हुए हैं। आज संस्कृति-सभ्यता के नाम पर हम जिस जीवन को जी रहे हैं, वह वास्तव में एक भ्रमात्मक, काल्पनिक दिखावे की ज़िन्दगी है। हमने वास्तविकता को अनदेखा कर दिया है। 'डंक' में लेखक कहते हैं- "अब दो तरह के जीवन चलते है, एक सजीव जीवन और दूसरा कैमरे का जीवन। उस कैमरे वाले जीवन में अपने तकनीकी हुनर से उसे बहुत ही रिच बनाते हैं। तरह-तरह के रंग भरते हैं। इधर सजीव जीवन बदरंग रहता है। उसमें कोई रंग नहीं भरता। उनका जीवन दूभर ही बना रहता है।"

प्राय: साहित्य में लेखक किसी आचार बिन्दु, समस्या, विचारधारा या दर्शन को कथाओं, घटनाओं की नाटकीयता, संवादों के चमत्कारिक आयोजनों, चरित्रों की स्वाभाविक, जीवंत, मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति आदि के कलात्मक मुखौटों के भीतर से हमें परिचित कराते हैं। किन्तु 'डंक' उपन्यास इन सभी मुखौटों को उतार फेंक कर नग्न यथार्थ से हमें रूबरू कराता है।

इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें कथा सूत्र या कथा प्रवाह या कथात्मकता का पूर्ण अभाव है। हर कथा या कहे घटना अलग छिटकी हुई है। उनमें परस्पर किसी प्रकार का सूत्र स्थापित करने की कोशिश नहीं की गई है। ऐसा लगता है कि कोई समाचार पत्र पढ़ रहे हो या न्यूज़ देख रहे हो। ढ़ेरों घटनाएँ, समस्याएँ, चित्र सभी एक के बाद एक प्रस्तुत हुए हैं। सिर्फ यात्रा का ही एक क्रम इसमें देखा जाता है, जो कि भारत-दर्शन की अनुभूति जगाता है। दर्शनीय स्थलों, इतिहास प्रसिद्ध इमारतों, खंडहरों, प्रकृतिरमणीय हिल स्टेशनों की यात्रा नहीं, बल्कि आज के भारत के जीवन के सच्चे दिल को दहला देने वाले दृश्यों की यात्रा। इस पूरे उपन्यास के उपक्रम में जो सूत्र, प्रवाह या आकर्षण जो पाठक को बाँधे रखता है वह है अनुभूति की सच्चाई और उसकी यथार्थपरक प्रस्तुति।

यदि हम नायकत्व की बात करें तो विराट और संध्या को नायक और नायिका कहा जा सकता है। किंतु वास्तव में यह उनकी कथा नहीं है यह तो उस जीवन की कथा है जिसे वे दोनों यात्रा के दौरान देख रहे हैं या लेखक उन दोनों के माध्यम से दिखाना चाहते हैं।

'डंक' उपन्यास मुख्य रूप से विविध स्तरों पर परंपरागत रूढ़ियों को तोड़ने की ज़िम्मेदारी भी निभाता है। धर्म की अवधारणा पर रूपनारायण

सोनकर कड़ा प्रहार करते हैं। सुर और असुर की प्राचीन अवधारणा को वे पूरी तरह से उलट देते हैं। विलासी इंद्र और देवताओं ने व्यभिचार करनेवाले 'एडस' फैलाने वाले मानते हैं। इंद्र ने गौतम ऋषि के रूप धर कर अहल्या का बलात्कार किया था। 'डंक' में सोनकर जी कहते हैं- "इंद्रलोक वास्तव में बलात्कारियों का लोक था। जो धरती की सुंदर-सुंदर विवाहित, कुंआरी लड़कियों और स्त्रियों को खोजा करते थे। इंद्र की सेना ऐसे ही घिनौने कार्यों को अंजाम दिया करती थी। जिनको देवता राक्षस कहकर पुकारा करते थे, वास्तव में वह सच्चरित्र, महान योद्धा थे जो धरती में निवास कर रही अबलाओं की इंद्र जैसे भ्रष्ट, कुकर्मी देवताओं से रक्षा करते थे।"

परंपरागत सोच के तहत काम वासना को वर्ज्य माना जाता है। साहित्य में इसके कथन पर भी रोक है किंतु सोनकर जी सेक्स की स्वाभाविकता को खुलकर स्वीकार करते हैं- "दुनिया में वही जोड़े सबसे ज्यादा ज़िंदगी पाते हैं और जीवन भर एक दूसरे के होकर रहते हैं जो सेक्सुअली एक-दूसरे को संतुष्ट करते रहते हैं।" इस भूख को वे अन्य सभी भूखों से तीव्र मानते हैं और सृष्टि निर्माण के कार्य के रूप में इसके महत्व को भी स्वीकार करते है और इसकी खुली विवेचना वे करते हैं।

'डंक' उपन्यास ने अपनी निर्मिति में अनेक प्रतीकों और बिंम्बों की सहज सृष्टि की है। पूँजीपति सवर्णों को उन्होंने अमरबेल के प्रतीक से भलीभाँति अभिव्यंजित किया है- "अमरबेल हरे भरे पेड़ का शोषण करते है। उनको मिलनेवाली खुशाक को हज़म कर जाती है। बिना मेहनत के पलती है। जो सूर्य का प्रकाश, हवा, पेड़ों को मिलना चाहिए वह स्वयं ग्रहण कर लेती है। पेड़ धीरे-धीरे कमज़ोर हो जाती है। पूर्ण विकसित नहीं हो पाते हैं।"

उपन्यास के शीर्षक के रूप में 'डंक' भी जातिवाद के प्रतीक के रूप नये अर्थों को प्रस्तुत करता है। "बर्रइया कई प्रकार की होती है लेकिन सभी के डंक तेज़ होते हैं। उनके डंकों के अन्दर जातिवाद, छुआछूत, ऊँच-नीच, असमानता, सामप्रदायिकता का कसैला व विषैला द्रव भरा होता है जो ज़हर से ज़्यादा प्रभावशाली होता है। उनके डंक चुभते ही दलित, पिछड़े कराहने लगते हैं। सदियों से दलित और पिछड़े ऐसे असहनीय कष्ट झेलते आये हैं।" इसी प्रकार वे सामाजिक कुरीतियों को सुनामी की भयंकर लहरों के रूप में देखते है जो कि समुद्र की सुनामी से भी अधिक खतरनाक और जानलेवा है। क्योंकि विपदा की इस अवस्था में मनुष्य इन कुरीतियों की अर्थहीनता को समझ पाने में असमर्थ रहा। सुनामी के आने पर भी उच्च वर्ग को ही पहले राहत की सुविधाएँ प्राप्त हुई।

'डंक' उपन्यास में दलितों की समस्याओं के समान्तर ही स्त्रियों के शोषण के भी कई रूपों में और कई संदर्भों के अन्तर्गत दिखाया है। पी.एच.डी. करनेवाले शोध-छात्रा का शारीरिक शोषण और उसके विद्रोह को बतलाया है। चाय की दुकान पर काम करनेवाली छोटी लड़की सुरीली के शोषण का विवरण भी है।

'डंक' उपन्यास में विभिन्न विरोधी संदर्भों का सामंजस्य प्रस्तुत कर एक कौतूहल जन्य चेतना को प्रस्फुटित किया गया है। एक ओर घोर गरीबी है। मध्यप्रदेश के 'टिनहरिया' आदिवासी गाँव में झोंपड़ी के अंदर दो औरतें नंगी रहती हैं। उनके पास सिर्फ एक साड़ी है। जो बाहर जाती है, वह साड़ी पहनती है। दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण करती सभ्य कही जानेवाली उच्च वर्ग की संस्कृति जहाँ धन के आधिक्य के कारण अंगों का प्रदर्शन सभ्यता और फैशन का मानदंड बना हुआ है। "आजकल दो समस्याएँ इस देश में हैं। एक उच्च धनाढ्य लोगों की कल्चर और दूसरी अति गरीब लोगों की कल्चर। फर्क सिर्फ इतना है कि उच्च धनाढ्य लोगों की औरतें और लड़कियाँ अपना जिस्म अधिक से अधिक दिखाने के लिए कम से कम कपड़े पहनती है; आदिवासी लड़कियों और औरतों के पास कपड़े न होने से जिस्म अपने आप दिखता है।" इसी प्रकार उच्च वर्ग के सवर्ण अय्याश लोग जो सारा व्यभिचार करते हैं अपनी जेबों में निरोध का पैकेट लिये घूमते हैं। क्योंकि वे बीमारी से डरते है। सोनकर जी कहते है कि वास्तव में ऐसे लोग खुद बीमारी है जो समाज को निरंतर खाये जा रहे हैं।

डंक उपन्यास में समाज में व्याप्त विविध समस्याओं को जीवंत संदर्भों के रूप में सोनकर जी ने प्रस्तुत किया है। आरक्षण की समस्या, वृद्धों की समस्या, साहित्यिक, राजनीति आदि की प्रभावी प्रस्तुति हुई है। साथ परिवर्तन की कई उदाहरणों को भी वे हमारे सामने रखते हैं।

दलित, आदिवासी, स्त्री जीवन की विद्रूपताओं को गहरी आत्मीयता के साथ रूप नारायण सोनकर जी ने अभिव्यक्त किया है। शोषितों, पीड़ितों के जीवन की घिनौने सच बिना किसी अलंकारों के 'डंक' उपन्यास में प्रस्तुत हुए हैं।

नागफनी : दलित प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज

डॉ.जितेंद्र विसारिया

नागफनी हिन्दी की बहुचर्चित दलित आत्मकथा है, जो अपने सामान्य रचना और शिल्प विधान के बाबजूद अपनी क्रांतिधर्मिता के कारण चर्चा में अधिक रही। जिस प्रकार गाँधी जी की आत्मकथा 'मेरे सत्य के प्रयोग' में उनके प्रारंभिक मानवतावादी जीवन की झलक आत्मकथा के प्रत्येक पृष्ठ और प्रसंग में झलकती है तथा हम उनके जीवन में घटित हुई प्रत्येक सफलता असफलता से एक संदेश ग्रहण करते हैं। 'नागफनी' में भी रूपनारायण सोनकर ने अपने प्रारंभिक जीवन की घटनाओं से लेकर अब तक के जीवन में आये सामाजिक उतार-चढ़ाव और अपने आसपास की घटनाओं को भी कुछ इस प्रकार संयोजित किया है, कि वे अंत में अपने पीछे एक सुस्पष्ट और क्रांतिकारी संदेश छोड़ जाती हैं।

'नागफनी' का प्रारंभ रूपनारायण सोनकर ने अपने गाँव नसेनियाँ, तहसील बिंदकी, जिला फतेहपुर (उ.प्र.) के पास स्थित 'कुहड़ा माई के मंदिर में नवरात्रि के समय लगने वाले 'जवारों' के मेले के वर्णन से किया है। मंदिर पर साल में दो बार लगने वाले इस मेले में गाँव-वासियों की प्रसंन्नता और उत्सवधर्मिता के बीच सवर्णों द्वारा दलितों से किये जाने वाले भेदभाव का भी स्पष्ट चित्रण हैं।

'चाची द्वारा कल कलश सिर पर रखने पर ब्राह्मण द्वारा पिटाई' आत्मकथा के इस पहले प्रसंग में लेखक ने अपने बचपन की घटना का ज़िक्र किया है। जिसमें एक बार उसी कुहड़ा माई के मेले में कतारबद्ध सवर्ण महिलाएँ जवारे लेकर मंदिर जा रहीं थी। उन्हीं के आसपास चल रहीं उसकी चाची ने जब एक सवर्ण महिला को कलश लेकर गिरते देखा तो उन्होंने दौड़कर उस महिला को सहारा देते हुए वह कलश अपने सिर पर रख लिया था। परन्तु छोटी जाति की होने के कारण चाची के इस उपकार का गाँव के सवर्णों (ब्रह्मणों) ने कोई अहसान न मानते हुए अपना जातिय अपमान माना!!! उन्हें चाची के इस कृत्य में अपनी तौहीन दिखी, अपने जाति-धर्म का अपमान लगा और कुछ ब्रह्माणों ने मिलकर उनकी लात-घूँसों से पिटाई कर दी थी। लेकिन समय के बदलाव के साथ-साथ दलितों में आई नवीन चेतना के प्रभाववश अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए सोनकर के परिवार और जाति-बिरादरी वालों ने मिलकर इसका डटकर प्रतिरोध किया जिसके आगे उन्हें झुकना पड़ा। गाँव में सदियों से दलितों के महिलाओं के लिए जवारे के मेला में वर्जित पीतल के कलश लेकर चलने की प्रथा उस दिन समाप्त हो जाती है।

'सुअर गाय का अद्भुत युद्ध' आत्मकथा का दूसरा प्रसंग होली के दूसरे दिन 'पड़वा' कुहड़ा माई के मेले में ही लगने वाले मेले में होने वाले गाय और सुअर के विचित्र युद्ध का वर्णन किया है। इस प्रसंग में लेखक ने स्पष्ट किया है कि जातिय दंभ में पगे सवर्णों का अहंकार समरसता के प्रतीक लोकोत्सवों में भी उभर कर सामने आ जाता है। ग्राम प्राधान का चुनाव जीते लेखक के पिता के सुअर को प्रधानी के चुनाव में भारी मतों से पराजित पद्मिनी पंडिताईन के पति द्वारा धोखे से हत्या करवा देना उनकी उसी मानसिकता का परिचायक है। लेखक ने जिसे देव-दानव युद्ध की संज्ञा दी है जिसमें विजय सदैव छली देवताओं के पाले में जाती रही है...।

'कुश्ती में दूसरे गाँव को पछाड़ना' आत्मकथा का यह तीसरा प्रसंग लेखक ने अपनी किशोरावस्था के एक घटना से किया है, जिसमें वह अपने 'हीरा' उपनाम के साथ अपने-गाँव के साथ-साथ दूसरे गाँव के अखाड़ों से कुश्ती जीतकर आता था। ...कहते हैं कि गाँव में हर एक आदमी मिलजुल कर रहता है और गाँव के किसी एक व्यक्ति के साथ घटी घटना/दुर्घटना पूरे गाँव के मान-अपमान का कारण बनती है, लेकिन रूपनारायण सोनकर ने इस तथ्य को अपने जीवनानुभव से असत्य सिद्ध करते हुए लिखा है कि ऐसा केवल सवर्णों के साथ घटी घटना में ही होता है, वरना क्या कारण था कि जब वह दूसरे गाँव के किसी सवर्ण को कुश्ती में मात देकर आता तो गाँव का कोई सवर्ण उन्हें शाबासी नहीं देता था, ना ही उसे खुले तौर पर खुशियाँ मनाने की इज़ाज़त थी!

'हमको सड़ी लाश मानकर घर में गंगा जल छिड़कना' भले ही हिन्दू संस्कृति में दुनियाँ को सुनाने के लिए वसुधैवकुटुंबकम् और 'अतिथि देवो भवः' का ढोल पीटा जाता हो, पर आंतरिक सच्चाई यह है कि इस महान? धर्म के तथकथित सवर्ण अनुयाईयों ने न तो पहले कभी और न ही आज अपने सहधर्मी दलितों को अपने कुटुंब का हिस्सा माना है न ही कभी किसी दलित-अतिथि को देवता का सम्मान!!! हिन्दू धर्म की इस क्रूर सच्चाई को सोनकर ने अपने जीवन की एक दुःखद घटना से स्पष्ट किया है, जब वे अपने भाई के साथ एक बार अपने स्कूल के छात्रावास से घर लौट रहे थे। रास्ते में भयंकर बरसात के कारण एक ब्राह्मण गृहपति के यहाँ शरण ले लेते हैं। जब तक सोनकर की जाति उस द्विजोत्तम पर तारी नहीं होती तब तक तो सब कुछ सहज रहता है, यहाँ तक कि वह अपने लड़के के कपड़े तक सोनकर और उनके बड़े भाई को बदलने के लिए दे देता है। लेकिन जैसे ही सोनकर की बातों से उनके 'खटीक' जाति का होना उसे ज्ञात होता है। उसका व्यवहार बदल जाता है। क्रुद्ध होकर वह इनका घोर अपमान करता भरी बरसात में घर से बाहर कर देता है और अपने लड़के के जो कपड़े उसने सोनकर के भाई को भींगे कपड़े बदलने के लिए दिए थे, उनके पैसे तक वसूल कर लेता है। अछूत अथिति के आने से अपवित्र हुए घर को गंगाजल से पवित्र करता है- हमारी महान संस्कृति!

'मैंने एक लोटा पानी पिया ब्राह्मणों ने मेरा दो लोटा खून बहा दिया' जल हमारे जीवन का मुख्य आधार है। नीति कहती है कि पानी चाहे आँख में हो या घड़े में वह अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी बचा रहे। लेकिन हमार

महान देश का यर्थाथ यह है कि जीवन की इस मूलभूत आवश्यकता पर सदियों से सवर्णों का कब्ज़ा रहा है और वे आज भी इस पर अधिकार छोड़ने के लिए सहज राज़ी नहीं हैं। यहाँ के नीचे घाट और दोयम दर्जे का पानी ही अब तक दलितों के हिस्से का कटु यथार्थ है। इस प्रसंग में सोनकर ने लिखा है कि जब वे एक बार मई-जून के महीने में अपने छात्रावास से गाँव लौट रहे थे; तब देबरी गाँव के पास मारे गर्मी के लगी जोर की प्यास के चलते, उन्होंने एक कुँए पर पड़ी रस्सी-बाल्टी से पानी खींचकर पी लिया था। दुर्भाग्य से वह कुँआ और बाल्टी उस गाँव को सवर्ण ज़मीनदार की थी और लेखक को वहाँ सभी पहचानते भी थे। परिणामस्वरूप अचानक वहाँ आ पहुँचे एक जनेऊ और तिलकधारी ब्राह्मण और उसके साथियों ने सोनकर को कुँए से उतारकर क्रूरतम तरीके से पीटा था, जिसमें लेखक का काफ़ी खून बह गया था। यह सरासर नाइंसाफी थी और सदियों से दलितों पर किया जाने वाले क्रूर अत्याचार। लेखक वहाँ अभिमन्यु की तरह यह सब चुपचाप सहन कर कुँए की बाल्टी उठाकर घुमाते हुए अकेला ही उनका डटकर विरोध करता है और अंत में भाग आता है-''मैं मौत के मुँह से निकल आया था। कुँआ बहुत गहरा था। लेकिन समाज में फैली छुआछूत, गैर बराबरी, शोषण, अत्याचार और कुरीतियाँ कुँए से भी ज्यादा गहरी और पुरानी हैं। इनकी कोई थाह नहीं है। मैं अगर कुँए में डाल दिया जाता तो हो सकता है मैं संघर्ष कर कुँए से बाहर आ जाता, लेकिन इन सामजिक विसंगतियों, क्रूर सामजिक रूढ़ियों, नाइसांफियों, ऊँच-नीच और छुआछूत से बचना मुश्किल है। इनका जवाब वही है जो मैंने दिया। अपनी आत्मा को मरने मत दो। अपने स्वाभिमान को गिरने मत दें।''(नागफनी-पृ.27)

'अपने रिश्तेतेदारों को चारपाई पर बैठाना (यमराज का आना)' वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत दलित कही भी स्वतंत्र और सम्मानीय नहीं हैं। 'गाँव के किसी व्यक्ति का मेहमान सबका मेहमान' यह कहावत भी दलितों के सम्बन्ध में खरी नहीं उतरती। आज से तीस-पैंतीस साल पहले हर-एक गाँव में दलितों के घर के सामने ऊँचे चबूतरे नहीं होते थे, न ही घर के द्वार पर बने इन ऊँचे चबूतरों पर दलितों को खाट डाल कर बैठने की इज़ाज़त थी। उक्त प्रसंग में आत्मकथाकार इसी बात की बखिया उधेड़ी है। जिसमें सोनकर के घर एक बार रिश्तेदार आये थे जिन्हें उसने अपने घर के द्वार पर चारपाईयाँ डालकर बैठा दिया था। इसी बीच वहाँ से गुज़रे शिवभजन अवस्थी को यह बात अखरती है, उसे सदियों से दलितों के ऊपर रहा सवर्णों का वर्चस्व टूटता दिखा। वह अपने साथियों के साथ सोनकर के ऊपर हमला हमला करने आ जाता है। परन्तु परिवार तथा गाँव के बलवीर यादव एवं अन्य पिछड़ी जातियों के सहयोग से अंततः गाँव से यह प्रथा समाप्त हो होती है। जिसे सोनकर ने ब्राह्मणवाद के ऊपर दलितों और पिछड़ों की जीत बताया है। यह प्रसंग पढ़कर हमें पेरियार ललई सिंह (यादव) के पिता के जीवन का प्रसंग सहज याद हो आता है कि उन्होंने भी अपने गाँव झींझक में, दलितों के साथ होने वाले ग़ैर बराबरी युक्त इस तरह के भेदभावों का प्रतिरोध कर उन्हें समाप्त किया था।

जातिव्यवस्था का दलितों के साथ यह क्या क्रूर मजाक है कि जब कोई जोखिम भरा काम होता है वह काम भले ही सवर्णों की रसोई के भीतर का हो या देवायलय का वह दलितों और पिछड़ों से ही कराया जाता है, लेकिन जब लाभ या सहूलियत वाली बात आती है तो उन्हें घृणित पशुओं के समान दुत्कार दिया जाता है। 'रस्सी के सहारे ऊँचे गुम्बद की पुताई' पर आधारित यह प्रसंग कुछ ऐसी ही कहानी कहता है, जिसमें सोनकर की माँ के रोने पर भी गाँव के मन्दिर की पुताई के लिए सोनकर को मन्दिर के ऊँचे गुम्बद पर चढ़ा दिया था।

वर्णव्यवस्था के विरूद्ध और दलितों के पक्ष में कभी कोई सवर्ण खड़ा नहीं हुआ हो, ऐसा भी नहीं है, लेकिन जब भी किसी सवर्ण ने ऐसा प्रयास किया तो या तो उसकी आवाज़ ही दबा दी गई या उसे मार दिया गया है। बुद्ध को संक्रमित भोजन देकर, दयानंद सरस्वती को दूध में विष और महात्मा गाँधी को गोली से उड़ाना इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। 'रामचरित मानस कुचलकर चिथड़े-चिथड़े हुई' आत्मकथा के इस प्रसंग में भी सोनकर ने अपने जीवन की एक सत्य घटना के माध्यम से यह बताया है कि किस प्रकार गाँव में चल रही अखण्ड रामायण-पाठ में उनके साथ पढ़ने वाले कुछ उदार सचानों के लड़के जब उसे अपने साथ रामायण-पाठ के लिए बैठा लेते हैं, तो अपने बच्चों की इच्छा का अपमान करता शिवभजन अवस्थी सोनकर के साथ गाली-गलौज करता है। गुस्से में सोनकर भी उसके मुँह पर रामायण फेंककर उसके हवा में पन्ने उड़ाते चले आते हैं--अपने नए रामचरित मानस और अखण्ड पाठ करने जो इनसे कहीं ज्यादा मानवतावादी, तर्काधारित और वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न हैं--बुद्ध, संत रैदास, कबीर औश्र त्रिकालदर्शी व्याधऋषि और डॉ. बाबा साहेब अम्बेडक की गाथाएँ।

दलित सदियों से धन-धरती से वंचित रहे हैं। किसी हिरण्याक्ष और बलि ने यदि उसे अपने कब्ज़े में लेकर शासन करना के प्रयास किया भी तो उन्हें किसी न किसी सवर्ण वराह या वामन अवश्य छलपूर्वक नष्ट करता चला आया है। अपनी भूमि न होने और सवर्णों की कब्ज़ाई ज़मीन पर वास करते दलितों ने सदियों से ही सवर्णों के द्वारा दी जाने वाली क्रूर यातनाएँ सही हैं। और विद्रोह करने पर सामाजिक प्रतिबंधों की मार खाई है।...

'गाँव में ब्राह्मणों द्वारा मुनादी (ब्राह्मणों के खेतों में जाना बंद) प्रंसग में आत्मकथाकार ने दर्शाया है कि अपनी गुलामी और गुलाम प्रथा के विरूद्ध विद्रोह करने से सोनकर गाँव के सारे सवर्णों की आँख की किरकिरी बन गए थे। परिणामस्वरूप सोनकर की बात और विचारों को ग्रहण करने वाले उनके परिजन और बिरादरी वालों को सबक सिखाने के लिए गाँव के ब्राह्मण यह फतवा जारी कर देते हैं कि कोई भी दलित ब्राह्मणों के खेतों से होकर नहीं गुज़रेगा, कोई दलित महिला उनके खेतों में दिशा-मैदान के लिए नहीं जाये, वरना वह हर तरह का अपमान सहने के लिए तैयार रहे।

नई शिक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों के समाज में धीरे-धीरे पैठ बनाने से समाज के दलित-पिछड़ों में भी अपने अधिकारों के प्रति कर्तव्यबोध जागा है। अब सवर्णीय अत्याचारों के अधिकांशतः चुपचाप सहन नहीं कर लिया जाता। तमाम सेंसरशिप के बावजूद थाने में रिर्पोटें पहुँचती है और अखबार में खबर भी छपती हैं। समझदार पिछड़े भी ब्राह्मणी अत्याचारों को सुनते-समझते हुए दलितों के पक्ष में खड़े होकर मदद करने लगे हैं। इसका प्रमाण है -'ब्राह्मणों के ख़िलाफ जवाबी मुनादी' प्रसंग में मिलता है जब ब्राह्मण दलितों को अपने खेतों से निकलने पर प्रतिबंध लगाते हैं, तो इसमें जबाब में

हीरा के प्रयासों से पिछड़े ज़मीनदार शिव मोहन चाचा ब्राह्मणों की इस अनुचित कार्यवाही पर लगाम लगाते हुए वैसा ही आदेश जारी करवाकर, ईंट का जबाब पत्थर से देते हैं।

प्रेमचंद ने अपनी अमर कहानी 'सवा सेर गेहूँ' के अंत में कुछ इस तरह कहा है कि यह मात्र कहानी न होकर भारतीय समाज का जिन्दा यर्थाथ है। संभवतः कभी न मरने वाला सच। 'गाँव का सूदखोर ब्राह्मण शिवदत्त मिश्र'(डेढ़ पसेरी धान) प्रसंग इसी सच्चाई को उघाड़ता है, जिसमें लेखक के दादा ने शिवदत्त मिश्र से कभी डेढ़ पसेरी धान लिए थे जिसके एक साल बाद वह उनसे बारह मन धान वसूल लेने के बाद भी उनकी दुधारू भैंस भी घर के दरवाजे से खोलने का प्रयास करता है।

'हरीशंकर अवस्थी का बंधक भदैंया चमार' बाबा साहब ने एक जगह कहा था कि 'जब भी दलित और सवर्ण आमने सामने होते हैं तो वे दो व्यक्ति नहीं दो देश मिल रहे होते हैं।' मेरे हिसाब से यदि इसमें एक बात और भी जोड़ दी जाये तो वे मालिक और गुलाम की तरह भी आमने-सामने होते हैं। सवर्णों का दलितों के प्रति एक अधिकारपूर्ण तानाशाह रवैया भी उसमें झलकता है। यदि उस दलित की स्थिति कुछ निर्धन की बनती है तब तो यह सच्चाई पूर्ण रूप से हमारे सामने प्रकट हो जाती है।...आज भी अधिकांश गाँवों में दलितों के प्रति अभद्रता अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने वाले सवर्ण की भाषा किसी दलित के प्रति तू -तड़ाक वाली ही होती है। 'नागफनी' का यह प्रसंग दलितों के प्रति सवर्णों के अभद्र व्यवहार को तो दर्शाता ही है, साथ ही स्वतंत्र भारत में सवर्णों की कृपा से बची रह गई बँधुआगीरी के शेष बचे होने के भी प्रमाण प्रस्तुत करता है। भदइयाँ चमार पर हरीशंकर अवस्थी के सवर्णीय अत्याचारों हृदयविदारक घटना हमें रोमन साम्राज्य के ग्लेडियेटरों के साथ होने वाले अमानवीय अत्याचारों की स्मृति जिन्दा ही नहीं करती बल्कि हमारे देश की इस तथाकथित महान संस्कृति और व्यवस्था के प्रति घृणा जगाने के साथ-साथ उसे नेस्तनाबूँद कर डालने के भाव भी मन में पैदा करती है।

'मैं डॉन किग्जोट नहीं बना' यह प्रसंग पिछली घटना का ही उपसंहार है, जो बताता है कि सदियों से धन-धरती से महरूम दलितों को अपने अधिक और सुरक्षा प्राप्त करने के लिए कितनी जद्दोजहद करनी पड़ती है। कितने प्रयास विफल होते हैं दलितों के सवर्णों से अपने लोगों की मुक्ति दिलाने में। लेकिन प्रसंग के अंत में सोनकर द्वारा हरीशंकर अवस्थी के घर से भदइयाँ को छुड़वाना, थाने में रिर्पोट डलवाना और पुलिस द्वारा हरीशंकर अवस्थी का गिरफ्तार करके ले जाने वाला सकारात्मक पक्ष हम दलितों की लोकतंत्र में आस्था जगता है।

'इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम.ए. डिग्री रो पड़ी', यह प्रसंग लेखक के अपने छोटे भाई अजय सम्बन्धित है जो कि इस देश के सवर्ण और श्रेष्ठतावादी वर्ग की इस ओछी मानसिकता को उजागर करता है, जो आज भी दलितों के शैक्षणिक विकास को अपनी बाधा मानते हैं। इलहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद आई.ए. एस प्रतियोगिता परीक्षा देकर घर लौटे अजय से गाँव के हरीशंकर अवस्थी द्वारा कंडे ढुलवाना इसी घृणित मानसिकता की दर्द कथा है।

'करिया पंडित, गोरा चमार बहुत खतरनाक होता है' भले ही हम राष्ट्रीय गीतों में हम 'गोरे काले का भेद नहीं हर दिल से हमारा नाता है' गा-गाकर इस बात को झुठलाते रहें है कि भारत में स्थापित वर्णव्यवस्था में रंगभेद नहीं है। पर सच्चाई यही है कि वर्ण का भी अर्थ रंग ही है और गौर वर्णी आर्यों और काले रंग के द्रविड़ों और अन्य आदिवासियों के बीच भेदकरने के लिए कहीं वर्णव्यवस्था का आरंभ न हुआ हो? इसी लिए तो गाँवों के तथाकथित सवर्णों में प्रचलित 'करिया वामन गोर चमार इनके संग न उतरो पार' जैसी कहावतें प्रचलित हुई हैं, क्योंकि वर्णव्यवस्था के अनुसार दोनों हीं वर्णसंकर हैं। इस प्रसंग में सोनकर ने अपने जीवन की कुछ घटनाओं के आधार पर वर्ण के आधार पर गाँव-कस्बों में होने वाले भेदभाव पर जमकर कटाक्ष किया है।

वर्णव्यवस्था में व्यक्ति के बँटवारों के साथ उसके जीवन में आल्हादकारी क्षण उत्पन्न करने वाले तीज-त्यौहारों का भी जाति और वर्णव्यवस्था के आधार पर विभाजन है। सबसे निचले क्रम पर शूद्रों के त्यौहार के रूप में 'होली' का पर्व है। इस पर्व को भी सवर्णों ने अपनी विकृत मानसिकता के तहत अश्लील और दलित स्त्री-पुरूषों के अपमान का पर्व बना डाला है। 'होली का बल्ला तरे-तरे चमारिन चो...परे परे', 'जननायक अम्बेडकर के संघर्ष ने मुझे संघर्ष करने की प्रेरण दी' 'सवर्ण अपनी औरतों को नंगा होते देख हतप्रभ' प्रसंगों में सोनकर ने अपने गाँव में होलिका दहन के समय गाँव के सवर्णों द्वारा सदियों से दलित स्त्रियों के अपमान के प्रतीक अश्लील कबीरा होली गीतों के प्रति अपनी असहमति जताते हुए, संघर्ष के द्वारा ईंट का जबाव पत्थर से देते हुए इस प्रथा पर लगाम कसने का वर्णन किया है।

'गाँव का तिवारी परिवार' इस प्रसंग में लेखक ने बताया है कि देहातों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि देहात का आदमी बहुत सीधा-साधा होता है। अतिथियों का बहुत सत्कार करता है। उपकार के बदले उपकार करता है। लेकिन लेखक ने इस बात को नकारते हुए अपने गाँव के तिवारी परिवार का उदाहरण देते बताया है कि वह परिवार बिल्कुल सीधा साधा और दलितों पर अत्याचार न करने वाला था, लेकिन उसी का लड़का कानपुर में जिस सेठ के यहाँ मुनीमगीरी करता था उसी के अपने घर अतिथि बन कर आने पर उसकी हत्या कर रूपये हड़प लेता है।

'गाँव में जादूगरों का कमाल' मनोरंजन अमीर-गरीब हर आदमी की आवश्यता है, वह व्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करता है। लेकिन सदियों से पेट की खातिर साहसपूर्ण कार्यों के द्वारा समाज क मनोरंजन करने वाले दलित जादूगर और कलावंतों को कभी सामाजिक सम्मान और उसका उचित मूल्य नहीं मिला, उनके करतबों से अपना मनोरंजन करने वाली तथाकथित उच्च जातियों ने उन्हें हेय दृष्टि से देखता है और उनका अपमान करने से नहीं चूकता, यह प्रसंग उनकी इसी मानसिकता को दर्शाता है जब गाँव में जादू का खेल दिखाने आये जादूगरों को गाँव का ब्राह्मण परिवार उन्हें उनकी कलाबाजियों का सम्मान न करते हुए मुफ्त में खेल देखकर भगा देता है।

दलितों की ही तरह सवर्णों ने स्त्रियों पर भी सामाजिक निर्योग्यताओं को लादकर उन्हें गुलामी और पाबंदियों भरा जीवन जीने पर मज़बूर किया है। स्त्रियों की बेवफ़ाई के किस्से उनकी धोखेबाजियाँ नहीं अपनी गुलामी से मुक्ति की गाथाएँ हैं जो समाज में उनके ऊपर एक लांछन के रूप में देखी और सुनी जाती हैं- 'दो ब्राह्मण खूबसूरत लड़कियों के दो रात गायब रहने

का रहस्य' पर आधारित आत्मकथा का यह प्रसंग इसी बात का सच बयान करता है।

दलित कहीं भी सम्मानीय नहीं हैं यह बात इस आत्मकथा में बार-बार आई है, जो हमारे समाज का नंगा सच है। 'गाँव के राष्ट्रभक्त तिवारी व खटिक परिवार' प्रंसग भी इसी बात को दोहरता है कि सोनकर के चाचा जो कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे फिर भी गाँव के सवर्ण उनका अपमान करने से बाज़ नहीं आते थे।

वर्णव्यवस्था में चौथे पायदान पर शूद्रों की घृणित उपाधि से विभूषित पिछड़े सदियों से दलितों के विरूद्ध सवर्णों के मोहरे रहे हैं। सवर्णों ने दलितों पर खुद अत्याचार न कर पिछड़ों से इसकी भरपाई कराई है। 'ब्राह्मणों ने पिछड़ी जाति के इन्द्रजीत सिंह को खूँखार गुँडा बनाया' आत्मकथा का यह प्रसंग भी इसी सच्चाई को बयान करता है कि किस तरह गाँव का पिछड़ा युवक लाखन सिंह ब्राह्मण युवकों के साथ उनके इशारे पर गाँव की दलित-पिछड़ी युवतियों के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता था।

बुरे का अंत बुरा ही होता है-'नौटंकी के वक्त बलात्कार और गुँडे लाखनसिंह की मौत' प्रसंग में सोनकर ने बताया है कि गाँव में किस तरह उस पिछड़े युवक लाखन सिंह की ज्यादतियाँ बढ़ गईं थी कि वह गाँव की नवविवाहिताओं को ही अपनी हवस का शिकार बनाने लगा और उसकी यही ज्यादतियाँ उसकी मौत का कारण बनी थीं।

'हफीज मियाँ' और 'हफीज मियाँ के छोटे भाई का कत्ल' आत्मकथा के दो अगले गौण प्रसंग हैं जिसमें गाँव के एक आत्मविश्वासी व्यक्ति 'हफीज़ मिया' के आत्मविश्वास का वर्णन करते हुए गाँव में दलितों के साथ-साथ मुस्लिमों के संग होने वाले अत्याचारों को भी मार्मिकता के साथ उजागर किया गया है।

'सूम का माल शैतान खाये' इस कहावत को चरितार्थ करता आत्मकथा का-'गुन्दा महतो' प्रसंग अपने आप में बड़ा ही रोचक है जिसमें गाँव का एक लोभी व्यक्ति गुंदा महतों घर में लोभ से जोड़ी कमाई गाँव के एक भुर्जी के यहाँ धरोहर रूप में रखता है और वह भुर्जी उसके उस माल को ही हड़प कर जाता है। लेकिन इसी से संबन्धित आत्मकथा का दूसरा प्रसंग-'गाँव का बेईमान भुर्जी' में लेखक ने उपदेशात्मक शैली और आस्थावादी भाषा में यह बताया है कि गुन्दा महतो के माल को हड़पने वाले बेईमान भुर्जी के पास भी वह माल नहीं रहता और उसे उसकी बहू के माध्यम से उसके मायके का नौकर/प्रेमी उसे पार कर देता है।

आस्था और अंधविश्वास सदियों से समाज जीवित हैं और मनुष्य का उससे हमेशा वास्ता पड़ता रहा है। आस्था जहाँ व्यक्ति को उसके लक्ष्य से भटकने से बचाती है, तो अंधविश्वास उसके मार्ग को ही अवरुद्ध कर देता है-'चारपाई के ऊपर एक काला सर्प चढ़कर मेरे सर के नजदीक से गुजरा' प्रसंग में भी लेखक ने अपने जीवन की एक सत्य घटना के माध्यम से बताया है कि साँप कभी चारपाई पर नहीं चढ़ता यह अंधविश्वास है, क्योंकि उसके साथ ऐसा हो चुका है।

'कोरिया इंटर कॉलेज, कानपुर देहात में बांग्लादेश आजाद होने का जश्न', 'प्रो. एम. एम. दास का अनोखा प्रश्न, मेरा अनोखा जवाब', 'मलिन बस्ती के 60 बच्चों को पढ़ाना', 'बिन्दकी से सबसे ज्यादा खटिक आई.एस.एस व पी.सी.एस बने' आत्मकथा के कुछ अन्य प्रसंग हैं जिनमें लेखक ने अपने छात्र जीवन की स्मृतियों का पाठकों के साथ साझा किया है।

'आर. डी. सोनकर को ब्राह्मणों ने गाड़ी से नीचे उतारा', 'आर. डी. सोनकर के खिलाफ षड़यंत्र', 'आर.डी. सोनकर द्वारा पाठ्यक्रमों में दलित साहित्य शामिल करना', 'खटिक व्याध ऋषि को प्रकाश में लाने वाले आर.डी. सोनकर', 'मेरे प्रशासनिक सेवाओं के साक्षात्कार' प्रसंगों में लेखक ने अपनी तहसील बिन्दकी के प्रसिद्ध आई. ए. एस. अधिकारी आर.डी. सोनकर के जीवन की कुछ दलित उत्पीड़न से संबन्धित घटनाओं और उपब्धियों का जिक्र किया है, जिनमें उनके एक उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनने पर भी गाँव के सवर्ण उनसे असहिष्णु व्यवहार करते हैं।

'आई. ए. एस. कोचिंग में चयन' और 'पी.सी.एस. का साक्षात्कार' प्रसंगों में भी लेखक ने अपने शासकीय सेवाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन से पहले विभिन्न चरणों से गुजरने की कहानी है।

'साहसी दलित बांकेलाल' नागफनी में एक ऐसे दलित की विजय गाथा है जो सवर्णीय अत्याचारों के आगे न झुककर उसका डटकर मुकाबला करता हुआ अत्याचारियों को गाँव प्रधान नसीमखान के सहयोग से परास्त करने में सफल होता क्रांति की एक नई गाथा लिखता है, जिसके बारे में लेखक का विचार है कि '' बांकेलाल की विजय यह संकेत दे रही थी कि भविष्य में शोषण, अत्याचार, छुआछूत, गैर-बराबरी के विरुद्ध दलित और अल्पसंख्यकों द्वारा ऐसे ही युद्ध लड़े जाएँगे। गैर-दलित जो दलितों पर अमानवीय व्यवहार करेंगे। दलित महिलाओं को अपमानित करेंगे। उनको भविष्य में ऐसी ही हार का मुँह देखना पड़ेगा।''(नागफनी पृ.109)

'प्रत्येक दिन केवल एक बार रात्रि में भोजन ग्रहण' में लेखक की इस देश के दलित-शोषित आम आदमी के प्रति निष्ठा और उनके प्रति उसकी गहरी संवेदनशीलता को दर्शाता है, जिसके तहत वह पिछले चौबीस साल से दिन में एक बार रात्रि में भोजन ग्रहण करता चला आ रहा है।

नई शिक्षा बाजारबाद के चलते एक उत्पादक वर्ग का निर्माण करने में तो सफल रही है, किन्तु एक वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न मनुष्य बनाने में अभी भी लगातार चूकी हुई है। आज भी तकनीकी और गैर तकनीकी शिक्षा में पारंगत शहरी और ग्रामीण तबका अंधविश्वास और रूढ़ियों के संजाल में उलझा हुआ है-'जातिवाद की जड़ें पढ़े-लिखे शहरी गैर दलितों में फैली हैं' लेखक न इस इसी प्रसंग को उठाया है कि उसे इलाहाबाद में एल. डी. सी. की नौकरी करते हुए आई.ए.एस की परीक्षा के लिए वहाँ के संकीर्ण मानसिकतावादी बड़े बाबू सक्सेना ने उनकी छुट्टी ग्रांट नहीं होने दी थी जो लेखक अपने जीवन में आई. ए. एस. न बन पाने की टीस पहुँचाती रहती है।

इसी तरह लेखक ने 'पढ़े-लिखे गैर-दलित बुद्धिजीवियों द्वारा दलित बुद्धिजीवियों का उत्पीड़न' में अपने दलित जीवन के ज़ख्मों को उघाड़ते हुए लिखा है कि बुद्धिजीवी जो जाति और वर्ण से ऊपर विश्वकल्याण को ध्यान में रखकर अपना लेखन कार्य करते हैं; लेकिन गैरदलित बुद्धिजीवी अपने साथ ज्ञानी होने का दंभ भरते हुए भी जातिवाद के संकीर्ण दायरे से अपने को मुक्त नहीं कर सके हैं। अपने साथ हुए इसी तरह के दुर्व्यवहार के बारे में लिखा है कि-''शहरों के पढ़े-लिखे सवर्णों में अब छुआछूत नहीं दिखाई पड़ती है। हाँ, उनके विचारों में परिवर्तन आया है। वे अब दलितों के साथ

बैठकर एक टेबल पर खाना खाते हैं, शराब पीते हैं। अब पहिचानना बहुत मुश्किल है कि कौन सवर्ण है और कौन दलित। लेकिन जितनी तेजी से दलित तरक्की करते जा रहे हैं, बुद्धिजीवी सवर्ण अपने विचारों से उतने ही जातिवादी, शोषणकर्ता और दलितों का भविष्य बिगाड़ने वाले बनते जा रहे हैं।'' (नागफनी पृ.14)

'मंचीय कवि', 'आज के द्रोणाचार्य' 'आज का एकलव्य', 'दिल्ली के पुराने किले में लेखन' इत्यादि आत्मकथा के अगले प्रसंग लेखक के साथ उसके सवर्ण साहित्य मित्रों और गुरूजनों द्वार किये दुर्व्यवहार और अपने लेखन की संघर्षशीलता की पड़ताल करते दिखाई देते हैं।

'अजय नावरिया से परिचय', 'पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह द्वारा नाट्य संग्रह 'रहस्य' का लोकापर्ण', 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा डॉ. अम्बेडकर विशिष्ट सम्मान', प्रसंग में लेखक ने हिन्दी के युवा कथाकार अजय नावरिया से अपने आत्मीय परिचय और मित्रता का जिक्र करते हुए अपने नाट्य संग्रह रहस्य का भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा विमोचन और लेखक को भारतीय दलित साहित्य आकादमी द्वारा 1999 में दिये गये डॉ. अम्बेडकर विशिष्ट सम्मान का वर्णन किया है।

'दलित साहित्य व सांस्कृतिक अकादमी भारत का जन्म' 'नई दलित अकादमी द्वारा ऐतिहासिक 'दलित-मंथन' प्रसंगों में आत्मकथाकार ने दलित समाज में पैदा हो रहे नए-नए मठाधीशों की जड़ता और उनके तानाशाह रवैये से तंग आकर उसी समकक्ष खड़ी गई एक नई संस्था 'दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी भारत' के प्रस्फुटन की बात करते हुए इसी संस्था के मध्य हुए ऐतिहासिक 'दलित मंथन' कार्यक्रम की सफलताओं का भी वर्णन किया है।

दलित साहित्य का लेखक कौन? केवल दलित या गैर दलित भी इस प्रसंग पर साहित्य जगत में छिड़े घमासान के बीच दलित साहित्यकारों के बीच मतैक्य के अभाव में हुए दो फाड़ के बारे में लेखक ने अपनी स्थिति का बयान-'नरम-गरम दलित लेखक' प्रसंग में किया है-''मेरे जैसे नरम पंथी दलित लेखकों का कहना है-''जो आदमी झुग्गी-झोपड़ियों में रहता है। वह स्वयं सवर्णों द्वारा सताया गया है। अपने लड़के-लड़कियों की शादी दलितों के साथ कारता है। डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा को मानता है। धार्मिक प्रतीकों को नकारता है। वह अगर दलित साहित्य लिखता है तो उसके दलित सहित्यकार होने के बारे में विचार किया जा सकता है।(नागफनी पृ.139)

'महानता मुश्किल से मिलती है, जाती जल्दी है' और 'जूठन' का सामाजिक प्रभाव' आत्मकथा के अतिंम दो प्रसंग लेखक ने हिन्दी के प्रसिद्ध दलित साहित्यकार श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि के लेखकीय व्यवहार में आये परिवर्तन और उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा 'जूठन' के बारे में आलोचनात्मक टिप्पणियाँ हैं। यह टिप्पणियाँ कितनी ही सार्थक हों पर एक कृतिकार को इससे तब बचना चाहिए, जब वह ठीक उसी के समकक्ष रचना करने जा रहा हो। इससे तुलना करने वाला और पाठक दोनों ही संदेह में चले जाते हैं कि कही लेखक ने यह सब अपनी मान बड़ाई और दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तो नहीं किया? ...इस रूप में यह प्रसंग, एक मजबूत आत्मकथा की सबसे कमज़ोर कड़ी हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'नागफनी' अपने आप में एक क्रांतिकारी दलित आत्मकथा है। उसमें आत्मकथा में कहीं-कहीं लेखक अतिरेक और जल्दबाजी का शिकार हुआ है और भाषायी शिल्प में भी शिथिलता बरती गई है, लेकिन उसकी क्रांतिकारी विचारधारा आखिरकार उसके ये ऐब दबा ही देती है। कंबल भारती के शब्दों में कहूँ तो-''नागफनी समाज केन्द्रित आत्मकथा है, यह समाज पर हुए अत्याचारों की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है। आदमियों को आन्दोलित करती है एवं अत्याचार उत्पीड़न से मुक्ति का रास्ता दिखाती है।''(नागफनी पृ. 3)

राजेन्द्र यादव ने भी इसकी सामाजिक सौद्देश्यता को स्वीकारते हुए लिखा है -''अभी तक जितनी भी दलित आत्मकथाएँ आई हैं उनमें 'हाय मार डाला' की चीखें हैं, 'नागफनी' में हाय मार डाला की चीख सुनाई नहीं पड़ती है, लेकिन नागफनी में संघर्ष है। जिसको अंग्रेजी भाषा में 'साइलेंट रेव्यूलूशन' कहा जाता है।'' (हंस सितंबर 2006 सम्पादकीय)

मेरे अप्रकाशित शोध : "आत्मकथाओं का वैश्विक परिदृश्य और दलित आत्मकथाएँ-2008" से। यहाँ उपस्थित प्रकाशक बन्धु इसे छापने का बीड़ा उठा सकते हैं !

मानवता और परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति-सुअरदान

-डॉ.गायत्रीदेवी जे. लालवानी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, श्री कृष्ण प्रणामी आर्टस कॉलेज,
दाहोद मो.7984498390

रूपनारायण सोनकर जी प्रसिद्ध दलित साहित्यकार हैं। वे अपने साहित्य के माध्यम से दलित, शोषित, पीड़ित, अल्पसंख्यक और दीन-हीन समाज के जीवन के विभिन्न पहलूओं को समाज के समक्ष रखते हैं। भारतीय समाज की विभिन्न कुरीतियों, कुप्रथाओं, सामंतवाद, ब्राह्मणवाद, सवर्णो की मानसिकता उनके षड़यंत्र, जातिवाद, धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास और सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश करते हैं। वे स्वतंत्रता, समता, बंधुता और परिवर्तन हेतु निरंतर प्रयासरत रहे हैं।

हिन्दी दलित साहित्यकार और चिंतक रूपनारायण सोनकर जी का दूसरा उपन्यास 'सूअरदान' है। दलित जीवन की यातनाओं को सोनकर जी ने स्वयं देखा–भोगा है। दलित समाज की पीड़ा, अस्मिता, जाति–प्रथा, गरीबी, अपमान, दु:ख–दर्द आदि ने उन्हें कदम–कदम पर सताया है। अपने समाज के उज्जवल भविष्य के लिए उन्होंने अपने जीवन में काफी विरोध–विद्रोह भी किया। उनके जीवन की समस्याओ से वे कैसे लड़े है? कैसे संगठित होकर उन्होंने अपने समाज की प्रगति, चेतना के लिए कार्य किया यह सब उनकी आत्मकथा 'नागफनी' में देखने को मिलता है। उनका 'सूअरदान' उपन्यास इस धरती पर मानवता की धरोहर लेकर आगे बढ़ता है और सभी जगह मानवीयता स्थापित भी करता है।

हिन्दी साहित्य जगत में इस उपन्यास को प्रेमचन्द के गोदान उपन्यास के समकक्ष माना गया है। इस उपन्यास के बारे में कंवल भारती जी लिखते हैं- "गौ और सूअर ये दो पशु हैं, दोनों पाले जाते हैं और दोनों ही आर्थिक लाभ देते हैं। पर हिंदू संस्कृति ने गौ का संबंध ब्राह्मण से जोड़ दिया है और सुअर को दलितों से। क्या इसे किसी भी तरह से उचित कहा जा सकता है? गाय किसे दान की जाती है ब्राह्मण को? किस उद्देश्य के लिए? उत्तर है दु:खों की वैतरणी पार करने के लिये। यह एक ऐसा मिथक है, जिसका कोई तार्किक आधार समझ में नहीं आता। हिंदू समाज में गौ से जितनी धारणाएं हैं। सब मिथक हैं। मिथक को तोड़ने का ख्याल सोनकर को आया। सोनकर को छोड़कर किसी अन्य रचनाकार लेखक को मिथक तोड़ने का ख्याल नहीं आया। गौदान के लिये सूअरदान की कल्पना भी सोनकर की अपनी कल्पना है और बड़ी मौलिक कल्पना है। यदि गौदान एक मिथक है, तो सूअरदान भी मिथक है। लोहे को लोहा काटता है, इस ख्याल के साथ सोनकर ने सूअरदान का मिथक गढ़ा लेकिन सोनकर ने इसे सिर्फ मिथक नहीं रहने दिया है, बल्कि उसे हकीकत में भी मूर्तरूप दे दिया है"1 दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी, देहरादून में चर्चित उपन्यास 'सूअरदान' पर संगोष्ठी के सुअवसर पर सुविख्यात युवा दलित साहित्यकार डॉ. अजय नावरिया ने कहा था कि – "मैंनें दलित लेखक रूपनारायण सोनकर के बारे में पहले ही कहा था कि हो सकता है कुछ समय बाद सोनकर दलितों का प्रेमचंद बन जाए। सोनकर ने कहानी कफन, सद्गति, दूध का दाम व उपन्यास 'सूअरदान' लिखकर मेरे कथन को मजबूती प्रदान की है। मैं पहले 'सूअरदान' को विष्ठा खानेवाला जानवर मानता था लेकिन 'सूअरदान' उपन्यास पढ़ने के बाद पता चला कि, सूअर शकरकन्दी भी खाते हैं। मेरी इस जानवर के प्रति धारणा बदल गई। 'सूअरदान' शीर्षक को लेकर गैर दलित साहित्यकारों में हिच–किचाहट देखी जा सकती है लेकिन उपन्यास पढ़ने के बाद उनकी हिच–किचाहट दूर हो जाती है क्योंकि यह उपन्यास सर्वजन हिताय की बात कर करता है। रूपनारायण सोनकर ने एक नया शब्द हताशावाद गढ़ा है। जो नक्सलवाद और माओवाद के नाम पर की जा रही मारकाट, माओवाद के हल का सशक्त समाधान प्रस्तुत किया है। यदि उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर दिया जाय तो खूनी जंग समाप्त हो सकती है। जो धन उनको रोकने में खर्च किया जाता है यदि उनके विकास में खर्च किया जाये तो यह समस्या जड़ से समाप्त हो सकती है। 'सूअरदान' का यह सुझाव विचारणीय है।"2 रूपनारायण सोनकर लिखते है– "अपने बच्चों का भविष्य सुधारना। यह उदेश्य हर नागरिक का होता है। जिसको विकास करने का अवसर नहीं प्राप्त होने दिया जाता है। इसीलिए वे लोग हिंसा का रास्ता अपनाते हैं। जो पैसा सरकार उनको दबाने में खर्च करती है। यदि उसका एक बटा तीन भाग उसके विकास करने में खर्च कर दिया जाए, तो ऐसे लोग हिंसा का रास्ता छोड़ देंगे।"3 देश में शांति बनाये रखकर, भाईचारा कायम रखकर, देश का उन्नत विकास हो सकता है।

'सूअरदान' उपन्यास को लेखक ने कुल दस विभागों में विभाजित किया है।

'सूअरदान' उपन्यास का केन्द्रबिन्दु "सुअरफार्म–पिगरीफार्म" है। इसी पिगरीफार्म के माध्यम से पूरे ही गाँव को सुखी किया जाता है। यही पिगरी फार्म गाँव के नवयुवकों के रोजगार की आशा है। भारत के ७० प्रतिशत नागरिक आज भी गाँव में रहते है। गाँवों की दशा का वर्णन करते हुये सोनकर जी लिखते है–"सबसे ज्यादा परेशानी भूमिहीन मजदूरों को होती है। वे बेचारे एक–एक रोटी के लिए तड़पते हैं। किसानों के खेतों में मजदूरी करते है। शादी–ब्याह, तीज–त्यौहार के लिए वे किसानों के कर्ज पर निर्भर रहते हैं।"4

वर्तमान भूमिहीन मजदूरों के बारे में वे आगे लिखते हैं– "अब मजदूर बाहर जाकर ईटों के भट्टों में काम करते हैं। कुछ मजदूर बड़े–बड़े शहरों में जाते हैं, जहाँ पर चौबीस–चौबीस माले या उससे अधिक माले के अपार्टमेन्ट बनते हैं। अपनी दयनीय स्थिति में सुधार कर लेते हैं। हवा में तैरते हैं और वायुयान की तरह जमीन पर गिरते भी हैं। अपार्टमेन्ट का मालिक उनको उचित मुआवजा भी नहीं देता।"5

ईट के भट्ठों में काम करने वाले मजदूर रोज कमा कर रोज खाने वाले मजदूर थे। न उनके पास खेती है, न कोई व्यवसाय और ना ही रहने को छत। ठेकेदार जो इन मजदूरों को काम पर रखते हैं, इन मजदूरों की बेटियों और स्त्रियों का यौन शोषण भी करते हैं। धरमू पासी और उसकी पत्नी सन्नो जैसे असंख्य मजदूर ठेकेदार जयंत सिंह जैसे लोगों का शिकार बनते हैं। ठेकेदार जयंत सिंह मजदूरों को कम वेतन देता है, गुंडों द्वारा उन मजदूरों की निगरानी रखवाता है कि, कहीं कोई मजदूर उसके शोषण से तंग आकर बगावत ना कर बैठे। सन्नो और उसका पति भागने की कोशिश करते हैं। पर गुंडे उन्हें पकड़ लेते हैं। जयंत सिंह सन्नो से कहता है-"तू साली बहुत पटर-पटर बोलती है। चल मेरे कमरे में" सन्नो निर्भीकता से उसका सामना करते हुए कहती है- "तू क्या ले जायेगा। तेरे में हिम्मत है। तेरे मूंछे न उखाड़ लूं तो मेरा नाम सन्नो नहीं"6 जयंत सिंह सन्नो का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर घसीटता है। वहां उपस्थित किसी में भी हिम्मत नहीं है कि, वे सन्नो को ठेकेदार से बचा सके।

गाँवों की उन्नति होने पर ही देश की उन्नति हो सकती है। यह बात सर्वथा उचित है। लेखक लिखते है–"देश की बुनियाद गाँवों की मजबूत बुनियाद पर आधारित होती है। आज भी लगभग गाँवों में ७८ प्रतिशत लोग निवास करते है। यदि हम देश को वैभवशाली बनाना चाहते हैं तो हमें गाँवों को वैभवशाली बनाना होगा। इस देश की समृद्धि केवल बड़े–बड़े महानगरों की समृद्धि को देखकर नहीं आँकी जा सकती।"7

देश में जो असमानता की खाई है जहाँ एक ओर मात्र गरीबी है दूसरी ओर आलीशान महल हैं। लेखक चाहते है कि, यह असामनता, मानव से मानव की दूरी समाप्त हो। वे 'सूअरदान' उपन्यास में लिखते हैं –"यदि हमारे जैसे लोग अपना–अपना स्वार्थ त्याग कर देश निर्माण में सहयोग देने लगे तो हमारे देश का कोई भी आदमी भूखा, नंगा और घर विहिन नहीं रहेगा। हम बड़ी–बड़ी लग्जरी गाड़ियों में चलते है। वातानूकूलित घरों मे रहते हैं। स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं। बेशकिंमती कपड़े पहनते हैं। यदि हम लोग अपने बजट से थोड़ा निकालकर गरीबों के कल्याण में लगा दें तो देश में इतनी अधिक गरीबी नहीं रहेगी। देश का हर प्राणी खुशहाल रहेगा। देश में शांति रहेगी। महल वालों की भी जिन्दगी सुरक्षित रहेगी। यदि धनाढ़य लोग हताश व बेहद गरीब लोगों की मदद करेंगे तो वे लोग स्वंय हताश नहीं होंगे। सुख–चैन की नींद सोएंगे। तब देश चैन की सांस ले सकता है।"8

'सूअरदान' उपन्यास का पिगरी फार्म गाँव के मन्दिर से चौबीस मीटर की दूरी पर था। इस सूअरफार्म के चार पार्टनर है जो इस पिगरी फार्म के कर्ता–धर्ता भी है। जिनके लिए लेखक लिखते है–"वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते थे जो अशिक्षित, शिक्षित बेरोजगारों को नौकरी दे सकें। विशेषकर ग्रामीण नव–युवकों को। गांव में एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे जहाँ प्यार, समानता और भाईचारा हो। गाँवों की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फैंकना चाहते थे। सदियों से समाज में चली आ रही अंध–धार्मिकता को उखाड़ फैंकना चाहते थे। जातिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे।"9 जिनमें रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, सलवंत यादव, घसीटें चमार थे। इस पिगरी फार्म में ये चारों पार्टनर गांव के निराश लोगों की निराशा को दूर करना चाहते थे। गाँव के लोगों को रोजगार दिलाने का कार्य, गरीबी हटाने का कार्य, शिक्षा के लिए गाँववासियों को प्रेरित करने का कार्य इन चारों समाज–सुधारकों का है। इन समाज सुधारकों के लिए लेखक लिखते हैं– "गाँवों का प्रशासन जब से गाँवों के ईमानदार लोगों के हाथों में आया गाँवों में तरक्की की बयार बहने लगी। कुछ गाँवों के कर्मठ प्रशासकों के पास जब से गाँवों के विकास की बागडोर आई है, गाँव चमकने लगे। शहरों की चमक गाँवों में भी पड़ने लगी"10

उपन्यास में हैरी सिल्वा नामक युवती इग्लैण्ड से आती है जो इस गाँव में गरीबों की मदद करना चाहती है। वह पिगरी फार्म के इन चारों अध्यक्षों के साथ मिलकर कार्य करती है। वह स्वंय भी दलितों, मजदूरों, किसानों, अन्य पिछड़े वर्गो से मिलकर उनकी समस्याओं को जानकर योग्य निवारण का प्रयास करती है। गरीब मजदूरों को आर्थिक रूप से सहायता भी करती है अशिक्षितों को शिक्षा का महत्व समझाकर अनपढ़ औरतों को पढ़ाने का कार्य भी करती है।

इन सभी समाज सुधारकों के पूर्व गांव में क्या हाल थे उसका भी वर्णन लेखक ने उपन्यास के द्वितीय खण्ड में किया है। गांव का प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, जूनियर हाईस्कूल के प्रधानाचार्य जितेंद्र यादव प्राइमरी हेल्प सेन्टर के जोरावर सिंह इन तीनों ने मिलकर गांव को नष्ट कर दिया है। उनके रहते सिंहासन खेड़ा गुण्डागर्दी, मारकाट और शोषण का पर्याय बन गया था। स्त्रियों का शोषण करना, उन्हें जबरन रखैल बनाकर रखना, भ्रष्टाचार करना, स्कूल फर्नीचर के पैसों से अपने घर सोफा लगवाना, गरीबों के हिस्से की दवाईयां बेच देना आदि गांव में चल रहे षड़यंत्रों का पर्दाफाश लेखक ने किया है। लेकिन समाज सुधारक के रूप में ये चारों पार्टनर गांव की दशा बदल देते हैं।

इन सभी समाज सुधारकों के कार्यो से हम देखते हैं। उपन्यास के अंत में पिगरी फार्म को सफलता मिलती है और पिगरी फार्म प्रसिद्ध हो जाता है। पिगरी फार्म के सभी पार्टनर धनवान हो जाते है और मानव कल्याण–यात्रा को अग्रसर करते हुए पूरे समाज के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। लेखक का लक्ष्य है कि, अगर देश का विकास करना है। देश के प्रत्येक नागरिक को सुखी करना है तो हमें इन चारों पार्टनर की तरह देश–सेवा में तन–मन–धन लगाना होगा। वे लिखते हैं– "जो व्यापारी अपनी उन्नति के साथ–साथ गरीबों की उन्नति की चिंता करते हैं, देश को समृद्धशाली बनाने के लिए रात–दिन मेहनत कर करते हैं। वे व्यापारी और उद्योगपति के रहते गरीबी ताण्डव नृत्य नहीं कर सकती है। बल्कि गरीबी देश व समाज से पूँछ दबाकर भाग जाती है। यदि गाँवों, कस्बों, जिलों, प्रदेशों व देश का व्यापारी या उद्योगपति एक–एक गाँव, एक–एक कस्बा, एक–एक जिल्ला, एक–एक प्रदेश से गरीबी दूर करने का बीड़ा उठा ले, तो देश से गरीबी दूर हो जाएगी।"11

संकटाप्रसाद चिकवा दलित है इसलिए दलित जीवन की समस्याओं को जानता है। अपने समाज के उत्थान के लिए वह गाँव का प्रधान भी बनता है। अब स्कूलों में दलित महिलायें खाना बनाती है। उच्च वर्ग के लोग इसका विरोध करते है लेकिन संकटाप्रसाद चिकवा दलितों, गरीबों का मुक्तिदाता है वह स्पष्ट कहता है–"स्कूल का भोजन दलित महिला ही बनाएगी। उसको हटाया नहीं जायेगा जो विरोध करेगा उस पर मुकदमा चलाया जायेगा, जिसकी कोई जमानत नहीं होगी।"12 इसप्रकार इस उपन्यास में लेखक सभी वर्गो–वर्णो के भेद से ऊपर उठकर एक समानाधिकार प्राप्त समाज की रचना करते हैं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि, देश को ऐसे युवावर्ग की आवश्यकता है, ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है, जो देश को परिवर्तन की दिशा में मोड़ सके। शिक्षित वर्ग के रतनलाल के उदाहरण के माध्यम से भी लेखक ने यह बताया है कि, गलती करने वाला व्यक्ति प्रायश्चित करने के बाद यदि साफ मन से देश की सेवा में लग जाए तो देश हर तरह से सुखी हो सकता है। बाबा साहब के विचारों से प्रेरणा लेकर रूपनारायण सोनकर जी समस्त समाज में स्वतंत्रता, समता, एकता एवं बंधुत्व से देश की नयी प्रतिमा विश्व को दिखाने में सफल हुये है।

संदर्भ:-

1. नागफनी पत्रिका- फरवरी-अप्रैल-2011 पृ-48
2. http://jansatt.wordpress.com/25/03/2011
3. 'सूअरदान',रूपनारायण सोनकर,सम्यक प्रकाशन,नई दिल्ली,पृ–156
4. वही,पृ–24
5. वही,पृ–24
6. वही,पृ–25
7. वही,पृ–50
8. वही,पृ–155
9. वही,पृ–15
10. वही,पृ–50
11. वही,पृ–67
12. वही,पृ–49

*****

'गोदान' के मिथ का विरोधी उपन्यास रूपनारायण सोनकर का उपन्यास 'सूअरदान'

-प्रो.ओम राज
255,भगवती पुरम, आर्य नगर,
काशीपुर (उत्तराखण्ड)-244713

चर्चित दलित साहित्यकार रूपनारायण सोनकर का 'डंक' के वाद दूसरा उपन्यास 'सूअरदान' ब्राहाम्णों द्वारा प्रचारित व पोषित हिन्दू कर्मकाण्डीय मिथ गोदान का विरोधी उपन्यास है सूअरदान शीर्षक पढ़ते ही कथा–सम्राट प्रेमचंद के गोदान उपन्यास की याद ताजा हो जाती है। गोदान ने रूपनारायण सोनकर को प्रेरित नहीं वरन् उत्तेजित किया है।

दलित साहित्य ने पूर्व रचित हिन्दी साहित्य को पुनर्मुल्यांकन हेतु नई आलोचना दृष्टि प्रदान की है। दलित आलोचकों ने सवर्ण साहित्यकारों द्वारा सहानुभूति के नाम पर रचित साहित्य को प्याज की तरह छिलका दर छिलका छील कर परखना प्रारम्भ किया है और इस प्रक्रिया के मध्य उन्हें कहीं कहीं दलित सहानुभूति के आवरण में लिपटी दलित विरोधी सवर्ण मानसिकता भी नजर आई है।

जोन गेल्सवर्दी ने अपने उपन्यास 'दा इअन आफ ट्रिंक्वोलिटी' में कैथरू नामक एक चरित्र का आश्रय लेकर एक उपन्यासकार के मिशन का रूपात्मक चित्रण किया है। फैलिसिटस नामक एक राजकुमार कैथरू के लिए यह कार्य निर्धारित करता है कि वह एक सार्वजनिक मार्ग पर लालटेन लेकर इधर–उधर घूमता रहे जिससे मार्ग पर चलने वालों को लालटेन की रोशनी में मार्ग के गड्ढे और गंदगी स्पष्ट रूप से दिखाई दे। प्रेमचंद ने उपन्यासकार के रूप में कैथरू की भूमिका का निर्वाह किया है। हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के सागर की सतह पर विशालकाय व्हेल की तरह पसरी हुई सामाजिक विसंगतियों, कुरूपताओं और विद्रुपतओं को उजागर किया है। जहां तक गोदान का प्रश्न है, गोदान में गोदान सांकेतिक है और वह भी उपन्यासकार के डीनोमेण्ट (उपसंहार) में शीर्षक का स्वाभाविक औचित्य अथवा कृत्रिम औचित्य सिद्ध करना उपन्यासकार का अपरिहार्य विवशता है। उपसंहार में गोदान अचानक टपका प्रतीत होता है। कथानक के विस्तार के पूर्व पृष्ठों पर यह कहीं नजर नहीं आता।

होरी में गाय लेने की इच्छा एक किसान की स्वाभाविक इच्छा थी, वह भोला से गाय ले भी आया लेकिन हीरा ने उसे विष देकर मार दिया, होरी में गाय लेने की इच्छा पुनः उत्पन्न होती है और इस बार वह गाय लेना चाहता है अपने पोते मंगल को गाय का दूध पिलाने के लिए, गाय की दुम पकड़ कर नर्क से ऊपर स्थित स्वर्ग जाने के लिए नहीं । मरणोन्मुख होरी की आंखों में जिस गाय का चित्र उभरता है, वह कामधेनु का है, जिसका दूध दुह कर वह मंगल को पिला रहा है। मंगल को दूध पिलाने वाली गाय देवी बन जाती है, किन्तु होरी के मन की लालसा मन में ही रह जाती है। यह लालसा गाय खरीदने की है गाय दान करने की नहीं। गोदान की इच्छा प्रेमचंद ने हीरा में आरोपित करके गोदान शीर्षक को सार्थक सिद्ध किया है। हीरा कहता है भाभी, दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले। हीरा के सुझाव का समर्थन अन्य कई आवाजे करती है। धनिया के ॅदय में भी गोदान की कोई अपनी इच्छा नहीं है, किन्तु लोगों के कहने से वह सुतली बांध कर जो बीस आने लाई थी, उन्हें पति के ठण्डे हाथ में रख कर सामने खड़े दाताह. ीन से कहती है महाराज न घर में गाय है, न बछिया, न पैसा। यह पैसे है यही इनका गोदान है। गोदान के अंत में प्रेमचंद गोदान को आरोपित करने में इतना उलझ गए है कि वह यह भी भूल गए कि पृष्ठ पहले वह यह भी लिख चुके है कि रूपा अपने पति राम सेवक से मंजूरी लेकर गाय एक अहीर के मफित भेज दी थी। या तो यह सीधी मंगल के पास लखनऊ पहुंच गई या फिर रूपा के इन शब्दों को प्रेमचंद हड़बड़ी में लिख गए है कि दादा से कह देना, मंगल के दूध पीने के लिए भेजी है। यदि प्रेमचंद पैसों द्वारा सांके. तिक गोदान के बजाय यह गाय दान करा देते तो धनिया को सुतली बेचकर मिले बीस आने बच जाते।

रूपनारायण सोनकर दलित चेतना से सम्पन्न बौद्धिक रूप से अत्यंत प्रखर उपन्यासकार हैं। सूअरदान में उन्होंने गोदान के मिथ को ध्वस्त करने तथा सूअरदान के नैतिक औचित्य को सिद्ध करने के लिए ब्रहाम्ण पुजारी दयाशंकर को साधन बनाया है। दयाशंकर मरते समय पास खड़े सूअर के बच्चे पर हाथ रख कर केवल इतना कहता है, मैं इससे बहुत प्यार करता हूं। पुजारी के इन शब्दों में व्याप्त सूअर के प्रति मोह भाव को सूअरदान कह कर अर्थवता वहां उपस्थिति ब्राहाम्णों द्वारा दी गई है, जो चिल्ला कर यह कहते हैं, अनर्थ हो गया। पुजारी दयाशंकर जी ने गोदान के बदले सूअरदान कर दिया।

सोनकर ने पुजारी के शब्दों को पालिम्पसेट्स टैक्स्ट का रूप प्रदान किया है जिस में छुपे मूल आशय और मंतव्य को स्पष्ट करने वाले ब्रहम्ण है। कारतूस भी सोनकर के है और बंदूक भी, लेकिन सोनकर उसे खुद न चला कर

ब्राहम्णों के कंधे पर रख कर उन्हीं से चलवाते हैं।

सूअरदान में प्रत्यक्ष रूप से सूअरदान नहीं हुआ है, प्रेम. चन्द के गोदान के तरह सुअरदान भी सांकेतिक है। जिस तरह प्रेमचंद के गोदान में गोदान हुआ भी और नहीं भी उसी तरह सोनकर के उपन्यास में सूअरदान हुआ भी और नहीं भी।

सूअरदान की औपन्यासिक चादर में शीर्ष से लेकर उपस. हार तक जो ताना गढ़ा गया है और जिसके उपर नीचे चादर के जो बाने अर्थात उपकथानक पूरे हुए है, उस ताने का संक्षेप में सार निम्नवत् हैः–

सिंहासनखेड़ा गांव के विदेशो से उच्च शिक्षा प्राप्त वि. भन्न जातियों के चार नवयुवक– रामचन्द्र त्रिवेदी, सलवंत यादव, सज्जन खटिक व घसीटे चमार बैंकों से ऋण लेकर गांव में पिगरी फार्म खोलते है, जिसमें अच्छी नस्ल के देश व विदेश के सूअर पाले जाते हैं। गांव के मंदिर का पुजारी दयाशंकर एक दुराचारी व्यक्ति हैं वह अन्य चार ब्राहम्णों, ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, मारकण्डेय अग्निहोत्री, कामता प्रसाद बिष्ट तथा सीताराम भट्ट के साथ मिलकर पिंगरी फार्म का विरोध करता है। पिगरी फार्म के चारों पार्टनरों को वह कलियुगी धर्म भ क्षक मानव कहता है, सूअर पालन को वह मेहतरों का काम बताता है। चारों पार्टनरों के पारस्परिक सहयोग, श्रम व लगन से पिगरी फार्म एक अति सम्पन्न संस्था का रूप धारण कर लेता है। पिगरी फार्म को करोड़ों रूपये की वार्षिक आय होने लगती है। पिगरी फार्म की आर्थिक प्रगति के साथ गांव की भी आर्थिक व शैक्षिक उन्नति होने लगती है। पुजारी दयाशंकर शहर से आई एक वेश्या के साथ संभोग करता है और उसे एड्स हो जाती है। पिगरी फार्म के विरूद्ध षड़यंत्र रचने और दुष्प्रचार करने में पुजारी दयाशंकर के सहयोगी चारों ब्राहम्ण दयाशंकर को गांव के बाहर एक मड़ैय्या में रखने के लिए कटिबद्ध है, किन्तु संकटा प्रसाद चिकवा जो शहर से नौकरी छोड़कर गांव में आकर बस जाता है, खेती बाड़ी करता है, सब्जियों उगाता है, बैंकों से ऋण लेकर मछली पालन का व्यवसाय करता है तथा इन कार्यों के लिए वह जीवन लाल वर्मा और नरेश अरख को भी ऋण दिलाता है, साठ प्रतिशत दलित आबादी वाले गांव सिंहासनखेड़ा को वह ग्राम प्रधानी के इलेक्शन के लिए दलितों के लिए सुरक्षित कराता है। पूर्व भ्रष्ट ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी अपने एक गुर्गे भगतू पासी को इलेक्शन में यह डमी उम्मीदवार की हैसियत से संकटा प्रसाद चिकवा के विरूद्ध खड़ा करता है। भगतू पासी हार जाता है और संकटा प्रसाद चिकवा भारी मतों से विजयी होकर ग्राम प्रधान बन जाता है। यह कह कर कि एड्स छूत ही बीमारी नहीं है, पुजारी को गांव में ही रहने देता है।

पुजारी की तीन बेटियां है– हिमला, शिमला और तरना जो शिक्षित हैं और पिगरी फार्म के मालिक पुजारी दयाशंकर को अमेरीका ले जाते हैं, वहां उसका एड्स का इलाज कराते हैं और पुजारी स्वस्थ हो जा जाता है। पुजारी को पन्द्रह हजार मासिक वेतन पर पिगरी फार्म में कर्मचारियों की देख–रेख के लिए नौकर रख लिया जाता है। पुजारी का हृदय परिवर्तन हो जाता है। पिगरी फार्म के प्रति उसके मन में भक्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है। वह मंदिर जाना छोड़ देता है, पिगरी फार्म ही उसे मंदिर लगने लगता है। वह सूअरों से प्यार करने लगता है। सूअर भी पुजारी से घुल मिल जाते हैं। सीताराम भट्ट जब यह कहता है कि ''एक मंदिर का पुजारी सूअरों का लेंडा साफ करता है, उनका गोश्त खाता है, डंडा लेकर उन्हें चराता है'', तो पुजारी उत्तर देता है, '' जब मैं मर रहा था। तब आप लोग कहां थे''। मारकण्डेय अग्निहोत्री पुजारी से कहता है –''सूअरों की सेवा के बजाय गायों की सेवा करो, यह मानव का उद्धार करती है''। पुजारी उत्तर देता है ''मेरा उद्धार सूअरों ने किया है''। पुजारी को चालबाज ब्राहाम्णों से घृणा हो जाती है। पुजारी अपनी तीनों बेटियों का विवाह पिगरी फार्म के तीन पार्टनरों से कर देता है– तरना का विवाह सज्जन खटिक से, शिमला का घसीटे चमार से और हिमला का सलवंत यादव से, पुजारी एक पण्डित के रूप में यह विवाह स्वयं सम्पन्न करता है, तथा विवाह संस्कार हेतु निध ारित किसी हिन्दू कर्मकाण्डीय पुस्तक के स्थान पर डा0 अम्बेडकर के संविधान में उल्लिखित समानताओं और मौ. लिक अधिकारों से सम्बंधित धारायें मंत्रो की तरह पढ़ता हैं। उन्यासी साल के इस पुजारी दयाशंकर के मरते समय ब्राहम्णों द्वारा एक बछिया को पुजारी जी के घर के सामने बांध दिया जाता है। मारकण्डेय अग्निहोत्री बछिया को पुजारी जी के बिस्तर के पास लाकर कहता है–पुजारी दयाशंकर जी आपको स्वर्गलोक यह गाय ले जायेगी। आप इसकी पूंछ पकड़ कर भवसागर पार कर लेगें। आप गाय का दान करा लें। पुजारी कहता है, नहीं, मैं गोदान नहीं करूंगा। स्वर्ग और नर्क कल्पना की चीजें हैं, मरने के बाद आदमी इस मिट्टी में विलीन हो जाता है। मिट्टी कभी भी गाय की पूंछ नहीं पकड़ सकती है। अग्निहोत्री कहता है, फिर तुम भवसागर को कैसे पर करोगे। मरणोन्मुख पुजारी उत्तर देता है– मरने के बाद मृत व्यक्ति के लिए काल्पनिक भवसागर की बात करना मिथ्या है। झूठ है। फरेब है। यदि मुझे दान करना पड़ा तो, मैं भाईचारा, प्यार, साम्प्रदायिक सद्भाव, समानता, देशप्रेम, जानवरों और मानवों के प्रति लगाव का दान करूंगा। पूरे विश्व में शांति रहे, इसलिए मैं अहिंसा का दान करूंगा। पूरा संसार प्रदूषण मुक्त रहे, इस उद्देश्य का दान करूंगा, प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा करें, इस संकल्प का दान करूंगा।

प्राण निकलते समय पुजारी अपने पास आए एक सुअर के बच्चे पर हाथ रख कर केवल इतना कहता है– मैं इससे बहुत प्यार करता हूँ और मर जाता है।

पुजारी के उपरोक्त शब्दों में से इन शब्दों में –यदि दान करना पड़ा.....इस संकल्प का दान करूंगा। पुजारी अदृश्य दिखाई देता है और उपन्यासकार उसे पीछे धकेल कर स्वयं बोलने लगता है। फिर भी पुजारी का चरित्र चित्रण प्रारम्भ से लेकर अंत तक स्वाभाविक चित्रण है। प्रायः स्ट्रीम आफ अनकांससनेस के प्रबल प्रवाह में उपन्यासकार का दार्शनिक पुट पात्र के चरित्र चित्रण पर हावी को जाता हैं। सूअरदान में सोनकर पात्र के चरित्र अरस्तु का मुखौटा लगाए दिखाई नहीं देते। हिन्दी में बहुत से उपन्यास तो दर्शनशास्त्र की पुस्तक प्रतीत होते हैं।

यदि मूल कथा में अन्तर्कथायें बुनी हुई नहीं होती तो उपन्यास की रचना हो ही नहीं सकती। मुख्य कथानक के कुर्ते पर उपकथानक के पैचेज आवश्यक हैं, लेकिन शर्त यह है कि यह पैचेज कुर्ते के कपड़े से मेल खाने वाले और कुर्ते पर फबने वाले होने चाहिए, ऐसे नहीं कि पैचेज तो ध्यान आकर्षित करें और देखने वाले को वह कुर्ता पैचेज बारीक नजर से तलाशना पड़े जिस पर यह चस्पा किए गए हैं। रूपनारायण सोनकर द्वारा सूअरदान पर जो पैचेज लगाए गये हैं, वह कुर्ते से ही मेल नहीं खाते वरन् उन्हें लगाने के लिए जिस धागे का प्रयोग किया है वह भी कुर्ते के रंग से मिलता हुआ है। ताने में बाने कहीं उलझे हुए दिखाई नहीं देते है और जहां तक कुर्ते पर पैचअप टांकने का सवाल है, उपन्यासकार को बड़ी टेलरिंग शाप का टेलर मास्टर नहीं, ड्राईक्लीनर्स की दुकान से सम्बद्ध हुनरमंद रफुगर होना चाहिए।

रूपनारायण सोनकर मंत्र सिद्ध लकड़ी की खड़ाउओं पर सवार होकर उस लोक का चित्रण नहीं करते, जो एलडरेडो है। जहां सोना ही सोना है, न मिट्टी है और न लोहा है। उनके पास एक कैमरा है, वह नंगे पैर अपने ही देश के उन स्थलों की सैर करते है, जहां भारत बंद डिब्बों में कैद नजर आता है। उनके कैमरे में कैद चित्रों का औपन्यासिक कमेण्ट्री के साथ विवरण ही सूअरदान है। उपन्यास अगर फिक्शन है तो सूअरदान में फिक्शन हवा में उड़ने वाला घोड़ा नहीं, संभाव्य कल्पना है, यथार्थ की मिट्टी पर मजबूती से पैर जमाए एक अड़ियल वास्तविकता। सूअरदान पाठकों को भारतीय ग्रामीण समाज में उपस्थित यथार्थवादी समस्याओं से भी परिचित कराता है।

सूअदान की पृष्ठभूमि में जो गांव है वह अन्तर्जातिय सहयोग व समरसता द्वारा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक से एक उन्नत आदर्श गांव का रूप धारण करने के प्रक्रिया में है, किन्तु आदर्श गांव के निर्माण की इस प्रक्रिया में प्रतिक्रियावादी अथवा विशुद्ध ब्राहम्णवादी शक्तियों बाधक है। यह शक्तियों विभिन्न जातियों के मध्य खान–पान और रोटी–बेटी के सम्बंधों का विरोध करती है। धार्मिक पाखण्ड का परचम लेकर वह जाति विहीन ग्रामीण समाज तथा भयमुक्त ग्रामीण परिवेश के अस्तित्व में आने की प्रबल संभावना को छल, बल, कुचक्र और षड़यंत्र द्वारा समाप्त करने में प्रयासरत हैं।

सूअरदान की रचना द्वारा रूपनारायण सोनकर ने अपनी स्वयं की दलित चेतना को ही तुष्टि प्रदान नहीं की है, वरन उनके समन्यवादी दलित सोच ने ग्रामीण समाज की मूलभूत समस्याओं के निराकरण के लिए जो उपाय प्रस्तुत किये है, वह विशुद्ध अम्बेडकरवादी है। डा. अम्बेडकर भारतीय समाज से बाहर शोषणामुक्त दलित समाज की कल्पना नहीं करते थे, वरन् उनके स्वर्णिम स्वप्नों का बहुजन समाज इसी भारत की भूमि में स्थित था। उन्हें ब्राहम्णों से नहीं, ब्राहम्णवादी मानसिकता से घृणा थी। उनकी सहानुभूति का पात्र मात्र दलित ही नहीं, हर वर्ग का, हर जाति का दमित और शोषित भी था। सूअरदान सोनकरी दलित चेतना के साथ साथ अम्बेडकरवादी चेतना का उपन्यास भी है।

गोदान के विकल्प के रूप में सूअरदान की अवधारणा भले ही सोनकर के उग्र आक्रामक सोच की अभिव्यक्ति हो, किन्तु कथानक के विस्तार की प्रक्रिया में हर स्थल पर हवा में गांठ बांधते नजर नहीं आते। वह दलितों के लिए अपना गांव का अव्यवहारिक विकल्प नहीं सुझाते। वह इस वास्तविकता से परिचित हैं कि दलित अपना गांव चांद पर तो बसा नहीं सकते यदि दलितों का अपना गांव भारत की धरती पर होगा तो चारों ओर से घिरा होगा। यह सवर्णों के गावों से ही ऐसी स्थिति दलित विरोधी मानसिकता के मनोविकार से ग्रस्त सवर्ण इस अपने गांव को बड़ी आसानी से उसी तर्ज पर नेस्तनाबूद कर सकते हैं, जैसे बाहरवीं सदी में तुर्कों ने राजपूत राज्यों को नष्ट कर दिया था। रूपनारायण सोनकर पलायनवादी नहीं, और न ही यथास्थिति को परिवर्तन करने के लिए वह शक्ति द्वारा संचालित संगठनात्मक संघर्ष के हिमायती है, वह तरफदार हैं विभिन्न जातियों के मध्य पारस्परिक सहयोग, सद्भाव, सहभागिता, सामंजस्य और समरसता द्वारा नई सामाजिक व्यवस्था के मतादीन के मुंह में जबरदस्ती हड्डी रख कर उसका सोच नहीं बदला जा सकता।

रूपनारायण सोनकर अलगाववादी नहीं। डंक उपन्यास में उन्होंने बहुजन कल्याण को औपन्यासिक जामा पहनाया था। सूअरदास में उनका बहुजन हिताय का अभीष्ट बहुजन अथवा बहुजातिय सहयोग से प्रारम्भ होता है। एक विशिष्ट जाति उत्पादन तो कर सकती है किन्तु उपभोक्ता की तलाश उसे अन्यत्र करनी होगी। परिस्थितियां बदल चुकी है, अर्थव्यवस्था के पुराने मापदण्ड भी।

व्यवसाय भी जातिगत नहीं रहे। चमड़े के थोक व्यापारी अधिकांशता सवर्ण है। गांव की तस्वीर विभिन्न जातियो के सहयोग से ही बदली जा सकती है। सूअरदान में सिंहासन खेड़ा की काया पलट करने में त्रिवेदी, यादव, खटिक और चमार सभी का बराबर का योगदान है। चातुर्दिक प्रगति और आर्थिक संपन्नता के मंत्र की सिद्धि अंतर्जातीय समरसता के

वातावरण में ही सम्भव है। उपन्यास में बहुजन हिताय का दृष्टांत यह है कि रश्मि सिंह और रतन लाल सिंहासनखेड़ा में प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी के लिए एक कोचिंग इंस्टीट्यूट खोलते हैं, इसमें प्रशिक्षण प्राप्त करके दलित, पिछड़े, निर्धन सवर्ण और अल्पसंख्यक गजिटेड और नानगजिटेड नौकरियों के लिए चुन लिए जाते हैं।

सोनकर अपराधिक समाजशास्त्र के भी विशेषज्ञ हैं। सूअरदान में उन्होंने नगरीय व ग्रामीण दोनों समाजों में अपराधिक तत्वों को चिन्हित किया है। शहर में डॉन होते हैं, लेकिन गांव के दबंग शहरों के डानों से ज्यादा खतरनाक होते है। शहरी डान मीडिया द्वारा उजागर कर दिए जाते हैं और धाराशायी हो जाते हैं, लेकिन देहाती डानों के कारनामों की भनक मीडिया को नहीं लगती, इसलिए बहुत दिनों तक गांवों में उनकी सत्ता कायम रहती है।

ईटों के भट्टों पर काम करने वाले मजदूरों की दयनीय स्थिति पर यदि पहली बार किसी उपन्यासकार ने कलम उठाई है तो व रूपनारायण सोनकर है। धरमू पासी और उसकी नवविवाहिता पत्नी पंजाब के एक ईंट के भट्टे पर अन्य मजदूरों के साथ काम करते हैं। यदि सबके सब बंधक मजदूर हैं। भट्टे जेल की तरह हैं। खूंखार गुण्डे इन बेसहारा मजदूरों की रखवाली करते हैं। अगर कोई भागने का प्रयास करता है, तो यह गुन्डें उसे लाठियों से पीटते हैं। ठेकेदार मजदूर स्त्रियों का यौन शोषण करते हैं।

गांव में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण यथार्थवादी है। भ्रष्ट ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी की मिली भगत से गांव के सरकारी अस्पताल की दवाईयां दुकानों पर बेच दी जाती हैं। जितेन्द्र यादव, सरकारी स्कूल का प्रधानाचार्य फर्नीचर आदि के सरकारी अनुदान को हड़प जाता है। गांव के सरकारी स्कूल का प्रधानाचर्य फर्नीचर आदि के सरकारी अनुदान को हड़प जाता है। गांव के सरकारी स्कूल में कार्यरत दलित भोजनमाता का सवर्ण विरोध करते हैं। उसके हाथ का बना भोजन अपने बच्चों को नहीं खाने देते। कथानक में बनी यह समस्या वास्तविक है, काल्पनिक है।

एक दलित उपन्यासकार की हैसियत से सोनकर ने दलित नारी की अस्मिता को गरिता प्रदान की है। उनकी दृष्टि में दलित स्त्री अबला और असहाय नहीं। अपनी देह शोषण के विरूद्ध वह सशस्त्र प्रतिरोध पर उतारू है। दलित साहित्य के नाम पर कुछ गैरदलित कथाकारों ने दलित स्त्री को ऐसी मोम की गुड़िया बनाकर प्रस्तुत किया है, जो यौन शोषण करने वाले सवर्ण खलकामी, दुराचारी और दबंगों के हाथों में आते ही मोम की तरह पिघलने लगती है और कोई प्रतिरोध नहीं करती।

अभय मौर्य का उपन्यास मुक्तिपथ चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में बारू नाम के दलित की पत्नी धन्नों है है। गांव का जमीनदार रणजीत सिंह एक दिन खेत में उसके कंधों पर हाथ रखता है, तो उसका मन आदर से भर जाता है। हंसी मजाक का सिलसिला शुरू हो जाता है। एक दिन गजब के मौसम में धन्नों रणजीत सिंह के साथ ईख के खेत में पहुंच जाती है। रणजीत सिंह उसके गालों पर हाथ फेरता है तो वह कोई नाराजगी नहीं जताती, और इसके बाद रणजीत को धक्का देने के अनमने प्रतिरोध के बाद ध न्नों कामकेलि की गंगा में छत छत गोते लगाने लगती है। मुक्तिपथ के उपन्यासकार द्वारा एक दलित स्त्री का बिना सार्थक प्रतिरोध के अपने यौनशोषण हेतु स्वेच्छापूर्वक आत्म समर्पण गैर दलित चेतना की अभिव्यक्ति है। दलित स्त्री की अस्मिता का सोचा समझा उपहास है। असहाय निर्बल दलित स्त्री के साथ बलपूर्वक बलात्कार और दलित स्त्री द्वारा कमानंद की प्राप्ति हेतु बिना प्रतिरोध के स्वेच्छापूर्ण समर्पण में अंतर है। पहले का संबंध शरीर से है, दूसरे का आत्मा से।

सोनकर के उपन्यास के दलित स्त्री पात्र मोम की गुड़िया नहीं, स्टील में ढली ऐसी सजीव मूर्तियां जिन में नारी अस्मिता की विद्युत धारा प्रवाहित है। उपन्यास में तीन स्थलों पर दलित स्त्रियों का संदर्भ है।

जहां तक हिन्दुओं की गाय का प्रश्न है और इस पशु से हमारे भावनात्मक लगाव का प्रश्न है, तो यह लगाव केवल दुखावटी प्रतीत होता है। मैं नागपुर, हरिद्वार, वाराणसी आदि नगरों में स्थित सर्वसाधन सम्पन्न बड़े–बड़े धार्मिक न्यासों द्व ारा संचालित गौशालाओं में रहने वाली गौमाताओं की बात नहीं कर रहा, वह अत्यंत विशिष्ट श्रेणी की गौमातायें हैं। मेरे मकान के सामने एक लम्बा–चौड़ा खाली प्लॉट है, इस में दिन भर आठ–दस गाय और इन्हें कम्पनी देने के लिए दो तीन सांड उपस्थित रहते हैं। यह उन हिन्दुओं की गाय है, जिन्हें या तो यह दान में मिली है, या पुलिस द्वारा गौवध निषेध नियम के अन्तर्गत किसी ट्रक से जब्त की गई उत्स. ाही गऊ सेवकों हाथ आई फोकट की गायें हैं, जो उनके चारे का क्या प्रबन्ध करेंगे जब खुद ही गिन कर रोटियां खा रहे हैं। यह गऊ प्रेमी सुबह गायों को घर से इस तरह निकाल देते हैं, जैसे फकीर छोटे बच्चों को दिन भर गलियों में घूम कर रोटी के टुकड़े घरों से मांग कर पेट भरने के लिए निकाल देते हैं। खाली प्लाटों में पड़े कूड़ा कचरे के ढेर यह गायें पालीथीन की खलतियों में गोभी के डण्ठलों की आशा में मुहं मारती हैं, और कभी प्रयोग किए गए सेन. ीटरी पैड्स भी। यह भूखी गायें जब बाजार से गुजरती हैं, तो किसी दुकानदार के आटे, बेसन आदि की खुली बोरी में मुहं डाल देती हैं, और कभी सड़क के किनारे बैठे बागवान की सब्जी की टोकरी में मुंह डाल देती है। कोई हिन्दु दुकानदार भी इन पर तरस नहीं खाता और दो चार डण्डे इनकी पीठ पर जरूर बरसा देता हैं। शाम को अपने खूंटे

पर पहुंच जाती है, और हिन्दु गऊभक्त बिना सेवा के इनके मुर्झाये सूखे थनों से दूध निकाल लेता है। कहां है, कहां है, जिन्हें नाज है गाय पर वह कहां है?

गाय किस देवता के शरीर के किस अंग से निकली है, मुझे यह तो नहीं मालूम, किन्तु सुअर भगवान का अवतार (बराहवतार) है। इसकी उत्पत्ति दैविक है। महाभागवत पुराण के अनुसार ब्राह्म जी के नासिका छिद्र से अगूठें के बराबर बराह शिशु निकला तो ब्राह्म जी बोले सूकर के रूप में आज यह कौन दिव्य प्राणी यहां प्रकट हुआ है। यह एक क्षण में ही भारी शिला के समान हो गया (श्रीमद्भागवत पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, तृतीय स्कंध, अ013) मायामय मुनिगण तीनों वेदों के पवित्र मंत्रों से उसकी स्तुति करने लगे (वही, श्लोक 18–25) इस संदर्भ के अवलोक में सूअर के प्रति घृणा का भाव एक धमनिष्ठ अति उत्साही हिन्दू के लिए धर्मविरोधी है। गाय अवतार नहीं, सूअर अवतार है, अतः यह प्राणी वास्तव में पूज्यनीय होना चाहिए।

जहां तक सूअर का मास खाने का प्रश्न है तो निसंदेह दलित जातियों में इसके मांस का भक्षण होता है, यह छुपा हुआ नहीं है, यह और बात है कि वर्तमान ऋषि मुनि, धर्मावतार भगवाधारी शुद्ध गाय का दूध, मलाई और रबड़ी का प्रयोग करके सेहत मेण्टेन करने वाले संत और महात्मा सूअर खाने वालों को हिन्दू मानें या नहीं। भारत में अत्याधुनिक पिगरी फार्मों द्वारा उत्पादित टीन के डिब्बों में सीलबंद सूअर का मांस (टिन्ड पोर्क) क्या सारा का सारा यूरोप जाता है, अथवा उसकी घरेलू खपत भी है? आचार्य रजनीकांत शास्त्री (हिन्दू जाति का उत्थान और पतन, बक्सर, 1944 पृ0 130) पर मनुस्मृति का संदर्भ देते हुए लिखते हैं – दस मांसास्तु तृप्यन्ति बराह महिषामि पै) (मनुस्मृति, तीसरा अध्याय, श्लोक सं0 270) अर्थात श्राद्ध में पितर सूअर और भैंसे के मांस से दस मास तक तृप्त रहते हैं।

सूअरदान में उपन्यासकार का पृ0 10 पर मुहम्मद अली जिन्हा के बारे में यह कथन कि वह सूअर का मीट खाते थे, वास्तव में उनका अपना नहीं वरन् उधार लिया हुआ है। लैरी कालिन्स और डामनिक लापियर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फीडस एड मिडनाईट' (विकास, न्यू देहली, 18 वां संस्करण, 1981) के पृष्ठ 112 पर लिखा है, ही ड्रैंक एण्ड एट पोर्क अर्थात वह शराब पीते थे और सूअर का मांस खाते थे।

यदि हिन्दू स्वामी रामकृष्ण परमहंस में तनिक भी श्रद्धा भाव रखते हैं तो वह उनके द्वारा अपने शिष्य और उत्तराधिकारी विवेकानन्द को दिए उपदेश में खान पान सम्बंधी अपने पूर्वाग्रह को भस्म कर सकते हैं। परमहंस ने विवेकानन्द से कहा था, सूअर गाय खा कर भी यदि कोई भगवान में मन रखता है तो वह हविष्यान जैसा हो जायेगा। और साग भाजी खा कर विषय भोग में डूबा रहें, तो वह सूअर, गाय खाने वाले की अपेक्षा किसी अंश में कम नहीं है। (श्री रामकृष्णलीला प्रसंग, भाग–3, राम कृष्ण मिशन नागपुर, चतुर्थ संस्करण, पृ0 112)

साड़ी को पांवों के अंगूठों में दाब कर और मर्दों के सामने घूंघट काढ कर आने वाली, सती सावित्री टाईप नारियों के लिए भी सूअरदान में थू–थू और छी–छी करने के लिए मसाला है। इंग्लैण्ड से आई रामचन्द्र त्रिवेदी, सलवंत यादव, सज्जन खटिक चारों की सामूहिक प्रेमिका मिस हैरी सिल्वा भारत आकर इन चारों व्यक्तियों की पत्नी बन जाती है और बारी बार से पतिधर्म निभाती है। उपन्यासकार ने इस प्रकरण को हिन्दू धर्म ग्रंथ महाभारत के पांचाली संदर्भ से सम्बद्ध करके धार्मिक मान्यता प्रदान की है (पृ0 19)। एक पत्नी चार पति के इस संदर्भ को उन्होंने उपन्यास में इस तर्क से समर्थित किया है, लड़कियों की कमी है उन्हें ऐसी शादी के लिए विवश कर रही है। सोनकर का यह तर्क खोखला नहीं इस में जान है। इन स्पाइट आफ दा गाड्स के लेखक एडवर्क लुइस ने लिखा है कि भारत में आजकल बाल हत्यायें कम भ्रूण हत्यायें अधिक होती हैं। भ्रूण हत्याओं के कारण कुछ राज्यों में लड़कियों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। यदि आगे चल कर लड़कियों और लड़कों का अनुपात एक और चार हो गया तो फिर सोनकर द्वारा पुनसंस्थापित फारमूला फिर से लागू हो जाएगा। सोनकर का बहुपतिवाद इतिहाससम्मत है। यूनान में प्लेटो से पहले हेरोडोटस के अनुसार, इस व्यवस्था में सारे पति एक दूसरे से घृणा व ईर्ष्या का व्यवहार नहीं करते वरन् एक दूसरे के भाई बन जाते हैं। प्लेटी ने नारी साम्यवाद के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। प्लेटो उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ स्त्री का समागम श्रेष्ठ पुरूषों के साथ कराने का पक्षपाती था।

धार्मिक मताधंता कुतर्कों में पलती है। अपनी जाति की श्रेष्ठता का मनोविकार दूसरी जातियों के लिए प्रयुक्त शालीन गालियों द्वारा अभिव्यक्त होता है। सवर्णो द्वारा दलितों के लिए जानी पहचानी गाली नीच है। रूपनारायण सोनकर के अंदर उपस्थित वैयक्ति जातिय चेतना ने उग्र और आक्रामक रूप धारण करके उपन्यास में एक नयी धारणा को जन्म दिया है और वह है गाय और सूअर के समागम से उत्पन्न गाय की एक नई ब्रीड सुगाय। उपन्यास के कथानक में यह अवधारणा इस तरह बुनी गई हैं।

उपन्यास में पिगरी फार्म को नीचा दिखाने के लिए और ब्राह्मण जाति के गौरव को बनाये रखने के लिए, अग्निहोत्री, त्रिपाठी, बिष्ट सिंहासन खेड़ा में गौशाला फार्म स्थापित करते हैं। ब्राह्मणों ने तीन सौ गाये तो दान में फार्म को दे दी, लेकिन दान में चारा बहुत दिनों तक नहीं मिला। गायों की दुर्दशा देखकर पिगरी फार्म के मालिकों ने गौशाला फार्म भी खरीद लिया। सज्जन खटिक ने अमेरिका के वैज्ञानिकों से मदद ली और चारों पार्टनरों की कल्पना के अनुरूप गाय और सूअर के समागम द्वारा गाय की एक नई ब्रीड सुगाय

उत्पन्न होने लगे (पृ0 139) धार्मिक प्रवृत्ति के लोग इन नवीन संतानों को धर्म के विरूद्ध मान रहे थे। दलित, पिछड़े अल्पसंख्यक व गरीब सवर्ण इसे विज्ञान का चमत्कार मान रहे थे। सुगायों को वह (ब्राह्मण) सनातन ध र्म की हार मान रहे थे (139–140) लेकिन एक जवान ठाकुर जीवन सिंह का कहना था, विज्ञान का चमत्कार हो रहा है, अजूबी संताने पैदा हो रही है। यह इक्कीसवीं सदी से आगे की दुनिया है, इसमें सब कुछ संभव है। (पृ0 140)

वैज्ञानिक युग में प्रजनन शास्त्र में होने वाली चमत्कारिक खोजों के संदर्भ में गाय और सुअर के समागम से किसी नए पशु की उत्पत्ति की अवधारणा को हास्यास्पद अथवा जातिय द्वेश और घृणा की अभिव्यक्ति नहीं माना जा सकता। यह संभाव्य वास्तविकता का रूप भी धारण कर सकती है। सोनकर ने अंजाने ही सुगाय की अवधारणा को औपन्यासिक जामा पहनाते हुए हिन्दु धर्म में जातियों की उत्पत्ति के सम्बंध में एक संकेतात्मक किन्तु अति महत्वपूर्ण बात कह दी है। प्रथम चाण्डाल पुत्र की मां ब्राह्मणी थी और बाप शुद्र। इसे अलेगोरीकल (रूपात्मक) ढंग से परिभाषित किया जाये और ब्राह्मणी को गाय और शूद्र अथवा दलित को सूअर माना जाये तो फिर रूपनारायण सोनकर का यह वाक्य अनेकार्थी हो जाएगा कि इन नवीन संतानों को धार्मिक प्रवृत्ति के लोग धर्म के विरूद्ध मान रहे थे।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद फांस में उपजे साहित्यिक आंदोलन सर्रियलिज्म ने बुरजवा समाज के खोखले मूल्यों के विरूद्ध प्रचण्ड और प्रतिशोधपूर्ण साहित्यिक प्रक्रिया का आवह्न किया था और साहित्यिक रचनाओं के लिए वांछित प्रभावी स्रोत सामग्री को अचेतन और अवचेतन मस्तिष्क में गहरे डूब कर खोजने की प्रेरणा दी थी। सूअरदान में उपन्यासकार के अवचेतन मन में व्याप्त दमित उत्कण्ठाओं की अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है और इसमें मस्तिष्क के एकाकी कुंजों में व्याप्त आत्म–संवादों की गूंज भी सुनाई देती है, लेकिन सारा का सारा उपन्यास अलिफ लैला के किस्से के जादुई लोक अथवा अफीम की पिनक में एस0टी0 कोलरिज द्वारा देखे गए तथा अपनी कविता कुबला खां में चित्रित मायावी लोक की सैर नहीं कराता, वरन् उपन्यासकार का जागृत संवेदनशील मस्तिष्क गैर दलित पाठकों को अपनी स्मृतियों और अनुभूतियों तथा अपने अनुभवों से परिचित कराता हैं। उपन्यासकार के प्रति द्वैष की भावना से मुक्त दलित पाठक सूअरदान में दलित चेतना की अस्मिता के दर्शन भी कर सकते हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास गोदान से यदि मालती, खन्ना, मेहता, रायसाहब के उपकथानक में गुथें प्रसंग निरस्त कर दिये जाते तो शेष उपन्यास का शीर्षक विक्टर ह्योगी के उपन्यास लेमिजरेबल की तर्ज पर यह होना चाहिए होरी बद्नसीब। सरिक आर्थर ब्लेयर, उपनाम जार्ज आरवेल (1903–1990) ने 1945 में अपने विश्वप्रसिद्ध उपन्यास एनीमल फार्म की रचना की थी। इस में एनीमल फार्म को नेशनल स्टेट के रूप में चित्रित किया गया था। ऐलीगोरीकल उपन्यास होने के कारण इस में मार्क्सवादी सूअर के रूप में चित्रित किए गए है। इस उपन्यास के यह शब्द जगविख्यात है– 'आल एनीमल्स आर इक्वल दैन अदर्स बट सम आर मोर दैन इक्वल।''

सूअरदान का भी एक उप शीर्षक पिगरी फार्म होना चाहिए। पिगरी फार्म के मूल्याकंन में केवल यह पक्तियां पर्याप्त होगी। ''आल एनीमल्स आर इक्वल बट दा पिग मोर इम्पारटेण्ट दैन काउ।''

*****

पहली स्त्री को बिना तलाक दिए दूसरी शादी रचाने की एक डिप्टी कलेक्टर के क्रूरता की कहानी है नाटक 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर '

-डॉ. शैली सोनकर
बिलासपुर नियर अपोलो हॉस्पिटल छत्तीसगढ़

विश्व प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक रुस्किन बांड ने चर्चित नाटककार रूपनारायण सोनकर के नाटक " एक दलित डिप्टी कलेक्टर" व अन्य नाटकों का विमोचन देहरादून के एक प्रसिद्ध होटल के बड़े हाल मे किया था. संयोग से उस भव्य समस्यारोह मे मै भी मौजूद थी. उस समारोह मे ओमप्रकाश वाल्मीकि सहित अन्य रचनाकार भी मौजूद थे. श्री रुस्किन बॉन्ड ने एक दलित डिप्टी कलेक्टर की भूरी भूरी प्रसंशा की थी. उन्होंने कहा था -

" सिविल सेवा में रहते हुये भी रूप नारायण सोनकर बहुत अच्छा लिख रहे है। सोनकर का नाटक डिप्टी कलेक्टर बहुत ही सशक्त रचना है। इस नाटक मे नाटककार ने अबला नारियों के पक्ष मे जोर दार वकालत की है।"

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कहा था—" एक दलित डिप्टी कलेक्टर का पात्र डिप्टी कलेक्टर मनुवादी विचारधारा से ग्रसित है. सोनकर ने दलित नारियों के पक्ष मे एक बुलंद आवाज़ उठाई है जो सराहनीय है. यह नाटक कमजोर वर्ग की स्त्रियों के साथ अपनों ही द्वारा किये जा रहे शोषण को दर्शाता है. इस नाटक मे ऐसे अधिकारीयों को दण्डित किया गया है जो एक स्त्री के रहते दूसरी शादी रचाते हैं. समाज मे इसका अच्छा सन्देश जायेगाा।"

काला पादरी के रचनाकार श्री तेजन्दरसिंह गगन ने कहा- " यह नाटक मंचीय है. नाटककार ने स्वयं एक दलित डिप्टी कलेक्टर का किरदार बखूबी निभाया है. आधुनिक समाज के कुछ आधुनिक अधिकारी मानवता के सारे मापदंड तोड़ रहे हैं. वे स्वयं अपनी महिलाओं के दुश्मन बन गये है. वे लोग विलासिता और आधुनिकता की चकाचौध मे अपने माता पिता और स्वयं अपने परिवार को ठुकरा रहे हैं।" इस नाटक के जरिये समाज मे एक सकारात्मक सन्देश जायेगा. " पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के दून स्कूल के टीचर व संरक्षक डॉ. हरि दत्त भट्ट ' शैलेश' इस नाटक की भूमिका में कहते हैं- " एक डिप्टी कलेक्टर "नाटक समाज मे एक सामाजिक क्रांति लाएगा....इस तरह की घटनायें केवल दलित वर्ग के अधिकारीयों में ही नही घटती हैं बल्कि सामान्य वर्ग के अधिकारीयों मे भी ऐसी घटनायें होती हैं जो अनुसुईया जैसी पत्नियों के लिये अभिशाप हैं. लेखक ने रतनलाल जैसे डिप्टी कलेक्टर के चरित्र को उजागर करके अनुसुईया जैसी बेसहारा व नाबालिक लड़की जानकी के साथ न्याय किया हैं..... यह उच्च श्रेणी का नाटक है. यह नाटक विश्वविद्यालयों व कॉलेज की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित करने योग्य हैं तथा रूप नारायण सोनकर की गिनती प्रथम श्रेणी के नाटककारों, साहित्यकारों मे की जा सकती है. "

इस नाटक की शुरुवात पूर्वी उत्तर प्रदेश मे बोली जाने वाली भाषा से होती हैं. लोकल डाइलेक्ट बहुत प्रभावित करते हैं. रतनलाल के अनपढ़ माँ बॉप और गाँव के लोग एक जमींदार के खेत मे धान की फसल की रोपाई कर रहे हैं. संतु और मैकी का बेटा इलाहबाद वि वि से पढ़कर डिप्टी कलेक्टर हो गया हैं. सभी लोग खेत के अंदर खुशी मे गाना गाते हैं-

होइ गवा डिप्टी कलेक्टर बबुआ हमार
हम सब की होइ जई नहया पार
होइ गवा डिप्टी कलेक्टर बबुआ हमार
बबुआ की मोटर मे, हम सब घूमव
नौकर चाकर के रहिवे हम ऊपर
अच्छा अच्छा खाना बनाइ हैं
हमका नौकर
दफ़्तर से कर हमार बबुआ
हमार पैर छुईहय तुरंत दौड़कर
सफल होई जई जीवन हमार
होइ गवा डिप्टी कलेक्टर बबुआ हमार "

इस गाना मे माँ बॉप के सुनहरा स्वप्न देखने का ख्वाब छिपा हैं. जब उनका यह स्वप्न टूटता हैं तब उनको सारा संसार ही टूटता नजर आता हैं. दृश्य सातवां पेज 20 का सीन मार्मिक हैं. अनुसुईया और उसका चाचा रामदिन आपस मे बातें करते हैं रतनलाल ने अनुसुईया को छोड़ दिया हैं. रामदीन - " बिटिया तुम अपनी भरी जवानी कैसे गुजारोगी? " अनुसुईया -"जिस तरह अभी तक काटा हैं और काट लूंगी. जब तक जियूँगी डिप्टी कलेक्टर की बीवी कहलाऊंगी. "

रामदीन -" उसने तुमको दिया ही क्या हैं? कोई भी अनपढ़ - गवार आदमी भी अपनी पत्नी और बेटी के साथ ऐसा बर्ताव नही करेगा जैसा उसने किया हैं. धिक्कार हैं उसके जीवन को, धिक्कार है उसकी शान शौकत को, धिक्कार हैं उसके डिप्टी कलेक्टर होने को. "

अनुसुईया -"मै अपने अनपढ़ होने की सजा भुगत रही हूँ.काश, मै बी. ए. पढ़ी होती और आप लोग इतने गरीब न होते."रामदीन - "उसने तुझे और बेटी को तो भुला ही दिया. अपने माँ बॉप से भी नाता तोड़ लिया हैं. आज भी उसके माँ बॉप दूसरे के खेतों मे मजदूरी करते हैं उसका छोटा भाई पैसे के अभाव मे पढ़ाई छोड़ दिया हैं. रतन के व्यवहार को देखकर कोई भी गरीब आदमी अपनी औलाद को ऑफिसर नही बनाएगा. "

वास्तव मे उपरोक्त डायलॉग बहुत ही मार्मिक हैं. शिक्षा के महत्त्व को दर्शाते हैं. डॉ. अम्बेडकर के दर्शन शिक्षित बनो पर प्रकाश डालते हैं. पूरा नाटक ही काबिले तारीफ हैं. पूरे समाज को झकझोर कर रख देता हैं. इस नाटक ने सामजिक रिश्तों मे आयी गिरावट को दर्शाता हैं और समाज को सजग रहने की प्रेणना देता हैं. अधिकारीयों मे पनप रही दहेज़ की भूख की कटु आलोचना करता हैं.अपनी संतान द्वारा वृद्धा अवस्था मे माता पिता को ठुकराना अफशोष जनक है।

*****

आधुनिकता एवं विलासिता में मग्न दलित एवम अन्य वर्ग के उच्च अधिकारीयों को आइना दिखाता बेजोड़ 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर 'नाटक

-सुनील कुमार
राष्ट्रीय अध्यक्ष दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक
अकादमी भारत, देहरादून

यह नाटक जब देहरादून में मंचित हो रहा था उस समय उत्तराखंड राज्य के अधिकतर आई ए एस, और पी सी एस अधिकारी टाउन हॉल में नाटक को देखने के लिये उमड़ पड़े थे. पूर्व आई ए एस अधिकारी व एम पी श्री गंगा राम ने समस्त दलित पी सी एस अधिकारीयों को इस नाटक का विरोध करने के लिये इकठ्ठा कर लिया था. इस नाटक का मंचन होने के पहले प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में लगातार हेड लाइन बनता जा रहा था.वास्तव में यह नाटक किसी भी अधिकारी के विरोध में नही था बल्कि एक दलित स्त्री और एक नाबालिक बेटी के असहाय होने की कहानी था. नाटककार ने उन दो अबला महिलाओं का साथ दिया था. जिसके पति ने डिप्टी कलेक्टर बनते ही उनको घर से निकाल दिया था. उन दोनों को मनुवादी समाज के सामने ठोंकर खाने के लिये फेंक दिया था.वहुत सारे दलित व सवर्ण अधिकारी चाहते थे की किसी भी सूरत में इस नाटक का मंचन न हो।

मै और नाटककार दोनों मिलकर इस नाटक के मंचन कराने को तत्पर थे. हम दोनों का मानना था -" जब गैर - दलित, दलितों और उनकी महिलाओं पर अत्याचार करते हैं तब सारे दलित शोषण करने वाले गैर दलितों के बिरुद्ध में खड़े हो जाते हैं. लेकिन जब कोई दलित, किसी दलित और दलित महिला के साथ अत्याचार करता है तब सारे दलित मौन रहते हैं " इसी बात को लेकर नाटककर सताई गयी दलित महिला के साथ खड़ा हो जाता है. एक तरफ बड़े बड़े ब्यूरोक्रेट्स हैं दूसरी तरफ औरतों के पक्ष में बुलंद आवाज़ उठाने वाला तलवार से ज्यादा तेज लेखनी लिये एक सच्चा लेखक खड़ा है जो बहुत ही निर्भीक है. अपनी राजपत्रित अधिकारी की नौकरी को दांव पर लगा देता है. उसको वहां से हटाने के लिये एड़ी चोटी का जोर अधिकतर ब्यूरोक्रेट्स लगा देते हैं. लेकिन सचाई की जीत होती है. लेखक का नाटक मंचित होता है. यह नाटक सभी को अपील करता है. मै सुनील कुमार जज की भूमिका मे था , संगीता रानी जो स्वयं लेखिका है डिप्टी कलेक्टर की प्रथम पत्नी का जीवंत अभिनय कर रही थी. नाटककार रूप नारायण सोनकर मुख्य भूमिका डिप्टी कलेक्टर की निभा रहे थे. अपने अभिनय से दर्शकों की वाह वाही लूटी. मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री भगत सिंह कोश्यारी थे.जिन्होंने उस नाटक को मंचित कराने मे अहम रोल अदा किया।

पूर्व मुख्यमंत्री ने सोनकर की बड़ाई करते हुये कहा था-" सोनकर तुमको डिप्टी कलेक्टर नही बल्कि कलेक्टर बनना है". इसके अलावा उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही थी -

" चाहे कलेक्टर या डिप्टी कलेक्टर दलित हो या गैर - दलित उनको हवा मे नही उड़ना चाहिए बल्कि उनको अपनी जड़ों को सदैव याद रखना चाहिए. सोनकर का यह नाटक बहुत ही दिल को छू लेने वाला है. समाज मे नैतिकता और नारी की गरिमा कायम रखने के लिये प्रेरित करता है. "

प्रोफेसर तेजसिंह का विचार था - यह नाटक उन उच्च अधिकारीयों को असली आईना दिखाता है जो अपनी शादीशुदा औरतों और जन्मी बच्चियों को छोड़ देते हैं और दूसरी शादी कर लेते हैं. उनको समाज के भेड़ियों के सामने नोच नोच कर खाने के लिये छोड़ देते हैं. यह नाटक आधुनिक युग का नाटक है. समाज के कुछ कलुशित लोग अपनी कलुशित भावनाओं के आवेश के अंतर्गत समाज को अपंग बना रहे हैं.नाटकार ने उन लोगों से टक्कर ली है जो बहुत ही शक्तिशाली और ऊँचे ओहदों पर बिराजमान हैं।

नाटक के कुछ मार्मिक डायलॉक प्रस्तुत करना जरुरी है. पत्नी अनुसूईया, डिप्टी कलेक्टर रतनलाल के डायलॉग - "(अनुसूईया से)- देखो, तुम बिटिया के साथ अपने माँ बॉप के घर चली

जाओ अब तुम मेरे साथ नही रह सकती हो."

" (पैर पकड़ते हुये) ऐसा जुल्म मत करिये। मेरे माँ बॉप मर चुके हैं.... अपनी छा साल की बेटी पर तरस खाओ। वह कहाँ जायेगी..... मुझे अपने घर पर रहने दो। एक नौकारानी समझकर डिप्टी कलेक्टर रतनलाल अपनी वाइफ और नाबालिक बेटी के प्रति निर्दयी हो जाता है. वह कहता है –

" मैंने अपनी दूसरी शादी एक वरिष्ठ आई ए एस अधिकारी की लड़की के साथ कर ली है.उन्होंने मुझे शादी मे कार और पंद्रह लाख रूपये दिए हैं। कार से मेरी शान शौकत और रुतवा बढ़ जायेगा.फिर नौकरी मे कोई परेशानी पड़ी तो मेरे ससुर उसको सुलझा लेंगे । "

" सभी अधिकारीयों के ससुर आई ए एस अधिकारी नही होते हैं. सभी लोग ईमानदारी और अपने बलबूते पर नौकरी करते हैं. गलत काम करने वालों को ही किसी सहारे की जरुरत होती है. बेटी कहाँ जायेगी. दुनिया वाले तुम पर थूकेंगे। "

" मुझे दुनिया वालों की परवाह नही है। मै तुम दोनों के लिये अपने करियर को दांव पर नही लगा सकता हूँ... तुम दोनों के लिये इस घर में कोई जगह नही है."

इस नाटक मे एक तरफ दो अबला नारियों का सब कुछ लुटता दिख रहा है. उनके सामने आगे का रास्ता नही है.पूरी जिंदगी उन दोनों की अंधकार मे डूबने वाली है। दूसरी तरफ दूसरे की जिंदगी विलासिता और सांसारिक चकाचौध से भरी है.जिसमे सभी नैतिक और मानवीय मूल्य समाप्त हो गये हैं। समाज के पतन का इस नाटक मे संकेत है. नाटककार की दृष्टि पैनी है। समाज का निर्माण ऐसे लोगों से कतई नही होता है जो स्वार्थी हों.ऐसे लोग अपने लिये दूसरों का सब कुछ छीन लेना चाहते हैं। नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है की इसमें समाज को धोखा देने वाला दण्डित होता है. वह जेल की सालाखों के पीछे पहुंचाया जाता है. समाज से धोखा करने वाले इस क्लासिकल नाटक से सबक लेंगे। जज डिप्टी कलेक्टर रतनलाल के विरुद्ध फैसला देता है। वह अपनी पहली पत्नी को तलाक दिए वगैर दूसरी शादी रचाने का दोषी पाया जाता है। उसको आई पी सी की धारा 498 B ते अंतर्गत पांच साल की सजा सुनाई जाती है और उसको जेल भेज दिया जाता है। रतनलाल की दूसरी पत्नी रश्मि सिंह,बेटी जानकी को नारी संरक्षण गृह मे जाने से रोकती है और उसको अपना लेती है। इस नाटक मे वेश्या उद्धार को शामिल करके लेखक ने एक बड़ा काम किया है जो काविले तारीफ है। इस नाटक के कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करना अनिवार्य है। ब्लॉक प्रमुख सुखवीर सिंह यादव का यह कहना -" 20 -30 गाँवों मे अभी तक कोई भी युवा डिप्टी कलेक्टर नही हुआ है। तुम गाँव के युवाओं के लिये आदर्श बनोगे। यहाँ के बच्चे इलाहाबाद विश्वविद्यालय पढ़ने जायेंगे और बड़े ऑफिसर बनेगे. रतनलाल युवाओं के लिये प्रेणना श्रोत बनोगे। "

यहाँ पर इलाहबाद विश्वविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा देने की ओर संकेत करता है. इलाहाबाद वि वि का एक ऐसा दौर था जहाँ के बच्चे सर्वोच्च शिक्षा पाकर देश मे सब से ज्यादा आई. ए. एस. व पी.सी.एस. बनते थे।

*****

रूपनारायण सोनकर के नाटको में दलित चेतना

–डा. धीरज भाई आर. वणकर

बहुमुखी प्रतिभा के धनी चर्चित दलित लेखक, चिंतक, कुशल अभिनेता व नाटककार रूपनारायण सोनकर दलित साहित्यकारों की शीर्षस्थ पंक्ति में गिने जाते है। उनकी कलम ने उत्तम साहित्यिक कृतियाँ देकर आलोचकों व पाठकों का ध्यान खींच लिया है। आत्मकथा 'नागफनी' उपन्यास 'डंक' व 'सूअरदान' का मराठी, कन्नड, तेलगू, गुजराती, अंग्रेजी एवं उड़िया में अनुवाद हो गया है तथा दूसरी भाषाओ में अनुवाद कार्य जारी है। 'सूअरदान' उपन्यास ने हिन्दी साहित्य जगत मे हलचल पैदा कर दी है। इस उपन्यास को इतनी प्रसिद्धि मिली है कि कम समय में इसके कई संसकरण प्रकाशित हुए। सोनकर जी को उनकी विशिष्ट कृतियों के लिए विभिन्न सरकारी व एवं गैर सरकारी संस्थाओं ने पुरूस्कृत किया है। उनकी अधिकांश रचनाओं के केन्द्र मे डा. अंबेडकर की विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। सोनकर ने अंबेडकर की तरह संघर्षमय जीवन बिताया है। उनके जीवन से दलित लोगों को प्रेरणा मिलती है। वे सफल अभिनेता भी है, 'जय महाकाली', ईट का जवाब पत्थर', 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों', 'गॉव का सीएम' व 'कफन' जैसी फिल्मो एवं 'घुटन', 'सपने' और मंजिल' आदि सीरियलों में अभिनय किया है। वैसे तो रूपनारायण ने साहित्य साधना का प्रारम्भ काव्य से किया है, किन्तु उन्होनें साहित्य की विधाओ में दूसरा स्थान नाटक को दिया है। सोनकर जी ने लगभग 30 नाटक लि खे है। उनके चर्चित नाटकों में 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर', 'विषधर', 'महा नायक', 'समाज द्रोही', और 'छायावती' आदि।

दरअसल सोनकर जी प्रतिबद्ध दलित साहित्यकार है। सोनकर जी बताते है कि 'मेरे अंदर भभक रही दलित साहित्य की ज्वाला में घी डालने का काम श्री सुनील कुमार ने किया। दलित साहित्य के बारे में मेरी धारणा स्पष्ट नहीं थी। दलित साहित्य के बारे में मेरा कनसेप्ट क्लीयर करने में उपन्यासकार श्री तेजेन्द्र सिंह ने बहुत मदद की। उन्होनें दलित विशेषांक 'वसुधा' पढ़ने की सलाह दीं जिसमें छपे अच्छे–अच्छे लेखों और नवारिया जी के लेखो को कई बार पढ़ा, उससे मुझे दलित साहित्य की अवधारणाओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान हुआ। अब मैं पूरी तरह से दलित साहित्यकार बन गया हूँ।''[1], दलित चेतना को अभिव्यक्त करता हुआ उनका पहला नाटक है–'एक दलित डिप्टी कलेक्टर', जिसे 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी'भारत से सन् 2002 मे प्रकाशित किया। प्रस्तुत नाटक की कथा दस दृश्यो मे विभाजित है। इस नाटक के मंचन मे सोनकर जी ने मुख्य भूमिका डिप्टी कलेक्टर की निभायी, जिसके लिए आपको बहुत ख्याति मिली। अपनी बात में उन्होनें लिखा है कि–'एक दलित डिप्टी कलेक्टर' एक सामाजिक नाटक है। इस उपभो. क्तावादी एवं विलासी युग मे आदमी के मानवीय मानदंड बदल गये हैं। मॉ–बाप एवं बेटे के रिश्तों में तेजी से बदलाव देखा जा रहा है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को आदमी भूलता जा रहा है। पश्चिमी सभ्यता में आदमी इतना डूब गया हैं कि निमन वर्ग का आदमी उच्च वर्ग के आदमी के संम्पर्क में आने के बाद अपने वर्ग को भूल जाता है। विलासिता और शान–शौकत मे आदमी इतना डूब गया है कि शादियाँ उसको अभिशाप लगती हैं। पहली औरत के होते हुए दूसरी लड़कियाँ एवं औरतों से सम्बन्ध स्थापित करना व शादी करना अपना गर्व महसूस करता है।''[2],

प्रस्तुत नाटक के प्रारम्भ में बताया गया है कि टीकमगढ़ गांव का एक दलित परिवार दूसरों के खेतों में मजदूरी करके जीवन यापन कर रहे है, किन्तु अपने बेटे रतनलाल को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाकर डिप्टी कलेक्टर बनाता है। रतन लाल शादीशुदा था। उनकी पत्नी अनुसूईया व एक छः साल की बेटी थी लेकिन सत्ता व आधुनिकता के रंग में रंगा डिप्टी कलेक्टर रतनलाल एक आई0ए0एस0 अफसर की बेटी रश्मि सिंह से शादी रचा

लेता है। शादी मे उन्हें कार एवं पन्द्रह लाख रूपये मिलते है। रतन लाल पत्नी, नाबालिक बच्ची को घर से निकाल देता है और मॉ–बाप को त्याग देता है। मां–बाप, लड़का जब कलेक्टर नहीं बना था तब भी और बाद में भी दूसरों के खेतों में मजदूरी करते है। उनके सपने साकार होकर भी टूट जाते है। अनसूईया मजदूरी करके बेटी को पढ़ाने का कोशिश करती है ताकि उनकी बेटी को सुख मिले। रामदीन से अनसूईया कहती है–''चाचा, मैं जानकी को पढ़ाना चाहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि जानकी मेरी तरह अनपढ़ रहे, जिस तरह मेरे पति रतनलाल ने मुझे अनपढ़ होने का दंड दिया। वही दंड मेरी बेटी को न मिले।''[3], अनुसूईया ठाकुर के यहां काम करने के बाद पैसा लेने जाती है जहां ठाकुर आर्थिक शोषण के साथ–साथ शारीरिक शोषण करने की कोशिश करने का प्रयास करता है तब वह –''(बिगडते हुए) आप मेरी मजबूरी का फायदा मत उठाईये, ठाकुर। मेरी मजदूरी दे दो। मेरे पति रतनल. ाल ने मुझे छोड़ जरूर दिया है लेकिन उन्होंने मुझे तलाक नहीं दिया है मैं अब भी उनकी पत्नी हूँ। मैं एक पतिव्रता औरत हूँ। मुझे हाथ मत लगाना नही तो जल जाओगे।''[4], किन्तु ठाकुर नहीं मानता वह तो वासना मे अंधा हो चुका है। दलित स्त्री का स्वाभिमान इन पंक्तियों में नाटककार ने प्रस्तुत किया है– ''काली, चंडी, दुर्गा का मैं रूप हूँ। दुर्गा, काली चंडी सभी दलित महिलाएँ थी। जो भी कामुक व दुराचारी व्यक्ति उनके पास गया था वह तरा नहीं, मरा था।''[5] ठाकुर अनुसूईया को पकड़कर ट्यूबवैल की कोठरी के अन्दर ले जाने की जबदरस्ती करता था। वह भागती है किन्तु पानी मे गिर जाती है। अनसूईया के हाथ में गड़ासा आ जाता है जिससे वह कई वार ठाकुर पर वार करती है, ठाकुर अनसूईयां पर हमला करता है आखिर दोनो मर जाते है।

मनुवादी लोग रतनलाल की बेटी को काल गर्ल बनाते है। एक दिन पुलिस पकड़कर उसे न्यायालय में पेश करती है, न्यायाधीश रतनलाल है। लड़की के पिता का नाम पूछा जाता है तब मजिस्ट्रेट रतन लाल का नाम बताती है। यह सुनते ही रतन लाल कहता है कि यह लड़की पालग है। लड़की रतनलाल की पोल खोलती है। ''मैं पागल नहीं हूँ। पागल आप है। आप कमीने है, नीच हैं। मैं अनसूईया की लड़की हूं। वह तुम्हारी पहली पत्नी थी, जिसको तुमने अप. ने घर से निकाल दिया था।..... हम मॉ–बेटी दर–दर भटकती रहीं। तुम मनुवादी व्यवस्था के पोशक हो''[6], इस प्रकार 'दलित डिप्टी कलेक्टर' नाटक की कथा हमारे दिल को दहला दे ऐसी है। सोनकर जी की अनसूईया जीवन से ज्यादा इज्जत को महत्व देती है। यह कथा दलित चेतना की वाहक है।

'छायावती' सोनकर का महत्वपूर्ण नाटक है जिसका प्रकाशन 2003 मे हुआ है। प्रस्तुत नाटक की कथा नौ दृश्यों मे विभाजित है, जिसमें अन्तर्गत छायावती नामक दलित स्त्री के मुख्यमंत्री बनना और सभी बड़े अफसरों एवं सामाजिक संस्थाओं से निपटने की उसकी विशेष कार्यशैली पर प्रकाश डाला गया है। भूमिका में डा. हरिदत्त भट्ट ने लिखा है कि–'छायावती' एक ऐसा नाटक है जो एक दबंग राजनेता और प्रशासनिक अधिकारियों के ईद–गिर्द घूमता है। ब्यूरोंक्रेट्स सदियों से राज नेताओं को अपनी अंगुलियों पर नचाते रहे हैं। पहली बार मुख्यमंत्री छायावती ने दबंग ब्यूरोंक्रेट्स को एक भीगी बिल्ली बना दिया है। छायावती के कार्य की शैली किसी भी जेट विमान से ज्यादा तेज है। जिसके कारण दलितो–पिछड़ों और अल्प संख्यको का विकास तेजी से हो रहा हैं। सवर्ण जातियाँ जो कभी छायावती और हाथीराम से दूरी बनाये र खती थी आज उनकी अनुयायी और प्रशंसक बनती जा रही है।''[7] असल में यह नाटक दलित समाज की उत्कर्ष की गाथा है।

सवर्ण नहीं चाहते है कि दलित पढ़–लिखकर आगे बढ़े या ऊँचे पद पर आसीन हो। छायावती आई0ए0एस0 बनना चाहती है पर हाथीराम छायावती की प्रतिभा देखकर उसे राजनीति में प्रवेश करने के लिए कहता है। तब छायावती कहती है कि–''अगर मेरे राजनीति मे आने से मानव कल्याण, दलित उत्थान और स्त्रियों का शोषण व उत्पीड़न रूक सकता है तो मैं आपका साथ देने को तैयार हूँ।''[8], छायावती मुख्यमंत्री बनकर कई महत्वपूर्ण कदम उठाती है। जैसे दिन प्रतिदिन बढ़ते अपराध मे मामलो की जांच ? पुलिस की लापरवाही, अंबेडकर गांवो का पूर्ण विकास करना, सरकारी अस्पताल के डॉक्टर द्वारा दवाईयां प्राईवेट क्लीनिक मे इस्तेमाल करना, उस पर छापा मारना और पोल को खोलना, भ्रष्ट अधिकारियों के सस्पेंड कर देना, भू–माफिया, ड्रग–माफिया पर सख्त कानून लगाना और निपटाना। नारी उत्पीड़न को रोकना आदि। पुलिस विभाग की लापरवाही का एक

''(फाईल देखते हुए) इन ढ़ाई सालों से क्या कर करा है।'' [9], आज रक्षक दी भक्षक बन गया है, लोग सुरक्षित नहीं है।

छायावती दलित समाज की स्त्री है इसलिए दलित स्त्रियों की स्थिति से भलीभांति परिचित है। स्त्री शिक्षा पर वह जोर देती है। स्त्रियों के लिए शिक्षा सरलता से मुहैया कराना चाहती है। छायावती का मुख्य सचिव इसका सर्मथन करता हुआ कहता है''–बहन जी यह काम आपका बहुत बड़ा काम है। गरीब, अशिक्षित, शोषित लोगो की भलाई के काम कर रही है आप। (सभी अधिकारी सहमति से सिर हिलाते है) गांव में स्कूल, अस्पताल हो जाने से बहू, बेटियों का शहर नहीं जाना पडेगा। शहर जाने की दिक्कतों से बच जायेगी। सभी लड़कियां शिक्षित हो जायेगी।'' सोनकर जी ने कई गम्भीर समस्याएं उठाई है। गांव मे जाकर छायावती सबसे पहले इंजीनियर से कहती है–तेरे कार्यो से महक नही बदबू आ रही है। तू तो हीटर और ए.सी. मे सोता रहता है। तुझे इस गांव की सुध नहीं आई। यहां के बच्चे स्कूलों और कॉलेजों मे पढ़ने जाते हैं बिना बिजली के कैसे पढ़ेगे तेरे बच्चे तो मुफ्त की बिजली मे पढ़ते है (मुख्य सचिव से) आप बिजली विभाग के इंजी. नियरों को मुफ्त में बिजली देना बंद करों। इसको तत्काल सस्पेंड किया जाता है। जल संस्थान का इंजीनियर कौन है'' [10] सरकार लोगों के लिए कई योजनाएं बनाती हैं किन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि ये सुविधायें या योजनाएँ लोगो तक नहीं पहुँचती, सरकारी बाबू अपना घर भर लेते है। छायावती गांव के सरकारी अस्पताल का मुआयना करती है। सरकारी अस्पताल का डॉक्टर प्राईवेट अस्पताल चलाता है एवं दवाईयां बेच देता है। ''सरकार प्रत्येक गांव के प्राईमरी चिकित्सालयों को 50 लाख रूपये से अधिक देती है। गांव वालो को दवाईयों मुफ्त देने को आती है। ये सब दवाईयां कहां जाती है'' [11] आजाद भारत की तासीर चिंता का विशय है, छायावती ऐसे डाक्टरों पर ठोस कदम उठाकर जेल भेज देती है।

आजादी के वर्षो बाद भी दलित महिलाओं की स्थिति मे खास सुधार नहीं आया है, दलित महिला की उत्पीड़न की घटनाएं रोजना मीडिया व अखबारों मे पढ़ने मे मिलती है। नाटककार ने महिला आरक्षण व उत्कर्ष को प्रस्तुत किया है। बहन छायावती अंबेडकर गांव के निरीक्षण के दौरान स्त्रियों की अशिक्षा व आर्थिक विपन्नता को देखकर घोषित करती है कि –''समस्त सरकारी, अर्ध सरकारी, शिक्षण संस्थाओं इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि नौकरियों मे महिलाओं के लिए आरक्षण 33 प्रतिशत निधारित किया जाय। शासनदेश जारी कर तुरन्त लागू किया जाए। इसमें दलित महिलाओं के लिए 21 प्रतिशत कोटा निर्धारित हो। ''[12] इसके अलावा छायावती अल्पसंख्यकों एंव पिछड़ी जाति की महिलाओं के लिए जाति का सर्टीफिकेट जारी करने का तत्काल निर्देश भी देती है। सचमुच यह कदम सराहनीय व दूसरे मुख्यमंत्रियों के लिए प्रेरक है। हमारे देश मे चंद भू–माफिया गरीब किसानों पर हुक्म चलाते है और किसानों की जमीन पर अपना अधिकार समझते है। सरकार इन पर कोई कदम नहीं उठाती। किन्तु छायावती निडरता के साथ ऐसे लोगो के खिलाफ सख्त कानून लगाने व निपटने की बात करती है।–''मैं कुरसी पर रहूँ या न रहूँ। मैं ऐसे लोगो से सख्ती से निपटूगीं । मैं प्रदेश मे भय मुक्त समाज लाऊँगी। ऐसे अत्याचारियों की जगह जेल में अंदर है। आलीशान महलों में नहीं।'' [13] इस प्रकार दलित छायावती मुख्यमंत्री के पद पर विराजमान होकर देश सेवा, समाज सेवा एवं दलित उद्धार, गाँव में नई पाठशाला, अस्पताल, पानी की सुविधा करके अंबेडकर गांव का सम्पूर्ण विकास करती हैं। यह देश व दलित समाज के लिए गौरव की बात है।

'समाजद्रोही' रूपनारायण सोनकर का प्रसिद्ध नाट्य संग्रह है, जिसका, प्रकाशन 2007 मे हुआ। संग्रह का पहला नाटक ही नाट्य संग्रह का शीर्षक है। दरअसल सोनकर की प्रसिद्ध कहानी –समाज द्रोही' का यह नाट्य रूपान्तर है। दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी भारत के तत्ववाधान मे 26 अगस्त 2006 को दून घाटी रंगमंच के द्वारा टाउन हॉल, देहरादून में इस नाटक का मंचन हुआ। जिसमें रूपनारायण ने एक कनिंग एवं क्रूर नेता की भूमिका निभाई है। 'समाज द्रोही' नाटक को ई.टी.वी. उर्दू ने कवर किया और कुछ दिनों बाद ई.टी.वी. ने इसका प्रसारण 'खास बात' कार्यक्रम में किया। बतौर अशरफ उसमानी टी.वी. पत्रकार का कहना है कि –''आजादी के बाद भारत में 40,000 हिंदू– मुसलिम दंगे हुए है जिसमें कुछ स्वार्थी नेताओं ने दलितों को अल्पसंख्यको के सामने खड़ा किया है। इन दंगो में न जाने कितने दलित और अल्पसंख्यक मारे गये है। जब से दलितों ने स्वार्थी नेताओं की मंशा को समझकर दंगो में भाग लेना बंद कर दिया है, दंगे बहुत कम हो गये है।'' [14]

सोनकर जी ने प्रस्तुत नाटक मे आज के नेताओ की घि नौनी राजनीति को पर्दाफाश किया गया है।

कृषि प्रधान हमारा देश आज कुर्सी प्रधान हो गया है। आज के स्वार्थी नेता सत्ता मे कायम रहने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते, कुर्सी का नशा किसी भी निर्दोष की जान ले लेता है। गांधी या सेवा का मुखौटा लिए, मंदिर–मस्जिद के नाम पर वह भोली–भाली जनता को धोखा देते है। गिरगिट की तरह रंग बदलना मिसाल के तौर पर पार्टी बदलते है, गाड़ी बदलते है, बंगला बदलते है और आखिर खुद बदल जाते है। हिन्दू–मुस्लिम के साथ ब्लैकमेल करके आपस में दंगे करवा कर अपनी ि खचड़ी पकाते है। इस कटु सत्य को 'समाजद्रोही' के नि. रंजनलाल बहुरूपिये पात्र द्वारा रेखांकित किया है। लेखक ने इस नाटक में दलितों का जागृत कर दिया है कि आप साम्प्रादायिक दंगो में मत पड़ो और मानव धर्म की रक्षा करें। आलोच्य नाटक के प्रारंभ में हम देखते है कि हिन्दू–मुस्लमान दंगा कर रहे हैं। मुस्लमान दंगाईयों के हाथों में चाकू, करौली, तमंचे हैं। हिंदू दंगाईयों के हाथ में त्रिशूल–तलवार, डंडे व रिवाल्वर है। दोनों जाति के लोग अपने अपने लोगों को भड़का रहे है। निरंजरलाल शर्मा एम. पी. दलित एंव मुस्लिम प्रोफेसर दोनो समुदाय के लोगों को दंगा बंद करने को कहते है। दलित प्रोफेसर कहता है कि–''हिंदूओं को समझाते हुए) अरे भाई मारकाट में क्या र खा है। इस मातृभूमि को खून से क्यों रंग रहे हो अपने ही भाईयों को क्यों मार रहे हो यदि खून बहाना ही है तो सीमाओं पर दुश्मनों से लड़कर खून बहाओं। आंतकवादियों से लोहा लेते और सीमाओं की रक्षा करते हुए तुम्हारे शरीर से बहने वाली एक–एक खून की बूंद मातृभूमि को पवित्र कर देगी।''

निरंजनलाल जैसे नेता की कथनी एवं करनी मे जमीन–आसमान का फर्क है। हाथी की तरह उनके दिखाने के वह खाने के दाँत अलग अलग होती है। असल में ऐसे नेताओं से बचकर रहना चाहिए या उनकी पोल खोल देनी चाहिए ताकि भोली–भाली जनता उनके हथकंडे न बने। निरंजन लाल कट्टर हिंदू है वह हिंदूओ को मरते नही दे ख पाता। इसलिए नीला खटिक को अपने जाल में फंसाता है। जब मानवतावादी नीला अपने घर में चौबीस मुसलमानो की जान बचाने के लिए आश्रय देता है तब निरंजन लाल, नीला से कहता है कि–''आपने चौबीस अल्पसंख्यकों को पनाह दे रखी है। उनकी वजह से आपकी व आपके परिवार वालो की जान खतरें में हैं ? ऐसा आप क्यों कर रहे है।'' [16] नीला बताने लगा कि दंगे के दौरान आप हिंदू–मुसलमान को अपने दो हाथ बता रहे थे। निरंजनल. ाल कबूल करते है कि वास्तव में यह सब दिखावा था। निरंजन लाल बड़ी चालाकी से खुंखार नीला को अपनी हवेली मे ले आता है और उसे शराब पिलाता है। नीला सो जाता है। अपनी साजिश के अनुसार शर्मा रात को एक कट्टर हिंदू नेता से बात करके नीला के घर मे आश्रित अल्पसंख्यकों को खटिक की योजना में सफल होता है। यह है हमारे नेताओं के असली चेहरें इसका पता चलते ही नीला विचलित होकर कहता हैं–''आपने मेरे साथ धोखा किया है। अल्पसंख्यकों का नरसंहार करवाया है। आप बहुत बड़े धोखेबाज है।'' [17] सोनकर जी ने वर्तम. ान नेताओं की घटिया किस्म की राजनीति का पर्दाफास किया है। सातवें दृश्य मे निरंजनलाल की ये पंक्तियां इस बात की पुष्टि करती है–''ये सब राजनीतिक हथकंडे है। राजनीति की शतरंजी चाले है। राजनीति मे न्याय–अन्याय, कुछ नही होता है। नैतिकता राजनीति की डिक्शनरी मे नहीं होती है। राजनीति का केन्द्र बिंदु होता है–केवल सत्ता,बाई–हूक या बाई–क्रूक। मानवता की बात करना राजनीति मे बेवकूफी है।'' [18] ध्यातव्य है कि ऐसे नेता 'समाज द्रोही', शैतान, जिन्न और हत्यारे हैं।

सोनकर जी ने प्रस्तुत नाटक में दंगो के सहभागी दलितों को नहीं बनाया है पर उसे रोकने वाला दर्शाया है। यह है दलित समाज की बदलती हुई विचारधारा। अभी तक के साहित्य में लेखक ने अपने पात्रो को ब्राह्मणों को ढकोसले भरे बहाव मे आकर दंगो के नाम पर अपना जनून दिखाते हुए, मरते है बताया है। लेकिन इस नाटक में दलित उसका विरोध करके भाईचारे की भावना का संदेश देता हैं। वस्तुतः निरंजनलाल जैसे 'कोबरा नाग' या बहुरूपिया से बचकर रहना जरूरी है क्योंकि कनिंग एंव कूर, साम्प्रदायिकता फैलाने वाले, बलात्कार व अपहरण करने वाले एंव लोगों का कत्ल करने वाले नेता पार्लियामेंट और विधानसभाओं में न पहुंच पाये। ऐसे नेता पैदा हो जिन पर समग्र समाज, पूरा देश और विश्व गौरव कर सके। वाकई आज ऐसे नेताओं की जरूरत है।

'महानायक' सोनकर कृत दलितों के भोलेपन की कथा पर आधारित नाटक है। जो बिना सोचे समझे एक

के बाद एक शोषण की विभीसिका में झोंक दिये जाते हैं तथाकथित आज के नेता (हिन्दू–मुसलिम) कैसे अपने स्वार्थ के हितों की रक्षा के लिए दलित जनों के द्वारा नरसंहार करवाते है इसका स्पष्ट एंव सटीक वर्णन है। इतिहास साक्षी है कि चाहे मातृभूमि की रक्षा की बात हो, धर्म संकट की बात दलित जातियों बलिदान की दृष्टि से कभी पीछे नही रही और इतिहास यह भी कहता है कि उच्चवर्गीय लोगों ने अपनी स्वार्थपरता और धार्मिक हित में सदा ही दलितों को गाजर, मूली की तरह कटवाया। अतः महानायक, दलितों, पिछड़ों और लांचार लोग, ब्राहण, क्षत्रिय एंव वैश्यों के स्वार्थी नेताओं के बहकावे में न आने के लिए सचेत करता है। 'खल–छल–नीति' नाटक में ग्राम प्रधन सत्यनाराण त्रिपाठी, हाईस्कूल के प्रधानाचार्य जितेन्द्र यादव, प्राईमरी हैल्थ सेन्टर के डा0 जोरावर सिंह के माध्यम से गांव में फैले भ्रष्टाचार, आंतक, अराजकता से युक्त माहौल दिखाया है। इन तीनों ने आतंक फैलाया है। डाक्टर दवाईयां बेच देता है। प्रधानाध्यापक स्कूल को हड़प लेता है। ग्राम प्रधान ने दलित लड़की सुनयना को रखैल बनाकर रखा है, उसको मारता पीटता है। गांव का पढ़ा लिखा दलित खटीक संकटा प्रसाद ग्राम प्रधान बनकर गांव, राज्य, राष्ट्र, के सुखद भविष्य के सपने को साकार करने की को. शिश कर रहा है। आज हमें ऐसे व्यक्तित्व की जरूरत है जो भारत निर्माण में योगदान दे सके। सत्य नारायण त्रिपाठी सुनयना से जबरन खिलवाड़ करता है तथा अपने 15 वर्षो की प्रधानी मे 15 मर्डर किये है। ऐसी धमकी देता है तब सुनयना क्रोधित होकर कहती है–'' मैं जईहौ, मुहका कौन रोकत है। (दरवाजे की ओर तेजी से बढ़ती है) दलित लड़किया कमजोर नही होत है। वीरांगना झलकारी बाई संताने हैं हम।''

मंचीयता की दृष्टि से नाटककार रूपनारायण सोनकर को पूर्ण सफलता मिली है। जहां मुनवादी व्यवस्था की पोल खुल जाती है और असल चेहरा स्वतः बेनकाब हो जाता है। इनके नाटक कहीं न कहीं खेले गये है इतना ही नही सोनकर ने अभिनेता के रूप मे सफलता प्राप्त करके दर्शको के दिल जीत लिये है, इतना ही नही उनके नाटक दलित जनों के आत्मसम्मान को जगाता है। जगह–जगह उनको सजग करता है।

सन्दर्भ :–

1.नागफनी–रूपनारायण सोनकर–फरवरी–अप्रैल–2007 पृ.–132

2.एक दलित डिप्टी कलेक्टर–रूपनारायण सोनकर–अपनी बात से

3.वहीं, पृ. 27,

4.वहीं, पृ. 28,

5.वहीं, पृ. 28,

6.वहीं, पृ. 26,

7.छायावती–रूपनारायण सोनकर–भूमिका से

8.वहीं, पृ. 5

9.वहीं, पृ. 8,

10.वहीं, पृ. 15,

11.वहीं, पृ. 17,

12.वहीं, पृ. 27,

13.वहीं, पृ. 38,

14.समाज द्रोही–रूपनारायण सोनकर–लेखक की कलम से (15) वहीं, पृ. 3,

15.वहीं, पृ. 16,

16.वहीं, पृ. 16,

17.वहीं, पृ. 16,

18.वहीं, पृ. 28,

सम्पर्क–

डा.धीरजभाई आर. वणकर

बी.डी.कालेज,दीनाबाई टावर के सामने सी.टी. कैम्पस, लालदरवाजा अहमदाबाद–380001

दूरभाष–09638437011

E.Mail:

dhirajvanker@gmail.com

*****

आर्थिक–सांस्कृतिक चेतना और व्यवस्था परिवर्तन को प्रतिबद्धः सूअरदान

डॉ. अजमेर सिंह काजल

प्रोफेसर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली

उपन्यासकार रूपनारायण सोनकर ने 'सूअरदान' के माध्यम से भारतीय विशेषकर हिंदू समाज में मनुष्यों व पशुओं संबंधी पूर्व निर्धारित भेदभावजनक मानसिकता के आर्थिक पहलूओं को उद्धाटित करने का सार्थक प्रयास किया है। रचनाकर को तंत्र की समस्याओं का ज्ञान है और वह स्वर्ग–नरक की अलौकिक दुनिया को जोरदार ढ़ग से नकराता है। इससे भी महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उपन्यासकार कथानक परिकल्पना को चेतना और चिंतन में बांधकर सामाजिक यथार्थ का सामना करते हुए सामाजिक आदर्श की स्थापना करना चाहते हैं। लेखक ने थोपी गई पेशेगत हीनता की मानसिकता की परतें उतारकर यह संदेश दिया है कि व्यक्ति का सम्मान जाति से नहीं बल्कि कर्मशीलता से स्थापित आर्थिक स्थिति से होता है। यदि कर्मशील होकर ईमानदारी से पिगरी फार्म स्थापित किए जायें जो देश ही नहीं, विदेशी मुद्रा के भंडार भर जाएंगे। तब वही सूअर घृणा के पात्र नहीं, बल्कि लाभांवित वर्ग के दिलो–दिमाग में बसकर उन्हें आर्थिक मजबूती प्रदान करेंगे। उपन्यास में ब्राह्मण और बहुजन वर्ग के कर्मशील युवा आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए पिगरी फार्म स्थापित करते हैं जिससे सामाजिक रूप से अपमानित मगर आर्थिक दृष्टि से लाभकारी और कम लागत में स्थापित किए जा सकने वाले व्यवसायों के प्रति सामाजिक नजरिया बदलने लगता है। आज के लोकतांत्रिक समय में परम्परागत जातिगत पेशों संबंधी मानसिकता से देश और समाज का आर्थिक हित पूरा होने वाला नहीं है। अतः 'सूअरदान' परम्परागत ध ारणाओं–पाखंडों को त्यागने और आर्थिक–सांस्कृतिक चेतना के विकास का संदेश देता है।

.2.

1. पिगरी फार्म की आर्थिक नैतिकता से बदलता समाजः ग्रामीण भारत जातिवाद और उत्पीड़न का केंद्र है। इसके विरूद्ध चेतना पैदा करने के लिए समाज सुधार के आंदोलन चलते रहे हैं, मगर यह नियंत्रित नहीं हो पाया है। जातिवाद से प्रदूषित ग्रामीण वातावरण को सामाजिक–आर्थिक विकास की सही राह पर लाने के लिए उच्च तकनीकि व व्यावसायिक शिक्षा में निपुण सिंहासन खेड़ा गांव के आधुनिक युवाओं ने बैंक से ऋण लेकर पिगरी फार्म स्थापित किया। ''गांवों की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फैकना चाहते थे। सदियों से समाज में चली आ रही अंध–धार्मिकता को उखाड़ फैंकना चाहते थे। जातिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बंधुत्व पर यकीन करते थे।'' (रूपनारायण सोनकर, सूअरदास, पृ. 15, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, 2010) गांवों को आर्थिक रूप से विक. सित करने और गरीबी से मुक्ति दिलवाने हेतु प्रारम्भ किए गए पिगरी फार्म का उत्पाद देश–विदेश में सप्लाई होने लगा था और पांच–छः वर्षो में ही करोड़ों का मुनाफा कमाकर जबरदस्त ख्याति प्राप्त कर ली।

पिगरी फार्म द्वारा पुजारी दयाशंकर के एड्स इलाज पर ला खों रूपये खर्च किए जाने से उनका पुनर्जन्म हुआ था। उसके ब्राह्मणी आचार–विचार गायब हो गए थे और पिगरी फार्म उनके दिल की धड़कन बन गया था। मंदिर में स्थापित देव प्रतिमांए उसे फालतू की चीजें लगने लगी थीं। धार्मिक कर्मकांडों में व्यर्थ ही अपनी ताकत गंवाने का अहसास पाकर वह पिगरी फार्म का पुजारी बन गया। वह वैचारिक परिवर्तन का संदेश देते हुए कहता है–'' इस पत्थर की मूर्तियों को जिनको हम देवता कहते हैं। रात दिन इनकी सेवा में लगे रहते हैं...इन्होंने कभी भी किसी मानव का कल्याण नहीं किया है। हमारे संस्कारों को बेवजह इतना धार्मिक बना कर हमें कर्महीन बना दिया है एवं फिजूल की चीजें हैं। मैं अब अपना पिगरी फार्म में लगा दूंगा।'' (पृ. 84) वह पिगरी फार्म को ही देवता मानते हुए कहता है– ''देवता, अल्लाह, गॉड,

.3.

मंदिर–मस्जिद या गिरजा घरों में नहीं रहते हैं। देवता समाज में रहते हैं। हम सभी के बीच रहते हैं'' (पृ. 64) उपन्यासकर ने उद्योग की नैतिकता के तहत अभावग्रस्त ग्रामीण समाज को भयंकर बीमारी से मुक्ति हेतु किए जाने वाले प्रयासों की सराहना की है। ''यह वास्तव में काल्पनिक–लोक नहीं है बल्कि पिगरी–लोग है। एक ऐसा व्यवसाय जिसके निर्यात से देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है। देश की गरीबी मिट सकती है।'' (पृ. 68)

उपन्यास प्रश्न उठाता है कि किसी संस्था से लाभांवित होकर, उसका व्यक्तिगत गुणगाान करने की बजाए उसके संदेश को अपनाना अधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रभाव से यदि व्यक्ति अपनी संपूर्ण व्यवस्था को रूपांतरित करने की ओर बढ़वा है तो निश्चित ही इसे वैचारिक परिवर्तन कहा जाएगा। उपन्यास के प्रमुख पात्र पुजारी का हृदय परिवर्तन नहीं

बल्कि व्यवस्थागत परिवर्तन हुआ है और वह अपने धंधे को त्यागकर पिगरी फार्म में रहना अपनी शान समझता है। इसलिए वह अपने जाति भाईयों की गालियां सहकर गायों की सेवा करने के प्रस्ताव को ठुकराता हुआ कहता है– ''मेरा तो उद्धार सूअरों ने किया है।... ऐसा लगता था जैसे कोई पिता अपने पुत्रों से प्यार करता है।'' (पृ. 85) सिंहासन खेड़ा गांव का पिगरी फार्म संदेश देता है कि पिगरी व्यवसाय आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी और इससे देश की भूखमरी मिटाने सहित अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवत. ंन की संभावन है। इससे सामाजिक अंधकार के स्थान पर आधुनिकता का प्रकाश जगमगायेगा।

2. पंचायती राज व्यवस्था का आदर्शः भ्रष्टाचार विहीन व समतामूलक गांवः ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी मानवीय धरातल से उखड़ा हुआ व्यक्ति है और वह प्रधानी व आपराधिक पृष्ठभूमि का रौब जमाकर, भ्रष्टाचारी कार्यों में संलिप्त होकर ग्रामीण पंचायती राज व्यवस्था को कंलकित करता है। प्राईमरी हैल्थ सैंटर के डॉक्टर ठाकुर जोरावर सिंह और जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाचार्य जितेन्द्र यादव, प्रधान के साथ मिलकर लाखों रूपयों का भ्रष्टाचार

.4.

करते हैं। पंचायती राज व्यवस्था के प्रतिनिधियों, शिक्षा और स्वास्थ्य केंद्रो में आपराधिक और भ्रष्टाचार काबिज है। प्रधान दलित युवती सुनयना का यौन शोषण करते हुए कहता है– ''जो ताकतवर है वही सभी चीजों का भोग करता है। ऐसा सभी युगों से होता आया है।... मैं इस गांव का राजा हूं। हर चीज पर मेरा हक पहले है।... मैंने पंद्रह वर्षों के अपने ग्राम प्रधानी के कार्यकाल में पंद्रह मर्डर किए हैं। जो भी साला मेरे खिलाफ गया। मेरे खिलाफ गवाही दी। सभी का कत्ल कर दिया। मैं इस गांव का शहनशाह हूं।'' (पृ. 31)

पंचायती व्यवस्था भ्रष्टाचार, जड़–विकृत परम्पराओं, समाज के कमजोर वर्गों के प्रति भेदभाव, हिंसा और स्त्रियों के प्रति अपराधों की आश्रयदाता बनी हुई है। यहीं पर पंचायतों के नाम पर सवर्ण जातियों का दबदबा और गुंडागर्दी कायम है। इस माहौल में राजनीतिक लोग उनके माध्यम से अपना ल क्ष्य साधने की फिराक में रहते हैं तो ग्राम प्रधान अपना। जहां तक प्रशासन और पुलिस का सवाल है ये चलती हैं राजनीतिक इशारों से। ऐसी दशा में लेखक ने स्वस्थ प्रशासनिक और पंचायती राज व्यवस्था का स्वप्न देखा है जिसमें रंग भरने के लिए दलित नायक संकटा प्रसाद चिकवा प्रधान पद पर चुनकर आते है। वे न केवल पूर्व प्रध ान त्रिपाठी और उसके सहयोगियों द्वारा किए गए घपलों–घ ोटालों की जांच करवाते हैं बल्कि सरकारी योजनाओं के माध्यम से गाँव के गरीब लोगों को रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, प्रतिनिधित्व, छुआछात व प्रदूषण मुक्त जीवन के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध करवाते हैं और भ्रष्टाचार, अंध ाविश्वास, जातिवाद विरोधी और स्त्रियों की समर्थक स्वस्थ, न्यायपरक, समतामूलक व्यवस्था की नींव रखते हैं।

बिना कार्य किए मजदूरी हड़पने के आदी त्रिपाठी की आदत पर वर्तमान प्रधान चिकवा रोक लगाते हैं तो वे कहते है ''तुमने कभी ब्राह्मणों को मजदूरी करते देखा है क्या? ''(पृ. 51) इससे ज्ञात होता है कि पंचायती राज व्यवस्था में भूमिपति जातियो का आतंक है और अन्य जातियों के प्रति. निधियों को

.5.

कदम–कदम पर अपमानित किया जाता है। आधुनिक चेतना के प्रतिनिधि प्रधान चिकवा कहते हैं कि स्वाभिमान की रोटी खाने से मानवीय गरिमा बढ़ती है। विडम्बना है कि दलित प्रतिनिधि द्वारा पूरी जी–जान लगाकर गाँव के विकास के लिए किया गए कार्यो को जातिवादी लोगों द्वारा कम महत्व का सिद्ध करने के प्रयास किए जाते हैं और स्वयं बिना कुछ किए ही सम्मानित होना चाहते हैं।

पिगरी फार्म के पार्टनर पंचायती राज व्यवस्था सहित सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते थे और इसके लिए उन्होंने राजनीतिक दलों के योग्य उम्मीद्वारों से जातिवाद और छूआछूत मिटाने, अन्तरजातीय विवाह को प्रोत्साहन देने, स्कूल, कॉलेज व औषद्यालय खोलने को प्रोत्साहन देने संबंधी शपथ पत्र लेकर फंडिंग करते थे। उपन्यास सामाजिक नवनिर्माण के लिए अन्तरजातीय विवाह और प्रेम विवाहों में पंचायतों की भूमिका को सकारात्मक बनाने का पक्षधर है। चेतनशील पंचायतें जन जागरण के जरिए ग्रामीण मानसिकता को बदल सकती हैं।

3. अंतरजातीय व अंतरधर्मी विवाह समतामूलक समाज की सीढ़ीः पिगरी फार्म के हिस्सेदारों ने विवाहित की परम्परागत धारणाओं को खंडित करते हुए अंतरधर्मी और अंतरजातीय विवाह का मार्ग प्रशस्त किया है। बहुजन युवाओं की तरफ ब्राह्मण युवतियों के आकर्षण का प्रमुख कारण इन युवाओं की आर्थिक क्षमता थी। इसका विरोध करते हुए अग्निहोत्री दांत पीसकर कहता है– ''मैं होता तो तीनों लड़कियों को जान से मार देता है। यदि वे मेरी बेटियां होतीं। ब्राह्मणों की शान, प्रतिष्ठा और गौरव इस पुजारी की बेटियों ने गर्त में मिला दिया है। पहले ब्राह्मण, दलितों/पिछड़ों की खूबसूरत लड़कियों और औरतों को र खैल बना कर रखा करते थे। अब उल्टा हो गया है। राम! राम! राम!'' (पृ. 81) पुजारी ने विवाह की परम्परागत मान्यताओं को खंडित करते हुए, भारतीय संविधान के समतामूलक प्रावधानों का उच्चारण करते हुए, इन

.6.

विवाहों को सम्पन्न करवाया। वास्तव में ये विवाह अलग–अलग धर्मों, अलग–अलग जातियों और अलग–अलग संस्कृतियों का समुच्चय बन गए थे।

अंतरजातीय विवाह करने पर पुजारी की पुत्रियां अपमान करने वाले ब्राह्मणों को कहती हैं– ''तुम्हारे माथे पर लगा यह तिलक ब्राह्मण जाति का कलंक है।... लोग तुम लोगों की वजह से ब्राह्मण जाति को शक और घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं...आने वाली तुम्हारी ब्राह्मणों की पीढ़ियां हमें नहीं तुम्हें श्राप देंगी जब वे लोग भूखों मरने

लगेंगे। दाने–दाने के लिए मोहताज होंगे। तब तुम्हारी उच्चता हाथों में कटोरा लिए गली–गली भीख मांगेगी। वही लोग जिनको तुम नीच कहते हो तुम्हारे कटोरों में आटा डालेंगे।'' (पृ. 97–98) बहुजन समाज में विवाहित ब्राह्मण पुत्रियां अपनी जाति का आह्वान करती हैं कि वे अपनी दकियानूसी मानसिकता और भेदभावों को त्यागकर आर्थिक रूप से सम्पन्न, सामाजिक समता–बंधुता का समाज बनाने में सहयोग करें।

4. महिलाओं और मजदूरों के प्रति अत्याचारः न्यायपरक समाज में बाधाः भारतीय संविधान द्वारा समाज के कमजोर वर्गों को शासन–प्रशासन शिक्षा और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रदान किए गए प्रतिनिधित्व से इनमें चेतना पैदा हुई है। ऐसे अनेक युवा हैं जो अथाह गरीबी का जीवन यापन करते हुए देश के महत्वपूर्ण पदों तक पहुंचे हैं। उपन्यास ऐसे ही एक दलित युवा रतनलाल के डिप्टी कलक्टर बनने पर अपने परिवार के साथ की गई धोखेबाजी से परिचय करवाते हैं। वह सम्मान और धन के चक्कर में उच्च अधिकारी की बेटी से विवाह रचाकर सम्पूर्ण परिवार के जीवन में कांटे बो देता है। उपन्यास सवाल उठाता है कि बड़ी नौकरी मिलने के बाद व्यक्ति को अपने घर–परिवार बीवी–बच्चों, भाई–बहिन और रिश्तेदारों को तिलांजली देना निहायत ही निकृष्ट कार्य है। जो व्यक्ति न्यूनतम मानवीय और पारिवारिक गरिगा को त्यागकर पहली पत्नी के रहते हुए जालसाजी से दूसरा विवाह करते हैं, थोड़े समय में

.7.

ही बहुत कुछ प्राप्त कर लेना चाहते हैं। ऐसे नालायक बेटों और पतियों को समाज सम्मान नहीं देता, अपितु धिक्कारता है। ''दुनिया में बहुत ऐसे पति मिलेंगे जिनकी सफलता पत्नी के लिए अभिशाप बन जाती है। ऐसा अभिशाप जिसमें उसकी सारी तपस्या व्यर्थ हो जाती है। जीवन में आने वाले सुनहरे सपने एकाएक आंधी–तूफान में बह जाते हैं। हरी–हरी फसल नष्ट हो जाती है।'' (पृ. 106) ऐसे अधिकारी देश, समाज और परिवार के लिए कलंक होते हैं। व्यक्ति को महानता निजी मौज मस्ती से नहीं, बल्कि सामाजिक जागरुकता के लिए कार्य करने से मिलती है। अतः उन्हे चाहिए कि अपने से पीछे रह गए लोगों की मदद करें।

परित्यक्ता पत्नी अनुसूईया बारह वर्ष मायके में जीवनयापन करती है और एक दिन मान–सम्मान की रक्षा में हुए संघर्ष के दौरान वह आतताई ठाकुर को मारकर स्वयं भी मारी जाती है। रतनलाल के व्यवहार पर रामदीन कहता है–'' रतन के व्यवहार को देखकर कोई भी गरीब आदमी औलाद को अफसर नहीं बनायेगा।'' (पृ. 110) पिता संतू की वेदना का कारण अधिकारी बेटे के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार हैं। अधिकारी बनने के बाद अनपढ़ मां–बाप को अपने ऊपर बोझ समझने वाले अपनी औकात भूल जाते हैं। उन्हें जो मंजिल मिली है उसमें इन्हीं बुजुर्गों का पसीना बहा है। रतनलाल जैसे अधिकारी वास्तविक सम्मान को भूलकर झूठे सम्मान की लालसा में भटकते हैं, वे मनुवादी व्यवस्था के पोषक बनकर स्वयं, अपने परिवार, समाज को अपमानित करवाते हैं।

रतनलाल अधिकारियों द्वारा महिलाओं के प्रति किए जाने वाले अपराधों से परदा उठाते हैं और उपन्यास महिलाओं का केवल इज्जत मानने की धारणाओं का खंडन करते हुए उन्हें सम्मानित नागरिक के अधिकार देने की वकालत करता है। रतनलाल दूसरी शादी के मामले में दंड से बचने की कोशिश करता है, मगर न्यायालय उसे अपराधी मानते हुए भारतीय दंड संहिता

.8.

की धारा 498–बी के तहत 5 साल की सश्रम सजा देते हैं। उसकी नौकरी तो गई ही साथ ही उसे जेल की हवा भी खानी पड़ी। उपन्यास महिलाओं के प्रति अपराधों पर रोक लगाने के लिए न्यायपालिका, प्रशासन कार्यों के साथ–साथ जन जागरण की तरफदारी करता है। सजा काटकर गांव वापस आने पर उसे अपनी गलती का गहरा अहसास हुआ। उसने सामाजिक नवनिर्माण करने हेतु गांव में आई.ए.एस. व पी.सी.एस. कोचिंग इंस्टीट्यूट की स्थापना करते हुए चेतनाशील अधिकारी तैयार करने का बीड़ा उठाया जिससे सामाजिक प्रतिबद्धता वाले अनेक युवा राजकीय सेवाओं में नियुक्त होने लगे। उसने पिगरी फार्म के साथ मिलकर नियुक्ति पाने वाले उम्मीद्वारों को सपरिवार सम्मानित करने के लिए डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय प्रशासनिक सेवा प्रोत्साहन सम्मान प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय उत्थान, ग्रामीण उत्थान और दलित–पिछडें वर्ग के उत्थान के लिए पिगरी फार्म के संच. ालक मण्डल और कोचिंग इंस्टीट्यूट द्वारा लाखों रूपये खर्च करने के सराहनीय कार्यों से आसपास के गांवों का नक्शा बदल गया था। आर्थिक रूप से विकसित ज्ञानपरक बनाने के लिए प्राथमिक आवश्यकता यह है कि सभी नागरिकों को समान अवसर मिलें।

ग्रामीण जीवन में खेतिहर किसानों, भूमिहीन किसानों और मजदूरों की स्थिति सबसे खराब है। ठेकेदार और उसके कारिंदे मजदूरों का ईंट भट्ठों पर आर्थिक और शारीरिक शोषण करते हैं। उपन्यास का धरमू पासी और उनकी नवविवाहिता सन्नो इसका प्रतिकार करते हैं। इसी तरह मुम्बई में मजदूरी करते वक्त बहुमंजिली इमारत से गिरकर लाल मोहम्मद की मौत तथा कोलकाता की सड़कों पर मनुष्यों द्वारा घोड़े की तरह रिक्शा खींचे जाने के प्रकरण देश में व्याप्त आर्थिक असमानता और शोषण के उदाहरण हैं। मिस हैरी सिल्वा ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रो. जगार, बच्चों के पालन–पोषण तथा दैनिक आवश्यकताओं के विषय में जागरूक करती है। यदि सरकारें चाहतीं तो आज़ादी के बाद देश के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य और सस्ती सरकारी

.9.

शिक्षा की एक समान व्यवस्था होना कोई मुश्किल काम नहीं था। असल में सरकारों की वरियताएं अलग रहीं। उनका ध्यान भोले–भाले लोगों को सस्ते नारे देकर उनके वोट प्राप्त करने पर ही अधिक रहा है। जिससे देश की अभ.

ावग्रस्त आबादी उनकी वरियताओं में शामिल नहीं हो पायी। कभी कभार यह मामला उठा भी तो उसे मात्र चुनावी घ ोषणा तक ही सीमित रखा गया।

5. हताशावादी, हिंसा और हकों के प्रश्नः 'सूअरदान' ने अभावग्रस्त जीवन यापन करने वाली समाज की विपुल उपेक्षित आबादी को मूलभूत सुविधाओं से जुड़े प्रश्नों पर गहन चिंतन किया है। राज्य द्वारा सभी लोगों को विकास के समान अवसर प्रदान न किए जाने से शासन–प्रशासन के विरूद्ध जनाक्रोश पैदा होना नई बात नहीं है। उपन्यास इसी जनाक्रोश के कारणों की तलाश करते हुए हताशावादियों की समस्या को ऐतिहासिक शोषण का प्रतिफल मानता है, जिसका प्रतिकार करने के लिए इन्होंने बंदूकें उठाई हैं, अपहरण और हत्याएं की हैं। यदि बदले में सरकार भी इनकी हत्याओं पर उतारू हो जाए तो समस्या बढ़ेगी। समाध ान करने का तरीका संवाद है। ''ये हताशावादी समाज के दुश्मन नहीं हैं, बल्कि हम उनके दुश्मन हैं। हमने जम. ीन–जायदाद, कल–कारखानों, उद्योग–व्यापर, शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, पुलिस और विज्ञान सभी जगह कब्जा कर रखा है।'' (पृ. 152) इनका संघर्ष अपने प्रतिनिधित्व और अधिकारों की प्राप्ति के लिए हैं। इसलिए सरकारों को इस दिशा में ध्यान देकर समान विकास और प्रतिनिधित्व के लिए कार्य करने चाहिए।

हताशावादियों द्वारा पिगरी फार्म का करोड़ों का माल पकड़े जाने पर उतेजना और हिंसा करने की अपेक्षा संवेदनशीलता और चेतना से संवाद करने पर बल देते हैं। सज्जन खटीक समस्या के आर्थिक पहलूओं पर चिंतन करते हुए हताश. ावादियों से आग्रह करते हैं कि गरीबी, अनपढ़ता से मुक्ति हेतु वे हथियार डालकर पिगरी फार्म में नौकरी करें। उद्योग अपनी सामाजिक, प्रतिबद्धता निभाए तो समाज और देश के सामने मुंह बाए खड़ी समस्याएं

.10.

समाप्त हो सकती हैं। आम जनता के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, प्रदूषण मुक्ति, जैसे कार्य करने से उन्हें जनता सिर आंखों पर बैठा लेती है। अराजकता को समाप्त करने में उद्योग यदि सच्चाई से अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करे तो समाज का चेहरा बदला जा सकता है। देश के नागरिकों को अन्याय, अपराध, भ्रष्टाचार और प्रतिनिधित्व जैसे प्रश्नों पर खुलकर संवाद करना चाहिए। देश के अमीर लोगों की जिम्मेदारी बनती है कि वे पिछड़ गए लोगों को आगे बढ़ाने में मदद करें। देश की तरक्की के लिए शिक्षित, निपुण और कर्मशील जनसंख्या और साधनों–संसाधनों के राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। विकास के समान अवसर तभी मिलेंगे जब हम आर्थिक रूप से समान हों, अन्यथा भैंस वही ले जाएगा जिसके पास लाठी होगी।

121 करोड़ के देश में यदि 20 करोड़ लोग सम्पन्नता का जीवन जी रहे हैं, निरंतर धनवान बनते जा रहे हैं जिससे अमीरी–गरीबी का अंतर बढ़ता जा रहा है और इसकी जिम्मेदार राजकीय नीतियां हैं। जरूरत यह है कि पीछे छूट गए 100 करोड़ लोगों को किस तरह से अवसर उपलब्ध करवा कर आगे बढ़ाया जाए ताकि वे देश के लिए समस्यांए पैदा करने की अपेक्षा समृद्धि के लिए काम करें। सैकड़ों एकड़ में फैला पिगरी फार्म सामाजिक नवनिर्माता का मार्ग प्रशस्त करता है। ''जहां पर भय और आतंक का माहौल होगा, वहां पर कोई भी विकास की योजना सफल नहीं हो सकती है। यदि हमारा गांव, कस्बा, तहसील और जिला जर्जर होगा तो पूरा मुल्क जर्जर होगा। यदि हमारा गांव, कस्बा, तहसील और जिला मजबूत होगा तो पूरा देश मजबूत होगा। यदि पूरा देश मजबूत होगा तो पूरा विश्व मजबूत होगा।'' (पृ. 156)

'सूअरदान' चाहता है कि शांति–सहिष्णुता के लिए पूरी दुनिया में न्याय, अधिकार, प्रतिनिधित्व के प्रश्नों पर संवाद हो और इसके लिए उद्योग और सरकारी वर्ग को साधनविहीन और समाज से बाहर रहने वाले अराजकतावादी लोगों के लिए जीवन की मूलभूत सुविधाएं जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य

.11.

सेवाओं की उपलब्धता हेतु निश्चित मात्रा में धन देना चाहिए। उपन्यास में पिगरी फार्म के अतिरिक्त अधिकांश उद्योगपति इसे स्वीकार नहीं करते। हताशावादी कहीं और से नहीं आए बल्कि इसी तंत्र की पैदाईश हैं। जिसे सम्मानजनक जीवन मिलता है वह अपराध की ओर नहीं बढ़ता।

6. गोदान और सूअरदानः सांस्कृतिक मूल्यों की श्रेष्ठता का संघर्षः भारतीय समाज में पुजारियों का चेतनशील बनकर उभरना किसी करिश्में से कम नहीं है। जहां धार्मिक कर्मकांडों के माध्यम से धोखाधड़ी, व्याभिचार का बाज़ार फलता–फूलता हो, वहां विकृत संस्कारों को त्यागकर विवेकशील मार्ग पर चलना बहुत बड़ी बात है। जिस देश में धर्म–जाति के नाम पर कत्लेआम होते हों उस देश में यदि कोई चेतनशील बनकर समाज के लिए कार्य करता है तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए। उपन्यास आधुनिक सोच और शिक्षा का पक्ष लेते हुए तथाकथित महात्माओं द्वारा देश के नुकसान पर मनन करता है कि मंदिर अवैध कार्यों और व्याभिचार के अड्डे बने हुए हैं। धर्म के इस झूठे प्रपंच और जाल को नकारकर, दकियानूसी मानसिकता को रौंदने के लिए बड़े स्तर पर जनजागरण की आवश्यकता है। सवाल उठता है कि जब एक आधुनिक पिगरी फार्म एक गांव को विकसित कर सकता है तो क्या हमें इस व्यवसाय को सम्पूर्ण देश में प्रोत्साहन और सम्मान नहीं देना चाहिए? हिंदू संस्कृति के प्रतीक पशु 'गाय' की आड़ में आधुनिक व्यापारिक तौर–तरीकों की खिलाफत करना सस्ती और घ ाटिया मानसिकता है। यदि संस्कृति की रक्षा ही करनी है तो सर्वप्रथम सामाजिक समता और बंधुता की स्थापना होनी चाहिए, मात्र लफाजियों से काम चलने वाला नहीं है। हमारे देश में मीडिया धार्मिक पाखंडों और अफवाहों को बड़े स्तर पर प्रसारित करता है। अल्पसंख्यकों के अहुसंख्यकों के नियंत्रण पर उपन्यास कहता है–''कुछ लोग ब्राह्मण जाति के गौरव को बनाए रखने के कारण ऐसा कर रहे थे। कुछ लोग

सूअर–फार्म की

.12.

आर्थिक मजबूती को देखकर चिढ़े हुए थे। उनको दलितों, पिछड़ो, अल्पसंख्यकों और गरीब स्वर्णो की उन्नति फूटी आंख नहीं भा रही थी। वे उनको उसी दीन–हीन दशा में देखना चाहते थे।'' (पृ. 135)

पिगरी फार्म की प्रगति से विचलित और दुखी होकर ब्राह्मणवादी विचारधारा ने सूअरों की चोरी करवाकर, धार्मिक मामला बनाकर मुख्यमंत्री को शिकायत भेजकर और गौशाला के बहाने पिगरी फार्म के मार्ग में बाधा डालने के लिए धार्मिक भावनाएं भड़काने और धर्माध बनाने के प्रयास किए। ''हमारा उद्देश्य पैसा कमाना नहीं है। हमारा उद्देश्य इस पिगरी फार्म को बंद करवाना है। इस पिगरी फार्म से ब्राह्मणों की जो भावनाएं आहत हुई हैं, उनको पुनः सुदृढ़ बनाना है। इस गांव सहित आसपास के गांवों में ब्राह्मण धर्म को बढ़ाना हमारा मात्र उद्देश्य है।'' (पृ. 132)

गौशाला जनता को रोजगार देने की बजाए उनसे मुफत में काम चाहती थी इसलिए पिगरी फार्म का मुकाबला करने की बजाए उसका बंद होना लाजिमी था, क्योंकि धार्मिक भावनाओं से किसी का पेट नहीं भर सकती। पिगरी फार्म के संचालक विभिन्न संस्कृतियों और जातियों के प्रतिनिधि पशुओं की नई पीढ़ी का निर्माण करने हेतु सूअर और गाय के मेल से 'सूगाय' फार्म बनाया और मानव व जानवर के मेल से 'मानवर' नस्ल तैयार करने हेतु अध्यनरत थे।

गांव में विज्ञान के चमत्कार हो रहे थे। 21वीं सदी से आगे की दुनिया पर विचार हो रहा था। व्यक्ति सड़ी–गली, मृत प्रायः घिनौनी सभ्यता और संस्कृति से मुक्ति पा रहे थे। इसी घिनौनी संस्कृति के पोषक सत्यनारायण त्रिपाठी को पिगरी फार्म ने कुरूपता से मुक्ति दिलवाई और बदले में उनसे परम्परागत भेदभावों को त्यागकर पाखंडरहित समतामूलक आचरण करने का वायदा करवाया गया और उसने 'सूगाय–फार्म' में नौकरी संभाल ली। पिगरी

.13.

फार्म ने पुजारी दयाशंकर की तरह सत्यनारायण त्रिपाठी की दुनिया बदल दी थी।

पिगरी फार्म के सामाजिक–आर्थिक सहयोग और जन–कल्याण के कार्यों ने पुजारी को वैचारिक रूप से परिवर्तित कर दिया था। आज वे मरणासन्न थे। पुजारी की बेटियां, दामाद और आस–पास के लोग जमा हो गए थे। ''मारकण्डेय अग्निहोत्री गाय की बछिया को लेकर पुजारी के बिस्तर के पास आ गए थे और बोले– ''पुजारी दयाशंकर जी आपको स्वर्गलोक यह गाय ले जाएगी। सुना है वहां भयंकर समुद्र होता है। आप इसकी पूंछ पकड़ कर भव सागर पार कर लेंगे। आप गाय का दान करा लें।'' पुजारी की सांसे बंद नहीं हुई थीं। अब भी थोड़ा–थोड़ा बोल रहे थे–'' नहीं मैं गोदान नहीं करूंगा।'' (पृ. 159)

पुजारी को स्वर्ग और नरक की वास्तविकता का अहसास था कि मृत्यु के बाद व्यक्ति गाय की पूंछ कैसे पकड़ सकता है। ''मरने के बाद मृत व्यक्ति के लिए काल्पनिक भवसागर की बात करना मिथ्या है। झूठ है। फरेब है। यदि मुझे दान करना पड़ा, तो मैं प्यार, भाईचारा, साम्प्रदायिक सद्भावना, समानता, देश प्रेम, जानवरों और मानवों के प्रति लगाव का दान करूंगा। पूरे विश्व में शांति रहे, इसलिए मैं अहिंसा के उपदेश का दान करूंगा। पूरा संसार प्रदूषण मुक्त रहे, इस उद्देश्य का दान करूंगा। प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा करे, इस संकल्प का दान करूंगा।'' (पृ. 159)

पुजारी द्वारा गोदान कराने से मना करने से हिन्दू धर्म में सदियों से चली आ रही अंधविश्वासी, अज्ञानी पाखंडी और शोषक परम्परा टूट गई थी। ''सूअर के दो तीन बच्चे पुजारी जी के बिस्तर के पास आ गए थे। एकाएक माहौल बदल गया था। जैसे वज्रपात हुआ हो। चारों तरफ सन्नाटा था। तीनों ब्राह्मणों ने कहा– ''ऐसा करने से अनर्थ हो जाएगा। युगों से प्रतिष्ठत हिंदू धर्म तहस–नहस हो जाएगा'' पुजारी दयाशंकर के अंतिम जीवन के कुछ ही क्षण

.14.

बचे थे। उन्होंने रामचंद्र त्रिवेदी को पास बुलाया। पुजारी दयाशंकर अपने पास आए एक सूअर के बच्चे पर हाथ रख कर कहा– ''मैं इससे बहुत प्यार करता हूँ...।'' यह कहते–कहते पुजारी जी की अंतिम सांसे बंद हो गई। मारकण्डेय अग्निहोत्री चिल्लाये। अनर्थ हो गया। पुजारी दयाशंकर जी ने ''गोदान'' के बदले ''सूअरदान'' कर दिया।'' (पृ. 160)

'सूअरदान' जातिगत व्यवसायों की हिन्दू अवधारणाओं पर चिंतन करता है और हिम्मत के साथ कहता है ब्राह्मण धर्म द्वारा अनेक व्यवसायों को निकृष्ट और घृणित मानकर इनमें कार्यरत व्यक्तियों व समाज को अपमानित किया जाता रहा है। असल में हिन्दू धर्मग्रंथों द्वारा निर्धारित नियम अल्पसख्यक सवर्ण जातियों द्वारा किए जाने वाले व्यवसायों को सम्मानित और बहुजन समाज और जातियों द्वारा किए जाने वाले व्यवसायों को कदम–कदम पर अपमानित करते हैं। यही कारण है कि सूअरदान करने पर ब्राह्मणों के चेहरों पर मुर्दनी छा गई और वे सांस्कृतिक रूप से परास्त अनुभव करने लगे। गाय के लाभकारी पशु न होने के बावजूद भी उसे महत्व देना और गोदान करने की जिद्द करना जड़ मानसिकता का प्रतीक है जबकि पिगरी फार्म से गांव के अधिकतर लोगों को रोजगार और मूलभूत सुविधाएं मिलती हैं। पुजारी त्रिवेदी और सत्यनारायण त्रिपाठी सूअर पिगरी फार्म के धन से स्वस्थ और लाभांवित होकर सुखी–सम्पन्न जवीन जी रहे हैं, और भी अनेक लोग लाभांवित हुए हैं, तब ऐसे समाज में गोदान का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। अतः वे अलाभकारी सांस्कृतिक धारणाओं को खंडित करते हुए सूअर को ही अपना हितकारी पशु मानकर व्यवस्था परिवर्तन को प्रतिबद्ध नजर आते हैं। उपन्यास गोदान के सांस्कृतिक मिथक को आर्थिक आधार पर खंडित करते सूअरदान के मिथक की रचना करता है। संक्षेप में कहें तो 'सूअरदान'

आर्थिक–सांस्कृतिक भूचाल की नींव डालने वाला क्रांतिकारी उपन्यास है।

.15.

रूपनारायण सोनकर ने जन मानस को चेताया है कि हिन्दू समाज गौशाला और गोदान जैसे मुद्दों के साथ धार्मिक आधार पर जुड़ा रहता है जबकि आज के संदर्भ में गाय की घरेलू और व्यापारिक महत्ता न के बराबर रह गई है। यंत्रीकरण के दौर में उसके बछड़े, बैल बनकर खेत में हल चलाने की स्थिति से निरंतर बाहर हो रहे हैं और इसका दूध तो शायद ही कोई पीना चाहता है। औद्योगिकरण और भूमंडलीकरण के दौर में बिना आर्थिक आवश्यकता के कोई भी पशु अधिक समय तक अपनी पह. चान सुरक्षित नहीं रख पाएगा। दूसरी तरफ उपन्यास पिगरी फार्म यानी सूअर पालन को लेकर एक विमर्श पैदा करता है कि आज के समय में पिगरी फार्म का काम आर्थिक दृष्टि से फल–फूल रहा है और पूरी दुनिया में इसकी मांग है। यही कारण है सिंहासन खेड़ा गांव का पिगरी फार्म थोड़े समय में ही आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होकर अपने लाभांश का एक निश्चित हिस्सा गांव की गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास दूर करने और सामाजिक समता–बंधुता, आधुनिकता और वैज्ञा. निकता का समाज बनाने पर खर्च करता है। यही व्यवसाय की नैतिकता और उद्योग का आदर्शरूप है जिसकी बदौलत पिगरी फार्म के संचालक अपनी व्यावसायिक निपुणता और कौशलता के बल पर देश–दुनिया में नाम कमाते हैं। पिगरी फार्म द्वारा प्रदान की जा रही आर्थिक सहायता से गांव में खुशहाली आई है। जिसका सम्मान सूअर को मिलना चाहिए, उसी की जय–जयकार होनी चाहिए।

'सूअरदान' हमारी सांस्कृतिक विरासत को टटोलने का प्रयास करता है जिसके तहत उसने सदियों से सम्मानित और सदियों से अपनामित पीढ़ियों के मध्य उभर रहे टकराव के बिन्दुओं को रेखाकिंत किया है। क्या कारण है ब्राह्मण और हिन्दू की मृत्यु पर गोदान ही हो जबकि गाय से उसका कोई आर्थिक लेना–देना नहीं रह गया है। वह गाय के नाम पर राजनीति करता है, लोगों की हत्याएं करवाता है। 15 अक्टूबर 2002 को हरियाणा के दुलीना

.16.

(झज्जर) में गाय के नाम पर 5 दलितों के मौत के घाट उतार दिया गया था। यदि इन्हें गाय से इतना ही प्यार है तो वह गाय को अपने दिन–प्रतिदिन के व्यावसायिक और आर्थिक क्रियाकलानों के साथ जोड़ कर सम्मान दें। दलित समाज के व्यवसायों को सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से निकृष्ट घोषित किया गया है। असल में यह सांस्कृतिक वर्चस्व का मामला है। 'सूअरदान' देश के सांस्कृतिक विरासत में एक धमाका करता है और जन मानस का आह्वान करता है कि व्यवसायों के जातिकरण को त्यागकर अपनी रूचि और क्षमता के मुताबिक व्यवसायों का चयन करें और उन्हें सम्मान दें।

सवाल उठता है कि जब गोदान करने वाले पुजारी सूअरदान कर सकते हैं तो फिर कमी किस चीज की है। सूअर को गाय के स्थान पर स्थापित करने में देर क्यों है? यह व्यावसायिक और आर्थिक महत्व का प्रश्न है। यदि संस्कृति का आर्थिक पक्ष कमजोर है तो वह अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रहेगी। पुजारी गोदान की मांग करने वाले अग्निहोत्री से विवेकशील प्रश्न करता है कि मृत व्यक्ति गाय की पूछ पकड़कर भव सागर कैसे पार कर सकता है? जिसका उसके पास कोई जवाब नहीं है।

सूअरदान दस भागों और 160 पृष्ठों का उपन्यास है जिनमें प्रमुख रूप से सत्यनारायण त्रिपाठी और उसकी टीम के ब्राह्मण सदस्यों की विकृत मानसिकता पिगरी फार्म के संच. ालकों और ग्राम प्रधान संकटा प्रसाद चिकवा के अच्छे कार्यों के रास्ते में बार–बार बाधा डालने की कोशिश करती है, मगर विवेक और ज्ञान के बल पर अलोकतांत्रिक ताकतों को परास्त होना पड़ता है। सूअरदान संदेश देता है कि जातिवादी मानसिकता को त्यागकर आर्थिक दृष्टि से लाभकारी व्यवसाय को अपनाने में देर नहीं करनी चाहिए। इस दशा में पिगरी फार्म एक बेहतर विकल्प है जिसको अप. नाकर व्यक्ति स्वयं आर्थिक रूप से समृद्ध होता है और उपेक्षित वर्ग सहित आम जनमानस की भी दिल खोलकर मदद करने की स्थिति में होता है। उपन्यास ने ग्रामीण राजनीति के

.17.

विकृत और उत्कृष्ट रूप को भी दृशाया है ताकि पाठक बेहतर विकल्प को चुनकर उस पथ का अनुसरण करें।

अतः कह सकते हैं कि 'सूअरदान' समाज में कायम जातिवाद, पाखंड और अंधभक्ति के सामने आर्थिक क्षमता और शक्ति प्रदान करने वाले सूअर को पेश किया है। जब पिगरी फार्म हमें आर्थिक मजबूती प्रदान करता है तो हमें सूअरदान करके उसको सम्मान देना चाहिए और उसका सम्मान देश का आर्थिक भविष्य सुदृढ़ बनायेगा। लोकतंत्र की स्थापना के 7वें दशक तक आते–आते सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से सताए गए लोग शिक्षित और समर्थ होकर नवनिर्माण में जुटे हैं। आधुनिक तकनीकि और व्यावसायिक शिक्षा में निपुण नई पीढ़ी अम्बेडकरवादी चेतना के आधार पर सम्पूर्ण देश को न्याय और प्रतिनिधिवत्व प्रदान करने के लिए गतिशील है और यही मानसिकता गोदान की मिथकीय धारणाओं को परिवर्तित एवं खारिज करते हुए 'सूअरदान' के आर्थिक–सांस्कृतिक पहलुओं को उद्धाटित करने में सफल रही है। 'सूअरदान' कथानक और कलात्मकता की दृष्टि से एक श्रेष्ठ व्यवस्था परिवर्तनकामी उपन्यास है।

*****

'सूअरदान' आत्मचेतना की सशक्त अभिव्यक्ति

–डॉ.सत्यप्रकाश पाल

जब कोई लेखक अपने समाज को साथ लेकर चलता है और समाज के भीतर बैठी बुराइयों, कुरीतियों को उजागर करता है तो सचमुच वह लेखक अपनी कृति के साथ और समाज के साथ न्याय कर पाता है। रुपनारायण सोनकर उभरते हुए दलित विचारक हैं और उन्होंने अपने इस उपन्यास 'सूअरदान' में उन्होंने समाज के भीतर पनप रहे जातिवाद, छूआछूत जैसे भयानक बुराइयों पर कड़ा प्रहार किया है। सोनकर जी समाज के सबसे घृणित जानवर 'सूअर' को अपने उपन्यास का शीर्षक रखते हैं, कहीं न कहीं उपन्यासकर उस दुदर्म पीड़ा को भोगा होगा तभी इस उपन्यास में उपन्यासकार ने बड़े सहज और सरल भाषा में अपनी बात रखी है। भाषा का कहीं भी अतिक्रमण नहीं होने पाया है। सोनकर ने अपने इस उपन्यास में दलित समुदाय में शिक्षा का प्रकाश फैलाया।

भारतीय वर्णव्यवस्था में दलित समाज दबा रहा है। इनकी पहचान 'नीच', 'अधम', 'पंचम', 'अछूत', 'असभ्य' विशेषणों से की जाती रही है। इसी शिक्षा की बात सोनकर ने अपने इस 'सूअरदान' उपन्यास में उठाई है। उपन्यास के शुरु में ही सोनकर ने सूअर फार्म के द्वारा भारतीय वर्णव्यवस्था एवं समाज के जाति प्रथा को उजागर करते हैं, आज हमारा समाज यह सोचता है कि हम भूखे मर लेंगे लेकिन वह कार्य नहीं कर सकते हैं जो जाति के अनुरूप न हों लेकिन इस परम्परा को सोनकर तोड़ते हुए सूअर फार्म का मालिक रामचन्द्र त्रिवेदी को सौपतें हैं उस गाँव के ब्राह्मण कहते हैं कि– ''सूअर पालना मेहतरों का कार्य है। तू तो मेहतर बन गया, तूने सदियों से ब्राह्मणों की चली आ रही श्रेष्ठता को चकनाचूर कर दिया है।'' उपन्यासकार ने इस उपन्यास में यह भी दिखाने की कोशिश की है जब व्यक्ति ऊँचाइयों को छूने लगता है तब वह समाज द्वारा बहिष्कृत पेशों को पसंद करने लगता है जैसे कि रामचन्द्र त्रिवेदी और उसके मित्र सूअर फार्म के द्वारा जो आमदनी

.2.

होने लगी उससे तीनों मित्र मांस और शराब को अपना जीवन संगत बना लिए थे। इस बात को पुजारी दयाशंकर कहते भी हैं कि– ''रामचन्द्र त्रिवेदी को शराब पीना, गोश्त खाना, लड़कियों की महफिलें जमाना अब उसका व्यसन बन गया है। उसने पैसे की चकाचौंध में धर्म और देवताओं को लतिया दिया है।''

आज का यह समय कितना खूंखार हो गया है कि स्त्री कहीं भी सुरक्षित नहीं है। चाहे वह मंदिर हो या अपना घर हिन्दी के प्रसिद्ध ग़ज़लकार प्रो0 वशिष्ट अनूप कहते हैं कि–

बेटी घर जल्दी आ जाना
रस्ते में इक थाना पड़ता है।

यह आज समय की सच्चाई है, पुजारी दयाशंकर एक तरफ तो धर्म की बात करता है लेकिन दूसरी तरफ स्वयं वह मंदिर में नारियों के संग दुराचार करता है। आज के समय में धर्मात्मा और संत हर कहीं मिल जायेंगे क्योंकि संतों का आचरण समाज में किसी से छिपा नहीं है।

सिंहासन खेड़ा के ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी आजकल के ग्राम प्रधानों की भाँति ही अपना आचरण करते थे। पंचायती राज्य व्यवस्था में प्रधानों को मिले अधिकार किसी से छिपा नहीं है। प्रधान बनने पर गाँव का विकास कम अपना विकास ज्यादा करते हैं, ऐसी ही हालत उस गाँव की थी। ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिवेदी, जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाचार्य जितेन्द्र यादव, प्रायमरी हैल्थ सेन्टर के डॉक्टर जोरावर सिंह तीनों ने मिलकर एक ऐसा भयावाह साम्राज्य स्थापित कर लिया है जिसकी जड़े बहुत ही मजबूत है। उपन्यासकार की यह सोच कि यदि प्रशासक में हिंसात्मक प्रवृŸा पैदा हो जाती है तो उसका प्रत्येक कार्य बिना हिंसा के पूरा नहीं होता है, यह सच है क्योंकि कोई भी शासक यह नहीं सोचता है कि वह जिसके बल पर शासन

.3.

कर रहा है वह जनता उससे क्या–क्या अपेक्षाएँ लगा बैठी है। तुलसीदास 'रामचरितमानस' में कहते हैं कि जो सामर्थ्यवान होता है वह कोई भी गलत कार्य करे उसे कोई दोष नहीं होता उसी प्रकार इस उपन्यास में सत्यनारायण त्रिपाठी कहता है कि–''जो ताकतवर है वही सभी चीजों का भोग करता है'' और वह कहता भी है कि ''मैंने अपने पन्द्रह साल के अपने ग्राम प्रधानी के कार्यकाल में पन्द्रह मर्डर किए हैं, जो भी साला! मेरे खिलाफ गया, मेरे खिलाफ गवाही दी सभी का कत्ल कर दिया, मैं इस गाँव का शहनशाह हूँ।''

उपन्यासकार इस शासकवर्ग के शोषण रूप को भली भाँति चित्रित करते हुए आज इस गंभीर समस्या को उजागर करते हैं। संकठा प्रसाद चिकवा जो कि एक प्रशासनिक अधिकारी की नौकरी से वी0आर0एस0 लेकर वह अपने गाँव आया है, वह यह सब देखकर इसे हटाने का सार्थक प्रयास करता है, चिकवा ने प्रधान से गाँव की समस्याओं को दूर करने के लिए कहता है और हैल्थ मिनिस्ट्री से शिकायत जोरावर सिंह की करता है और कहता है कि आप दवाओं को बेचना बंद कर दीजिए गाँव की जनता में इसका वितरण करवा दीजिए नहीं तो आपकी शिकायत मैं करुगाँ लेकिन अहंकार में डूबे जोरावर सिंह को कुछ भी असर नहीं होता है।

चिकवा संघर्ष की राह नहीं छोड़ता है। वह अन्ततः ग्राम का प्रधान हो जाता है और उसके प्रधान बनने पर ग्रामवासी चैन की साँस लेते हैं। चिकवा ने अपने गाँव को सारी सुविधाएँ धीरे–धीरे उपलब्ध कराने लगे वह जानता था कि भारत का विकास इन गाँवों के माध्यम से ही किया जा सकता है, धीरे–धीरे सत्यानारायण त्रिपाठी की भी आँख खुल गयी और कहता है कि ''दलित–पिछड़ी, अल्पसंख्यकों और गरीब सवर्णे की औरतों पर अत्याचार नहीं करेंगें। आप मानव को मानव समझेंगे। आप पाखण्डी व अंध धर्म के लिए लोगों को मानने को बाध्य नहीं करेंगे। मानवता के प्रति जिन भी महापुरुषों ने कार्य किए हैं उनको अपमानित नहीं करेंगे।''

.4.

'सूअरदान' उपन्यास का शीर्षक अंत में जाकर सिद्ध होता है जब पुजारी दयाशंकर ने मरते समय 'गोदान' के बदले 'सूअरदान' कर देते हैं तो सभी को आश्चर्य होता कि वह व्यक्ति जो 'सूअर' से जिन्दगी भर घृणा करता रहा वह मरते समय सूअर को अपना प्रिय समझता है, पुजारी ने सत्य को समझा लेकिन देर से फिर भी 'देर आए दुरुस्त आए' के कहावत को चरितार्थ करते हैं। सिंहासन खेड़ा गाँव का एक मजदूर सन्तू और उसकी पत्नी मैकी मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते हैं और अपने बेटे को भी पढ़ाते हैं। बेटा कलक्टर हो जाता है। कलक्टर हो जाने के बाद बेटा रतनलाल माँ–बाप, पत्नी और बेटे–बेटियों को भूल जाता है और शहर में दूसरी शादी कर लेता है। माता–पिता के अरमान चकनाचूर हो जाते हैं जो कि सोचे थे कि बेटा कलक्टर हो गया है और हम लोगों को मजदूरी नहीं करना पड़ेगा और हम लोग शहर में रहेंगे। लेकिन एक मजदूर की यह सोच धाराशायी हो गई, रतनलाल सब कुछ भूल कर शहर का हो गया। उपन्यासकार ने आज समाज में घटित हो रही इस प्रकार की विद्रूपताओं को उजागर करते हैं। बेटा जितना नालायक हो लेकिन माता–पिता कभी भी बेटे का अहित नहीं देखना चाहते हैं, संतू के बार–बार कहने पर भी उनकी बहू अनुसूईया दूसरी शादी नहीं करती है। एक स्त्री किस प्रकार अपने पति के द्वारा दूसरी शादी कर लेने पर भी वह अपने पति को नहीं छोड़ती है यह सोनकर की सोच पुरुषवादी मानसिकता को दिखाती है कि पत्नी ने पति को धोखा नहीं दिया परन्तु पति ने पत्नी को धोखा दिया। सोनकर जी ने इस उपन्यास में स्कूलों में बन रहे मिड डे मिल योजना को भी इस उपन्यास में रेखाकिंत किया है। एक दलित के द्वारा भोजन बनाने पर सवर्ण जातियों के बच्चे भोजन ग्रहण करना नहीं पसंद करते हैं। यह आज की व्यवस्था को उजागर करता है कि आज भी समाज में जातिवादी व्यवस्था किस कदर हावी है। सोनकर ने ग्राम पंचायतों के अधिकारों की भी बात करते हुए कहते हैं कि आज के समय में गाँव का प्रधान भी जनता की

.5.

सेवा कम और अपनी सेवा ज्यादा करता है क्योंकि आज के समय में मानवतावादी दृष्टिकोण का ह्रास होता जा रहा है इस बता को सोनकर जी ने अपने 'सूअरदान' उपन्यास में चित्रित किया है कि सेवाभाव से बढ़कर कोई भी धर्म नहीं

है। सेवाभाव के द्वारा सत्यनारायण त्रिपाठी को हृदय बदल जाता है। वह दयाशंकर के साथ पिगरी–फार्म जाता है और वहाँ पर त्रिपाठी अपने किये की क्षमा माँगता है और अपने कुरुप चेहरे को ठीक करवाने के लिए कहता है। सोनकर के इस उपन्यास में विज्ञान के चमत्कार को भी दिखाया गया है कि किस प्रकार से आज का समय परिवर्तनगामी हो गया है और समाज कैसे–कैसे बदल रहा है, मनरेगा जो कि भारत सरकार की सबसे बड़ी योजना है। मनरेगा के द्वारा मजदूरों को एक सौ दिन का काम सुनिश्चित कराया जाता है और मजदूरों का इससे भरण–पोषण आसानी से हो जाता है। लेकिन भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह हर जगह व्याप्त है, मनरेगा जैसी योजना भी इसका शिकार हो गयी है। गाँव का प्रधान विभिन्न हथकंडे अपनाकर इस योजना में अपनी मनमानी करने पर अमादा हो गये हैं। सोनकर ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है कि कोई भी योजना लागू कर देने से वह उत्कृष्ट नहीं हो जाती है उसको करने के लिए दृढ़ मनोबल एवं कार्यों में ईमानदारी होनी चाहिए इसका सर्वोतम उदाहरण इस उपन्यास में चित्रित किया 'पिगरी फार्म' जो कि सूअर पालन के लिए प्रसिद्ध है और जो सबसे बड़ी बात है वह यह है कि इसके चार पार्टनर हैं, चारों पार्टनर विभिन्न जातियों और विभिन्न पेशे के हैं ले. किन आपसी सहमत से वे बुलंदियों को छूते हैं और इस उपन्यास में सोनकर ने इस मिथक को तोड़ा है कि आदमी 'गोदान' से नहीं अपने कर्मों से वैतरणी को पार करता है इस बात को उपन्यासकार ने प्रेमचंद के द्वारा 'गोदान' में वर्णित 'गोदान' के द्वारा वैतरणी पार करने की बात को खारिज करते हैं और वैज्ञानिक ढंग से अपनी बातों को र खते हैं और सूअर के द्वारा सूअरदान कराते है।

.6.

सोनकर ने इस उपन्यास के माध्यम से समाज के विकृति रूप को चित्रित करते हैं और दलित आंदोलन को किस प्रकार सफल बनाया जा सकता है अपनी बात चिकवा के माध्यम से रखते हैं। उपन्यासकार ने बहुत सही सलीके से हर एक बुराई और जातिवाद व्यवस्था को सबके सामने रखता है, लेकिन कहीं–कहीं सोनकर ने अपने समय के क्रूर चेहरे को याद करके उग्र हो जाते हैं यह लाजिमी भी हो सकता है क्योंकि व्यक्ति का भोगा हुआ यथार्थ जब वह चित्रित करता है तो वह तिलमिला के व्यक्त करता है। इसी प्रकार सोनकर ने अपने समय की सच्चाई को इस उपन्यास में व्यक्त करते हैं और उनके पात्र अपने संवादों के माध्यम से सही दिशा भी प्रदान करते हैं। आज का यह समय सचमुच भ्रष्टारियों से पट गया है कहीं भी कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ भ्रष्टाचार का नाम न हो यह सही है कि भ्रष्टाचार आतंकवाद से ज्यादा खतरनाक है। सोनकर का यह उपन्यास इन्हीं सब बातों को उठाते हुए समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास करता है और हमें लगता है कि सोनकर की यह सार्थक पहल है।

*****

''सूअरदान बनाम गोदान''

प्रो0 रमेश चंद मीणा

किसी रचना का, किसी पूर्व रचना से किसी तरह की समानता होना, आलोचकों पाठको और प्रशंसकों के ढेर सारे अनुशंशा में लिखा जाना, असमंजस में डालने के लिये कम नहीं है। अजय नावरिया से लेकर राजेन्द्र यादव और नामवर सिंह तक बोल रहे हैं। प्रेम भारद्वाज मान रहे हैं कि 'गैर –दलित सूअरदान जैसा उपन्यास लिख ही नहीं सकते।' तेजसिंह इसे सार्थक उपन्यास बताते हैं तो कँवल भारती दलित चितंन को नया मोड़ देने वाला बताते हैं। आखिर यह सब क्यों न हो जब हिन्दी आलोचना के शीर्ष पुरूष नामवर सिंह कह चुके हैं कि इनके साथ घर का जोगी जोगड़ा आन गांव का सिद्ध वाली कहावत चरितार्थ न करें, इनकी रचनाओं की भाषा शैली और शिल्प सराहनीय है।' 'गोदान' के बाद यकायक 'सूअरदान' शीर्षक देख कर मैं चौंक पड़ा और करीब तीन–चार माह तक मैं यही नहीं समझ सका कि आखिर 'दान' का क्या मतलब है? कहीं यह रचना बदले की कार्यवाही तो नहीं? यह रचना कहीं गोदान की नकल तो नहीं? इन सब ढेरों सवालों से निजात तभी मिल सकती है जब 'सूअरदान' से गुजरा जाए।

सूअरदान उपन्यास की संरचना व शिल्पगत खूबी है – गोदानन के मिथक के समानान्तर मिथ गढ़ना नहीं सभी तरह के मिथकों का तोड़ना। मिथ को तोड़ने के लिये गाय के स्थान पर सूअर को महत्व देने के लिये पिगरी–फार्म खोला जाना है। विदेशों से उच्च गुणवत्ता के सूअर लाये जाते है। उनका मांस, दूध और दवाइयां व्यावसायिक तौर पर बेची जाती है। 'गोदान' एक धार्मिक कर्मकांड और अंधविश्वास पर आधारित प्राचीन मिथकीय धारणा पर आधारित है जबकि 'सूअरदान' जैसा होना न कभी सुना और न देखा गया है। न ही किसी कथित ग्रंथ में इसका हवाला मिलने का किसी तरह का चांस ही है। सूअरपालन केंद्र में कई पढ़े लिखों के लिये रोजगार

.2.

माध्यम बनता है। उसके मांस की बिक्री से करोड़ो का मुनाफा होता है। ब्राह्मणवाद पर कठोर प्रहार का दूसरा नाम है – 'सूअरदान'। ब्राह्मण, खटिक, चमार और यादव द्वारा केंद्र की स्थापना की जाती है। आगड़ो–पिछड़ों और दलितों के संयोग से यह केंद्र चलता है। वे चारों एक नया भाईचारा कायम करते हैं, जाति मुक्त, धर्ममुक्त और कर्मकांड मुक्त परिवेश के साथ–साथ प्रेम करने का भी आधुनिक दौर में खांटी अतिप्राचीन रिवाज निभाते हैं। पांडवी प्रेम को जीवित करते हुए चारों एक विदेशी लड़की से विवाह करने की घोषणा कर हलचल मचा देते हैं। इसमें वे भ्रूण हत्या से उपजी समस्या का निवारण एक लड़की से विवाह कर एक मिसाल रखना चाहते हैं। बढ़ते ब्राह्मणों के दबाव व कानून के विरोध को देखते हुए पूर्वयोजना में परिवर्तित कर सभी को चौंका देते हैं। उपन्यास की संरचना में जैसे यकायक मोड़ आता है। अब वे चारों एक से नहीं अपितु अलग–अलग ब्राह्मण लड़कियों से शादी कर अम्बेडकरी चेतना की मिसाल कायम करते हैं। लेकिन यह मोड़ लेखकीय दखल का भान कराता है। चारों अगर पांडवी तरह से शादी करते हैं तो इससे भ्रूण हत्या से उपजी समस्या का निपटारा नहीं होता है, सो वे कहानी की मांग व दलित चेतना के अनुकूल मोड़ देकर अधिक क्रांतिकारी, सामाजिक धार्मिक रूढियों की अर्गलाओं को तोड़ने/खोलने का काम करते हैं।

सूअरदान के रचनाकार ने कई स्थापनाओं को न केवल तोड़ा अपितु कई नई खूबियों को जन्म भी दिया है। दलित सोच को इससे एक नई दिशा भी मिलती है। ब्राह्मणवाद के विरोध पर टिका दलित चिंतन यहां अपनी लड़ाई को एक नया मोड़ देता है। इससे लगता है जैसे हिन्दी परंपरा में रूढ़ हो चुकी मान्यता, कथा साहित्य में प्रेमचंदपूर्व और बाद की रचनांए जैसे कहने का चलन रहा है ठीक वैसे ही रूपनारायण की 'कफन', 'नागफनी', 'डंक', और 'सूअरदान' से यह बात साबित होती है कि इन्होंने दलित साहित्य की रूढ़ हो

.3.

चुकी छवि को तोड़ा है। ऐसी ही बहुत–सी खूबियां इस रचना से गुजरते हुए मुझे भी दिखाई दी है। मैं उन्ही का हवाला देते हुए अपनी बात रखना चाहूंगा।

धार्मिक कर्मकांड और अंधविश्वास पर आधारित प्राचीन मिथकीय धारणा गोदान स्वतः ही सूअरदान से टूटती बिखरती नजर आती है। सूअरदान नाम से ही विवाद की बू आ सकती है। इसका शीर्शक पाठक के पूर्वग्रहों पर चोट करता है। बहुत–से पाठक जो प्रेमचंद की 'कफन', 'दूध का दाम' और 'गोदान' से परिचित है उन्हें झटका–सा लगता है कि यह लेखक प्रेमचंद के प्रति बदले की सोच से ग्रस्त है। लेकिन ज्यों–ज्यों पाठक इन रचनाओं से गुजरता जाता है त्यों–त्यों वह समझने लगता है कि इन रचनाओं में नामभर की ही समानता है बाकी कथ्य, परिवेश और विचार अलग भावभूमि लिए हुए है। 'गोदान' में किसान साहूकारी शोषण और ऋणग्रस्तता के शिकार रहे हैं, जबकि 'सूअरदान' में दलित

चेतना को केंद्र में रख कर आज के परिवेश, समस्या और उसके निवारण की बात उठाई गई है। नक्सली समस्या, एड्स, भ्रूण हत्या और अंतरजातीयता जैसे नवीनतम बातें रचनाकर की सोच को सलाम करने के लिए बाध्य करती है। ये न केवल ऊपर से थोपी हुई लगती है अपितु रचना का स्वाभाविक हिस्सा बनकर समने आती है। रचना का रूप, शिल्प और संरचना में दलित चेतना अंतर्निहित है।

उपन्यास में 'गोदान' बनाम 'सूअरदान' के अलावा और भी कई बनाम दिखाई देते हैं। मंदिर बनाम पिगरी–फार्म, मंदिर बनाम जीवन, जाति बनाम जाति मुक्त, कर्मकांड मुक्त और अंधविश्वास मुक्त विचार उपन्यास की संरचना में ही निहित है। पिगरी लोक काल्पनिक–सा लगते हुए भी काल्पनिक नहीं है। रचना के मुख्य केन्द्र में पिगरी फार्म रहा है। इसी के ईर्द–गिर्द इस रचना को बुना गया है। कई उप–कथाएं चलती है जिनका समाहार इसी पिगरी फार्म में आकर होता है। रतनलाल डिप्टी कलक्टर, संकटा प्रसाद चिकवा और

.4.

सत्यनारायण त्रिपाठी ग्राम प्रधान की कथा भिन्न होते हुए भी अंततः एक हो जाती है। एड्स और नक्सलवाद को इससे जोड़ा जाना बेशक संरचनागत दोष–सा लगता है पर इन नवीन पदो को जोड़कर दलित आंदोलन को व्यापकता दी है। तो नक्सलवाद को उठाकर आदिवासियों के दर्द आंशिक ही सही जुड़ने का प्रयास किया है। आखिर कब तक एक ही–'दलित उत्पीड़न' पर लिखा जाकर नवीनता बनाई रखी जा सकती है? रचनात्मक खूबी इसी में होती है कि एक ही विषय में मोड़ लेकर कितनी नवीनता लाई जा सकती है। पारंपरिक दुश्मन जातिवाद, छुआछूत और अंधविश्वास पर चोट बराबर की गई है तो पिगरी–फार्म को इस तरह के केंद्र में रखा है कि वह जैसे हर दबी–कुचली जातियों के लिए ऊर्जा का केन्द्र बन कर सामने आता है। पिगरी–फार्म के माध्यम से लेखक जैसे दलितों में नई चेतना भरता है ठीक उसी तरह राजनीति और देश की दशा–दिशा पर भी रोशनी डालता है। भटके हुए दलित नेता व नौकरी पेशा रतनलाल जैसों को व्यक्तिवादी जकड़न से निकालकर समाजोन्मुख व चेतना संपन्न किया जाता है। ठीक इसी तरह नक्सलियों को रचना से जोड़कर सरकारी सोच पर करारा व्यंग्य किया है।

नक्सलवादी हताशावादी है। हताशावादी उन्हें ठीक कहा है जो हताशा में हिंसा पर हिंसा किए जा रहे हैं। पर इससे भी बड़ी अच्छी बात यह है कि लेखक नक्सलियों को लताड़ पिलाने के साथ–साथ नीति नियंताओं की समझ, सोच और उनकी भटकन को इंगित करने से नहीं चूकता है। नक्सली समस्या का समाधान एक मात्र वार्ता से ही संभव है। सरकार की हठवादिता ही है कि उनसे बात नहीं करते। रचनाकर दोनों को ही तटस्थ होकर संबोधित हुआ है। सरकारी तंत्र की असंवेदनशीलता की तरफ भरपूर इशारा किया है। हताशावादियों को हिंसा से हताश करना ना मुमकिन है। उन्हें जंगल से खदेड़पाना संभव नहीं है तभी तो ग्रीनहंट जारी है और उनकी हिंसा भी। उन्हें

.5.

मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए इसके लिए उन क्षेत्रों में विकास की भरपूर जरूरत है। 'उन्हें मार दिया जाना तो अपनी सेना पर वार करने जैसा ही है। वे जांबाज अगर देश की सेना का मुकाबला कर सकते हैं तो दुश्मन से डटकर मुकाबला भी कर सकते हैं ऐसे लोगों को सेना में शामिल किया जा सकता है, उन्हें शिक्षित कर मुख्यधारा में लाने के प्रयास किए जाने की जरूतर है।' बशर्ते कि सरकार उन्हें जड़ो से उखाड़ने की बजाए उन्हें वहीं रोजगार देने की व्यवस्था करें। जब देश के सामने युद्ध जैसा दौर होता है तब सरकारी कर्मचारियों की तनख्वाह से दो फीसदी ले लिया जाता है ठीक ऐसे ही उद्योगपतियों से भी इस दौर को अशांत मानकर आदिवासियों को मुख्यधारा में लाने का युद्ध स्तर पर प्रयास करने से ही समाधान संभव है न हिंसा के कांटे को निकालने के लिए हिंसा का सहारा लेना, समस्या को उलाझाना है। हताशावादियों को रास्ते पर लाने के लिए वार्ता करना और आदिवासी क्षेत्रों में विकास करना एक मात्र रास्ता है।

'सूअरदान' शीर्षक विवादास्पद है। यह शीर्षक भले ही उत्तेजति करने वाला लगता हो पर उपन्यास में आये तर्क से पाठक संतुष्ट लगता है। रचनाकर का उद्देश्य भावनाओं को भड़काना नहीं है स्थितियों को इस तरह से रखना है कि पाठक भड़कने के बजाए स्वंय अनुभव करते हैं। रचना में व्यंग्य स्थितियों पर अधिक है व्यक्तियों पर नहीं। जिस तरह से रचना का शीर्षक चौंकाता है उसी तरह पात्रों के नाम भी उनके अनुकूल दिये हैं। मसलन सवर्ण पात्र–रामचंद्र त्रिवेदी, पुजारी दयाशंकर, ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, दलित पात्रों के नाम है–घसीटा चमार, सज्जन खटिक और सलवंत यादव, संकटा प्रसाद चिकवा। यहां पर दलित पात्रों के नामों के सामने मनुष्यता का बोध कराता सम्मानजनक विशेषण जुड़े हैं। खटिक के आगे सज्जन विशेषण लगाया गया है क्योंकि रचना में वह समाज, देश और व्यक्ति के प्रति

.6.

सज्जनता से पेश आता है। यहां पर नाम जाति के चलते नहीं कर्म पर आधारित है। वरना अब तक चमड़े का काम करने वाली जातियों को चमड़े से जोड़कर देखा गया है। चमार, रेगर को चमड़े से जोड़ दिया है तो सफाई करने वाले भंगी और उसके पशु दोनों को अछूतों में अछूत करार दिया है। रचना में जाति मुक्त चेतना का बोध पाठक को सहज ही होता है।

'गोदान' बनाम 'सूअरदान' का इस अर्थ में विशेष व गूढ़ अर्थ निकल कर आता है। मंदिर से महज चौबीस मीटर की दूरी पर सूअर केन्द्र का खुलना हिन्दू धर्म पर करारा प्रहार है। सूअर ब्राह्मणवाद के अनुसार घृणित जानवर रहा है। दलित की जो स्थिति भारतीय समाज व्यवस्था में रही है वही जानवरों के बीच सूअर की मान ली गई है। सूअर सबसे निचले पायदान पर वैसे ही हैं जैसे जाति व्यवस्था में भंगी रहते आये हैं। आश्चर्य है पशुओं तक में भी वही छुआछूत, ऊंच–नीच बना दी गई है। एक तरफ ऊंची स्थिति में गाय को गौ माता कह कर पूजनीय बना दिया जाता रहा है तो

दूसरी तरफ सूअर को ठीक वैसे ही घृणित, अछूत माना गया जैसे उसे पालने वाले को। कितनी कट्टरता और घृणा रही है इन दोनों के प्रति कि इन्हें छूना भी समाज ने पाप जैसा मान लिया है। दोनों को एक जैसी ही दुत्कार मिलती रही है। घृणा ने केवल सिर्फ आवाज में रही है अपितु इन दोनों के प्रति सवर्ण लोगों की आंखों में घृणा का भाव देखा जा सकता है। रचना में उसी गाय माता पर सूअर के माध्यम से करारी चोट की है। जिसकी गूंज दूर तलक जायेगी। रचना में गाय का नहीं सूअर का महत्त्व प्रतिपादित किया है। सूअर जिसे घृणित मानकर दूर रखा जा रहा था ? वह कितना उपयोगी और महत्व का जानवर साबित होता है ! जिसके मांस में वियाग्रा जितनी ताकत हो सकती है। भले ही इसे मुस्लिम धर्म में भी वर्जित माना गया हो पर उनके नेता जिन्ना द्वारा इसके मीट को खाना बहुत कुछ साबित कर देता है। ऐसे ताकतवर पशु को पालना कितना

.7.

उपयोगी है। रचनाकार सूअर के महत्व को जगह–जगह कई माध्यमों से उजागर कर देता है। सूअर केन्द्र का मंदिर के आस–पास होना भी मायना रखता है तो उसी पुजारी को जो मंदिर में पूजा करता है सूअरों की देखभाल अपनी मर्जी से करता दिखाई देता है। प्रतिक्रियावादी त्रिपाठी जैसे कोशिश करके भी गौशला नहीं चला पाते हैं। इससे यह साबित होता है कि धर्म भी अगर अर्थ से न जुड़ा हो तो वह चल नहीं सकता है।

रचना में पारंपरिक कर्मकांडों पर जमकर प्रहार किया गया है। पाठ पूजा के बरअक्स कर्म को ऊपर रखा है। जातिवाद अंध विश्वास और छुआछूत का भंडाफोड़ किया है। जातिवादी पात्र जाति के खिलाफ बोलने लगते हैं। मूर्ति पूजा करने वाले, अछूत की छाया से दूर भागने वाले पुजारी दयाशंकर जैसे किस तरह से सूअर के साथ घुलमिल जाते हैं उसे गाय से अधिक जरूरी समझने लगते हैं। महज पिगरी–फार्म नहीं वह वास्तव में समता का केन्द्र हो जाता है–'जहां ब्राह्मण, ठाकुर, बनिया, कुर्मी यादव मेहतर सभी झाड़ू लगा रहे होते हैं।' (सूअरदान–66) सिंहासनखेड़ा गांव, रूढ़िग्रस्त गांव से आधुनिक, वैश्विक गांव में परिवर्तित होने लगता है। सामाजिक जकड़न से मुक्त करने वालों का काफी विरोध किया जाता है पर वे हार नहीं मानते हैं। दानव, दैत्य और राक्षस जैसे महाभारतकालीन शब्दों के चले आ रहे अर्थ बदलने लगते हैं। दानव जैसे शब्द अपमान सूचक रहा है जिनका यहां इस्तेमाल ही नहीं हो सका है। देखिए–' कहते हैं जो अच्छा कार्य मानवों द्वारा किए जाते हैं। उनकी प्रशंसा केवल मानव ही नहीं करते, बल्कि जानवर भी करते हैं।' (सूअरदान–137) यहां गौर करने की जरूरत है यह एक रूढ वाक्य रहा है जिसे लोग यों बोलते है–'उनकी प्रशंसा मानव ही नहीं बल्कि देवता भी करते हैं। के स्थान पर 'जानवर' लि खा जाना मायने रखता है। एड्स जैसी बीमारी के नाम पर चल रही छुआछूत का उपन्यास में तारीफेकाबिल प्रयोग किया है।

.8.

सरकार कई माध्यमों से रात–दिन प्रचार करती है कि एड्स छुआछूत की बीमारी नहीं है। यह विज्ञापन के शब्द है और रचना में भी ठीक ऐसे ही प्रयोग हुए हैं पर गौर करने पर अर्थ यों खुलता है जब पुजारी एड्सग्रस्त हो जाता है तब त्रिपाठी जैसे उसे गांव से बाहर निकालने की तैयारी कर चुके होते हैं तब दलित प्रधान संकटा प्रसाद छू कर दिखाता है कि देखों मुझ छूने पर भी कुछ नहीं हुआ। यहां पर चमत्कार शब्द में नहीं स्थिति में है कि उसे छू कर कौन दिखा रहा है? वही न जिसे सवर्ण छू भी नहीं सकते थे वही अछूत एक सवर्ण को छू कर, कह रहा है कि देखो मुझे कुछ नहीं हुआ तुम भी मत डरो। ऐसी ही दमदार पंक्तियों व शीर्षक ने इस रचना को क्लासिक स्थान दिला दिया है। ठीक इसी तरह दूसरी पंक्ति है जिसमें देवता के स्थान पर जानवर लिखना गूढ़ अर्थ रखता है। वे देवता तुम्हारे लिए होंगे। रहे ही हैं। हमारे लिए ये जानवर उनसे भी बढ़कर रहे हैं। देवता, दावन दोनों एक दूसरे के विपरीतार्थ रखने वाले शब्द है। जैसे समाज में दलित अछूत बनाकर रखा है ठीक उसी तरह आदिवासियों को जंगली, राक्षस दानव, देत्य नहीं कहते रहे हैं?

उपन्यास विषय वस्तु और मारक दृष्टि से काफी सफल रहा है उसमें कई जगह वाक्य विन्यास और प्रूफ की छोटी–मोटी गलतियों को नजर अंदाज कर दिया जाए तो सूरअदान बेशक आज की जरूरत है। उपन्यास में कुछ और भी असंगतियां रही है व्यवस्था व प्रशासन को जनता के साथ दिखाया जाता है जबकि व्यवस्था हमेशा जनता के खिलाफ रही है। एसडीएम का प्रधान के साथ खड़े होना। (वही–56) उपदेशात्मक वाक्यों का प्रयोग अखरता है–'लोग साईकिल का प्रयोग करें। घोड़ा गाड़ी भी अच्छा विकल्प होगा।' (वही–57) आदर्श गांव की बात करता हुआ नेता विकास पुरुष मान लिया जाता है। आदर्शवाद एक ऐसा आरोप है जो प्रेमचंद पर भी लगा था उसे रूपनारायण सोनकर पर लगने से नहीं बचा जा सकता है। अगर देखा जाए

.9.

तो इनका पिगरी–फार्म में जो कुछ होता है उसमें सब कुछ ठीक ही होता है। वे जो कुछ करते हैं फरिस्तों से कम नहीं है। संकटा प्रसाद प्रधान के रूप में विकास पुरुष बन गया है। क्या सब संभव है ? एक स्वर्गलोक की कल्पना में रहने वाले ब्राह्मण की तरह पिगरी–फार्म किसी स्वर्ग लोक से कम नहीं है बस इतनी ही कमी है कि इसमें चिर युवा अफसराएं नहीं है। अगर हम इतनी धीर गंभीर बातें नहीं करना चाहते हैं तब तो यह रचना एक सांस में पढ़ने पर पाठक को चली आ रही दलित धारा में बीच का रास्ता तलाशती हुई चमकदार चीज की तरह लगती है। हमेशा से लगाये जा रहे आरोप की तरह कह सकते हैं कि रचना में द्वंद्व की कमी है, इसे और तराशने की शख्त जरूरत है। इन सबके बावजूद इसमें कोई शक नहीं है कि रूपनारायण सोनकर में दलित साहित्य का प्रेमचंद होने की सारी खूबी मौजूद है।

*****

हिन्दी साहित्य की प्रमुख दलित आत्म–कथाएँ

–डॉ.दिलीप मेहरा

भारतीय साहित्य में दलित आत्मकथा ने एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है उसमें कोई शक नहीं है। आत्मकथाएँ विश्व की सभी भाषाओं में लिखी जाती है लेकिन उसको साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय मराठी में रची गयी दलित आत्म कथाओं को दे सकतें है। मराठी दलित आत्मकथाओं से प्रेरणा पाकर भारत की अन्य भाषाओं में भी दलित आत्मकथाओं लिखी जाने लगी।

हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाओं का प्रारंभ

हिन्दी में भगवान दास रचित पहली सामाजिक आत्म कथा –'मैं भंगी हूँ' प्रकाशित हुई थी। उस समय दलित आत्मकथा ने उतनी प्रतिष्ठा प्राप्त भी नहीं की थी। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं भंगी हूँ व्यक्तिगत आत्मकथा न होकर पूरी जाति की सामाजिक आत्कथा होने की वजह से दलित साहित्य के सन्दर्भ में यह कृति अत्यन्त महत्वूपर्ण होते हुए भी सृजनात्मक दलित आत्मकथा के दायरे में नही आती। सृजनात्मक दलित आत्मकथा लेखन में जिन दलित आत्मकथाकारों ने पहल की उसमें मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि कौशल्य बैसंत्री श्योराज सिंह बेचेन कुसुम वियोगी, सुरजपाल चौहान रूपनारायण सोनकर आदि प्रमुख है।

मोहनदास नैमिशराय द्वारा अपने पिजंरे (1195) आत्मकथा लिखने के पश्चात् "मैं भंगी हूँ" सामाजिक आत्मकथा भी काफी प्रकाश में आयी। लेकिन साहित्य की पहली आत्मकथा का दर्जा अपने–अपने पिंजरे को मिलता है। फिर ओमप्रकाश वाल्मीकि की "जूठन" (1996) कौशल्या बैसंत्री दोहरा अभिशाप (1999), श्यौराज सिंह बैचेन मेरा बचपन मेरे कंधो पर डा डी डी आर जाटव मेरा सफर मेरी मंजिल नाथुराम सागर "मुझे चोर कहां" (1996), अमर सिंह चौहान गुलामी में जकडे हम माताप्रसाद की झोपडी से राजभवन, सुरजपाल सिंह चौहान तिरस्कृत (2002) और "सतप्त" (2006),. रूपनारायण सोनकर

.2.

नागफनी (2007) तुलसीराम 'मुर्दहिया' (2010) आदि ने अपनी जड़े मजबुत की। इतना ही नहीं मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने पिंजरे' का दूसरा भाग भी प्रकाशित हो चुका है। कुल मिलाकर हिन्दी आत्मकथा लेखन का आरंभ बहुत कम समय में काफी परिपक्व हो चुका है। यहॉ मैं हिन्दी की कुछ महत्वपूर्ण आत्मकथाओं पर प्रकाश डालना चाहुँगाः–

अपने अपने पिंजरे

अपने अपने पिंजरे (1995) हिन्दी साहित्य की पहली दलित आत्मकथा मानी जाती है। इस आत्मकथा के लेखक मो. हनदास नैमिशराय है। उन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास भी लिखे हैं। इस आत्मकथा का आरंभ मोहनदास ने अपनी पत्रकारिता की शैली में अपने शहर मेरठ के विस्तृत विवरण से किया है। जिसमें 1857 के पहले संग्राम, पंडित नेहरू के इंपाल गाडी में कई बार शहर में आने तथा अम्बेडकर का शहर का दौरा करना आदि का जिक्र किया है।

इस शहर के उपरांत लेखक व्यक्तिगत जीवन का चित्रण करते नजर आते है। बचपन में मॉ की मृत्यु और उसके बाद पिता की दूसरी शादी करने का जिक्र आता है। उनको ताई मॉ पालकर बड़ा करती है। उनके गॉव की बस्ती में चमार जाति के अस्सी घर थे, उनका धंधा मेहनत–मजूदरी करना था। भैंसें और गाय का मॉस आम रूप से खाऐ जाने का चित्रण भी मिलता है।

मोहनदास नैमिशराय ने अपने स्कूल के वातावरण का चित्रण भी किया है। उनके स्कूल को अन्य जाति के लोग चमारों का स्कूल कहते थे। स्कूल के अध्यापक हमेशा नदारद रहते थे। उसकी–स्कूल में न नल था, न टायलेट और न ही खेल का मैदान। जिस तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि जो स्कूल में प्रताड़ित किया गया था, ऐसा इस लेखक के साथ नहीं हुआ है यह बात तो हमें माननी ही पड़ेगी। लेखक ने बारिस के मौसम में दलितों की बस्ती का वातावरण कैसा होता था। उसका यथार्थ भी चित्रण किया है। बारिस के मौसम में अनेक घर

.3.

गिर जाते थे, सॉप, बिच्छु आदि विषैले जानवर पानी के

साथ बहते–बहते उनके घरों में आ जाते थे उसका दर्दनाक चित्रण किया है। इतना ही नही 6 दिसम्बर 1956 के दिन के विशेष वर्णन किया है। कारण, उस दिन डा0 अम्बेडकर जी का निधन हुआ था।

संक्षेप में कहना है तो महीपसिंह जी के शब्दों में कह सकते हैं– मोहनदास नैमिशराय की यह कृति इस अर्थ में आत्मकथा न होकर आत्मवृत है। उन्होंने अपने जीवन की उन तल्ख और निर्मम सच्चाईयॉ को इसमें उकेरा हैं जिनमें मानवीय पीड़ा अपनी पूरी सघनता से व्यक्त हुई है। इसका सबसे बड़ा कारण व्यक्ति के ऊपर सडी गली ब्यवस्था का आरोपण है जिसके प्रति वह विवश होकर सब कुछ सहते जाने के लिए अभिसप्त रहे है। इस प्रकार यह हिन्दी पहली श्रेष्ठ आत्मकथा है।

जूठन

जूठन आत्मकथा के लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि है। उनका जन्म 1950 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जनपद के बरला गॉव में हुआ था। इस आत्मकथा लिखने से पहले वे एक सशक्त कवि और कहानीकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में स्थापित हो चुके थे। सदियों का संत. ाप एवं बस बहुत हो चुका काव्य संग्रह के माध्यम में दलितों की पीड़ा को उजागर कर चुके थे।

आत्मकथा की शुरूआत मुजफ्फरनगर नगर जिले के बरला गॉव की जोहड़ी के किनारे बने उस एक चूहड़े परिवार के मकान से होती है, जिसमें ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म हुआ था। एक तरफ सवर्ण के मकान हैं तो दूसरी ओर दलितों के मकान हैं। मकानों के पीछे गॉवभर की जव. ान–बुढी औरतों का खुला शौचालय है जहॉ वे गोलमेज काफेंस की शक्ल में बैठकर गाँव–गली के लडाई झगड़ो में की चर्चा करती है। इस तरह चारो तरफ गन्दगी भरी होती है। ऐसी दुर्गन्ध उठती है कि मिनट भर सांस घूट जाय। उनकी तंग गलियों में सुअर और कुत्तो के साथ नंग–धड़ग बच्चे घुमते है।

.4.

वर्णव्यवस्था को कहने वाले सवर्णो को यदि–दो चार रहना पड़ जाय तो उनकी राय बदल जायेगी।

"चूहड़े के तेरे तो सचमुच सींग निकल आए है। तू तो बड़ी शेखी में रहता है। तेरी तो चाल ही बदल गई है। कितना भी पढ़ लियो रहेगा तो चुहड़ा ही....."

उसकी किताबें फेंक दी जाती है। उसका न पढ़ने की ध ामकी देना आदि घटनाऍ घटती है। बेचारा ओमप्रकाश गिडगिड़ाता है– **"मेरी किताब बिखर जाऍगी..... मेरा झोला दे दो..... कापियॉ फट जाऍगी .....".**

जब वह अपने पिता को फरियाद करता है। तो उसके पिता उस प्रताडित करने वाले लड़के के बाप को मिलकर कहता है।

"अबे सोहरो, म्हारे जाकत दो अच्छर सीख लेंगे तो थारा क्या बिगड़ जागा"

कहने का तात्पर्य यह है। कि दलित बच्चे को पढने के लिए भी काफी संघर्ष करना पड़ रहा था उसका लेखा–जोखा दस्तावेज "जूठन" आत्मकथा है। "जूठन" में लेखक ने ग्रामीण अंधविशवास का वर्णन भी किया है। उदाहरण–

''बस्ती में जब भी कोई बीमार पड़ जाता, दावा दारू करने के बजाय भूत प्रेत की छाया से छूटकारा पाने के कार्य, झाड– फूँक टोने टोटके, ताबीज, दंडे भभूत आदि के आजमाइश शुरू हो जाती थी। ये तमाम काम रात में किए जाते थे। जब बिमारी लंबी ि खंच जाती थी या गंभीर रूप ले लेती है तो किसी भगत को बुलाकर पुच्छा की जाती थी। ऐसे समय में भगत के साथ एक ढोलक बजानेवाला, दो तीन गानेवाले होते थें।''

इस आत्मकथा में लेखक ने चमनलाल त्यागी नामक सवर्ण माने जाने वाली व्यक्ति का चित्रण भी किया जाता है जो उसकी पढ़ाई के लिए उसके घर आये थे। इतना ही नहीं चमनलाल त्यागी उसे अपने घर ले जाता है। और उस अछूत को खिलाता है। इसका भी वर्णन लेखक ने इस आत्मकथा में

.5.

लेखक ने किया है। लेखक की जिदंगी देहरादून से शुरू होती है, फिर जबलपुर, अंबरनाथ (बंबई) फिर देहरादून में कटती है। आज वो एक अच्छे औहदे पर है, लेकिन उन्होनें जो संघर्ष किया उसे कोई भी पाठक भूल नहीं सकता उनको आगे लाने में पिता का अहम रोल था। जूठन वास्तव में हिन्दी साहित्य में दलितों की दयाजनक दास्तॉ बयां करने वाली श्रेष्ठ आत्मकथा है। यह बात हमें स्वीकारनी पड़ेगी।

तिरस्कृत

तिरस्कृत (2002) आत्मकथा के लेखक सुरजपाल चौहान है। उसके बाद लेखक संतप्त नामक दुसरी आत्मकथा लिखते हैं। शायद आप उसे दूसरा भाग कह लो। वैसे सूरजपाल कवि एव कहानीकार भी है। इस आत्मकथा के आरम्भ से लेकर अंत तक दलितों को गाँव और शहर के सवर्ण लोग किस प्रकार प्रताड़ित करते है। उसका हृदयद्रावक वर्णन मिलता है। सूरजपाल ठाकुर प्रताप के बेटे वीरू के साथ खेलता है, तो ठाकुर कहता है। '' साले भंगियों के मेरे छोरा के संग खेलतु है ..... ठोर मार दूंगी।

दलितों का काम था गंदगी साफ करना, उसमें भी

दिल हुई तो ठाकुर जैसे लोग कैसे अमानवीय व्यवहार करते है। उसका उदाहरण सूरजपाल की माँ का है। ठाकुर कहता है– साली भंगीनिया चार दिन काम पे नही आई, हमारे घर के सामने कूड़े की ढेर लगी पड़ी है।

वही ठाकुर, भंगी अपना पक्का मकान बनवाता है तो भी ठाकुर इसे स्वीकार नहीं करता। ठाकुर जाटवों को फटकारते हुए कहता है।

''तुम्हे शरम आनी चाहिए, एक भंगिया की तुम्हारे सामने सीना ठोंक के पक्को मकान बनवा रही है और तुम..... जनखी की तरह हाथ धरे बैठो हो, तुम पे कुछ करौ जातु नाय''।

यानी सवर्णवादी मानसिकता वाले लोग कौन सी सदी में जी रहे है। ये भी पता उन्हें नहीं। वर्णवादी व्यवस्था की जड़े इतनी मजबूत है कि आज भी

.6.

दलित उसके शिकार होते नजर आते है। अछूतों को उसकी सम्पत्ति से भी कैसे अलग किये जाते थे उसका भी यथार्थ वर्णन उक्त आत्मकथा में मिलता है। विमला के पानी पीने को रूकी बुढा जमींदार दाँत पीसता है।

''अरे भगनियों नेक पीछे कू हट के पानी पी, यह शहर नाहे। गाँव है, मारे लढिया के कमर तोड दई जाऐगी .... भेचो.

.....भगियों और चमटटी के सहर (सहर) में जाके नये नये लता (कपड़े) पहर (पहन) के गॉव में आ जाते है, कछु (कुछ) पतो न चलतु कि जे भंगियो के हैं कि नाय (नही)''

सुरजपाल जिस स्कूल में पढ़ने जाते वहॉ संस्कृत विषय पढ़ाने वाले अधयापक से सुरजपाल की ओर संकेत कर उसने कहा था। **''यदि देश के सारे चुहाड़े चमार पढ़ लिख गये तो गली मौहल्लो की सफाई और जुते बनाने के कार्य कौन करेगा।''**

यानी सवर्ण मानसिक वाले लोग को दलितों का पढ़ना लि खना, आगे बढ़ना, विकास करना हजम नहीं होता। वे उसे वहीं पर रखना चाहते है– **'' दलित साहित्यकार श्री सुरजपाल चौहान के आत्मकथा अंश मन को द्रवित कर देने वाले है। कैसे कैसे हादसों से गुजरे हैं। और कैसे हालातों के जिम्मेवार लोगों को शर्म से पानी–पानी हो जाना चाहिए। लेखक श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के अनुसार यही है दलित साहित्य का सोन्दर्य शास्त्र। टीस पाठकों को विचलित न करें तो में समझता हूँ कि उस पाठक का हदय शिला निर्मित होना चाहिए।**

'तिरस्कृत' आत्मकथा का निचोड़ है कि– **''तिरस्कृत पढकर किसी की भी ऑखे नम हो सकती है। इसमें मन की पीड़ा ही नही आक्रोश के साथ जीवन का यथार्थ भी समाहित है। कहीं–कही लेखक भावातिरके में बह जरूर गया है। पर आत्मकथा के कुछ प्रसंग निश्चित ही अछुते हैं। और अनुठे भी।''**

मेरा बचपन मेरे कधो पर

.7.

'मेरा बचपन मेरे कधो पर' आत्मकथा के लेखक श्यौराज सिंह बेचेन है। इस आत्मकथा में आत्मकथाकार ने अपने बचपन के दिनों की आपबिती का यथार्थ वर्णन किया है। कितनी अजीब सी बात है कि जो छोटा सा बच्चा एक समय झोले में काला ब्रश लेकर रेवले स्टेशनो पर बूट–पालिस किया करता था, आज वह दिल्ली की प्रसिद्ध युनिवर्सिटि में प्रोफेसर है। वास्तव में बेचैन जी को जिंदगी ने बहुत बेचैन किया है।

आत्मकथा को पढ़ते है तो हमारा मन बहूत दुख से भर जाता है। जिस बच्चे को बचपन के दिनों में खेलने कूदने की जगह नियति ने उसे काम करने के लिए मजबूर कर दिया। पिताजी की असमय मृत्यु के कारण श्यौराज के परिवार को दो वक्त की रोटी भी मिलती नहीं थी उसके पिताजी की असमय मृत्यु के कारण श्यौरोज के परिवार को दो वक्त की रोटी भी मिलती नहीं थी। उसके नाना ने मॉ के ब्याह गरीब रामलाल से करवा दिया। रामलाल की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी इस लिए तीन सातेले बच्चे को कैसे पाल सकता। अब श्यौराज और उसके भाई बहन पर दूख का पहाड टूट पड़ा मॉ की दयनीय स्थिति थी। एक दिन उसी मॉ ने श्यौराज को क्रोध में कह दिया।

''सुन सौराज कान खोल सुन। तेरो बाप मरि चुको है! वे तेरी सुनन कू अब कबऊ लौटिकें नौय आवेगो समझे। मै तेरी कोई जिद पूरी नौय कर पाऊँगी अब तोड़ अपनी जिन्दगी अपनी कमाई में गुजारनी है।''

वहीं से होता है इस बच्चे का बाल श्रम। कभी वह मजदूरी करता तो कभी बूट पालिस करता तो कभी नीबू बेचता। पुरा दिन काम करने पर दो जून की रोटी और दो चार आना पैसा मिला जाता था। जैसे तेसे सौतले बाप ने अपने बेटे रूपसिंह के साथ श्यौराज को स्कूल में पढ़ाने के लिए भेजा। पता चला उसके बच्चे से श्यौराज होशियार है तो उसके सौतेले बाप ने उसकी किताबें जला दी। लेकिन उस समय मॉ का सहारा मिल गया। मॉ उसके पक्ष में थी। दूसरी ओर मास्टर प्रेमलाल सिंह यादव श्यौराज के प्रेरणा स्त्रोत बने।

.8.

इसी मास्टर की बाद में सवर्णवादी मानसिकता का संकेत भी

आत्मकथाकार करता है। लेखक के अपने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण देखना है। उनकी निम्नलिखित पंक्तियॉ उसका श्रेष्ठ उदाहरण है–

''मेरे बचपन के नाजुक वे नन्हे कदम''
जिस तरह मुड़ गये रास्ता बन गया।
पुरा संसार पुस्तक सा खुलता गया,
जितना पढ़ पाया में उतना पढ़ता गया।
इतनी काली अँधेरी विरासत मिली,
मेरे भीतर का दीपक था जलता गया।

संक्षेप में कहना है तो कह सकते हैं कि इस आत्मकथा में लेखक ने अपने जीवन के संधर्ष का अधिक चित्रण किया है। उनका बचपन कितना सधर्षमय रहा उसका हृदयस्पर्शी वर्णन लेखन ने इस आत्मकथा में ज्यादा किया है। दलितों की उपेक्षा का चित्रण भी मिलता है, पर बच्चे की संघर्षशीलता बाजी मार जाता है। श्यौराज का बालश्रम आत्मकथा का पार्ट आफ हार्ट है।

नागफनी

नागफनी के आत्मकथाकार रूपनारायण सोनकर एक सफल नाटककर तथा उपन्यासकार भी है। हाल ही में प्रकाशित उनका 'डंक' तथा 'सूअरदान' उपन्यास ने तो उन्हें श्रेष्ठ उपन्यासकारों की पंक्ति में बैठा दिया है। इन दोनों उपन्यासों की चर्चा लम्बे अरसे तक चलती रहेगी। नागफनी आत्मकथा में सोनकर जी ने अपमान, शोषण और असमानता की पीड़ा को उजागर किया है। इस आत्मकथा में रोने–धोने की अपेक्षा संघर्ष को अधिक महत्व दिया है। और यही अम्बेडकर जी का भी मूलमंत्र था। सोनकर जी को भी पानी के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। हरेक जीव की प्राथमिक अरूरत हवा, पानी और खुराक है। जब कोई भी जीव को जीने के लिए इन चीजों मिलना जरूरी है। अगर इसी चीज के लिए संघर्ष करना पड़े तो कोई भी जीव कैसे जी सकता

.9.

है? इन जीवों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ सामाजिक प्राणी है। उसी को पानी के लिए संघर्ष करना पड़े तो वह कैसे जी सकता है। प्रेमचंद ने दलितों की इसी पीड़ा का वर्णन ठाकुर का कुंआ कहानी में किया है। सोनकर जी को भी पानी पीने के लिए सवर्ण समाज से संघर्ष करना पड़ता है। हरेक जीव की प्राथमिक अरूरत हवा, पानी और खुराक है। अगर इसी चीज के लिए संघर्ष करना पड़े तो कोई भी जीव कैसे जी सकता है। इन जीवों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ सामाजिक प्राणी है। उसी को पानी के लिए संघर्ष करना पड़े तो वह कैसे जी सकता है। प्रेमचंद ने दलितों की इसी पीड़ा का वर्णन ठाकुर का कुंआ कहानी में किया है। सोनकर जी को भी पानी पीने के लिए सवर्ण समाज से संघर्ष करना पड़ता है। सोनकर जी जब बारहवीं कक्षा में पढते थे तब गर्मी के मौसम में वह बिन्दकी से अपने गांव नसेनियाँ जा रहे थे। रास्ते में कुछ जामुन तथा आम खाते जा रहे थे तब उनको प्यास लगी तो एक कुंअे के किनारे बाल्टी पड़ी थी उसे उठाकर कुंअे में से पानी निकालकर पानी पीने का प्रयास किया। पानी पीते समय किसी ब्राह्मण ने देख लिया कुंअे के पास आकर बोला–

''साले, तूने अपने आप कुंअे से पानी निकालकर बाल्टी में लोटा डालकर पी लिया। मैं तुझे जानता हूं कि तू अछूत है।''

कुछ और ब्राह्मण आ गये उसे मारने लगे तब बाल्टी को गोल–गोल घुमाकर सभी को घायल करके भागे थे। पर हाल यह होता है कि उन्होंने एक लोटा पानी पिया लेकिन ब्रह्मणों ने उनका दो लोटा खून बहाया। उस आत्मकथा की वह घटना भी मुझे हृदयस्पर्शी लगी कि उनके घर मेहमान आते हैं और शिवभजन वहां से गुजरता है। तब सब लोगों के साथ सोनकर जी भी चारपाई पर बैठा था। जब वे लोग उठने का प्रयास करते हैं तब आत्मकथाकार उन्हें रोकता है। तब ब्राह्मण शिवभजन को अच्छा नहीं लगा। वह तो गालियां बोलता हुआ कहता है–

.10.

''साले, अछूतों हमारे सामने चारपाईयों पर बैठे हो। ये साला हीरा, तुम लोगों को चारपाईयों से उतरने से रोक रहा है।''

क्या वे बेचारे अपने घर में भी शांत से नही बैठ सकते। उसके बाद तो बहुत बड़ा झगड़ा हो जाता है कुछ और ब्राह्मण सोनकर को जान से मारने वाले थे। मगर यादव आत्मकथाकार और उनकी भाभी ने बराबर सामना किया। कुल्हाड़ी के साथ वे बाहर आ गये कुछ यादव आ गये और मामले को रफा–दफा किया। ऐसे तो अनेक प्रसंग आत्मकथाकार के जीवन में आते हैं लेकिन वह डटके मुकाबला करते है। नागफनी के एक–एक संवाद पाठक के हृदय को छू जाने वाले हैं। शायद इसीलिए नामवर सिंह ने इस आत्मकथा के बारे में लिखा है– ''नागफनी एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसकी भाषाशैली और शिल्प सहायनीय है।'' और राजेन्द्र यादवजी ने इस आत्मकथा के बारे में लिखा है– ''रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा नागफनी में हाय मार डाला की चीखें नहीं सुनाई पड़ती है। बल्कि इसमें साइलेंट रेवोल्यूसन है।''

मुर्दहिया

मुर्दहिया (2010) आत्मकथा के लेखक डा0 तुलसीराम है।

वैसे तो आत्मकथा लिखना साहस का कमा है। इस आत्मकथा में लेखक के यौवनावस्था तक के जीवन का चित्रण मिलता है। वैसे भी लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह आत्मकथा भाग–1 है। और बहुत जल्द हमें ले खक द्वारा दूसरा भाग भी प्राप्त होगा। इस आत्मकथा की विशेषता यह है कि इसमें उनका जीवन चरित ही नहीं बल्कि उनके साथ जुड़े हुए लोगों का मनोविश्लेषण भी है, जो इस कृति को उपन्यास जैसा बना दिया है। इस आत्मकथा से यह बात सामने आती है कि व्यक्ति के जीवन में अपने परिवेश की भुमिका भी अहम है। लेखक का जन्म अंधविश्वास से भरे हुए दलित परिवार में हुआ था। लेखक ने यह भी स्वीकारा है कि उनको पहले अपने ही परिवार से अपमान का सामना करना पड़ा। यह बात उनके ताउजी के चरित्र

.11.

से स्पष्ट हो जाती है। ग्रामीण लोगों के अशिक्षा के कारण कैसी–कैसी समस्यायें पैदा होती है उसका भी संकेत इस आत्मकथा में मिलता है। बिसराम द्वारा अपनी पत्नी सुभगिया को लिखे गये पत्र से स्पष्ट होती है। उदाहरण–

''लिखता हूं खत खून से स्याही न समझना।
मरता हूं तेरी याद में जिन्दा न समझना।।।''

इस पत्र को तुलसीदास ने पढा लेकिन सुभगिया को ऐसा लगा कि उसका पति मर चुका है। सारे गांव भर में मातम छा जाता है। पर बाद में समझाया जाता है कि यह तो शायरी है, इसका मतलब तो यह है कि वह तुम्हें बहुत याद करता है। इस प्रकार आत्मकथाकार ने उसके जीवन की कुछ अहम बातें उकेरते हुए तत्कालीन सामाजिक जीवन, परिवेश, राजनीति गतिविधियों को अभिव्यक्त किया। इस आत्मकथा की यह भी विशेषता है कि दलित के साथ–साथ अन्य सवर्ण या जिसे दलित माना नहीं जाता ऐसी गरीब जातियों का चित्रण भी मिलता है, जो एक नया विचार है। परिवेश का हमारे जीवन में बहुत महत्व है पर प्रकृति से आदमी कट रहा है, उन्होने तो प्रकृति को ही नष्ट कर दिया। यानी जंगल को ही नष्ट कर दिया है। फलतः कई पशु पक्षी हमसे दूर हो गये। मुर्दहिया के बारे में लेखक ने भूमिका में लिखा है–

''पचास–साठ साल पहले की जिस मुर्दहिया का वर्णन मैंने किया है, वह पूर्णरूपेण उजड़ चुकी है। सारे जंगल कटकर खेत में बदल चुके हैं, जिसके चलते गिद्धों जैसे अनगिनत दुर्लभ पक्षियों तथा साही, सियारों और खरगोशों जैसे पशुओं का विलोप हो चुका है। बचपन में दुखित होने का मतलब होता था आंखों में आंसू आ जाना। ऐसे जानवरों पर मेरी दादी आंख धो लेने को कहती थी, किंतु आज का अनुभव बताता है कि चंद पानी के छींटों से दुख की निशानी नहीं मिट पाती। प्रवास मजदूरों से ही पता चला कि मुर्दहिया से होकर जाने वाली एक सरकारी सड़क ने हमारे गांव को तीन जिलों आजमगढ, गाजीपुर तथा बनारस से जोड़ दिया है। उस पर टैम्पो भी चलने लगे हैं।

.12.

जिस तरह हमारे गांव से बड़ी संख्या में मजदूरों का पलायन बडे शहरों में हो चुका है, संभवतः मुर्दहिया से सड़क निकल जाने के कारण वहां के भूत–पिशाचों का भी पलायन अवश्य हो गया होगा। जाहिर है, अब पहले जैसी उनकी पूजा नहीं होती। बढ़ते हुए शहरीकरण ने हर एक जीवन को प्रभावित किया है। भूत भी इससे अछूते नहीं है।''

वास्तव में मुर्दहिया आत्मकथा अन्य दलित आत्मकथाओं से हटकर है। यह आत्मकथा प्रकाशित होने के पश्चात अन्य संस्करण निकलने का संकेत भी है। शायद, डा. तुलसी राम की पहली रचना है फिर भी लाजवाब है। वे मार्कसवादी विचाराधारा से सम्बन्धित है। उन्होने बौद्ध दर्शन पर भी विशिष्ट कार्य किया है। आज कल वे जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान के सेंटर फार रशियन एंड सेंट्रल एशियन स्टडीज में प्राफेसर हैं तथा उक्त सेंटर के वे अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

इस प्रकार पिछले डेढ दशक से दलित आत्मकथाओं ने कुछ ऐसी आत्मकथायें लिखी है जिससे दलित साहित्य ने एक ताकत के साथ अपना अस्तित्व हिन्दी साहित्य में बना दिया है। भले ही कुछ सवर्ण मानसिकता वाले लेखक दलित को साहित्य न माने, लेकिन यह साहित्य लाखों के मन में बस चुका है, यह एक कटु सत्य है। अंत में सूरजपाल की कविता की पंक्तियों के साथ अपनी बात को विराम देना चाहूंगा।

''खरी–खरी मैं बोलता, लिखता भी हूं सांच।
पाखण्डी साहित्य को, लग जाएगी आंच।।''

*****

सद्गति : एक विश्लेषण

– डॉ. पान सिंह
(विभाग अध्यक्ष)
हिमांचल विश्वविद्यालय शिमला।

हिन्दी साहित्य में कहानी सबसे प्राचीन विधा के रूप में जानी जाती है। हिन्दी साहित्य में विभिन्न प्रकार की कहा. नियां लिखी जा चुकी हैं और लिखी जा रही हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद तथा कई अन्य विद्वानों ने कहानी का वर्गीकरण करते हुए अनेक प्रकार बताए हैं। स्थूल रूप से कहानियों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है– कथा प्रधान, वातावरण प्रधान, प्रभाव प्रधान कहानियां तीन प्रकार की होती हैं– घटना प्रधान, कार्य प्रधान, चरित्र प्रधान। विषयवस्तु की दृष्टि से कहानियों को विभिन्न प्रकार से विभक्त किया जा सकता है। जैसे– सामाजिक कहानियां, ऐतिहासिक कहानियां, मनोवैज्ञानिक कहानियां, राजनीतिक कहानियां आदि। शिल्प एवं शैली की दृष्टि से कहानियां पांच प्रकार की होती हैं– वर्णात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, संवादात्मक तथा प्रतीकात्मक। उद्देश्य की दृष्टि से कहानियां का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया जा सकता है– आदर्शवादी कहानियां, यथार्थवादी कहानियां तथा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियां।

दोनों कहानीकारों – मुंशी प्रेमचन्द तथा सोनकर द्वारा लि खित कहानी सद्गति में दलित समाज का चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द की कहानी सद्गति की पहली पंक्ति में – **" दुखी चमार द्वार पर झाड़ू लगा रहा था।"** उच्चवर्ग

.2.

द्वारा निम्नवर्ग का शोषण कहानी का कथानक है। समाज मे फैली छूआछूत तथा दलित शोषण का पर्दाफाश करना ही कहानी का उद्देश्य रहा है।

प्रेमचन्द की कहानी 'सद्गति' मे एक ब्राह्मण द्वारा दलित जाति के दुखी नामक पात्र का शोषण दिखलाया गया है। ब्राह्मण उसकी लड़की की शादी साइत सगुन विचारने के बदले उससे कई कार्य करवा लेता है। पंडित कहता है– **" घास को गाय के सामने डाल दे और जरा झाड़ू लेकर द्वार तो साफ कर दे। यह बैठक भी कई दिन से लीपी नहीं गई। उसे भी गोबर से लीप दे। तब तक मैं भोजन कर लूं। फिर जरा आराम करके चल. ेगा। हां, यह लकड़ी भी चीर देना। खलिहान में चार खांची भूसा पड़ा है। उसे भी उठा लाना और भुसौली में रख देना।"** अपनी दलित जाति के होने के कारण वह उनसे कुछ मांग भी नहीं सका और भूखा–प्यासा काम पर लगा रहा। हुक्का पीने का मन हुआ तो वह पंडित के घर केवल आग लेने जाता है, उस पर पंडिताइन कहती है– **"चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुंह उठाये घर में चला जाये। हिन्दू का घर न हुआ, कोई सराय हुई। कह दो दाढ़ीजार से चला जाये नहीं तो इस लुआठे से मुंह झुलस दूंगी। आग मांगने चले हैं।"** इन उच्च वर्ग के ठेकेदारों की बात उसके कानों तक पड़ जाती है तो वह सोचता हुआ अपने आप से कहता है– **"सच तो कहती हैं। पंडित के घर में चमार कैसे चला आये। बड़े पवित्र होत हैं यह लोग, तभी तो संसार पूजता है, तभी तो इतना मान है।"** वह अपने आपको ही कोसता है।

प्रेमचन्द की कहानी में दलित चेतना है। उन्होने सामाजिक रूढ़ियो, अंधविश्वासों तथा बाह्य आडम्बरों का नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होने

.3.

उच्चवर्ग के द्वारा निम्न वर्ग के शोषण का कच्चा चिट्ठा खोला है। तत्कालीन स्थिति, परिवेश तथा समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। दुखी उनके यहां काम करता हुआ मर जाता है लेकिन उच्चवर्ग को उसके प्रति कोई दया का भावय सहानुभूति नहीं है। वे उसे केवल एक लाश समझते हैं। ऐसी लाश जिसे पंडित रस्सी डालकर खींचकर गांव से बाहर फैंक देता है।

भूखा, थका होने के कारण वह लकड़ी चीरते–चीरते मर जाता है तो पंडिताइन कहती है– **"चमरौने में कहला भेजो मुर्दा उठा ले जाये।"** यहां तक कि उच्चवर्ग के लोग निम्न वर्ग का रोना धोना भी अपशकुन समझते हैं। तभी तो पंडिता. इन कहती हैं– "चमार का रोना मनहूस होता है।" जब कोई लाश उठाने न आया तो पंडित जी ने रस्सी का फंदा बनाकर लाश को खींचकर गांव से बाहर कर दिया। **"जहां दुखी की लाश को खेत में गीदड, गिद्ध और कुत्ते और कौए नोंच रहे थे। यहीं जीवन पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था"** उच्चवर्ग का घिनौना रूप आम आदमी के हृदय को चीत्कार कर रख देते है। प्रेमचन्द ने यह बताने की कोशिश की है कि उच्चवर्ग अपने जाति, ज्ञान व दौलत के अंहकार में अपनी सारी मनुष्यता की हदों तथा सीमाओं को पार कर देता है।

प्रेमचन्द द्वारा लिखित सद्गति कहानी के माध्यम से उनका मूल मन्तव्य स्पष्ट हुआ है। प्रेमचन्द ने जितनी भी कहानियां लिखी, उनका घटनाक्रम आम जीवन से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। कहानियों के घटनाक्रम आम जीवन से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। कहानियों के माध्यम से जन–जीवन का

चित्रण करना प्रेमचन्द के कथा साहित्य की विशेषता रही है। उनकी कहानियों का कथाक्रम कहीं भी विछिन्न होता नहीं दिखाई देता। कहानी तत्वों की दृष्टि से

.4.

प्रेमचन्द कहानी सार्थक रही है। आम जीवन के घटनाक्रम को कल्पना के माध्यम से संवारने की कला प्रेमचन्द जैसे मुध न्य कथाकार के पास ही हो सकती है जो उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। उनकी अपनी अलग ही शैली थी। बात कहने का एक अलग ही अन्दाज था। घटनाक्रम को एकसूत्र में पिरोने की कला थी। पात्रों के माध्यम से कहानी से कहानी के अन्तिम छोर तक ले जाने की सशक्त अभिव्यक्ति थी। कल्पना से कहानी को सम्पूर्णता प्रदान करने का एक अलग डिक्शन था। प्रेमचन्द कोई मामूली कथाकार नहीं थे। उनकी बातें ही कहानियों का रूप ले लेती थी। 'सद्गति' भी ठीक ऐसी कहानी है जिसमें प्रेमचन्द का कथाकार एक मूल मंतव्य का स्पष्ट करता हुआ कहानी चुनता–चुनता दिखाई देता है। सामाजिक ढांचे पर आधारित कहानी अपनी छाप छोड़ने में पूर्ण रूप से सक्षम रही है।

भारतीय समाज की सबसे बड़ी बिडम्बना धर्म, सम्प्रदाय, जाति तथा ऊंच–नीच तथा आडम्बर रहे हैं, इन सामाजिक बिडम्बनाओं ने समाज को खोखला करने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज भी समाज इन बिडम्बनाओं तथा स्थितियों से उबर नहीं पर रहा है। जाति–सम्प्रदाय की गहरी खाई को आज भी हम पाट नही पाए हैं। यह न पाटने वाली खाई आज भी हमारा आहार बनाकर अपना आकार बढ़ाए जा रही है। 21सवीं सदी में हम वैश्वीकरण तथा आध ुनिक होने के दावा ठोंकते हैं, अपनी खोजों पर इतराते हैं, कहते है, कि हमने विज्ञान, इतिहास, दर्शन, शास्त्र, साहित्य तथा अन्य सभी क्षेत्रों में विजय पायी है। लेकिन हम अपने अन्दर पल रही मनुष्यता को कहां तक विकसित कर पाये हैं? हमारी सोच में कितना आधुनिकपन है? हमारी सोच कहां तक उच्चदृष्किोण के तराजू में तुल सकती है? ऐसे प्रश्न हमारी निम्न सोच की परिभाषा देते दिखाई देते हैं। हमारी मानसिकता की संकुचिता

.5.

का माप दर्शाते हैं। तब हम स्वयं से प्रश्न करते हैं कि हम आज भी कहां खड़े हैं? ठीक ऐसी की सोच को व्यक्त करने के लिए धर्म, सम्प्रदाय तथा जातीयता को मिटाने के लिए दोनों कथाकारों– प्रेमचन्द तथा सोनकर ने 'सद्गति' कहानी का सृजन किया है।

सोनकर की पूरी कहानी में सत्ता लोभियों की कथा ब्यान हुई है। शब्बीर मुस्लिम वर्ग से संबंधित है, जिसने हिन्दू–मुस्लिम दंगों में मुख्य भूमिका निभाई थी। वह सत्ता पाने के लिये हिन्दू–मुस्लिम, सवर्ण–असवर्ण सभी के साथ गिरगिट वाले रंग बदलता है। बिन्दुओं के सामने मुस्लिम धर्म को गलत ठहराता है और मुस्लिमों के समक्ष अपने कट्टर मुस्लिम होने का दावा करता है। दलितों से वोट लेने के लिये साम, दाम, दण्ड भेद की नीति अपना रहा है।

सोनकर की 'सद्गति' को पढ़कर एक बात यह अच्छी लगती है कि उनके बात कहने का ढंग बहुत ही जबरदस्त है। उनकी कहानी की क्रमबद्धता कभी विछिन्न होती नहीं दिखाई देती। उनकी बातों में दार्शनिकता का पुट मिलता है। कहानी के आरंभ में वे लिखते हैं –

''जिस तरह पेन में भरी स्याही लिखते–लिखते समाप्त हो जाती है, उसी तरह मनुष्य का जीवन चलते–चलते समाप्त हो जाता है। पेन की स्याही समाप्त होने पर उसको दुबारा भरा जा सकता है। लेकिन जीवन की गति रूकने पर उसे गतिमान नहीं बनाया जा सकता है।'' यह कहानी राजनीतिक दांव पेचों पर आधारित है। चुनाव की मारा–मारी पड़ी है, नेता लोग अपने बड़े–बड़े दावों से लोगों को आश्वासन दिला रहे हैं। वोट लेने के लिये ओछी राजनीतिक चालें चली जा रही हैं। सोनकर लिखते हैं, ''युवा जोशीले

.6.

उम्मीदवार वोट मांगते समय वोटरो के पैर छूना नहीं भूलते लेकिन दलितों के पैर छूना अब भी वर्जित समझते है। उनसें दंबगई के बल पर ही अपनी तरफ वोट डलवा लेते हैं। कहीं–कहीं विवेकशील युवा सवर्ण उम्मीदवार दलित बुजुर्गो के पैर छूते देखे गए हैं।'' एक अन्य स्थल में सोनकर कहानी में राजनीतिक लोभ का चित्रण करते हुए लिखते हैं – **''कुर्सी की चाहत एक मणि की तरह होती है इसके लिये वे विषैले सर्प की बांबी से निकाल लेते हैं। सर्प से डंसने की भी परवाह नहीं करते हैं।''**

मियां शब्बीर सोनपुर जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रहा है। मियां शब्बीर के पूर्वज सदानंद सिन्हा ने मुगलों के शासनकाल में एक बहुत बड़ा ओहदा पाने के लिये इस्लाम ध र्म स्वीकार कर लिया था। वह अपनी कौम से वोट मांगने के लिये अपने बारे में कबूलता हुआ कहा है – **'मैं कुरान की कसम खाकर कहता हूं मैं ऐसा नहीं करूंगा। दंगों के दौरान मैंने न जाने कितने हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा है। मैंने अपनी वफादारी मुस्लिम समाज के प्रति ऐसा करके सिद्ध कर दी है।''**

वह हिन्दुओं से वोट मांगते हुए कहता है – **'जो अपराध मेरे बुजुर्गो ने इस्लाम धर्म स्वीकार करके किया है मैं उसका पश्चाताप करूंगा। मैं चुपचाप इस्लाम धर्म छोड़ चुका हूं, लेकिन इसकी घोषणा इलैक्शन के दौरान नहीं कर सकता, क्योंकि फिर मुझे मुसलमानों का वोट नहीं मिलेगा। मियां शब्बीर के सामने धर्म एक मजाक था। स्वार्थ धर्म पर भारी पड़ रहा था।''** हिन्दू–मुस्लिम दंगों में सुखलाल केवट का बेटा शहीद हुआ होता है, जिस कारण वह मियां शब्बीर को अपने रास्ते का कांटा नजर आ रहा था। वह सुखलाल पर चुनाव से हटने के लिये डरा ध मिका रहा था।

.7.

लेकिन सारे प्रलोभन उसके सामने फीके पड़ गए। वह चुनाव को किसी भी हालत में जीतना चाहता था।

सत्ताधारियों के लोभ का चित्रण करते हुए सोनकर लिखते हैं– **''कुर्सी बिल्कुल शहद के छते की तरह होती है। जिस तरह शहद पाने के लिए बहुत सारी मधुमक्खियों**

को मारना पड़ता है उसी तरह कुर्सी पाने के लिए राजनीति में बहुत सारे निर्दोष व्यक्ति मारे जाते हैं।'' आगे लिखते हैं, **''जैसे वंशी में चारा लगाकर जल के अन्दर मछलियों को पकड़ने के लिए लोहे के कांटे में फंस जाती है।''** वैसे ही शब्बीर हिन्दु–मुस्लीम सुख–दुख में शामिल होकर अपना ढंग बदलता था।

कहानी का घटनाक्रम तब बदल जाता है जब मियां शब्बीर एक मृत व्यक्ति को वोट लेने के लिए कांधा देकर अपना दिखावा करना चाहता है। लेकिन वह नहीं जानता था कि वह दिखावा उस पर भारी पड़ने वाला है। बोझ उठाये वह लंगड़ाने लगा था लेकिन कोई उससे कंधा बदलने नहीं आ रहा था। **''वह कहने लगा– आप लोग कहें तो मैं एक गाड़ी की व्यवस्था कर दूं।''**

दूसरे बुजुर्ग ने कहा– **'' नहीं बेटा! गाड़ी की क्या जरूरत है? आधा रास्ते से ज्यादा रास्ता तो आ गए हो। तुम शहर जाओगे फिर गाड़ी लाओगे। तब तक बहुत समय लग जाएगा बढ़े चला बेटा तुमने पुण्य का काम किया है।''**

श्मशान घाट पहुंचने पर पता चला कि जिसको वह कांधा देकर लाया है उसके बेटे को शब्बीर ने ही बेहरमी से मारा था जिसके गम में उस व्यक्ति की मौत हुई थी। वह अपने अपराधों को याद करके बूढे गगन से माफी मांगता

.8.

है– ''मैं गुनाहगार हूं मैंने निर्द्वोष लोगो को मारा है।'' यह पश्चाताप की अग्नि में जल रहा होता है। दलित गगन बोला– **''मत सोचो पुरानी बातें। यह श्मशान घाट हमारी आंखे खोलता है। जीवन का रहस्य बताता है। त्याग, मौहब्ब्त, भाईचारा जीवन का अमूल्य निधि है। जो आदमी इन खूबियों के साथ यहां पर आता है वह सुख की नींद सोता है।''**

शब्बीर कहता है– **''मैंने गुनाह किये हैं। मैं मानवता को भूल गया था। स्वार्थ, अंधे धर्म और मजहब ने मुझे बिल्कुल अंधा कर दिया था। हम दोनों समुदाय के लोग भाई हैं। मैंने भाइयों को मारकर बड़ा अपराध किया है। मुझे सजा मिलनी चाहिए।''** इसी आत्मग्लानि के साथ वह भी चिता में कूद पड़ता है लेकिन दो आदमी उसे निकाल लाते हैं। लेकिन वह बच नहीं पाता। वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उसकी लाश को कब्रिस्थान में कौए, चीलें, गिद्धें तथा सूअर व कुत्ते नोंच–नोंच कर खाते हैं।

सोनकर की कहानी का कथात्मक राजनीतिक जीवन की उथल–पुथल से उठाया गया है तथा सत्ता लोभियों के इर्द–गीर्द घुमाते हुए अपने उद्देश्य में सफल रहे हैं। उन्होनें अपनी कहानी 'सद्गति' में धर्म–विरोधी झूठे, मक्कार, दांवपेची, स्वार्थी श्ब्बीर का हृदय परिवर्तन करवाकर 'सद्गति' प्रदान करते हुए सार्थकता प्रदान की है। हिन्दु–मुस्लिम झगड़ों को केन्द्र बनाकर जो धर्म, सम्प्रदाय तथा जाति के नाम दंगे होते है, उनका जिक्र किया है तथा मनुष्य को उनका वास्तविक धर्म क्या है। उसे अहसास करवाया है कि मृत्यु ही वास्तविक सच्चाई है। श्मशान घाट में आकर मनुष्य अंहकार, द्वेष, वैर–भाव सब कुछ भूल जाता है। मनुष्य के क्षणभंगुरता का आभास इस कर्मस्थल पर जाकर

.9.

हो जाता है। यही सोनकर की कहानी का मुख्य ध्येय था। सोनकर की बातों से कबीर की याद हो आई–

''रहना नहीं यह देश बेगाना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूंद पड़े घुल जाना है।
यह संसार झाड़ झंखाड़ उलझि–पुलझि मर जाना है।''

दोनों कहानियों का अंत एक जैसा ही है। एक तरफ प्रेमचन्द की कहानी में दुखी की लाश को कौए, गीदड़, गिद्धो तथा कुत्ते आदि नोंच–नोंचकर खा देते हैं वहीं सोनकर की कहानी में भी शब्बीर की लाश को कौए, गीदड़, गिद्धो तथा कुत्ते वैसे ही नोंच–नोंचकर खाते हैं। लेकिन मृत्यु के पीछे दोनों कहानियों की घटनाएं विपरीत हैं। जहां प्रेमचन्द की कहानी में एक दलित होने के कारण अपनी स्वामी भक्ति के लिए शहीद शब्बीर जैसे दरिंदा मुसलमान अपनी ही गुनाहों के पश्चाताप को अग्नि में शहीद हो जाता है। दोनों लेखकों ने दलित समस्या को उठाकर कहानी के घटनाक्रम प्रस्तुत किया है। दोनों ही कथाकार अपनी–अपनी कहानी के माध्यम से इसे चरितार्थ करने में सफल रहे हैं।

प्रेमचन्द ने ब्राह्मण और दलितों के पात्रों के माध्यम से कहानी को प्रस्तुत किया है, वहीं सोनकर ने कहानी में ठाकुरों, दलितों, हिन्दु–मुस्लमान तथा अन्य सम्प्रदायों को कहानी में समेटकर प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने कहानी में अपनी दार्शनिकता का पुट अधिक दिया है। प्रेमचन्द ने एक कथाकार की भान्ति घटनाक्रम को जोड़ा है लेकिन सोनकर ने एक जागरूक दार्शनिक को भान्ति अपने ज्ञान का पोलिश भी कहानी पर किया है। दोनों कहानियों में वर्ण तथा

.10.

वर्ग संघर्ष दिखाई देता है। दोनों कहानियों में कर्म के प्रति आस्था दिखाई देती है।

प्रेमचन्द की कहानी का बीज लड़की की शादी के रूप में जन्म लेता है। जबकि सोनकर की कहानी का बीजांकुर सत्ता चुनाव आदि से होता है। सोनकर को कहानियों में विभिन्न वर्गों का उल्लेख हुआ लेकिन प्रेमचन्द ने दलित, ब्राह्मण तथा गौड़ आदि ही जातियों का वर्णन किया है। सोनकर की कहानी में हिन्दु–मुस्लिम दंगों की चर्चा की गई है, लेकिन प्रेमचन्द की कहानी एक सामान्य जीवन से उठायी गई है। सोनकर की कहानी का नायक, मक्कार, चतुर, हत्यारा, दांवपेची, आदि है, लेकिन प्रेमचन्द की कहानी का नायक अति दीन–हीन तथा स्वामी भक्त है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दोनों ही कहानियां समय और स्थिति के माप–तोल में खरी उतारती हैं। दोनों ही कहानीकारों ने निम्नवर्ग की व्यथा को व्यथा को व्यक्त किया है। दोनों ही उच्चकोटि के कथाकार हैं।

*****

समकालीन दलित साहित्य में रूपनारायण सोनकर की उपस्थिति

–डॉ.जी.वी. रत्नाकर
प्रोफेसर, विधागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
गाचीबावली, हैदराबाद–32
मो0 9849303175

भारतीय राजनीति में विभिन्न दलित आन्दोलन और महापुरूषों के संघर्ष के फलस्वरूप दलितों के उत्थान के साथ–साथ साहित्य, संस्कृति और कला की दुनिया में भी दलितों का वर्चस्व बढ़ा है। साठ के दशक में मराठी में प्रकाशित दलित ले खकों की आत्मकथाओं ने न केवल मराठी समाज को बल्कि हिन्दी समाज को भी गहराई से प्रभावित किया। दया पवार और शरण कुमार लिम्बाले की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त दलितों के शोषण की मार्मिक व्यथा ने इस तथ्य को स्थापित करने में मदद की कि दलित जाति के लेखक जिस विश्वस. नीयता, तथ्यपरकता और संवेदना से अपने जीवन संघर्षो को व्यक्त कर सकते है, गैर–दलितों लेखकों द्वारा यह मुमकिन नहीं है। इन मराठी लेखकों के तथा अन्य तत्कालीन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हिन्दी में दलित लेखन का आरम्भ हुआ। अपनी एक अलग वैचारिक शक्ति के साथ हिन्दी पट्टी में तमाम दलित लेखन आरम्भ हुआ। अपनी एक अलग वैचारिक शक्ति के साथ हिन्दी पट्टी में तमाम दलित लेखक उभरकर सामने आये। इनमें मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, रमणिका गुप्ता, श्यौराज सिंह बेचौन, अजय नावरिया, रूपनारायण सोनकर, डॉ0 धर्मवीर, जयप्रकाश कर्दम, सत्यप्रकाश, प्रेम कपाडिया आदि का नाम विशिष्ट एवं नयी दलित शैली के लिए प्रसिद्व है। इन्होंनें न केवल उपन्यास और कहानी ही लिखी बल्कि साहित्य कि अन्य विधाओं काव्य, नाटक आदि में भी अपनी एक सार्थक उपस्थिति दर्ज की है।

उपर्युक्त लेखकों के लेखन के फलस्वरूप हिन्दी में दलित साहित्य का अपना अलग अस्तित्व सामने आया है। जो दलित साहित्य से बहुत अर्थों में अलग है। वर्तमान समय में दलित साहित्य का सभी विधाओं में सृजन हो रहा है। इन लेखकों के लेखन से पूर्व दलित साहित्य केवल एक खानापूर्ति का साहित्य रह गया था। शुद्ध रूप में कहा जाये तो सहानुभूति का साहित्य था। दलित लेखकों के अथक परिश्रम के परिणामस्वरूप ही दलित एवं दलित साहित्य को व्यापक अर्थो में देखा जाने लगा। अगर डॉ0 अम्बेडकर, रैदास, कबीर, पेरियार, फूले आदि के विचारों को ये स्वर नहीं देते तो शायद ही आज का दलित साहित्य इस मुकाम पर पहुँचा होता। आज दलित साहित्य को व्यापक अर्थों– दबाया गया, गिराया गया, वंचित, अलग किया गया, उत्पीड़ित, बहिष्कृत, अपमानित, शोषित आदि के रूप में लिया जा रहा है। दलित के साथ जब साहित्य जुड़ जाता है तो वह साहित्य ऐसे लोगों का साहित्य हो जाता है जो मुख्यतः हिन्दू समाज व्यवस्था में शस्त्र और शस्त्र से पीड़ित, अपमानित और शोषित समुदाय में आते है। उनमें जहां अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, घुमंतू जातियां आती है वहीं वर्ण व्यवस्था से पीड़ित जातियां वेश्याएं, देवदारियां, बंधुवा मजदूर, झोपड़ पट्टीओं में रहकर नारकीय जीवन व्यतीत करने वाले भी आते है। आज दलित साहित्य का उद्देश्य दलित समुदाय में जागृति पैदा कर उनमें स्वाभिमान भरना और अपने ऊपर होने वाले अन्यायों के विरूद्ध संघर्ष करने को तैयार करना है। दलित साहित्य में केवल दलितों के दर्द, आह, पीड़ा, कसक ही अभिव्यक्त नहीं की जाती है, बल्कि उनके शमन के उपाय भी बताये जाते है। दलित साहित्य समाज में समता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्वता और लोकतंत्र का हामी है। इसलिए जाति, वर्ण, रंग, नश्ल का विरोधी है। दलित साहित्य का अर्थ भाग्य, भगवान, स्वर्ग, नरक, पुनर्जन्म, अवतार, मूर्तिपूजा, स्नान परम्परा, रूढ़िवादिता का विरोधी है। हिन्द. ुत्ववादी ग्रंथों में तथा कथित शूद्रों के लिए जो अपमान, शोषण, उत्पीड़न से सम्बंधित बाते है और भारतीय संविधान के विपरीत है, दलित साहित्य उसका विरोधी है।

दलित साहित्य में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जो सरल हो। जिसे बहुसंख्यक लोग समझ सकें। चूंकि, दलित साहित्य, स्थापित साहित्य में परंपरा का विरोधी है, इसलिए उनमें आक्रोश, प्रतिरोध सम्बन्धी कठोर शब्दों का प्रयोग भी होता है। दलित साहित्य में रस, छंद, अलंकार की परवाह नहीं की जाती है। कुछ लोग आरोप लगातू है कि इस साहित्य में सौदर्यशास्त्र का अभाव है। जब दलित साहित्य में बलात्कार, उत्पीड़न, भूख, पीड़ा और आह की बातें लिखी जाती है तो उसमें कौन सा सौंदर्य आएगा। दलित साहित्य यथार्थ का साहित्य है। भुक्त–भोगियों का साहित्य है। अवतारवाद, पुनर्जन्म आदि की अभिव्यक्ति देने वाला साहित्य इस श्रेणी में नहीं आ सकता है। दलित साहित्य अम्बेडकर की विचारधारा से अनुप्राणित है। डॉ0 अम्बेडकर के द्वारा चलाये गये मुहीम की सार्थक परिणति है आज का दलित साहित्य। इस दलित साहित्य की श्री वृद्धि में रूपनारायण सोनकर भी अग्रणी है।

समकालीन दलित साहित्यकार नसेनियां जिला फतेहपुर (उ0 प्र0) जन्में रूपनारायण सोनकर ने एक चर्चित नाटककार, कवि, कथाकार के रूप में अपनी पहचान बना ली है। अपनी विशिष्ट रचनाओं के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी हुए है। सोनकर अब तक लगभाग 30 नाटक, तीन काव्य संग्रह तथा कई महत्वपूर्ण कथा–संग्रहों एवं उपन्यासों के साथ समकालीन दलित साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। इन रचनाओं में 'खूबसूरत परियों का गलबहियां डांस', 'यदि गीदड़ नेता होता' (काव्य), 'विषधर', 'महानायक', 'समाज'–द्रोही', 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर' छल–छल नीति, छायावती (नाटक), जहरीली जडें

(कहानी संग्रह), सद्गति, कफन, दूध का दाम (कहानियां), डंक, सूअरदान, गटर का आदमी, सोलह सौ किलोमीटर (उपन्यास) तथा नागफनी (आत्मकथा) कहानियां व भटकटैया आत्मकथा द्वितीय भाग आदि विशेष ख्याति की रचनाएं है। ये रचनाएं न केवल दलित साहित्य की श्रीवृद्धि करती है बल्कि अपनी वैचारिकी, नए दलित सौंदर्यशास्त्र, दलित संघर्ष को भी नवीन दिशा देती है।

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि दलित साहित्य अवतारवाद, पुनर्जन्म आदि को नकारता है। ठीक सोनकर की रचनाएं भी इस अवतारवादी, भाग्यवादी और शोषण पर आधारित धर्मव्यवस्था को नकारती है। दलितों के शोषण की मुख्य जड़ यही धर्मव्यवस्था है। ये सोनकर की रचनाओं का आदि और मूल स्वर है। प्रायः इसकी सृष्टि उनकी सभी विधाओं में रचित रचनाओं में हुई है। 'समाजद्रोही' नाटक में साम्प्रदायिकता का व्यवस्थित एंव यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है नेताओं की क्रूर मानसिकता जो भोली–भाली दलित जनता का शोषण, नरसंहार करवाते है, का चित्रण बड़ी बेबाकी से किया है।

इसी तरह 'महानायक' नाटक में धर्म के नाम पर जारी साम्प्रदायिकता का जीवंत चित्रण किया गया है। तथाकथित आज के नेता (हिन्दू–मुस्लिम) कैसे अपने स्वार्थ के हितों की रक्षा के लिए दलित जनों का दलित जनों के द्वारा नरसंहार करवाते हैं, इसका स्पष्ट और सटीक वर्णन है। भोली–भाली अनपढ़–गवार दलित जनों को इधर–उधर की बातों में बहकाकर उनसे एक दूसरे का कत्लेआम करवाते है। एक ब्राह्मण कैसे अपने को सुरक्षित और अपने धर्म को बनाये रखने का कार्य किस रूप में करता है उसे महानायक के एक पात्र पिंगल के शब्दों में देखा जा सकता है। "देखो वेदों में लिखा है कि प्रथम वर्ण का आदमी दिमाग से काम लेता है। बहादुर नहीं होता लेकिन बहादुरों को संचालित कर सकता है। द्वितीय वर्ण का आदमी बहुत बहादुर होता है जिनको आजकल क्षत्रिय कहा जाता है। ये क्षत्रिय पिछड़ों, दलितों के साथ लेकर अल्पसंख्यकों का जमकर मुकाबला करेंगे। प्रथम वर्ण के आदमी, ब्राह्मणों को जनसमुदाय के आगे रहना है। जन–समुदाय को उकसाना है। जब दोनों तरफ से गोली चलने लगे तो ब्राह्मण चुपचाप वहां से हट जायेंगे। अन्य वर्ण के आदमी अल्पसंख्यकों का सामना करेंगे।" 1 किन्तु सोनकर का लेखन सिर्फ इस धर्म व्यवस्था को प्रस्तुत ही नहीं करता वरन इसका आक्रोश और हिम्मत से विरोध भी करतीा है। उसी आक्रोश के स्वर में जो आज के दलित लेखन के मूल में है। इसकी बानगी उनकी आत्मकथा 'नागफनी' में स्पष्टतया देखी जा सकती है।

ग्राम नसेनियां में प्रत्येक वर्ष ब्राह्मणों द्वारा रामचरित मानस का 24 घंटे का अखंड पाठ का आयोजन होता है। इस आयोजन में ब्राह्मणों के लड़के–लड़कियां अपने परिवार के साथ हिस्सा लेते हैं और अखंड पाठ करते हैं। संयोगवश हीरा (दलित) शाम के वक्त उधर जाता है। सचान के लड़के ने उससे पाठ करने के लिए कहा। हीरा के मना करने पर भी वह नहीं माना और जिद करके उससे पाठ करवाता है। इतने में वहां ब्राह्मण शिवभजन अवस्थी पहुँच जाते हैं और हीरा को पाठ करते देख आग–बबूला हो जाते है। आँख तरेरते और गाली देते हुए उसे वहां से हटने के लिए कहा। हीरा इससे गुस्से में आता है और शिवभजन अवस्थी के मुँह पर रामचरित मानस को दे मारता है। "शिवभजन अवस्थी ने मेरी तरफ बढ़ते हुए फिर गुस्से से लाल–पीला होते हुए कहा–साले! खड़ा–खड़ा मुँह क्या ताक रहा है–रख रामायण।

मैने आव देखा न ताव हाथ में पकड़ी मोटी रामायण को अपने दोनों हाथों से पकड़कर उसके मुँह पर जोर से फेंक मारा और वहाँ से हट गया। शिवभजन अवस्थी के होश उड़ गये। रामचरित मानस शिवभजन अवस्थी के मुँह पर जोर से लगी और मुँह से टकराकर मन्दिर के सीढ़ियों पर गिर पड़ी। वह मुझे मारने दौड़ा। मै सीढ़ियों से नीचे भागा। मेरा पैर रामचरित मानस के ऊपर पड़ गया। मै जोर से भाग निकला। किताब पैरों तले पड़कर चिथड़े–चिथड़े हों गई थी। अंधविश्वासी, अधर्मी, अमानवीय आचरण करने वाले इन धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को इसी तरह चिथड़े–चिथड़े कर दिया है।" 2 यहाँ रामचरित मानस ही चिथड़ा नहीं हुआ वरन एक धर्म व्यवस्था को एक दलित के द्वारा चोट पहुंचाई गई है। आज के दलित लेखन की यह घटना महत्वपूर्ण कड़ी है।

सोनकर की रचनाओं में ऐसे अनेकों प्रसंग आाये है, जहाँ मनुवादी व्यवस्था को शर्मशार होना और टूटना पड़ा है। सोनकर कृत उपन्यास 'डंक', सूअरदान या अन्य महत्वपूर्ण कहानियां इस बात से अवगत कराती है कि भ्रष्टाचार के देश में गहराई तक पैठ बनाई हुई है। भ्रष्टाचार की मूल में वर्ण–जाति व्यवस्था है, और वर्ण–जाति व्यवस्था के मूल में है, यह मनुवादी धर्म व्यवस्था। इस व्यवस्था में शीर्ष पर बैठे लोगों ने राजनीतिक सत्ता और संपत्ति पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए भ्रष्ट तरीके अपनाएं है। सेठ–सामंत वर्ग कोरे कागजों पर अंगूठा लगवाकर दरिद्र दलितों के घर, जमीन हड़पता आया है। तो पुजारी पुरोहित ब्राह्मण वर्ग अनिष्ट या स्वर्ग–नरक का भय दिखा कर भोली–भाली जनता को चढ़ावा के लिए उकसाता है। अन्य कई तरह के अनैतिक कार्य करते है। दलित जनों का शोषण करते हैं। जब तक वर्ण–जाति व्यवस्था रहेगी, समाज में भ्रष्टाचार रहेगा। हिंसा के साथ–साथ असंतुलन बना रहेगा। अतः उन्मूलन किये बिना भारतीय समाज का उद्धार नहीं हो सकता है। 'सूअरदान' में 'सुगाय' की परिकल्पना निश्चित तौर पर इसी संतुलन की ओर ले जाती है। यह बात असंभव भले ही हो सकती है, पर सोनकर का रचना–कर्म इस संभाव्यता की तलाश मे सदैव तत्पर दिखता है।

आरम्भ में इस बात की ओर संकेत किया गया है कि दलित साहित्य डॉ0 अम्बेडकर की विचारधारा से अनुप्राणित है। दलित साहित्य के लेखन के मूल में डॉ0 अम्बेडकर की सामाजिक–आर्थिक मान्यताएं है। अगर रूपनारायण सोनकर के रचना कर्म को देखा जाय तो उनकी अधिकांश रचनाओं के मूल में डॉ0 अम्बेडकर की विचारधारा यथा–प्रसंग अभिव्यक्त हुई है। यहाँ तक कि उनकी एक कहानी ही है 'अम्बेडकर टेम्पल'। इस कहानी में धनीराम (दलित) हिन्दू देवी–दलितों के देवता है न कि वो जो मनुवादी व्यवस्था के रक्षक है। स्वर्ण जाति विशेषकर कर ब्राह्मणों के द्वारा धनीराम के 'अम्बेडकर टेम्पल' का विरोध होता है तो वह कहता है– "आपके मंदिरों में दलितों का प्रवेश नहीं मिलता है। आपके भगवान कुछ नहीं कहते है। हमारी उस भगवान पर पूर्ण आस्था है जो कुचले, दबे, बेसहारा, भूखे, बीमार, लाचार लोगों कि मदद करता है और वह भगवान

हमारा 'अम्बेडकर' है। हमारा भगवान किसी भी संप्रदाय के लोगो पर मंदिर प्रवेश पर प्रतिबन्ध नहीं लगता है।" 3 इसके साथ धनीराम हिन्दू भगवान राम और कृष्ण के द्वारा की गई शम्बूक और कर्ण के प्रति व्यवहार की भर्तसना करता है। इसके साथ–साथ 'नागफनी' आत्मकथा में स्वंय आत्मकथाकार ने स्वीकार किया है "मुझे संघर्ष की प्रेरणा डॉ0 अम्बेडकर से ही प्राप्त हुई है।" 4

सोनकर का रचना–कर्म दलित जनों की उन सभी स्थितियों से अवगत कराता है, जिससे उनका शोषण होता है। दलितों को अस्पृश्य मानकर उन्हें समाज और धर्म से बहिष्कृत किया गया। धार्मिक संस्कार जैसे उपनयन या अन्य धार्मिक कर्म या दलितों के लिए न होना। धनोपार्जन पर प्रतिबन्ध, मु ख्य बस्तियों के बाहर अलग बस्तियों में रहना, उनकी भाषा, उनके संस्कार आदि सब कुछ समग्रता में उनकी रचनाओं में अभियुक्त हुआ है।

दलित साहित्य में जिस नए सौंदर्यशास्त्र की बात की जा रही है, उस सौंदर्यशास्त्र की अभिव्यक्ति भी सोनकर की रचनाओं में हुई है। यहाँ तक की उनकी अभिव्यक्ति कुछ उग्र रूप में ही परिलक्षित होती है। सोनकर की रचनाएं सदियों से चली आ रही सड़ी–गली परम्पराओं पर बेदर्दी से चोट करती है। वह शोषण और अत्याचार के बीच हताश जीवन जीने वाले दलितों को लड़ना सिखाता है, वह सर पर पत्थर ढोने वाली या खेतों मे ंकाम करने वाली महिला को उसके अधि ाकारों के विषय में सजग करती है। इनकी रचनाओं में आयी महिला पात्र (अनसुईया जानकी, रन्नो आदि) आरम्भ में शोषण का शिकार तो जरूर होती है, किन्तु उसके बाद का उसका प्रहार उन सवर्ण पुरूषों के लिए असह्य हों जाता है, जो जंगली जानवरों की तरह उस पर टूटते हैं। किसी न किसी स्थिति में उन शोषकों का प्राण लेकर ही दम छोड़ती है। कहने का तात्पर्य है कि उनकी रचनाओं में शब्द–सौंदर्य प्रहार में है न कि सम्मोहन में।

सोनकर द्वारा रचित साहित्य की आंतरिक उर्जा या दलित चेतना जो है वह डॉ0 अम्बेडकर के जीवन दर्शन और बुद्ध के तत्वज्ञान से संचालित है। समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्ववता, न्याय के जीवन अनुभव, संस्कृति और धर्म के नाम पर वास्त. विकता को छिपा कर रखे गये ढ़ोंग को नकारना, परिवर्तन के आधार पर जीवन मूल्यों का मूल्यांकन यथार्थ 'ज्यौं का त्यौं' वर्णन, आडम्बरहीन अभिव्यक्ति आदि उनके लेखन का सौंदर्य है। भाषा के आधार पर देखा जाये तो बिल्कुल एक आम आदमी की भाषा में अपने विचारों, भावों को अभिव्यक्त करते है। आम जन–जीवन में आदमी जिस तरह गाली–गलौज वाली स्वाभाविक भाषा का प्रयोग करता है यथा प्रसंग उसकी भी अभिव्यक्ति हुई है। स्त्री पात्रों के सौंदर्य वर्णन में उनकी भाषा कुछ असंयत अवश्य दिखती है, किन्तु यथार्थ से दूर नहीं प्रतीत होती है। विचारों की अभिव्यक्ति में कभी तत्सम एवं अंग्रेजी शब्दावली का भी प्रयोग हुआ है जो कथ्य एंव भाव का पूर्णतया संप्रेषित करने में सफल है। अगर ऐसा नहीं होता तो शायद परम्परावादी साहित्य की तरह आम आदमी से वंचित नजर आती उनकी रचनाएं।

समग्रतः यह कहा जा सकता ही कि समकालीन दलित साहित्य में रूपनारायण सोनकर की उपस्थिति एक सार्थक उपस्थिति है। कुछ आरोपों–प्रत्यारोपो के बावजूद भी उनका दलित लेखन दलित जनों के आत्म–सम्मान को जगाता है। जगह–जगह उनको सजग करता है। कहीं–कहीं उनका ले खन अति–उत्साह का शिकार अवश्य दिखता है, परन्तु हास्य–व्यंग्य से जुड़कर वह अपनी मूल अभिव्यक्ति को पुनः प्राप्त हो जाता है। जो जिस रूप में है, उसे उस रूप में चित्रित करने से नहीं हिचकते है। चाहे वह तथाकथित राजनेता, सेठ, साहूकार, जमींदार, साधू, ओझा, संत हो या वह दलित जो धन पाकर मनुवादी हो जाता है या समझने लगता है और शोषण के कर्म में लग जाता है। अगर सच्चाई को अभिव्यक्ति देने से वे हिचकते तो 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर' की रचना नहीं करते। रतनलाल को शर्मशार होते नहीं दिखाते। वे साफ–साफ और दो टूक शब्दों में सच बयां करते है। यह उनकी रचनात्मकता की विशेष पहचान है। यही दलित साहित्य में उनकों प्रतिष्ठित भी करता है।

सन्दर्भ–

1. महानायक, रूपनारायण सोनकर, दलित साहित्य एंव सांस्कृतिक अकादमी प्रकाशन, देहरादून, पृ0 4
2. नागफनी, रूपनारायण सोनकर, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2011, पृ0 35
3. जहरीली जड़े, रूपनारायण सोनकर, डायमंड बुक्स, दिल्ली, पृ0 46
4. नागफनी, रूपनारायण सोनकर, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 56

******

समाज की गहन पड़ताल करता उपन्यासः सूअरदान

डॉ. धनंजय कुमार चौबे

रूपनारायण सोनकर बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न रचनाकार है। उनकी रचनाओं में समाज की विभिन्न समस्याओं की गहन पड़ताल देखने को मिलती है। कहानी, आत्मकथा, नाटक और उपन्यास आदि विधाओं में इन्होंने अपना लेखन कार्य किया है। इनकी कहानियों में 'कफन', 'दूध का दाम', 'सद्गति' बेहद चर्चित रही है। इसके साथ ही आपकी 'नागफनी' आत्मकथा दलित रचनाकारों की आत्मकथा साहित्य मे अपना विशेष स्थान रखती है। इन्होंने अनेक नाटक भी लिखे है जिसमे 'एक दलित डिप्टी कलैक्टर', 'छायावती', 'महानायक' आदि प्रमुख है। 'डंक' उपन्यास के बेहद चर्चित होने के बाद इनका दूसरा उपन्यास 'सूअरदान' भी आलोचकों का ध्यान अपनी तरफ खीचने में बेहद सफल रहा है। 'सूअरदान' उपन्यास 'गोदान' के मिथक को तोड़ता है और वर्णविहीन, शोषणमुक्त समाज की कल्पना को साकार करता हुआ दिखाई देता है।

'सूअरदान' उपन्यास सदियों से चली आ रही मान्यताओं पर करारी चोट करता है। मनुवादी समाज व्यवस्था में मनुष्यों को चार वर्गों में बाँट दिया गया– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चारो वर्णो के आधार पर कार्य का विभाजन भी किया गया है। यह कहां तक सही है कि मनुष्य का कर्म उसके जन्म से निर्धारित होता है ? आज के सामाज में बदलाव का संकेत दिखाई देने लगा है। यह बदलाव कर्म के क्षेत्र में भी दिखलाई दे रहा है। 'सूअरदान' में भी इस बात की ओर संकेत किया गया है। रामचंद्र त्रिवेदी का जाति से ब्राह्मण होते हुए भी पिगरी (सूअर) फार्म खोलना इस बात का संकेत देता है कि सामाज बदल रहा है। पहले यह कार्य सिर्फ मेहतरों के लिए ही निर्दिष्ट किया गया था। सारे गाँव में रामचंद्र तिवारी का विरोध किया गया था कि यह मेहतरों का काम है। **"सारे गाँव के ब्राह्मणों ने रामचन्द्र त्रिवेदी का विरोध किया था कि सूअर पालना मेहतरों का कार्य है। तू तो मेहतर बन गया। तूने सदियों से ब्राह्मणों की चली आ रही श्रेष्ठता को चकनाचूर कर दिया। ब्राह्मणों का कार्य ज्ञानी बनना है। ज्ञान बांटना है। ज्ञान के बदले भिक्षा ग्रहण करना है। ब्राह्मणों का सबसे बड़ा कार्य है धर्म कि रक्षा करना। अगर तेरी तरह सभी मेहतर बन गये तो इस धरती से धर्म विलुप्त हो जायेगा।"** 1 (सूअरदान, रूपनारायण सोनकर, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010, पृ0 9)

इन सारे प्रतिरोधों का रामचंद्र त्रिवेदी पर कोई असर नही होता है। आखिर क्यों हो? इसी सूअर फार्म के खुलने के बाद से ही तो रामचंद्र त्रिवेदी के घर के हालात ठीक हुए थे। आज के व्यापार युग में यह सारी हदें टूट रही है। लोग अपनी प्रगति के लिए कोई भी कार्य करने को तैयार है। अब हमें इन दकियानूशी विचारों से बाहर निकलना होगा कि अमुख कार्य किसी विशेष वर्ग के लिए है तो वह हम नहीं कर सकते है। "आज के युग में कोई भी व्यापार करना अधर्म नहीं होता। मे. हनत और ईमानदारी से किया गया कार्य उस कस्तूरी को प्राप्त करता है, जो मृग में रहती है। पुजारी दयाशंकर हजारों वर्षों पुरानी अंध–धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं को ढो रहे थे, जो स्वयं स्वर्णों, विशेषकर ब्राह्मण समाज के लिए घाटक साबित हो रही है। क्योंकि ब्राह्मणों की आर्थिक अवस्था इन्हीं पुराने विचारों की वजह से कमजोर हो गयी है। ब्राह्मण और ब्राह्मण औरतों का खेल में काम न करना, ब्राह्मण खेतों में हल चलाना अपनी तौहीन समझते है। यदि ब्राह्मण औरते खेतों में खुरपी चलाती हैं तो वह अपने को मजूरिन समझने लगती है। जिन ब्राह्मणों में बहुत खेती थी, तीन–तीन भाइयों में बंट गई। फिर तीन–तीन भाइयों के लड़को में बट गई। अब तो खेती भी एक के पास नाममात्र की रह गई है। अब ब्राह्मणों के लिए भी ऐसे रोजगार करना जरूरी है जिनमें बहुत मुनाफा होता है। जो भी इस धरती पर आज के समय मेहनत करेगा, वही फूले–फलेगा, जैसे तरोई, लौकी और कद्दू की लताओं को पानी न देने से वह सूख जाती है। उसी तरह मेहनत न करने से घर सूख जाते है।" 2 (वही, पृ0 12) रूपनारायण सोनकर ने सूअरदान उपन्यास में भारतीय समाज खासतौर पर ब्राह्मण समाज के समाजशास्त्र को हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। आज भी

पुजारी दयाशंकर जैसे ब्राह्मणों के ठेकेदार इस पुरानी मानसिकता से बाहर नहीं निकलना चाहते है। वहीं दूसरी तरफ धर्म के आड़ में हो रहे कुकृत्यों का भी पर्दाफास किया गया है। पुजारी दयाशंकर का देवताओं का भय दिखा कर गांव की औरतों के साथ संभोग करने की घटना इस बात को प्रमाणित करती है।

सदियों से चले आ रहे छुआछूत और जातिवाद को जड़ से उखाड़ फेकने की जरूरत हैं। आज का समय सबके साथ मिलकर चलने का समय है। हर कोई व्यक्ति एक दूसरे का हाथ पकड़कर ही आगे बढ़ सकता है। इसका एक उदाहरण सूअरदान उपन्यास में दिखाई देता है। रामचंद्र त्रिवेदी, घसीटे चमार, सज्जन खटिक और सलवंत यादव ने जातिवाद, छुआछूत को न मानते हुए एक साथ काम करने की सोची। इन चारों व्यक्तियों को विदेशों में अच्छी नौकरी मिल रही थी परन्तु यह उसकी परवाह किये बगैर गांव के अशिक्षित और बेरोजगार व्यक्तियों को नौकरी दे सकने के इरादे से अपना व्यापार शुरू करते है। **"वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते थे जो अशिक्षित, शिक्षित और बेरोजगार व्यक्तियों को नौकरी दे सके, विशेषकर ग्रामीण नव–युवकों को। गांव में ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे कि जहां प्यार, समानता और भाईचारा हो। गांवों की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। सदियों से समाज में चली आ रही अंध–धार्मिकता को उखाड़ फेंकना चाहते थे। जातिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बंधुत्व पर यकीन करते थे।" 3** (वही, पृ0 15) यहां उपन्यासकार ने एक सुखद भविष्य की कल्पना की है। काश यह हमारे समाज में होता तो आज हम आसमान की बुलंदियों को छूते नजर आ रहे होते। सूअरदान मे एक सु खद भविष्य के सपने सजोये गये हैं बस जरूरत है हमें उसे साकार करके दिखाने की।

आज हम उत्तरआधुनिकता के दौर में है। तमाम नये–नये ज्ञान–विज्ञान से हमारा साक्षात्कार हो रहा है। नित नये–नये विषयों को हम जाने–समझने लगे है। लेकिन आज भी कुछ महत्वपूर्ण विषय ऐसे है जिस पर हम बात नहीं करना चाहते। सेक्स एजुकेशन भी उनमें से एक है। विदेशों से भारत की तुलना कर सेक्स एजुकेशन को आवश्यक मानता है उपन्यासकार। भारत मे सेक्स एजुकेशन के न होने के कारण वह तमाम तरह के संकटों के गुजर रहा है। सूअरदान में इस महत्वपूर्ण बिन्दु को भी उठाया गया है। **"विदेशों में लड़की के साथ प्रतिबन्ध नहीं होता है। लड़की का भाई उसकी पहरेदारी नहीं करता है। वहां प्यार आत्मसंतुष्टि व सेक्स की भूख मिटाने के लिए होता है। टेन्डर एज में ही लड़कियां सेक्स का मजा उठा लेती है। फिर भी गर्भवती नहीं होती है। इसका कारण वहां जागृति है। सभी लोग शिक्षित है। गर्भधारण का मतलब लड़कियां समझती है। इसलिए वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करती हैं। उनको सेक्स की शिक्षा दी जाती है।... भारत में सेक्स के बारे में जागृति नहीं है। यहां पर सेक्स एजुकेशन नहीं है। कम से कम 75 प्रतिशत ग्रामीण भारत इस नवीन शिक्षा से अनभिज्ञ है। ग्रामीण भारत में ज्यादा से ज्यादा गर्भपात होते है। स्त्री–पुरूष मिलते समय वैज्ञानिक साध नों का प्रयोग नहीं करते है। तमाम प्रकार की बीमारियां भी पैदा होती जाती हैं उसमें एड्स प्रमुख है।" 4** (वही, पृ0 23) आज जरूरत है हमें इस विषय पर खुलकर बात करने की। अपने बच्चों से इस विषय पर बात करने से हिचकिचाएं नही बल्कि उनसे मन की सारी बातें जाने और उन्हें मार्गदर्शन भी प्रदान करें। इन सब के लिए उन्हें शिक्षित करना भी जरूरी है। शिक्षा का प्रसार ही एकमात्र ऐसा विकल्प है जो अज्ञानता के अंधकार को नष्ट कर देता है।

सूअरदान उपन्यास में ईट–भट्टों पर काम करने वाले मजदूरों की वास्तविक स्थिति पर भी विचार किया गया है। सिंहासन खेड़ा गांव का धरमू पासी अपनी पत्नी सन्नो के साथ पंजाब के ईट–भट्टों पर काम करता था। आये दिन इन मजदूरों पर अत्याचार होता रहता था। कभी इन्हें मारा–पीटा जाता है तो कभी मजदूरी के पैसे को काट कर कम कर दिया जाता। अगर मजदूर इस कैदखाने से बाहर निकलने की को. शिश करता तो उसे पकड़ कर जानवरों की तरह पीटा जाता। सन्नों और धरमू भी एक दिन वहां से भागते है। पर कुछ ही दूरी पर जाकर उन्हें पकड़ लिया जाता है। ईट–भट्टों का ठेकेदार जयन्त सिंह सन्नों को घसीटकर कमरे में ले जाने लगता है। सन्नों इसका प्रतिरोध करती है परन्तु वहाँ पर मौजूद मजदूर वर्ग के लोगों में एकदम चुप्पी बनी रहती हैं। किसी की हिम्मत नहीं है कि वह सन्नो को बचाए। जहाँ ऐसे समय तमाम मजदूर वर्ग के लोगों को एकजुट होकर खड़े होने कि जरूरत है, वहां ऐसा नहीं होता है। यह बहुत दुखद स्थिति है। **''अत्याचार के विरूद्ध जहां प्रतिरोध नही होता है, वहीं**

निरंकुशता हावी रहती है। ऐसे में आदमी को छुई–मुई नही बल्कि हथौड़ा बन जाना चाहिए। पचास मजदूरों के सामने एक औरत को एक दरिंदा बेईज्जत कर रहा था और सारे मजदूर तमाशबीन थे।'' 5 (वही, पृ0 25) आज ऐसी स्थिति में सन्नों जैसी बहादुर स्त्री जयन्त जैसे दरिंदे से अपनी हिम्मत के बल पर बच तो जाती है परन्तु तमाम ऐसे स्त्रियां है जिनमें इतनी हिम्मत नहीं होती है कि वह अपने शोषण के खिलाफ खड़ी हों। इसका परिणाम यह होता है कि उनका शोषण होता है और वह कुछ कर नही पाती है।

सिंहासन खेड़ा गाँव का प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, जूनियर हाईस्कूल के प्रधानाचार्य जितेन्द्र यादव, प्राईमरी हैल्थ सेंटर के डॉक्टर जोनावर सिंह के माध्यम से उपन्यासकार ने गाँव में फैले भ्रष्ट, अराजकता से युक्त माहौल को दिखाने का प्रयास किया गया है। सिंहासन खेड़ा गाँव जहाँ एक तरफ गुण्डागर्दी, मारकाट और शोषण का पर्याय बनता जा रहा है वहीं दूसरी तरफ प्रशासनिक विभागों में हेराफेरी के अड्डे के रूप में परिवर्तित भी होता जा रहा है। इन तीनों व्यक्तियों द्व ारा गांव के भय और आंतक का माहौल पैदा किया जा रहा है। दलित लड़की सुनयना का रखैल बनाकर उसका शोषण करना, उसे मारना–पीटना इसका एक उदाहण हैं।

इसी गांव सिंहासन खेड़ा के एक पढ़े–लिखे और जागरूक व्यक्ति है–संकटाप्रसाद चिकवा। वह प्रशासनिक अधि ाकारी कि नौकरी से वी0आर0एस0 लेकर अपने गांव सिंहासन खेड़ा आया है। संकटाप्रसाद चिकवा गांव के इस भय और आतं. कपूर्ण माहौल के खिलाफ आवाज उठाता हैं। ग्रामप्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, डॉक्टर जोरावर सिंह और प्रधानाचार्य जितेन्द्र यादव की वित्तीय अनियमितताओं को उजागर करता है। डॉ0 के द्वारा प्राईमरी हेल्थ सेंटर के 10 लाख की दवाइयों की हेराफेरी और जूनियर हाईस्कूल में फर्नीचर के लिए आये 6 लाख रूपये के गबन का मामला संकटाप्रसाद चिकवा के प्रयास के द्वारा ही सामने आ पाता है। आजादी के बाद भी भारत में प्रगति का प्रतिशत बहुत कम है। चिकवा स्वयं कहता है कि **''देखो! बच्चों को, जो टाट–पट्टी जमीन के ऊपर बिछाकर पढ़ते थे। आज आजादी के 63 वर्ष बाद भी उसी तरह पढ़ते है। इन 63 वर्षो में आप ने शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी तरक्की नही होने दी। छः लाख रूपये जो फर्नीचर के लिए आया था उसको तुम तीनों ने मिलकर हजम कर लिया।'' 6** (वही, पृ0 35) यह स्थिति शि क्षा विभाग तक की सीमित नहीं है बल्कि महामारी की तरह पूरे देश के सरकारी कार्यालयों तक फैली हुई हैं।

संकटाप्रसाद चिकवा का ग्रामप्रधान बनने के बाद गांव के विकास के कार्य में तन–मन–धन से जुट जाता है। वह अपने गांवों को आधुनिक गांव बनाने की दिशा में अग्रसर होता है। चिकवा लोगों से आह्वाहन करता है कि सब मिल कर काम करें तो विकास के बढ़ते पथ को कोई नहीं रोक सकता है। वह गांव के लिए बुनियादी सेवा शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और बिजली पर ज्यादा ध्यान देता है। डॉक्टर जोरावर सिंह से चिकवा का व्यक्तव्य इसी बात की ओर इशारा करता है कि **''डॉ0 साहब इस गांव के निर्माण के कार्य में मदद कीजिए। यदि आप लोगो से अनियमियतता या सरकारी पैसे का गबन हुआ है तो उसकी जांच सरकार करेगी। लेकिन मेरे कार्यकाल में जो दवाइयां सरकार द्वारा हेल्थ सेंटर को दी जाती है। गांव के मरीजों को बटनी चाहिए। कोई भी गरीब आदमी दवाइयों के अभाव में मरना नही चाहिए उसका हिसाब सरकार को भेजना होगा। यदि कोई सरकारी दवा किसी भी प्राइवेट मेडिकल स्टोर में बेची गई, तो तुरंत आपके ि खलाफ एफ0आई0आर0 दर्ज करा दी जायेगी।...अपना और हमारा फायदा भूल जाइए। हमें गांव के फांयदे और गांव के बीमार लोगों की चिंता करनी है। कुछ तो आदमीयता और मानवता दिखाएं। यदि गांव के लोग स्वस्थ्य रहेंगे तो पूरे देश के लोग स्वस्थ्य रहेंगे। अपना देश स्वस्थ्य रहेगा।'' 7** (वही, पृ0 47) वहीं दूसरी तरफ ग्रामप्रधान चिकवा छः लाख रूपये का गबन करने वाले प्रधानाचार्य से कहता है कि **''प्रधानाचार्य जी आप तो गुरूजन हैं। गुरूजन का काम होता है बच्चों का चरित्र निर्माण करना। बच्चे ही देश का भविष्य होते है। जैसी नींव आप बच्चों में डाल देंगे वह राष्ट्र की नींव कहलाती है। यदि बच्चों की नींव मजबूत होगी, तो देश की नींव मजबूत होगी। यदि बच्चे शक्तिशाली होंगे, तो देश शक्तिशाली होगा। अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, चाइना, जर्मनी, फ्रांस और अन्य देशों में बच्चों को चौतरफा विकास किया जाता है। इसलिए उन देशों का चौतरफा विकास हो रहा है। वह राष्ट्र बहुत ही असहाय होता है, जहां के बच्चे असहाय होते हैं।'' 8** (वही, पृ0 48) यह एक सुखद भविष्य की आकांक्षा है जिसे पूरा किये बिना हम प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते हैं। हमें देश के विकास के लिए उसकी बुनियादी सेवाओं को मजबूत करना

होगा। अगर नींव मजबूत होगी तो मंजिल चाहे कितनी भी ऊंची बनाते जाइए, वह भी मजबूत और सुदृढ़ होगी। संकटाप्रसाद चिकवा गांव, राज्य, राष्ट्र, के सुखद भविष्य के सपने को साकार करने की कोशिश कर रहा है। आज हमें इस तरह के व्यक्तित्व की जरूरत है जो भारत के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

दलित और सवर्ण के बीच छुआछूत और भेदभाव के मुद्दे को भी सूअरदान उपन्यास में व्यक्त किया गया है। आज के उत्तरआधुनिक कहे जाने वाले समय में भी हमें यह स्थितियां देखने को मिलती है जहां सवर्ण या पूंजीपति लोगों के द्वारा दलित समुदाय का शोषण किया जाता है। उनसे छुआछूत का बर्ताव किया जाता है। इन सब स्थितियों से निपटने के लिए भारत सरकार के द्वारा एस0सी0एस0टी0 उत्पीड़न एक्ट का प्रावधान किया गया है, जिसके तहत शोषकों के ि खलाफ एफ0आई0आर0 दर्ज कराई जा सके। इन बिन्दुओं की तरफ उपन्यासकार ने संकटाप्रसाद चिकवा के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास किया है। दलित समुदाय की आर्थिक–सामाजिक स्थिति की तरफ इशारा करते हुए उपन्यासकार लिखता है कि **''झम्मन, छक्कन और बक्खन ने मिस हैरी सिल्वा को बताया कि जब बच्चे भूख से तड़पते थे। हम लोग जानवरों के गोबर से जो दाने निकलते थे उसको धुलकर एवं सुखाकर पीसते थे फिर रोटियां बनाकर खाते थे। यह सुनकर क्रिसचियन लड़की आंखों में आंसू भर लेती है और कहती है– ओह! माई गॉड! लगता है हमारे समाज से यह कोई अलग समाज है। सदियों से ऐसा जीवन जीता आया है। ऐसे लोगों के जीवन में कोई उमंग नहीं। ऐसे लोग मर–मर कर जीते है और जी–जी कर मरते हैं।'' 9** (वही, पृ0 69) इसके आलावा बड़े–बड़े शहरों में मजदूर वर्ग के रूप में कार्य कर रहे लोगो की जीवन स्थितियों का बड़ा ही सजीव चित्रण देखने को मिलता है। मजदूर वर्ग जानवरों से भी दयनीय जीवन जीने का मजबूर है। दिन–रात काम करने के बाद भी उसे भूखे पेट सोना पड़ता है। कलकत्ता से आये मजदूर सोमनाथ मजूमदार ने हैरी सिल्वा को महानगर में रहने वाले मजदूर वर्ग की समस्याओं की तरफ ध्यान दिलाया है। **''कोलकाता में आदमी घोड़े की तरह रिक्शा खींचता है। यह बहुत ही दर्दनाक दृश्य होता है। रिक्शा खींचने वाला मजदूर चार–पांच बजे सुबह ही जग जाता है फिर सड़क के किनारे नाले आदि के पास मल विसर्जन करता है। यदि वह लेट हो जाता है तो मल विसर्जन करने के स्थान नहीं मिलता है। दिन भर मल को पेट के अंदर दबाये सड़क पर दौड़ता रहता है। घोड़े को स्वतंत्रता है कि वह खुले आम सड़क के ऊपर मल विसर्जन करे लेकिन मानव को यह छूट कतई नहीं है।'' 10** (वही, पृ0 70) उपन्यासकार के मन में इन लोगों के प्रति गहरी संवेदना है। वह चाहता है कि कोई मजदूर व्यक्ति इस तरह के अमानवीय कार्य को न करें। वह इस समस्या के समाधान के रूप में एक उपाय सुझाता है कि ऐसे मजदूरों को विश्व भर से खोजकर उन्हें नौकरी दी जाये। यह उपन्यासकार का कल्पनालोक भले ही हो लेकिन इसमें उसके शोषणामुक्त समाज की परिकल्पना को देखा जा सकता है।

गाँव का पुजारी दयाशंकर एड्स के शिकार हो जाते है। इनके इलाज का जिम्मा उन्हीं चारों पुरूषों ने लिया जिनका पुजारी शुरू से ही विरोध करता आ रहा था। सज्जन खटिक, घ ासीटे चमार, सलवंत यादव, और रामचन्द्र त्रिवेदी के कारण ही पुजारी दयाशंकर इस भयंकर रोग से मुक्ति पा सका और उसकी बेटियां इनके यहां नौकरी। इसका प्रभाव पुजारी पर पड़ा और उसका मन परिवर्तित हो गया। अब उसे समझ में आने लगा कि जिस अंधविश्वास ही दुनिया में वह जीवन व्यतीत कर रहा था वह निहायत ही स्वार्थी है। सीताराम भट्ट के द्वारा पुजारी दयांशकर पर आरोप लगाया जाता है कि वह दिन–रात सुअरों की सेवा करते रहते है, इससे तो पूरी ब्राह्मण जाति कलंकित हो जाएगी। इसके उत्तर में पुजारी दयाशंकर कहते है कि **''जब मै मर रहा था तब आप लोग कहां थे ? आप लोग मेरे मरने का इंतजार कर रहे थे कि मेरे बाद आप इस मन्दिर के पुजारी बन जाएं। मै इस मन्दिर का पूजा–पाठ करना छोड़ दूंगा। मै सूअरों की सेवा में अप. ना पूरा जीवन अर्पण कर दूंगा।'' 12** (वही पृ0 85) पुजारी के इस दृढ़ संकल्प को अब कोई हिला भी नहीं सकता था। उन्होंने पूर्ण निश्चय कर लिया था कि वो अब से आजीवन सूअरों की सेवा करते रहेंगे।

उपन्यासकार ने गाय और सूअर की तुलना करके यह बताने का प्रयास किया है कि वैज्ञानिक और व्यापारिक दोनों ही रूपों में सूअर पालन करना ज्यादा फायदेमंद है। वह बतातें है कि किस प्रकार सूअर का मांस और उसके बाल बहुत कीमती होते हैं। **''सूअरिये का दूध तमाम प्रकार की औषधियां बन.**

ाने के काम आता है। जीवन रक्षक व काम शक्ति बढ़ाने वाली दवाइयां सूअरिये के दूध से बनाई जाती है। ड्रमों में भर कर दूध विदेशों में भी सप्लाई होने लगा है।..... सूअरों के बाल बहुत कीमती होते हैं। उनके बाल उखाड़ कर बेचे जाने लगे। करोड़ो रूपये के बाल बिकने लगे। सूअरों के हर अंग से डालर, पौंड व येन निकलने लग. । यह एक मल्टीपल मुनाफा देने वाला व्यवसाय है। ले. किन भारत में इसको हीन भावना या हेय दृष्टि से देखा जाता है। कुछ लोग इस व्यवसाय को धर्म से जोड़ देते हैं। कट्टर हिन्दू व मुस्लमान इसे धर्म के विरूद्ध मानते हैं।'' 13 (वही, पृ0 87–88)

पुजारी दयाशंकर अपनी तीनों बेटियों की शादी सज्जन खटिक, घसीटे चमार और सलवंत यादव से करने का निर्णय लेते हैं। सम्पूर्ण ब्राहमण समाज इसके विरोध में खड़ा होता है। पर दयाशंकर अपनी बात पर अडिग है। वह अपनी बेटियों के साथ ही मिस हैरी सिल्वा और रामचंद्र त्रिवेदी की शादी डॉ0 अम्बेडकर के संविधान की समानता और मौलिक अधिकारो की धाराओं को पढ़ कर सम्पन्न कराते हैं। यह पूरा प्रकरण कहीं न कहीं जाति व्यवस्था के टूटने का संकेत देता है। यह तो कहा ही जा सकता है कि अगर जाति प्रथा को समूल रूप में नष्ट करना है तो अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

यह उपन्यास हिन्दू समाज में प्रचलित मिथकों को तोड़ने का कार्य भी करता है। हिन्दू समाज में व्यक्ति के मृत्यु के समय गाय दान (गऊ दान) का विशेष महत्व माना जाता है। यह भी माना जाता है कि यह गाय ही उस मृत व्यक्ति को भयानक बाधाओं से युक्त भवसागर के उस पार पहुंचाती है, जहाँ पर सुख का सागर होता है। इस पूरी व्यवस्था को चुनौती देता है 'सूअरदान'। पुजारी दयाशंकर के मृत्यु का समय निकट है। सारे गाँव के ब्राहमण, उनके तीनों दामाद, रामचंद्र त्रिवेदी इत्यादि लोग उनके आस–पास खड़े हो जाते हैं। मारकण्डेय अग्निहोत्री ने पुजारी दयाशंकर से कहा कि आप गाय का दान करा लीजिए। परन्तु दयाशंकर को यह बात मंजूर नहीं थी। उन्होंने निश्चय किया कि वह गोदान नहीं करेंगे। स्वर्ग–नरक को वह झूठ, मिथ्या मानते है। वह कहते हैं कि **''मरने के बाद मृत व्यक्ति के लिये काल्पनिक भवसागर की बात करना मिथ्या है। झूठ है। फरेब है। यदि मुझे दान करना पड़ा तो, मैं प्यार, भाईचारा, सांप्रदायिक सदभावना, समानता, देशप्रेम, जानवरों और मानवों के प्रति लगाव का दान करूंगा। पूरे विश्व में शांति रहे, इसलिए मैं अहिंसा के उपदेश का दान करूंगा। पूरा संसार प्रदूषण मुक्त रहे, इस उद्देश्य का दान करूंगा। प्रत्येक नागरिक देश की र क्षा करें, इस संकल्प का दान करूंगा।''** 14 (वही, पृ0 159–160 **उसी समय दो–तीन सूअर के बच्चे पुजारी दयाशंकर के पास आ गये थे, जिन्हें वह बहुत प्यार करते थे। उन्होंने सूअर के बच्चे के ऊपर हाथ रख कर अपनी तीनों बेटियों, सज्जन खटिक, घसीटे चमार, सलवंत यादव और पिगरी फार्म के सभी कर्मचारियों को गौर से देखते हुए अंतिम सांसे ली। पुजारी दयाशंकर का हाथ सूअर के बच्चे के ऊपर रखा देखकर मारकण्डेय अग्निहोत्री चिल्लाये "अनर्थ हो गया। पुजारी दयाशंकर जी ने 'गोदान' के बदले 'सूअरदान' कर दिया।" 15** (वही, पृ0 160) यहाँ पर उपन्यासकार ने सदियों से चली आ रही कुछ रूढ़िगत मान्यताओं को टूटने का संकेत दिया है। आज समय बदल रहा है। इस बदलते हुए वैज्ञानिक समय में इन सब रूढ़िगत मान्यताओं का कोई अर्थ नहीं रह गया है। वैज्ञा. निक कसौटी पर कसकर ही चीजों को देखा–परखा जाना चाहिए।

रूपनारायण सोनकर का यह उपन्यास 'सूअरदान' गोदान के मिथक को चुनौती तो देता ही है साथ ही धर्म और कर्म के विभेद को सामने प्रस्तुत करता है। सदियों से प्रचलित छुआछूत, जातिवाद पर भी करारा प्रहार करता है। मजदूरों और किसानों को सफलता के मार्ग पर अग्रसर होने का संकेत भी सूअरदान में दिखाई देता है। भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, घूसखोरी की समस्या को उपन्यासकार ने बड़ी संजीदगी से उठाया है तथा इसे खत्म करने के उपाय भी सुझाए हैं। ग्लोवल वार्मिंग, ग्ले. शियरों का पिघलना, जलवायु परिवर्तन जैसे तमाम मुद्दो को उपन्यास में जगह दी गयी है। इतना तो कहा ही जा सकता है कि 'सूअरदान' उपन्यास एक व्यापक फलक को अपने अंदर समेटे हुए हमारे सामने आता है। इससे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

*****

नागफनी' का समाजशास्त्रीय अध्ययन–एक वृतांत

.झबलू राम

"साहित्य का समाज से गहरा रिश्ता है और समाज सामाजिक रिश्तों से बनते हैं।" उक्त विचार प्रसिद्ध दलित लेखक डॉ0 तेजसिंह जी का है। जैसी समाज–संरचना होती है वैसे ही सामाजिक रिश्ते होते है और सामाजिक रिश्तों से ही एक सही समाज की पहचान बनती है। साहित्य का समाज से और समाज का सामाजिक रिश्तों से गहरा रिश्ता है। रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा 'नागफनी' में भारतीय वर्ण–व्यवस्था से संघर्ष है लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मकथा व्यक्ति प्रधान न हो करके समाज प्रधान है।

रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा 'नागफनी' की यात्रा ग्रामीण परिवेश से संघर्ष करते हुए दलित समाज के लेखकों तक की यात्रा करती है। यदि इसे हम व्यापकता की दृष्टि से देखें तो यह आत्मकथा भारतीय समाज में खास तौर पर दलित समाज को एक मार्ग प्रसस्त करती है। मार्ग प्रसस्त से मेरा तात्पर्य है लेखक के जीवन में घटित घटनाओं के माध्यम से जो हमें प्रेरणा एवं उत्स. ाहवर्द्धन मिलता है। आप यदि गौर से देखे तो पायेंगे कि यह पहली ऐसी आत्मकथा है जिसमें खास तौर पर युवा पीढी में सृजनात्मक, ज्ञानात्मक, तार्किक एवं विश्लेषण की क्षमता का उपयोग करते दिया गया है, जो आप विपरीत परिस्थितियों का सामना ध ैर्य एवं साहस के साथ कर सकते हैं।

लेखक का ग्रामीण जीवन से लगाव है। आखिर क्यों न हो जो ग्रामीण देवता 'कुड़हा माई' को खुश करने के लिये गाँव के सब लोग इकट्ठे होकर पूजा–पाठ करते है।

'नागफनी' में सोनकर जी के ग्रामीण समाजशास्त्र को समझने के लिये जो ब्राह्मणों का चाल–चरित्र एवं षडयंत्रकारी, सामंती इत्यादि जो भी रूप है उसको हम क्रमशः देख सकते है।

लेखक की चाची सर पर कलश रखने से, ब्राह्मणों द्वारा पिटाई होने पर गाँवों के सारे लोग यादव, खटिक, पासी, चमार, कोरी, वाल्मीकि सभी एकजुट होकर पंण्डितों से अपने अपमान का बदला लेने के लिये शर्त रखी जो इस प्रकार है –''पंडित अपने किए पर पश्चाताप करें, और दलित महिलाओं का भी पीतल का कलश सिर पर र खकर चलने दें।'' इस तरह का अनुबन्ध, दलित समाज की एकजुटता के माध्यम से ब्राहमणों को मजबूर होना पड़ता है।

लेखक शुरूआत में ब्राहमणों को परास्त करते नजर आते है। सूअर–गाय का युद्ध मात्र दो जानवरों का युद्ध नहीं है बल्कि वह दो परम्परा एवं दो वर्णो का युद्ध है जो एक मुख से पैदा होता है तो दूसरा पैर से लेकिन विजय पैर से जन्में (सूअर) की होती है। ले. किन जीतने के बाद सूअर को षड्यंत्र से मार दिया जाता है। ले खक समाजशास्त्री वृतांत बताना चाहते हैं कि वह सूअर नहीं था बल्कि वह –''देवता रूपी ब्राह्मण सेना को परास्त करने वाला सूअर रूपी दलित सेना के महानायक सूअर राजा की समाधि' जब हम लोग गाँव जाते हैं तो उस सूअर राजा की समाधि पर फूलमालाएँ अवश्य चढ़ाते हैं।''

लेखक हीरा नाम से जाना जाता है जो एक कुशल पहलवान भी है। वह कुश्ती के मैदान में भी ब्राह्मणों को चित करने में निपुण है। ले खक के जीवन में जाति इतना बलवती होती है कि उसके सामने रखे भोजन की थाली को खींच ली जाती है और शरीर में पहने कपड़े का पैसा चुकता कर दोनों भाई डॉ0 बद्रीप्रसाद एवं सोनकर साहब जुलाई के महीने की भयंकर रात जो वर्षा से लबालब भरे हुए मार्ग से घर आते हैं। दलित होने का दर्द इतना भयावह होता है। कहा भी जाता है 'अतिथि देवों भवः' लेकिन मिश्रा दोनों भाई से 600 रूपये लेकर ही दम लिया। लेखक इस घटना के माध्यम से भारतीय समाज में फैले छुआछूत का समाजशास्त्रीय वर्णन बहुत ही पैनी दृष्टि से किया है।

लेखक के साथ क्रमशः घटनाएँ घटती रहती है। मई–जून का महीना था। लेखक 12वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। वह अपने गाँव, बिन्दकी से नसनियाँ आ रहे थे। रास्ते में ब्राह्मण के कुएँ से पानी स्वयं निकाल कर पीने पर ब्राह्मणों द्वारा उनपर जानलेवा हमला किया जाता है फिर भी वह उनसे संघर्ष करते हुए किसी तरह घर जाकर अपनी जान बचाते हैं। यह घटना आज भी कहीं–न–कहीं जीवत है। काशी में आप यह बताकर विश्वनाथ मंदिर में जाओं कि मैं दलित हूँ तो आप को अन्दर प्रवेश करने ही नहीं देगा, वहाँ का ब्राह्मण। काशी ही क्या आप देश के किसी भी कोने में जाइए। किराये पर कमरा लेते वक्त आपको खूब जद्दोजहद करनी पड़ेगी, क्योंकि आपके ऊपर दलित जाति की मुहर जो लगी है।

लेखक की सबसे बड़ी खासियत है कि वह हर घटना को समाजशास्त्रीय यथार्थ की कसौटी पर कसता है और कहता है कि ''कुँआ बहुत गहरा और पुराना था। लेकिन समाज में फैली छुआछूत, गैर–बराबरी, शोषण, अत्याचार और कुरीतियाँ कुँए से भी ज्यादा गहरी और पुरानी है।"

लेखक भारतीय संस्कृति एवं परंपरा पर करारी चोट किया है। जो दलित समाज को सदियों से गुलामी की जंजीरों से जकड़ी हुई है।

लेखक अपने घर आये रिश्तेदार को चारपाई पर बैठाने से शिवभजन अवस्थी, हीरा को अपमानित करते हुए कहता है ''सालो! अछूतो हमारे सामने चारपाईयों पर बैठे हो ये साला हीरा! तुम लोगों को चारपाइयों से नीचे उतरने से रोक रहा है।'' आप सोच सकते हैं कि आजाद भारत में दलितों की क्या स्थिति है।

लेखक और उसकी भाभी ब्राह्मणों के सामने आर–पार की लड़ाई

लड़ता है। अपने मान–सम्मान एवं अस्तित्व के लिए जो हाथ में कुल्हाड़ी और करौली से ब्राह्मणों का सामना करता है। उसके अदम्य साहस और धैर्य के चलते गाँव के यादव, कुर्मी चमार इत्यादि लोग एकजुट होकर ब्राह्मणों से सामना किये। लेखक की माँ का हृदय द्रवित तब होता है, जब शिवभजन अवस्थी द्वारा जबरन रस्सी क सहारे ऊँचे मंदिर के गुम्बदों की पुताई कराता हैं – ''कोई भी माँ अपने बच्चे की साक्षात मृत्यु को नहीं देख सकती है। लेकिन मेरी असहाय माँ–तीन घण्टे मेरी साक्षात् मृत्यु को देखती रही।''

हरिशंकर अवस्थी, शिवभजन अवस्थी, मुन्नु मिश्रा, शिवदत्त और उरेरी मिश्रा लेखक के गाँव के खुँखार एवं अत्याचारी ब्राह्मण थे। जो समय–समय पर दलितों के साथ नये–नये तरकीब सताने एवं प्रताड़ित करने के रास्ते सोचते रहते थे। सारे–दलितों को ब्राह्मणों के खेतों में आने से मना करने का मुनादी करवायी। यदि कोई दलित उसके खेत में जायेगा तो उसकी खैर नहीं। उरेरी मिश्रा की बात सुनकर सारे दलित सकते में आ गये। लेकिन गाँव के शिवमोहन वर्मा जो बहुत पैसे वाले एवं दबंग थे उन्होंने योजना बनाकर ब्राह्मणों को चक्रव्यूह में घेरा– शिव मोहन चाचा उछल पड़े और बोले ''अब साले ब्राह्मणों को ईट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा। तुम हीरा कतई मत घबराओं, इन सालों की ऐसी की तैसी.....।'' वह आगे बोले– ''समस्त गली के ब्राह्मण अपने जानवरों को लेकर पानी पिलाने तुम्हारें खेतों के अन्दर से निकलते हैं, क्योंकि तुम्हारे खेत बिल्कुल तालाब से लगे है।''

लेखक का परिवार सूदखोरी का शिकार शिवदत्त मिश्र के द्वारा होता है। आत्मकथा में हर घटना समाजशास्त्रीय दृष्टि से अपने आप में महत्वपूर्ण है। लेकिन हरिशंकर अवस्थी द्वारा भदइया चमार को बंधक बनाकर जानवर से भी बदत्तर उसे पीट–पीट कर अधमरा कर देता है। हरिशंकर अवस्थी एक इश्क मिजाजी व्यक्ति है तो आये दिन रंडियो के पास जाता रहता है। लेखक भदइया की दशा देखकर दंग रह जाता है। रात्रि में गाँव में जाकर दलितों को इकट्ठा कर रात्रि 2:00 बजे हरिशंकर अवस्थी के चुंगुल से भदइया को मुक्त कराता है। साथ ही हरिशंकर अवस्थी पर लाठी से हमला भी कराता है।

लेखक के छोटे भाई अजय जो आयकर अधिकारी है। 1980 में हरिशंकर अवस्थी ने अजय से जबरी उपलें ढोकर अपने दालान में र खवाने को मजबूर करता है। अजय भी लाचार होकर उसकी बात को स्वीकार कर लेता है। स्वीकार करना मजबूरी हो जाती है। लेकिन अजय शांति से वहीं बैठता नहीं है वह हरिशंकर अवस्थी से अपने अपमान का बदला लेने की तरकीब निकाल ही लेता है। हरिशंकर एक बच्चे का मूत गंगा जल समझकर पी लेता है। तब अजय, हरिशंकर अवस्थी से कहता है– ''चाचा जी आपने गंगाजल नहीं पिया है, आपने गत्तन मेहतर के लड़के का मूत पिया है जिसको मैंने बाल्टी में मिला दिया था।''

भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में हिन्दू धर्म की संस्कृति बहुत व्यापक रूप से फैली हुई है। लेखक ने त्यौहारों के माध्यम से समाजशास्त्रीय रूप को प्रस्तुत किया है। होली के त्यौहारों में ब्राह्मणों की गाली का जवाब उन्हीं की भाषा में गाँव के सारे दलित इकट्ठा होकर देते हैं –

''होली का बल्ला तरे तरे
पंडिताइन चो..... परे परे।''

अक्सर जो गाँव में मदारी, जादूगरी का खेल दिखाता है वह दलित समुदाय से ही होता है। वह जब अपने समुदाय में अपनी कला को दि खाता है तो लोग उसे खाने–पीने वाली वस्तु उसे देते है। लेकिन वही जब ब्राह्मणों के मोहल्ले में तमाशा दिखाता है तो गाँव के उरेरी मिश्रा और हरिशंकर अवस्थी उसे धमकाते हुए कहता है– ''साले! तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम लोग जमींदारो को तमाशा दिखा रहे हो। जब तक हम लोगों का आशीवार्द तुम लोगों को नहीं मिलेगा तुम्हारी कला अधूरी रहेगी।''

भारतीय समाज की यह संस्कृति रही है कि आप चाहे शम्भूक, एकलव्य, रैदास इत्यादि दलित महापुरूषों को ले सकते हैं। जो समाज को आंदोलित करने का कार्य ही नहीं किया बल्कि उनमें आत्मबल भी दिया है। लेकिन इनकी शौर्यता को देखकर ब्राह्मण षड्यंत्र के माध्यम से उन्हें तबाह कर देता है। ठीक वैसा ही षड्यंत्र गांव के ब्राह्मण मुन्नु मिश्रा, शिवदत्त मिश्र, उरेरी मिश्र, हरिशंकर अवस्थी और शिवभजन अवस्थी ने गाँव के कुर्मी जाति के इन्द्रजीत सिंह और लखन सिंह जैसे गुंडे पैदा करते हैं। जो गाँव के बहू–बेटियों पर गलत नजर रखते हैं तथा उनके साथ जबरदस्ती शारीरिक सम्बंध बनाकर उनका मुंह काला कर देते हैं।

लेखक, इन्द्रजीत सिंह को अपनी बुद्धिमत्ता से उसको पस्त करता है। जगदम्बा के घर के पिछवाड़े चल रही नौटंकी देखने में खुद और उसके घर एंव गाँव के लोग मनोरंजन में व्यस्त थे। इस अवसर का फायदा उठाते हुए जगदम्बा की नयी दुल्हन दुलारी के साथ जबरन सुहागरात मनाता है, जिसका हश्र उसकी मौत से होता है।

लेखक अपने गाँव के माध्यम से भारतीय समाज के ब्राह्मणवादी सोच को उजागर करता है। साथ ही समाजशास्त्र के विभिन्न रूपों के माध्यम से भारतीय समाज की व्यवस्था को टटोलता है। सोनकर जी की आत्मकथा पढ़ते समय आर0डी0 सोनकर जी जो एक आई0ए0एस0 थे। ब्राह्मण उनको अपने घर के सामने से गाड़ी से उतर कर जाने को कहते हैं। यहाँ हमें बलवंत सिंह की याद आती है जो पहले दलित भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई0ए0एस0) अधिकारी हैं, जिन्होंने छुआछूत और जातीय भेद चलते सरकारी नौकरी को 'लातमारी' उससे स्तीफा दिया। मेरे कहने का तात्पर्य स्पष्ट है कि एक भारतीय प्रशानिक सेवा का सर्वोच्च पद कोई माने नहीं रखता है। इस भारतीय समाज में सबसे सर्वश्रेष्ठ जाति ब्राह्मण है। जैसा कि आर0डी0 सोनकर जी के साथ हुआ। लेखक ने स्पष्ट लिखा है कि –''ब्राह्मणों के अहंकार ने एक दलित की वर्षो की घोर तपस्या के बाद जो मीठा फल उसे मिला था, उसमें जातिवाद की सुई लगाकर उसको जहरीला बना दिया था। उसकी प्रतिष्ठा, स्वाभिमान को अपने पैरों तले कुचल दिया था।''

रूपनारायण सोनकर जी अपनी आत्मकथा में एक अलग तरह से लोगों को जागरूक करते हैं जो दलित आत्मकथाओं में ऐसा पहली, पर एक गूंज सुनाई पड़ती है। खासतौर से युवा वर्ग को आंदोलित,

ज्ञान प्रवाह, आत्मविश्वास, जागृति पैदा करती है। डॉ0 राजेन्द्र यादव ने ठीक ही लिखा है कि – ''पहली बार किसी दलित लेखक की आत्मकथा में ऐसी चीत्कार सुनाई नहीं पड़ी है, बल्कि इसमें संघर्ष है, विरोध है, जिसे अंग्रेजी में 'साइलेंट' रेवेल्यूशन कहा जाता है।''

लेकिन जहाँ तक मेरा मानना है कि 'नागफनी' में जिस तरह से यादव, मुसलमान कुर्मी, चमार जाति का संगठन तथा रामचरितम. ानस को कुचलकर चिथड़े–चिथड़े करना, भदइया चमार को ब्राह्मणों के चंगुल से मुक्त कराना, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बाबा साहेब अमर रहे! के नारे लगाना, बिंदकी गाँव में आई0ए0एस0 अधिकारी बनना, साहसी दलित बांकेलाल की वीरता, दलित बच्चों को मुफ्त शि क्षा देना, लेखक द्वारा दिये गये पी0सी0एस0 तथा अन्य साक्षात्कार, सर्प को चारपाई पर चढ़ना, अन्ध मिथक को तोड़ना इत्यादि यह दशार्ता है कि आज का दलित युवक ब्राह्मणवाद, सामंतवाद, छुआछूत इत्यादि सामाजिक कुरीतियों का खुल कर विरोध करता है और वर्तम. ान मे अपनी तार्किक शक्ति से सूझ–बूस से ब्राह्मणवादी नितियों का दमन भी कर रहा है।

दलित आत्मकथा में आपसी मतभेद कहे या उनमें भी अर्न्तद्वंद्व की भावना सूरजपाल चौहान की आत्मकथा संतृप्त व 'नागफनी' है जो दलित एवं गैर दलित लेखकों के चरित्र को दर्शाने का काम करती है।

'नागफनी' में लेखक के कुछ साहसिक कदमों का जिक्र करना चाहता हूँ चूंकि दलित आत्मकथा में यह पहली ऐसी आत्मकथा है, जिसमें अम्बेडकरवादी व्यवस्था को लागू किया गया है। अम्बेडकरवाद से मेरा तात्पर्य है डॉ0 अम्बेडकर के विचारों से है। 'नागफनी' में जातिवाद है लेकिन एक व्यापक रूप से संगरूपात्मकता का बोध कराती है। जरूरत पड़ने पर गांव के खटिक, चमार, मुसलमान, यादव, कुर्मी एक होकर ब्राह्मणवादी षडयंत्र का करारा जवाब देते है। इस आत्मकथा में दलितों के संगठन के माध्यम से मान्यवर कांशीराम साहब का 15/85 के बारे में जो सोच थी वह हमें दिखाई देता है। इस रूप से 'नागफनी' समाजशास्त्रीय स्वरूप में एकता के सूत्र मे दलित समाज को बांधने का कार्य करती है।

लेखक को रामचरितमानस का पाठ करते देख शिवभजन अवस्थी कहता है– ''साले! हम लोगों के बीच में बैठकर कैसे रामायण की चौपाई पढ़ रहा है। इस साले अछूत को किसने चौपाई पढ़ने के लिए कहा ?''

यह वाक्य सुनकर वहीं हीरा रामचरितमानस का चिथड़े–चिथड़े करके भाग जाता है। यह साहसिक कार्य बिना दलित महापुरूषों के विचारधारा का अनुसरण किये बगैर किया नहीं जा सकता। काशी में रामचरितमानस का पाठ तो सब करते है लेकिन एक लोकगीत कलाकार नसुडी यादव 1980–90 के दशक में ललई सिंह यादव की पुस्तक 'सच्ची रामायण की चाभी' का उदाहरण देकर खुलेआम काशी में ब्राह्मणवादी व्यवस्था को ललकारता है और उनसे तार्किक सवाल भी करता है।

लेखक ने ब्राह्मणों की दो खूबसूरत लड़कियों के दो रात गायब होने का जिक्र करता है। इसके माध्यम से ब्राह्मण समाज के परिवार की दशा को दर्शाते है। ब्राह्मणों की लड़कियो का प्रेम दलित जादूगरों से होने की चर्चा लेखक ने किया है। 'नागफनी' में लेखक की भाभी अपने साहसिक कार्य से संपूर्ण दलित समाज की स्त्रियों को स्वाभि. ामान, मान–सम्मान का पाठ पढ़ाते हुए ब्राह्मणों से संघर्ष करती है। अपनी जान की परवाह किये बगैर उनसे संघर्ष करने का ऐलान करती है–''भाभी बोली– ''हिम्मत हो तो मारो! ये करौली तुम्हारा पेट फाड़ देगी। हीरा ने कौन–सा अपराध कर दिया है जिसकी तुम इतनी बड़ी सजा दे रहे हो। हम भी इंसान है। क्या इंसानों को चारपाई पर बैठने का अधिकार नहीं है।''

लेखक की भाभी की बात सुनकर ऐसा लगता है कि वह दलित महापुरूषों के एवं डॉ0 अम्बेडकर के बनाये संविधान के बारे में उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जानकारी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखक दलित समाज की महिलाओं की समाजशास्त्री दृष्टि को स्पष्ट किया है।

संपूर्ण आत्मकथा में सबसे लम्बा स्थान साहसी दलित बांकेलाल के बारे में उसके साहस एवं आत्मविश्वास को दर्शाया गया है। बांकेलाल के अनुरोध पर गांव के प्रधान नसीम खान उन तीसों सवर्णो से व अकेले लड़ने का आदेश देते है। साहस का परिचय देते हुए बांकेलाल तीसों को मैदान में परास्त कर देता है और गांव का बांकेलाल हीरो बन जाता है। बांकेलाल की चाची, रामचन्द्र त्रिवेदी की बात सुनकर झल्ला गई और बोली–''आप दलित औरतों से इस तरह की बात करते है, आपकों शर्म आनी चाहिए। तीन गन्ने तोड़ने से जो नुकसान हुआ है, आप हमसे ले लीजिए इन गन्नों का पैसा!''

लेखक के कवि जीवन में अपमान, जातिसूचक शब्द का प्रयोग, निराशा, क्लेश, इत्यादि सवर्ण रचनाकारों द्वारा उन्हें यातना दिया जाता है। वही दलित सहित्यकारों में सोहनपाल सुमनाक्षर एवं ओम प्रकाश वाल्मीकी के प्रति उनके कर्मो एवं कर्त्तव्यों को लेखक ने खुब टटोला है और उनकी घृणित मानसिकता एंव सोच को उजागर किया है– ''कई मंचों पर मेरी और ओमप्रकाश वाल्मीकी की तड़प होती रहती है। ओमप्रकाश वाल्मीकी मेरे साथ मंचों पर आने से घ ाबराते हैं। वे आयोजकों पर दबाव डालते है और कहते है– ''जहां मै हूं वहां सोनकर को मत बुलाओं। अगर आपने सोनकर को बुलाया तो मैं नही जाऊंगा।'' लेखक ने दलित लेखकों के सच को समाज के सामने उसके चरित्र को जाहिर किया है।

उसी तरह का व्यंग्य सोहनपाल सुमनाक्षर पर लेखक ने किया है। जब श्री सुनील कुमार ने सन् 1988 में अवार्ड के लिए मेरा नाम प्रस्तावित किया था। उस समय सोहनपाल सुमनाक्षर ने कहा था– ''यह आदमी कुत्ते–बिल्लियों पर कविताएं लिखता है, यह दलित साहित्यकार नहीं है।''

लेखक का एक दूसरा पक्ष भी है जो दलित एवं गैर दलित लेखकों एवं नेताओं से मधुर संबंध को भी दर्शाया है। दलित लेखकों में अजय नावरिया की तारीफ करते हैं। सोनकर जी कहते है कि– ''इनमें संगठनात्मक शक्ति बहुत है। मुझे लगता है कि साहित्य जगत में इनके बड़े कार्यों से कोई विस्फोट होने वाला है।''

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि रूपनारायण सोनकर

की आत्मकथा और दलित आत्मकथाओं की तरह रोना नहीं है। मतलब यह की 'अपने–अपने पिंजरे', 'जूठन', 'दोहरा अभिशाप', 'संतृप्त', 'तिरस्कृत', 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', 'झोपड़ी से राजभवन', 'मेरी पत्नी और भेड़िया', 'मुर्दहिया', शिकेजे का दर्द' इत्यादि आत्मकथा अपने आपमें महत्वपूर्ण है। लेकिन 'नागफनी' में जितना अम्बेडकरवादी गूंज सुनाई पड़ती है। दूसरी आत्मकथा में वह गूंज (विचार) हमें नहीं दिखाई पड़ती है। दलित आत्मकथाओं में जातिवाद, असमानता, धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वास, शिक्षा के प्रति संघर्ष प्रेम इत्यादि हर आत्मकथा में कामन रूप से मिलता है। लेकिन नागफनी समाज को जागृत तो करती ही है साथ में मान –सम्मान से जीने के लिए सबक सिखाती है। 'नागफनी दलित समाज को अंधविश्वास, ध ार्मिक पाखंडता से बाहर निकालने में एक बहुत ही क्रान्तिकारी भूमिका अदा करती जा रही है। जिससे दलित युवा को एक नई ऊर्जा देने का काम कर रही है।

आत्मकथा में महत्वपूर्ण बात यह कि लेखक ने अपने जीवन संघर्ष को रोया नही है बल्कि शान से जिया है जिसे आज का दलित युवक जीना चाहता है। ''उक्त बाते आत्मकथा में पूर्ण रूप से पाठक को बोध कराती है।

आत्मकथा को समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाये तो ले खक के गांव का जीवन संघर्ष और ब्राह्मणों के हर चाल पर भरी पड़ना यह दर्शता है कि, लेखक बहुत ही कुशाग्र बुद्धि का है। जो हर विकट परिस्थितियों में डट कर सामना करता है। दलित समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए और साथ में मान–सम्मान के लिए भी। लेखक अपनी भाभी एवं बांकेलाल की चाची द्वारा ब्राह्मणों को जबाव देना दलित महिलाओं में आत्मचेतना, आत्माधिकार की प्रेरणा देती है। गाँव के यादव, कुर्मी, मुसलमान, चमार, खटिक के आपसी संगठन से दलित समाज के युवकों को प्रेरणा मिलती है कि यदि हम सभी लोग आपस में मिलकर रहे तो मुठ्ठी भर ब्राह्मण एवं सामंत हम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं। लेखक के कवि जीवन का संघर्ष यह दर्शता है कि दलित कवि को अपने परिवेश में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने के लिए जद्दोजहद करनी ही पड़ती है। साथ में दलित साहित्यकारों के आपसी अन्तरद्वन्द्व एवं आपसी प्रेम को दर्शाया गया है। उसी तरह गैर–दलितों के प्रति ले खक के खट्टे–मीठे अनुभव भी बांटा गया है। जो दलित समाज की एक नई अवधारणा को दर्शाता है। जातिवाद इतना भयवाह है कि अजय, भदइया चमार, आर.डी. सोनकर, बांकेलाल, लेखक, ब्राह्मणवादी चक्रव्यूह में फँसते हैं लेकिन अभिमन्यु की तरह उनकी मन में बैठे ब्राह्मणवादी दरवाजा को तोड़ते चले जाते हैं। लेखक ने कहानी संग्रह, नाटक, काव्य इत्यादि के लोकार्पण का जिक्र किया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, राजेन्द्र यादव, नामवर सिंह, अजय नावरिया ने उनकी प्रतिभा का सम्मान किया। जिससे हम जैसे युवा लेखक ह्रदय से 'नागफनी' की अदम्य साहस को सलाम करते हैं। नागफनी भाषा, बिम्ब, वाक्य संरचना, तार्किकता, विलक्षण शब्द योजना इत्यादि दृष्टि से अद्वितीय रचना है। जो दलित समाज को एक नई चेतनाा एवं पहचान के साथ जीने हेतु विवश करेगी एवं पथ प्रदर्शक साबित होगी ताकि दलित समाज को एक नये समाजशास्त्रीय ढाँचा में पिरोया जा सके।

संदर्भ सूची

1.अम्बेडकरीवादी साहित्य की आवधारणा तेज सिंह लोकमित्र (2010) पृ0सं0 05

2.नागफनी रूपनारायण सोनकर, शिलयायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 2011 ई0 पृ0 सं0 16

3.बही पृ0 सं0 20

4.बही पृ0 सं0 27

5.बही पृ0 सं0 27

6.बही पृ0 सं0 34

7.बही पृ0 सं0 39

8.बही पृ0 सं0 50

9.बही पृ0 सं0 57

10.बही पृ0 सं0 65

11.बही पृ0 सं0 92, 93

12.बही पृ0 सं0 35

13.बही पृ0 सं0 30

14.बही पृ0 सं0 105

15.बही पृ0 सं0 139

16.बही पृ0 सं0 131

17.बही पृ0 सं0 127

*****

दलित साहित्य में बड़ा परिवर्तन

–रवि शर्मा

सॉफटवेयर इंजीनियर/कम्प्यूटर प्रोग्रामर

दलित साहित्य जो अभी तक केवल दलितों के जीवन रहन, सहन, खान–पान व उनके सामाजिक सरोकारों तक ही सीमित था। दलित लेखन में गैर–दलितों को बहुत कम स्थान मिलता था। दलित साहित्य केवल आत्मकथाओं के लिए ही जाना जाता था जिसमें ब्राह्मणों व अन्य उच्च जातियों के अत्याचारों का ही वर्णन होता था। गाली गलौच की भाषा का खुलकर प्रयोग दलित लेखकों द्वारा किया जाता था। शैली, भाषा व शिल्प नदारद थी।?

यू0जी0सी0 की नेट परीक्षा 2012 में एक उपन्यास **'सूअरदान'** पूछा गया। देश के लेखकों, बुद्धिजीवियों, छात्रों, पाठकों व शोध छात्रों के बीच इस उपन्यास के बारे में जानने की इच्छा सभी में जाग्रत हो गयी क्योंकि सभी ने उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदाम' का नाम सुना था। **'सूअरदान'** उपन्याास के लेखक रूपनारायण सोनकर है। एक चर्चित दलित लेखक हैं। अपनी आत्मकथा **'नागफनी' द्वितीय भाग भटकटैया, उपन्यास ''डंक, गटर का आदमी, सोलह सौ किलोमीटर कहानी संग्रह 'जहरीली जड़ें' व नाटक एक दलित डिप्टी कलेक्टर** से दलित साहित्यकारों की अग्रणी पंक्ति में गिने जाते है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इनकी आत्मकथा **नागफनी** व कहानी **जहरीली जड़ें** तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में कहानी समाजद्रोही एम0ए0 की कक्षाओं में पढ़ायी जा रही है। आत्मकथा **नागफनी, 'सूअरदान'** व **'डंक'** का मराठी, कन्नड़, तेलगू, गुजराती, अंग्रेजी व उड़िया भाषाओं में अनुवाद हो गया है व अन्य भाषाओं में हो रहा है। सोनकर के साहित्य पर देश भर के अधिकतर विश्वविद्यालयों में एम0 फिल व विश्वविद्यालयों में पी0एच0डी0डी0 लिट हो रही है। पूर्व प्रधानमंत्री वी0पी0 सिंह से लेकर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित उत्तरांचल के तत्कालीन गवर्नर श्री सुरजीत सिंह बरनाला, श्री सुदर्शन अग्रवाल व तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तरांचल श्री एन0डी0 तिवारी सभी सोनकर की पुस्तकों का लोकर्पण व सम्मान प्रदान कर चुके है। प्रो0 तेजसिंह व प्रो0 ओमराज कंवल भारती, डॉ0 अजय नावरिया सोनकर के साहित्य की भूरि–भूरि प्रशंसा कर चुके है।

'सूअरदान' उपन्यास क्लासिकल व अनुपम कृति है। दलित व गैर दलित लेखक अभी तक **'सूअरदान'** जैसी बहुआयामी साहित्यिक पुस्तक नही दे पाये है। सूअरदान उपन्यास ने दलित साहित्य की पुरानी व घिसी पिटी परंपरा को तोड़ते हुए सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय की विचारधारा को आगे बढ़ाया है। चार नवयुवक जो तकनीकी शिक्षा के मास्टर हैं। गांव का चंहुमुखी विकास करने का बीड़ा उठाया है। इनमें रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, घसीटे चमार व सलवंत यादव है। 'सूअरफार्म' के जरिये गावं सिंहासनखेड़ा को अन्तर्राष्ट्रीय गांव बना देते है जिसकी समृद्धि को दे खकर अति आधुनिक शहर भी मात खा जायें। जहां पर देश विदेश के लोग रोजगार पाते हैं। गांव की सामाजिक विषमतायें नदारद हो जाती है। भाईचारा, समानता, मानवता का वातावरण तैयार होता है। पिगरी फार्म के मालिक अपने कटु विरोधी पुजारी दयाशंकर जो 'एड्स' से ग्रसित थे। ग्राम प्रधान सत्यानारायण त्रिपाठी एक बड़ा जुल्मकर्ता था और जिसका जलने से चेहरा कुरूप हो गया था। उन दोनों का चारो पार्टनर मुफ्त इलाज करवाते हैं। जबकि ये दोनो चारों पार्टनों को दुश्मन मानते थे तथा उनका पिगरी फार्म बर्बाद करना चाहते थे। उनकी बीमारियों को देखकर व्यथित हो जाते है। 'सूअरदान' की पंक्ति देखिये– **''संसार में ऐसे बहुत कम आदमी मिलेंगे जो दुश्मन के परास्त होने पर स्वंय परास्त हो जाते है''।**

मओवाद व नक्सलवाद का नाम न लेकर लेखक ने अपनी विवेकशीलता का परिचय दिया है। इनको उसने हताशावाद कहकर एक नया शब्द गढ़ा है। 'सूअरदान' में हताशावाद समाप्त करने का फार्मुला सुझाया गया है जो व्यवहारिक है। यदि प्रांतीय व केन्द्र सरकार इस फार्मूला को मान ले तो देश से आतंकवाद मिट सकता है। देश से गरीबी मिट

सकती है। असहाय लोगों को विकास का फायदा मिल सकता है। इस उपन्यास में उच्च जातियों विशेषकर ब्राहमणों के लिए एक संदेश ही नही दिया गया है बल्कि चेताया भी गया हैं ब्राहमणों की हालत देहातों में बद्तर होती जा रही है। इसका कारण 'सूअरफार्म' व अन्य व्यवसायों को जिनको दलित व पिछड़े करते हैं, हेय दृष्टि से देखना है। लाभकारी व्यवसायों को त्यागना है। लेखक कहता है कि आजादी के पहले जो हालत दलितों की थी वैसी ही हालत आज कुछ ब्राह्मणों की है। यदि यही हाल रहा तो उनकी स्थिति और दयनीय हो जायेगी।

इस उपन्यास में कुछ विज्ञान के प्रयोग किये गये है जैसे गाय और सूअर के सीमेंस से एक नई ब्रीड **'सुगाय'** तैयार करना। इसी तरह जानवर और मानव के सीमेंस से **'मानवर'** जैसी नई ब्रीड तैयार करना ताकि आदमियों की तरह बोलने लगे। ये कपोल कल्पित बातें हो सकती हैं लेकिन कभी कभी लेखक की कल्पना साकार रूप ले सकती है। इस उपन्यास मे वैज्ञानिक उपन्यास के तत्व मौजूद है।

आजकल मनरेगा के जरिये दबंग ग्राम प्रधान अधिक से अधिक पैसा हड़प रहे है। हालांकि सरकार की वह अच्छी योजनाओं में से एक हैं और प्रशंसनीय है। 'सूअरदान' उपन्यास में इसका सटीक हल बताया गय है।

इस उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं को दूर करने का एक अचूक हल निकाला गया है। दलित भोजन माताओं के हाथ का बना भोजन जो सवर्ण अपने बच्चों को खाने नही देते हैं या दलित बच्चों से अलग पंगत बनाकर खिलाते हैं ऐसे सवर्ण मां–बाप पर सिंहासनखेड़ा गांव का नया दलित ग्राम प्रधान उनके ि खलाफ शेडयूल्ड कास्ट व शेडयूल्ड ट्राइब्स उत्पीड़न अधि ानियम के अंतर्गत मुकदमा दर्ज करवाता है।

सूअरफार्म के मालिक उन स्थानीय राजनेताओं की दिल खोलकर मदद करते है जो ग्रामप्रधान, ब्लॉक प्रमुख और नगर पंचायत का चुनाव लड़ते हैं। यदि ऐसे नेता अप. ने यहां सुलभ शौचालय पूर्णतया बंद करवाते है। खाप पंचायतों के विरोध में खडे हो जाते है। जहां पर आनर किलिंग का बोलबाला है। जातिवाद तोड़ने के लिए अन्तर्राजातीय शादियों को बढ़ावा देते है। स्कूल, औषधालय और कोचिंग सेंटर खुलवाते हैं।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी चर्चित दलित लेखक ने उन दलित व गैर– उन अधिकारियों को जेल की सलाखों के अन्दर पहुंचाया है जो पहली पत्नी व बच्चों के होते हुए दूसरी शादी रचा लेते हैं। अपनी पहली पत्नी व बच्चों को सामाजिक भेड़ियों के हाथों जलील होने के लिए छोड़ देते है।

गोदान में जहां प्रेमचंद मजदूरों, किसानों की फटेहाल जिन्दगी का चित्रण तो करते है लेकिन इस भयवह व दयनीय स्थिति से बाहर नही निकाल पाते है। वही रूपनारायण सोनकर फटेहाल जीवन बसर करने वालों को एक समृद्धशाली जीवन पाने में पूर्णतः मदद करते है। समाज में फैले अंधधार्मिक प्रतीकों को धराशायी करते हुए नये वैज्ञानिक मिथक गढ़ते हैं जो समस्त मानव जाति के लिए हितकारी है। **सूअरदान** की इस शताब्दी के सबसे अच्छे उपन्यासों में गणना की जा सकती है।

पो0ओ0 लेखापानी
तिनसुकिया, आसाम

*****

यार सत्ता का नया अविष्कार

-रूपनारायण सोनकर
दून व्यू काटेज
स्प्रिंग रोड, मसूरी
उत्तराखण्ड
email: sonkar.ddn@gmail.com
MOB: 9410778718

'My Experiments with Truth' में राष्ट्रीयता कहे जाने वाले महात्मा गाँधी ने खुलासा किया था कि वे अपनी इंद्रियों को बस में करने के लिए दो जवान लड़कियों को अपने साथ नग्न लिटाते थे। प्रश्न उठता है कि जवान लड़कियाँ क्या अपनी मर्जी से इतना जोखिम लेती थी। हाँ– महात्मा गाँधी की महानता और उनके सद्गुणों से प्रभावित थीं सही बात यह थी कि वे महात्मा गाँधी को अच्छी तरह जानती थी और उनकी पक्की यार/दोस्त थी। यार सत्ता इसी को कहते हैं। यार सत्ता समाज के उन महान सिद्धान्तों को स्थापित करती हैं जिनमें अपनापन विश्वास और एक दूसरें के प्रति निस्वार्थ भाव से समपर्ण की भावना होती है। तभी आदमी ऐसे महान कार्य कर सकता है जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। वर्तमान समय में मनुष्य ऐसे प्रयोग नहीं कर सकता है। हालांकि ऐसे प्रयोग होने चाहिए। इससे समाज में बलात्कार की घटनाएं कम होंगी क्योंकि आदमी भी अपनी इन्द्रियों को बस में रखेगा। तब वह सुन्दर नारी को देखकर बिल्कुल विचलित नहीं होग. ी। मैं गाँधी जी के सिद्धान्त में लोच पाता हूं। क्योंकि इस सिद्धान्त में सन्तति उत्पादन में एक अवरोध पैदा होता है। जब पुरूष व स्त्री इस स्थिति तक पहुंच जाते हैं तब सच्ची यारी/दोस्ती प्रारम्भ हो जाती है। जो सभी तरह की कुंठाओं, पीड़ाओं और असमाजिकता को दूर कर देती है। यदि पुरूष और स्त्री की इस स्थिति में शारीरिक भूख नहीं मिटती है तो दोनों इस भूख की तृप्ति के लिए जीवन भर कटी मछली की तरह तड़पते रहते हैं। काम तृप्ति की भूख अन्य भूखों से ज्यादा तड़पाती है।

यार सत्ता का सिद्धान्त जाति व वर्ण भेदता है। अन्तराष्ट्रीय समाज का निर्माण करता है। जब एक हिन्द. ुस्तानी लड़का किसी अंग्रेज व अमेरिकन वाला से प्रेम विवाह रचाता है तब दो देशों की संस्कृतियां, विचार, खान पान एक दूसरे के साथ ऐसे सम्मिलित हो जाते हैं। जैसे पानी में चीनी मिल जाती है। दोनों के जीवन में जीवन भर मिठास बनी रहती है। कड़वाहाट नाम की चीज नदारत रहती है। क्रिकेट के महानतम बल्लेबाज वेस्टइन्डीज के विवियन रिचर्ड भारत की फिल्म अभिनेत्री नीता गुप्ता से शादी रचाते हैं। फिल्म इन्डस्ट्री के चमकते सितारे शशिकपूर अंग्रेज लड़की जेनिफर से विवाह करते हैं। सलमान के पिता फिल्मी लेखक सलीम विदेशी लड़की हेलन से शादी रचाते हैं तब ऐसे लोग देश की सीमाओं को तोड़ देते हैं। ऐसे लोग स्तुत्य योग्य हैं। यार सत्ता की वजह से ही इनके खेल, अभिनय व लेखन में निखार आया। विश्व के महान लेखक सलमान रूश्दी यार सत्ता पर विश्वास करने के कारण ही विश्व की महान हस्ती बने। यार सत्ता/यार कर्म के निम्न सिद्वान्त हैं:–

पुरूष व महिला का स्वास्थ्य होना।
बौद्धिक क्षमता की बराबरी।
अहितकर जड़वादी प्रथाओं व अंध धर्म की तिलांजलि।
नूतन व वैज्ञानिक विचारों का समर्थन।
संतानों के भविष्य निर्माण दोनो की सहभागीदारी।
घरेलू व बाहरी कार्यों में दोनो का बराबर का सहयोग।
एक दूसरे के प्रति आदर व सम्मान।
स्वछंद जीवन (जिसमें व्यभिचार न हो) बिना किसी प्रतिरोध के जीना।
एक दूसरे की सफलता पर हर्षित व फ्रुल्लित होना।
देश व समाज के प्रति अटूट लगाव।

जिन लोगों में इस तरह के गुण नहीं होते हैं ऐसे लोग जीवन के हर क्षेत्र में असफल रहतें है। ऐसे लोगों में विध्वंसात्मक विचार ज्यादा होते है। परिवार व समाज को तोड़ते हैं। व्यक्तिवादी होते हैं। अपना हित उनके लिये सर्वोपरि होता है। अपनी प्रत्येक गलत बातें दूसरों से मानवाना चाहते हैं। विशेषकर अपनी

औरतों और बच्चों से। यदि लड़की हुई तो उसको घर की कोठरी में बंद रखते हैं। पढ़ लिखकर उसको नौकरी करने की छूट नहीं है। शादी करके बच्चे पैदा करना व घर गृहस्थी का कार्य करते–करते मर जाना उसके जीव का ध्येय होता है। ऐसे लोगों व उनके बच्चो का योगदान देश निर्माण में न के बराबर होता है। ऐसे लोगों का दिमाग पूर्णतयः विकसित नहीं होता है। इसलिए ऐसे लोग अपने परिवार, समाज व देश को विकसित नहीं होने देते हैं। ऐसे लोग निहायत स्वार्थी व मौका परस्त होते हैं। ऐसे लोग किसी भी मुसीबत का चतुराई या बहादुरी से सामना करने मे असमर्थ होते हैं। अपने हित के लिये सच्चे, सज्जन व ईमानदार लोगों को धोखा देने में चूकते नहीं हैं। अपना एक रूपया बचाने के लिए दूसरों का सौ रूपये का नुकासन कराने में अपनी आत्मतुष्टि महसूस करते हैं। यदि ऐसे लोग किसी सरकारी सेवा में हुए तो हर सही कार्य में कोई न कोई त्रुटि निकालकर उस कार्य को होने नहीं देते हैं। असफल मानवों की यही निशानी है। इनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले गिनती के एक या दो आदमी होते हैं। जो अपने स्वार्थवश उनसे जुड़े रहते हैं। ऐसे आदमी अपने को सब कुछ मानते हैं वहाँ का वातावरण साड़ांध भरा होता है। पड़ोसी सदैव ऐसे आदमियों से परेशान रहते हैं। पड़ोसी सोचते रहते हैं कि ऐसे मनहूस आदमियों से किस तरह जल्दी छुटकारा मिले। ऐसे लोगों का यार सत्ता/यार कर्म/यारी/दोस्ती से सदैव नफरत होती है। क्योंकि ऐसे आदमी अपने जीवन में कभी भी किसी से यारी नहीं कर पाते हैं। ऐसे आदमी समाज के लिए घातक होते हैं। समाज को ऐसे आदमियों से दूर रहना चाहिए।

मैनें अपने पूर्व लेख ''यार सत्ता का नया अविष्कार में श्रीकृष्ण का उदाहरण दिया था। श्रीकृष्ण का अविवाहित गोतिकाओं के साथ प्यार करना यार सत्ता के सिद्धान्त को बढ़ावा देता है लेकिन विवाहित राधा के साथ कृष्ण का प्यार करना मैं प्यार सत्ता से अलग मानता हूँ। अगर विवाहिता पुरूष और विवाहित स्त्री का नैतिकता के दायरे में रहकर प्यार होता है। जैसे माँ ''मैं'' अपने बच्चों के साथ प्यार करती है तो यह एक नैसर्गिग प्यार है।

वैलेन्टाइन, यार सत्ता/यार कर्म/यारी–दोस्ती को फैलाने में एक मजबूत स्तंभ के रूप में देखे जा सकते हैं। वैलेन्टाइन डे उन्ही के नाम पर पूरे विश्व में मनाया जाता है।

वैलेन्टाइन वास्तव में आधुनिक व वैज्ञानिक विचारों के साथ संसार में प्रकट होते हैं। उनके ही नाम से वैलेन्टाइन डे मनाया जाता है। उसे दिन अनगिनत प्रेमी प्रेमिका अपने–अपने प्यार का इजहार करते हैं और शादी के पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। ऐसे जोड़े जातिवाद व वर्णवाद से ऊपर होते हैं। और वैश्विक समाज का निर्माण करते हैं।

वैलेन्टाइन डे का मच रहा है शोर
नये विचारों की हो रही है भोर
घातक पंरपरावादी प्रथाओं को तोड़नें में
युवक युवतियां लगा रहे हैं जोर
वैलेन्टाइन डे का मच रहा है शोर
नये विचारों की हो रही है भोर
नया समाज बनता नजर आ रहा है
पूरा विश्व प्यार में बंधता जा रहा है
जातिवाद, वर्णवाद मिटता जा रहा है
वैलेन्टाइन आज प्यार के गीत गा रहा है

आपाधापी, भागमभाग और प्रतियोगिता में
हम प्यार करना भूल गये हैं
इसीलिए लोग टेशन और हार्ट अटैक का
शिकार हो रहे हैं

हम सभी प्यार करना जानते नहीं हैं
अब हमारे स्थान पर हमारी प्रेमिकाओं से
रोबोट प्यार कर रहे हैं
यदि प्रेमी–प्रेमिकाओं पर
प्यार करने पर प्रतिबंध लगाओगे
तब मशीनों को चारों तरफ
जीवित प्रेमिकाओं से प्यार करते पाओगे।

*****

प्रेमचंद व रूपनारारायण सोनकर की 'कफन' पर एक विश्लेषण

-डॉ.सी.वसन्ता
एम.ए.पीएड.डी.,
मार्फत श्री टी.के. सौमयाजी,
म.सं.1-9-709,स्ट्रीट सं.12,अड्डुमेट,
हैदराबाद-50044

हिन्दी में 'कफन' शीषर्क से दो कहानियां प्रकाशित हुई है। एक प्रसिद्ध लेखक प्रेमचन्द जी की तथा युवा लेखक सोनकर जी की। दोनो कहानियों के गर्भ मे दलित चेतना का पिंड है। प्रेमचन्द जी के समय में इन्सान भावुक अधिक था। विचारक कम। अब मानव का प्रस्थान श्रद्वा (भावुकता, भावुक) से (वैचारिकता, विचारक) की ओर हो रहा है। प्रेम. चन्द की कहानी 1935 में लिखी गई है। सोनकर की कहानी 2008 में प्रकाशित हुई है। दोनों कहानियों के बीच में बहुत अंतराल है। इस बीच में परिस्थितियां बहुत कुछ बदल गयी। मानव का स्वभाव बदल गया। विज्ञान का विकास हुआ। दलित चेतना भी बदल गयी। प्रेमचन्द के समय में, उन राजनैतिक, सांस्कृति, आर्थिक परिस्थितियों में एक दलित परिवार को केन्द्र बिन्दु बनाकर कहानी लि खना ही बहुत बड़ी क्रांति थी। दलितों की कटुपरिस्थिति, मजबूरी, जमींदारों का शोषण, वर्णव्यवस्था के कारण दलित परिवारो पर होने वाले अत्याचार, अन्याय, उनकी बहू–बेटियों पर होने वाले जुल्म आदि का चित्रण साहित्य में तब भी होता था किन्तु आजकल की तरह अपने हकों के लिए लड़ना, आन्दोलने चलाना आदि का चित्रण कम होता था। प्रथम चित्रणों में दलितों के जीवन यथार्थ का चित्रण मिलता हैं किन्तु द्वितीय चरण की रचनाओं में आक्रोश, प्रतिशोध, विरोध, आधिकार पाने के लिए संघर्ष, आन्दोलन आदि का चित्रण मिलता है।

प्रेमचन्द की कहानी भावनात्मक कहानी है। पाठकों के हृदयों को स्पर्श करती है यह कहानी। बुधिया प्रसवपीड़ा से तड़पती रहती है। उसका ससुर धीसू तथा पति माधव उसकी करूणामय स्थिति में अनभिज्ञ होकर अपनी दुनिया में विचरते रहते हैं। धीसू तथा माधव काम चोर है। अगर हाथ में आज पैसें हैं तो खाते–पीते है। उन्हें कल की चिंता बिल्कुल नहीं है। घर में मुट्ठी भर चावल है तो बस उनके लिए दीवाली है। बुधिया ही अब तक बाप–बेटे के लिए खाने का इंतजाम करती थी। संसार का भार ढोती थी। अक्सर दलित बस्तियो में आज की यही हालत दिखाई देती है। पुरूष दारू पीते है, पत्ते खेलते हैं। उसके पैर में जब शिशु है तो पीठ पर बंधा हुआ और एक शिशु घर का सारा काम। मजदूरी करना। बस इसके सिवा उनका कोई जीवन ही नहीं है। सारे दलित परिवार ऐसे ही होते है। ऐसा कदा. पि नहीं। धीसू और माधव के संवाद के द्वारा लेखक ने कई अंशों पर प्रकाश डाला है। आदमी निकम्मे रहेंगें तो आत्माभि. ामान को मानकर किसी के सामने हाथ पसारना पड़ता है। दो दिन रोटी नहीं मिलती तो काम पर जाते हैं, किन्तु वहां पर मालिक एक का काम दो से करवाते हैं, इस प्रकार उनका शोषण होता है। अगर समझ लीजिए एक के श्रम के लिए अगर दस रूपये मिलते हैं दूसरे को भी दस रूपये मिलेंगे। किन्तु दस रूपयों को दोनों में बांटकर पांच–पांच देते है। यानि एक ही घर में दो व्यक्ति काम करेगें तो बीस रूपये आने चाहिए मगर इसके बजाय दस ही आ रहे है। इसका कारण धीसू माधव आलसी स्वभाव के होना। मालिक इसका फायदा उठाकर शोषण करता है। ले खक यही कहना चाहता है कि दलित आलसी मत बनो अपने श्रम का सही मूल्य ले लो। इस कहानी में गरीबो की आर्थिक स्थिति का चित्रण हुआ है। गरीबी के कारण वे चोरी करते हैं। किन्तु चोरी करने का कारण गरीबी के कारण ही नहीं व्यक्ति में श्रम न करने का स्वभाव है। इसमें निहित यह संदेश है कि दलितों श्रम करो। आत्माभिमान से जियो। इज्जत से रोटी खाओं। इसका मतलब यह कदापि नही कि दलित को श्रम ही नहीं करना चाहिए, मुश्त रोटी खाना चाहिए। दलित हो या अदलित दोनों को भी श्रम की पूजा करनी चाहिए। लेखक इस व्यवस्था में रोशनी डालता है। एक नग्न सत्य को सामने आता है। उनका कहना है– ''जिस समाज में रात–दिन मेहनत करने वालों को हालत उनकी हालत से कुछ अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसान की दुर्लभताओं में लाभ उठाना जानते थे कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहां इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।'' धीसू माधव में कमजोरियां हैं तो शक्तियां भी है। किन्तु इन शक्तियों का सदुपयोग नहीं करते। इनमें तर्क करने की तथा सोचने की शक्ति है। धीसू की इस सोच में

महत्वपूर्ण फिलासफी हैं – ''कैसा बुरा रिवाज है जिसे जीते जी तन ढांकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने परर नया कफन चाहिए।'' जब जमींदार तथा गांव वाले पैसे देते हैं तो बाप–बेटे सोचते हैं कि अगर ये पांच रूपये पहले ही मिले होते तो बुधिया का दवा करवा देते। दाई को देने के लिए उनके पास एक रूपया भी नहीं। इस कारण से भी बुधिया पीड़ा से तड़प–तड़प कर मर जाती है। इसका चित्रण इसीएि हुआ। घीसू–माधव जैसे दलितों को चेतावनी देने के लिए कि पहले से दाई के लिए दवा–पानी के लिए रूपये बचाकर रखो नहीं तो औरत मर जायेगी। इस कहानी में यह संदेश है कि अक्सर आदमी भाग्यवाद का सहारा लेकर जीना चाहता है। इससे नुकसान ही बहुत होता है। इसलिए श्रम करो, प्रयत्न करो, सब कुछ ठीक हो जायेगा। इस कहानी से और एक सत्य विदित होता है कि दलितों में जो शक्ति होती है। घीसू और माधव के संवाद पर ध्यान देंगे तो हमें पता चलता है कि वे किस हद तक सोच सकते हैं– कफन लाश के साथ तो जल जाता है।'' हमारी प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा?'' हाँ बेटा बैकुण्ठ में जायेगी। किसी को सताया नहीं किसी को दबाया नहीं। मरते–मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह बैकुण्ठ में न जायेगी तो क्या मोटे–मोटे लोग जायेंगे जो गरीबों को दोनो हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते है।'

प्रेमचन्द जी व्यवस्था में किस कदर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर निर्भर है, यह एक पारसैटिक व्यवस्था है इसका भी चित्रण किया है। घीसू माधव ही भिखारी है तो इनमें भी निम्न स्थिति में रहने वाला भिखारी और भी है – ''भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूडियों का पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दिया, जो खड़ा इनकी ओर भूखी आंखों से देख रहा था।''

अब हम सोनकर की कहानी कफन पर रोशनी डालेंगे। इस कहानी में जिन दलितों का चित्रण हुआ हे वे न दयनीय हैं न निरीह है न गरीब हैं। आर्थिक स्थिति में सम्पन्न एक दलित परिवार का चित्रण इसमें हुआ है। यह कहानी पढ़ने के बाद पाठक भावुक नहीं होते। उनके मन में कई प्रश्न उठते हैं। इस कहानी में आपकी सामजिक परिस्थितियों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। आज दहेज समस्या राक्षस बनकर लड़कियों की जिन्दगियों को निगल रही है। सभ्य समाज के लिये सचमुच यह एक शाप है। लड़कियों के मां–बाप पर भी बुरा प्रभाव पड़ा रहा है। वे तनावग्रस्त होकर शाप ग्रस्त जीवन जी रहे है। इस समस्या को लेकर लेखक ने नये दृष्टिकोण से कहानी लिखी है। सराहनीय है। कुछ व्यक्ति लोभी होते है। उनके इस लोभत्व को केन्द्र बिन्दु बनाकर दहेज लेने वाले जीतलाल श्रीवास्तव, संगम सक्सेना को किस कदर सबक सिखाता है इसका चित्रण इसमें हुआ है। लेखक संगम सक्सेना के घर की चाय का शल्य परीक्षा करता है– ''जिस घर मे चाय बिल्कुल काली बनती है। दूध नाम मात्र का डाल जाता है। चाय उस परिवार की काली भावनाओं जैसी होती है। चाय में मिठास बिल्कुल नहीं होती है। एक प्याला चाय उस घर की असलियत खोलकर रख देती है। चाय में घुला चाय का एक–एक काला–काला कण उस घरवालों के काले–काले विचारों को उजागर करता है। उस एक कप चाय से उस पर घर की असलियत जान सकते है। उस घ ार की चाय पीना जहर पीने जैसी होती है।''

प्रिंसिपल जीतलाल श्रीवास्तव का उदाहरण देकर लेखक कहता है कि आम तौर पर सब यही सोचते हैं कि किसी को धोखा दिये बिना, कुछ बुरे काम किये बिना धनवान नहीं बन सकते गलत है। जीतलाल की मेहनत की कमाई है। पाठक के लिए यह एक अच्छा संदेश है। जीतलाल अपनी बेटी सलिला को पढ़ता है। वह भी लेक्चरार है। लड़का समरपाल बड़ा वैज्ञानिक है। सलिला के बारे में जितना भी चित्रण हुआ है वह सकारात्मक है। जब वह यह पहचानती है कि ससुराल वाले (संगम सक्सेना) लोभी है और दुष्ट स्वभाव वाले हैं, दहेज के लालची है। विवाह करने के लिए वह ना करती है। सलिला इस विवाह का बहुत विरोध करती है– ''डैडी मैं ऐसे घर में शादी नहीं कर सकती हूं जो इतना लालची हो, दहेज की इतनी बड़ी रकम मांग रहा हो। मेरी जिन्दगी उस घर में नही निभ सकती है, नहीं पिताजी मैं यह शादी हरगिज नहीं करूंगी।'' आज आधुनिक लड़कियों में इस तरह की हिम्मत होनी चाहिए। पिताजी से इस प्रकार एक लड़की से कहलवाकर लेखक ने यह संदेश दिया है कि आधुनिक विचारों को स्वीकार करो।

प्रेमचन्द की कफन कहानी मे बुधिया मर जाती है। गरीब परिवारों में अक्सर रूपये न रहने के कारण न दाई, न डाक्टर रहने के कारण न दवा–पानी दिलाने के कारण बुधि ाया जैसी औरतों की स्थिति इसी तरह दयनीय होती है। बुधिया पर बिछाये जाने वाले कफन सार्थक सिद्ध होता है क्योंकि मुर्दे पर ही कफन डाला जाता है। इसलिए वह सफेद कफन है। सोनकर की कफन कहानी में गायत्री बच जाती है क्योंकि डाक्टर का इलाज होता है। गायत्री देवी कुछ हद तक क्रान्तिकारी है अपने बेटे के लिए इतना ज्यादा दहेज लेने के पक्ष में वह नहीं है, किन्तु जब पति,

पुत्र उसे चुप रहने के लिए कहतें तो चुप हो जाती है।

सोनकर की कफन कहानी मे लोभी संगम सक्सेना को एक सबक सिखाने के लिए जीतलाल एक षडयंत्र रचाता है। पहले श्रीवास्तव अपने जात को छिपाता है। दहेज को बात होने के बाद विवाह का निर्णय होने के बाद वह कहता है कि वह भंगी जाति के है। जीतलाल की हर शर्त को सक्सेना स्वीकार करता है। जीतलाल कहता है– ''मैं और मेरा पूरा परिवार अपने–अपने नामों के आगे श्रीवास्तव लगाता है लेकिन हम मेहतर जाति के हैं।'' आपको और आपके लड़के को हमारी बिरादरी में बैठना पड़ेगा। हमारी बिरादरी के मुखिया एक ऊंचे मचान या घर की छत के ऊपर बैठेंगू वे लोग सूअर का पका हुआ गोश्त खायेंगे, मचान के नीचे बैठकर उनकी खाई हुई हड्डियां आप दोनों को चूसना होगा और उनके द्वारा ऊपर से नीचे फेंका गया जूठा गोश्त भी खाना होगा।''

''आप ऐसा क्यों करवायेंगे?''

'' हमें यकीन हो जायेगा कि आप हमारी बिरादरी में शामिल हो गये है। आप मेहतर बिरदारी के हैं।''

''आजकल भी देहातों मे कुछ लोगों के घरों में विष्ठा देहात में रहने वाले मेहतर जाति के लोग उठाते हैं, आपको एवं आपके लड़के को एक दिन उनके साथ दूसरों के घरों का विष्ठा साफ करने जाना होगा।''

यहां पर पाठकों के कई प्रश्न उठते हैं। श्रीवास्तव जब गर्व से अपनी भंगी परम्परा के (हमारी बिरादरी) के बारें में बात करता है तो अपने जाति को पहले छिपाया ही क्यों? भंगी जाति के होते हुए भी श्रीवास्तव का परिवार आर्थिक स्तर से उन्नत स्थिति में है और परिवार के लोग पढ़े लिखे हैं। जीतलाल खुद प्रिन्सिपल है लड़का बड़ा वैज्ञानिक है। लड़की लैक्चरार है। आज विज्ञान का काफी विकास हुआ। कोई भी जाति का क्यों न हो अपनी सुविधा के लिए सारे लोग वैज्ञानिक चीजों का उपयोग करते हैं।

''दलितों के कल्याण के साथ–साथ पूरे मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य करना होगा ताकि आने वाली पीढियां हम पर गर्व कर सकें उनका सर गर्व से ऊंचा रहे और शर्म से नीचा न झुके' (नागफनी पत्रिका, अगस्त–अक्टूबर 2010) यह कथन सारे मानव समाज के लिए मिसाल है।

दहेज प्रथा पर लेखक ने कफन डालने का प्रयत्न किया है, सराहनीय है। जीतलाल संगम सक्सेना को कफन भेजता है। इसमें प्रतिशोध, क्रोध दिखाई देता है। इसलिए इस कफन इसके शव के लिए सही अर्थ में कफन बना। सोनकर की कहानी का कफन पहले आदमी (संगम सक्सेना) को मारता है बाद मे उसके लिए कफन बना। लोभी सक्सेना तथा उसके बेटे को सबक सिखाने के लिए व दहेज लेते समय श्रीवास्तव कुछ गवाहों के इकट्ठा करके कानून की सहायता से उन्हें जेल भेजना चाहिए था। जेल भेजने के बाद कफन की भेंट करना था। इससे दलित हो या अदलित की दृष्टि नैतिक मूल्यों पर पड़ती थी। दहेज लोभियों को ऐसा सबक सिखाना कानून की दृष्टि से ठीक है।

प्रेमचन्द की कफन कहानी प्रथम चरण की कहानी है। सोनकर की कहानी द्वितीय चरण की कहानी दलित के लिए, दलित चेतना के लिए ठीक है। सोनकर की कफन द्वितीय चरण की कहानी है। टेक मे एक खास गुण होता है कि बार–बार वह हमारे कानो में गूंज उठाती है।

लेखक सोनकर का चित्रण देखिए – मेहतर जीवनलाल श्रीवास्तव का स्वाभिमान से सीना चौड़ा हो गया – लालच और स्वाभिमान की जंग जारी थी। लालच धन पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। एक धन की सर्वोपरि मान रहा था दूसरा सम्मान और प्रतिष्ठा को। एक तरफ लालच जितना नीचे जा सकता था जा रहा था, दूसरी तरफ सामाजिक प्रतिष्ठा और दलित अस्मिता आसमान की ऊंचाई को छू रही थी।'' भाषा प्रतीकात्मक है। सराहनीय है। संगम सक्सेना के लिए लालची शब्द उपयुक्त है।

पाठक युवा लेखक सोनकर जी से स्तरीय रचनाओं की अपेक्षा करते है। देश में कई समस्यायें है। लेखक मानवीय समस्याओं, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक समस्याओं का चित्रण करके उनके लिये समाधान ढूंढना चाहिए। सोनकर की 'तिरंगे झण्डे मे लिपटाया जाऊं' एक अच्छी कविता है। उनके कई लेख गहरे चिंतन के प्रतीक है। उन्होनें बिना दुराब छिपाकर अपनी आत्मकथा 'नागफनी' लिखी।

*****

गोदान पर भारी सूअरदान

.शालनी पाण्डे
शोध छात्रा
लखनऊ वि.वि.लखनऊ

प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास जगत के महान क्रांतिकारी लेखक थे। राजनीति के क्षेत्र में जो कार्य नेताओं द्वारा किया गया सामाजिक क्षेत्र में प्रेमचन्द ने साहित्य द्वारा सम्पन्न किया। प्रेमचन्द ने समाज को उन्नति एवं प्रगतिशील बनाने के लिए बड़ा ही संघर्ष किया। प्रेमचन्द का 'गोदान' उपन्यास अपने युग का इतिहास है। कोई भी सजग उपन्यासकार अपने साहित्य में उन्हीं परिस्थितियों का वर्णन करता है जो उसके समाज में विद्यमान होती हैं।

रूप नारायण सोनकर दलित समाज के एक ले खक ने मुंशी प्रेमचन्द की चुनौती को स्वीकार करते हुए परम्परागत मान्यताएँ, अन्धविश्वासों एवं संस्कारों को ध्वस्त करते हुए एक नयी सोच एवं नये विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'सूअरदान' उपन्यास न केवल सोनकर जी की प्रतिभा को प्रस्तुत करता है, अपितु समाज में व्याप्त विसंगतियों की जीती जागती वास्तविकता को प्रस्तुत ही नहीं करता अपितु उसका समाधान भी प्रस्तुत करता है।

'गोदान' में गो–दान की विशेष धर्म विधि का संकेत है। जो व्यक्ति पुण्य–दान में 'गाय' का दान करता है, उसे स्वर्गलोक जाते समय एक भंयकर वैतरणी नदी पार नहीं करनी पड़ती है। 'गरुण पुराण' में भी लिखा है कि जो व्यक्ति मरने वाला है उसे गोदान करना आवश्यक अर्थात् विशेष शुभकारी माना जाता है। परन्तु वास्तविकता तो यह है कि जिस व्यक्ति की गाय लेने की एक मात्र इच्छा पूरी नहीं हो सकी। उसे मरते समय गो–दान करने से क्या तात्पर्य? जिसे इन लोक मे दुःख तकलीफ के सिवा कुछ नहीं मिला, वह परलोक सुधारकर क्या करेगा ? यह तो हिन्दू समाज के कर्मकाण्ड स्वरूप की नृशंसता को ही उजागर करता है।

लेकिन 'सूअरदान' में इस प्रकार की कोई मान्यता, रूढ़ियां या संस्कार नहीं हैं। इसमें तो यह दिखाया गया है कि दान तो दान होता है, चाहे वह प्यार, भाई–चारा, साम्प्रदायिक सद्भावना, देश प्रेम या फिर मानव के प्रति लगाव का दान हो। इसीलिए समाज की इस जर्ज. रित प्रथा का जड़ से अन्त करते हुए सोनकर जी ने उपन्यास के अन्त में सूअर का दान ब्राह्मण के हाथ से कराया है–पुजारी दयाशंकर ने अपने पास आए एक सूअर के बच्चे पर हाथ रखकर कहा–''मैं इससे बहुत प्यार करता हूँ।''

गोदान उपन्यास में होरी के मरणासन्न के समय पूरा गाँव उपस्थित होता है। गो–दान के प्रस्ताव और उसका समर्थन तो सभी करते हैं किन्तु होरी को बचाने के लिए डाक्टर बुलाने की बात कोई नहीं करता। होरी की परलोक की चिंता सबको है परन्तु जो इस लोक में वह भोग रहा है, उसकी परवाह किसी को नहीं है। वहीं 'सूअरदान' में दयाशंकर पुजारी को एड्स की बीमारी पता चलते ही, सज्जन खटिक, घसीटे चमार, सलवंत यादव, रामचन्द्र त्रिवेदी चारों मिलकर अमेरिका में उनका सफल इलाज करवाते है और उन पर पचास लाख रूपये भी खर्च करते हैं। इस प्रकार पुजारी दयाशंकर के जीवन को चारों मिलकर बचा लेते हैं।

प्रेमचन्द मानवतावादी थे। मानव के हित उसके गुणों को विकसित करना वह मानव का प्रमुख उद्देश्य मानते थे। अपने लिए धन कमाना उनके जीवन का लक्ष्य न था। सेवाभाव ही मानव जीवन को सार्थक करता है। गोदान में मानवतावादी स्वर कई स्थलों पर देखने का मिलता है,

होरी को अपने भाई की पत्नी की सहायता करना, गोबर की पत्नी झुनिया को घर में शरण देना आदि।

'गोदान' में मानवतावाद की झलक ही दिखाई देती है, लेकिन 'सूअरदान' में उसका पूरा रूप उभरकर सामने आया है। इसमें मानवता और विश्वबन्धुत्व की भावना अपनी चरम सीमा तक पहुँच गई है।

गोदान में 'होरी की त्रासदी को कथा का आधार बनाया गया है, जबकि सूअरदान पूरे विश्व के मानवों की झांकी प्रस्तुत करता है।

प्रेमचन्द गोदान के माध्यम से कृषि, संस्कृति के ध वंस की कहानी कहना चाहते हैं। भारतीय किसान के जीवन की दयनीय स्थिति की त्रासदी यथार्थ रूप में इस उपन्यास की समस्या बनकर आयी है। 'गोदान' का पात्र होरी कृषक जीवन की रक्षा करने के लिए हरपल संघर्ष करता है और अन्त में वही परम्परा, मान्यताएं, उसके धवंस का कारण बनती हैं। जबकि सूअरदान ने भारतीय किसान व मजदूर की करुण कहानी के साथ ही साथ उसके समाध ान को भी प्रस्तुत किया है। साथ ही ग्रामीण जीवन की छोटी से छोटी जरूरतों जैसे–बिजली, मशीन, टैक्टर आदि समस्याओं को दूर किया गया है। नये–नये व्यवसाय करने की प्रेरणा दी गई है। वैज्ञानिक साधानों के प्रयोग एवं उसके लाभकारी प्रभावों के बारे में भी बताया गया है। सेक्स एजूकेशन के बारे में जानकारी को महत्व देते हुए बताया गया है कि इसकी जानकारी के अभाव में ग्रामीण भारत में अधिक से अधिक गर्भपात होते हैं। साथ ही इस उपन्यास में सूअर से होने वाले लाभकारी प्रभाव तथा उसके पालन से हजारों लोगों की गरीबी के निवारण का भी समाध ान है। इस प्रकार यह उपन्यास मजदूर किसानों की दयनीय स्थिति से उबारते हुए खुशहाली की ओर अग्रसर करता है।

'सूअरदान' उपन्यास में तत्कालीन समस्याओं की तरफ भी ध्यान दिया गया है कि गांव में आज भी चुनाव के समय गांव में किस तरह षडयंत्र एवं शोषण होते हैं उसका भी समाधान एवं निवारण बताया गया है।

देश की सबसे बड़ी समस्या कन्या भ्रूण हत्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कन्या भ्रूण हत्या की ओर ध्यान देते हुए बताया कि एक दिन ऐसा आयेगा कि चार लड़को को एक ही लड़की से शादी करनी पड़ेगी। अर्थात् चार लड़कों के अनुपात में एक ही लड़की होगी।

सूअर को बड़ी हीन दृष्टि से देखा जाता है, उसे बड़ा गन्दा जानवर माना जाता है, परन्तु सूअर अन्य जानवरों की तुलना में काफी फायदेमन्द है। इसीलिए चारो दोस्त मिलकर पिगरी फार्म खोलते हैं और बेरोजगारों को रोजगार देते हुए काफी हद तक बेरोजगारी की समस्या का समाधान करते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि गोदान में उस समय की समस्याओं को प्रस्तत किया जो बीत चुकी हैं जबकि 'सूअरदान' आज की जरूरत का उपन्यास है। 'गोदान' एक असहाय लाचार किसान की दयनीय स्थिति को उजागर करता है, जबकि सूअरदान पूरे विश्व के किसानों गरीबों, बेसहारा लोगों की झाँकी प्रस्तुत करता है और साथ ही उनको खुशहाली का मार्ग दिखाता है।

*****

डॉ.अम्बेडकर से आगे की सोच है उपन्यास 'सूअरदान' में

-कँवल भारती
भारती निवास
सी.-260/6
न्यू आवास विकास कालोनी
सिविल लाइन्स,
रामपूर-224901 उ.प्र.
फोन नं.09412871013

रूपनारायण सोनकर के उपन्यास सूअरदान को पढ़ने के बाद मुझे लगा कि उसने दलित चिन्तन को एक नया मोड़ दिया हैं। अभी तक के दलित उपन्यासों में उत्पीड़न, संघर्ष और द्वन्द की गाथायें सामने आयी है, या वहां नये समाज के निर्माण का सपना गांव से शहर मे आकर पूरा होता है। लेकिन सूअरदान पहला उपन्यास है, जिसमें दलित ने गांव को अपने अनुकूल बना लिया है। नब्बे के दशक में पूंजीवाद के वैश्वीकरण का जो नया युग भारत में आया है, उसका समाजवादी दृष्टि से विरोध हुआ है। पर, दलित बुद्धि जीवियों का एक वर्ग पूंजीवाद के इसी माडल में दलित मुक्ति की सम्भावनाएं जाति और धर्म की दीवारों तोड़ देती हैं। रूपनारायण सोनकर ने 'सूअरदान' में दलितों की मुक्ति की इसी अवधारणा को रेखांकित किया है। मैं समझता हूं कि रूपनारायण सोनकर के उपन्यास 'सूअरदान' में दलित उपन्यास लेखन में एक नये अध्याय का आरम्भ किया है। इसको हम इस तरह समझ सकतें है कि मार्क्सवाद हमें यह सिखाता है कि जब पूंजीवाद का विकास होता है तो सामन्तवाद का खात्मा होता है लेकिन भारत में हम इसका उल्टा देखते हैं जहां पूंजीवाद तो तेजी से बढ़ा रहा है, पर समान्तवाद का खात्मा नहीं हो पा रहा है। क्या पूंजीवाद और सामान्तवाद का गठबन्धन हुआ है? मै पहले ऐसे ही मानता था। लेकिन, रूपनारायण सोनकर के 'डंक' और अब 'सूअरदान' को पढनें के बाद मेरी धारणा बदल गयी। सोनकर पहले रचनात्मक लेखक है, जिन्होने यह जानने की कोशिश की कि सामन्तवाद और उसके अवशेषों का समाज में मुकाबला नहीं हो रहा है। उन्होनें यह समझ लिया कि पूंजीवाद शहरों में जाति तोड़ रहा है, गांवो में नही। पर, यह काम किस 'प्रोसेस' से हो रहा है, इसकी तरफ रचनात्मक लेखन में पहला ध्यान सोनकर का ही गया। उन्होनें उस प्रोसेस को समझा और यह मंथन किया कि इस प्रोसेस को गांव में किस तरह अप्लाई किया जाये। यही प्रोसेस हमें उनके 'डक' और 'सूअरदान' उपन्यासों में दिखायी देता है।

एक बड़ा उदाहरण मैं देता हूं। गौ और सूअर ये दो पशु है, दोनों पाले जाते हैं, और दोनों ही आर्थिक लाभ देते हैं। पर हिन्दू संस्कृति ने गौ का सम्बन्ध ब्राहम्ण से जोड़ दिया है और सूअर को दलितों से। क्या इसे किसी भी तरह से उचित कहा जा सकता है? गाय किसे दान की जाती है ब्राहम्ण को? किस उद्देश्य के लिये? उत्तर है, दुखों की वैतारणी पार करने के लिये। यह एक ऐसा मिथक है, जिसका कोई तार्किक आधार समझ में नहीं आता। हिन्दू समाज में गौ से जितनी धारणाएं जुडी हैं। सब मिथक हैं। मिथक को तोड़ने का ख्याल सोनकर को आया। सोनकर को छोड़कर किसी अन्य रचनात्मक लेखक को मिथक तोड़ने का ख्याल नही आया। गौदान के लिये सूअरदान की कल्पना भी सोनकर की अपनी कल्पना है। और बड़ी मौ. लिक कल्पना है। यदि गौदान एक मिथक है, तो सूअरदान भी मिथक है। लोहे को लोहा काटता है, इस ख्याल के साथ सोनकर ने सूअरदान का मिथक गढा लेकिन सोनकर नह इसे सिर्फ मिथक नहीं रहने दिया हैं, बल्कि उसे हकीकत में भी मूर्तरूप दे दिया है।

गाय के ब्रहाम्णों ने एक और विश्वास को जोड़ दिया है उसका मूत्र अनेक रोगों में अमृत का काम करता है। अब सवाल यह है कि गौ मूत्र ही अमृत क्यों होता है। भैंस और बैल का मूत्र अमृत क्यों नही होता? बकरे का मूत्र अमृत क्यों नही होता? सोनकर ने इस मिथक को भी तोड़ा। उन्होनें उसका तोड़ सूअर मूत्र मे खोज लिया यह कहते है कि सूअर का मूत्र यौन शक्ति बढ़ाता है। यह उसकी अपनी खोज है। अगर कोई इसे गलत साबित करना चाहता है तो प्रयोग करके देखें। यह सोनकर मिथ्या धारणा को धवस्त

करने की पूर्ण क्षमता इस कल्पना में है। ऐसी कल्पना जो धर्म प्रतीकों से जुड़े मिथकों को धवस्त करें, दलित साहित्य में आनी चाहिए।

डा0 आम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'एनिहिलेशन आफ कास्ट' में दो नीति वचन उद्‌घत किये थें जिसमें पहला बुद्ध **''सत्य को सत्य के रूप में जानों और असत्य को असत्य के रूप में''** ड्रममण्ड का वचन यह है– **'' वह जो तर्क नहीं करेगा धर्मान्ध है वह जो तर्क कर नहीं सकता मूर्ख है जो तर्क करने का साहस नही करता है वह गुलाम है** (He that will not reason is a bigat . He that cannot reason is a fool, He that dare not reason is a slave) दलित लेखक न धर्मान्ध है, न मूर्ख है और न गुलाम है। सोनकर ने मिथकों को तोड़कर और मिथकों पर तर्क खड़े करके सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने का साहस किया है। इतिहासकार ही इतिहास लेखन नहीं करते बल्कि उपन्यास के माध्यम से भी इतिहास लेखन का काम हुआ करते है। हिन्दी में ऐसे बहुत से उपन्यास लिखें गये हैं। राहुल साकृत्यायन, रागेय राधव, यशपाल, भगवती चरण वर्मा, वृन्दावन दास, राही मासूम रजा, अब्बदुल बिस्मिल्ला, असगर वजाहत, दूधनाथ सिंह आदि अनेक उपान्यासकार है, जिन्हा. ने उपन्यास लिखे है। लेकिन इतिहास लेखन में श्रेष्ठ उपन्यास वह है, जो वर्तमान को रेखांकित करता है और जिसमें भविष्योन्मुखी रचनात्मकता होती है। ऐसे उपन्यास अभी दलित साहित्य में तीन ही आये हैं, जिनमें पहला नैमिशय जी का 'मुक्तिपर्व' और सोनकर के 'डंक' और 'सूअरदान'। लेकिन इन तीनों उपन्यासों में पवित्रता के आवरण से ढके हुए मिथको और मूल्यों का पुर्नल्यांकन किया गया है और ऐसी पवित्रता का खण्डन किया गया है, जिसने व्यक्ति को आदर्शों के नाम पर धर्मान्ध बन दिया है। पूंजीवाद ढांचे को सांस्कृतिक परिवर्तन का वाहक बनना होगा। यदि वह नहीं बन रहा है। तो उसे बनाना होगा और रूपनारायण सोनकर यह काम कर रहें हैं।

सूअरदान उपन्यास में सोनकर की विचारधारा डा0 अम्बेडकर की विचारधारा से आगे चली गयी है। बाबा साहब का कहना था कि दलितों का उद्धार गांव छोड़कर शहर में बसने से है। यह बात वरिष्ठ दलित लेखक मोहन दास नैमिशराय व ओम प्रकाश बल्मिकी अपने अपने उपन्यासों में इस बात को चित्रित किया है। लेकिन सोनकर ने दलितों को गांव से पलायन करने को नही कहा बल्कि सभी जातियों के साथ मिल कर दलितों के उत्थान का सपना देखा है। वास्तव में यह एक साहस का काम है जिसको सोनकर ने अपने उपन्यास में दर्शाया है इसलिये बधाई के पात्र हैं।

*****

'गोदान' और 'सूअरदान' ग्रामीण और दलित जीवन की व्यथा-कथा का प्रमाणिक दस्तावेज

-डॉ.पान सिंह
मेन गेस्ट हाउस
पंजाब विश्वविद्यालय,
से.14 चण्डीगढ, पंजाब-160014

प्रेमचन्द ने 'गोदान' लिखा और सोनकर ने 'सूअरदान'। दोनो उपन्यासों में दान है, लेकिन एक में गाय का और दूसरे में सूअर का दान। एक धर्मदान और दूसरा कर्मदान। दोनों दानों में कौन सा दान बड़ा है? यह सोचने का विषय है, शोध का विषय है। 'गोदान' में गाय का दान करने की इच्छा अंत तक चलती है और 'सूअरदान' में वास्तव में सूअर का दान नहीं किया जाता, वह केवल दकियानुसी लोगों की घटिया सोच है। 'नागफनी' पत्रिका में छपी अपनी समीक्षा में पहले भी यह बात कह चुका हूं कि प्रेमचन्द तो कथा सम्राट थे। यदि दो टूक शब्दों में कहा जाए तो प्रेमचन्द से बड़ा कथाकार तत्कालीन युग में कोई था ही नहीं। लेकिन यह कहने में हिचकिचाहट नही कि ऐसा कथाकार पैदा ही नहीं हो सकता। आज तो हो सकता है। जैसे एक छोटा सा उदाहरण है जब भारतीय क्रिकेट मे कपील देव और सुनील गावस्कर थे, तो कहा जाता था कि इन जैसा कोई दूसरा हो ही नहीं सकता। लेकिन यह बात सचिन तेन्दुलकर ने मिथ्या साबित कर दी है। अब यही बात फिर से दोहराई जा रही है कि तेन्दुलकर जैसा कोई नहीं हो सकता। हो क्यों नहीं सकता? संसार में सब कुछ संभवा है। जैसे मनुष्य कल्पना की कोई सीमा नहीं है। ठीक उसी प्रकार प्रतिभा की कोई सीमा नहीं।

उपन्यास साहित्य को प्रेमचन्द की बहुत बड़ी देन कहा जा सकता था। उनसे पूर्व उपन्यास साहित्य में कथा तो होती थी, लेकिन उसमें कथानक नहीं होता था। प्रेमचन्द ने पहली बार इस ओर कदम उठाया और उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा दी। प्रेमचन्द ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में एक प्रयोगशाली दृष्टि अपनाई है। वे लागतार प्रयोग करते रहे हैं। उन्होंने अपने कथा शिल्प को लेकर विभिन्न प्रयोग किए हैं। प्रेमचन्द जिस युग में पैदा हुए थे वह युग गुलामी का युग था। चारों ओर आतंक, अत्याचार, शोषण वर्णभेद, धर्माडम्बर तथा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों मुंह वाये खड़ी थीं।

यह युग गांधी से बहुत प्रभावित था। प्रेमचन्द ने गांधी जी द्वारा उठाई गई समस्याओं को ध्यान में रखकर अपनी साहित्य रचना की। अछूत, लगाबंदी, सत्याग्रह, सविनय आंदोलन आदि को अपने उपन्यासों–कर्मभूमि, रंगभूमि, प्रेमाश्रम आदि में प्रस्तुत किया और उनका समाधान भी गांधीजी के आर्दशों और सिद्धान्तों के आधार पर ही प्रस्तुत किया है। गोदान में जहां तक सामाजिक समस्याओं का प्रश्न है तो प्रेमनचन्द ने गांव में सम्मिलित परिवारों का विखंडन, टूटते परिवार की व्यथा, अनैतिक संबंधों की चर्चा, ऊँच–नीच, बाल विवाह, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा विवाह और दहेज की समस्याओं की ओर संकेत किया है। होरी की बेटी रूपा का विवाह दहेज न दे सकने के कारण वृद्ध रामसेवक से होता है। झुनिया विधवा है, अतः गोबर साहसपूर्वक झुनिया को घर ले आता है, परंतु उसे समाज का ही नहीं माता–पिता का भी भय है, क्योंकि अन्तर्जातीय विवाह है। जातिवाद के कारण ही मातादीन सिलिया से शारीरिक संबंध होते हुए भी विवाह करने से संकोच करता है। महाकाव्यात्मक उपन्यास में एक से अधिक पीढ़ियों का वर्णन होता है। गोदान में भी दो पीढ़ियों– होरी–दातादीन की पीढ़ी, गोबर–मातादीन, रायसाहब तथा उनके बेटों–बेटियों की पीढ़ी का चित्रण है और विशेषता यह है कि सभी पात्रों को लेखक की सहानुभूति प्राप्त है। इसका कारण है कि प्रेम. चन्द की मानवतावादी दृष्टि जो महाकाव्य के लिए आवश्यक बतायी जाती है।

'गोदान' के मुख्य रूप से चार कथासूत्र हैं। होरी से सम्बद्ध, रायसाहब से सम्बद्ध, गोबर और खन्ना से सम्बद्ध, मालती, मेहता, गोबिन्दी से जुड़ा। पहले तीनों कथासूत्रों में शोषण मुख्य रहा है। उच्च वर्ग होरी का शोषण करते हैं। रायसाहब जमींदार हैं, लेकिन मिल मालिक खन्ना और दलाल उनका भी शोषण करते हैं जब उन्हें लोन लेना पड़ता है। होरी मर्यादा तथा रिश्तेदारी को निभाने के लिए ऋण लेता है तो रायसाहब इलैक्शन जीतने तथा रूतबा उच्चा दि खाने के लिए ऋण लेता है। दोनों खोखली मर्यादा और सड़ी–गली रूढ़ियों के शिकार हैं। चौथा कथासूत्र प्रेमचन्द नारी के प्रति उच्च और आदर्शवादी दृष्टिकोण रखने के कारण एक ओर गोबिन्दी को पतिव्रता साधवी चित्रित करते हैं तो दूसरी ओर तितली जैसी दिखने वाली स्वछंद विचारों वाली, पाश्चात्य विचारों से रंगी मालती का हृदय परिवर्तन कराकर उसे भी उच्च चरित्रवान प्रस्तुत कर ही देते हैं।

सोनकर का उपन्यास 'सूअरदान' बड़ा ही गज़ब का उपन्यास है। उपन्यास में विभिन्न कड़ियों को जोडकर समाज में फैली भयंकर समस्याओं तथा सड़ांधों को उजागर करने

का प्रयास किया गया है। उपन्यास का कथानक सम्बद्ध है। उपन्यास की सारी घटनाएँ एक–दूसरे से सम्बद्ध हैं। उपन्यास में वर्ण भेद, वर्ग भेद, कन्या भ्रूण हत्या, धर्माडम्बर, आतंक, उच्चवर्ग द्वारा शोषण, महामारी, भूखमरी, तस्कारी, लूट तथा सैक्स के प्रति अनभिज्ञता आदि मुख्य समस्याएँ चित्रित हुई हैं। सोनकर अपना ध्येय व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहे हैं। सोनकर बहुव्यंगी, बहुरंगी विचारों और बातों का चितेरा लेखक है।

सेनकर द्वारा लिखित 'सूअरदान' दलित चेतना पर आधारित उपन्यास है। दलित वर्ग के लिए सोनकर द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। समाज में उत्पन्न साम्प्रदायिकता और जाति–पाति की खाई को पाटने की जो कोशिश सोनकर ने की है, वह वास्तव में सराहनीय है। सोनकर एक दलित लेखक के रूप में उभरकर हिन्दी साहित्य में आए हैं। समाज के विखंडित वर्गों को एकागर करने का उनका स्वप्न एक दिन जरूर साकार होगा, उस दिन भारत का नवनिर्माण होगा। चारों ओर विश्वबन्धुता, भाईचारा, साम्यवाद, आडम्बरहीनता, प्रेम, अहिंसा का वातावरण होगा। न कोई दलित होगा और न ही कोई उच्च होगा। सभी अपना जीवन बिना किसी भेदभाव के साथ व्यतीत करेगें।

'सूअरदान' उपन्यास का कथानक कुछ इस तरह से है कि रामचन्द्र त्रिवेदी, सज्जन खटिक, घसीटे चमार और सलवंत यादव विदेशों से उच्च तकनीकी शिक्षा ग्रहणकर अपने गांव सिंहासनखेड़ा आए थे। रामचन्द्र त्रिवेदी ने एम0बी00ए0, सज्जन खटिक ने बी0टेक0 सलवंत यादव ने वैटर्नरी डॉक्टर की डिग्री ली थी, घसीटे चमार ने बार–एट लॉ की डिग्री ली। इन चारों को देश–विदेश में अच्छी नौकरियों मिल रही थीं, लेकिन ये लोग कहीं भी नौकरी नहीं करना चाहते थे। चारों तरफ आतंक का वातावरण फैला हुआ है। शहरों में मारकाट हो रही है। सैंकड़ों की संख्या में निर्दोश लोग मारे जाते हैं। वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते थे जो अशिक्षित बेरोजगारों को नौकरी दे सकें, विशेषकर ग्रामीण नवयुवकों को। गांव में एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे जहां प्यार समानता और भाईचारा हो। गांवो की गरीबी को वे लोग जड़ से उ खाड़ फैंकना चाहते थे। सदियों से समाज में चली आ रही अंध धार्मिकता को उखाड़ फैंकना चाहते थे। जातिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बन्धुता पर यकीन करते थे।

चारों ने मिलकर गांव सिंहासनखेड़ा में पंद्रह हैक्टेयर जमीन पर पिगरी फार्म बैंकों की मदद से खोल दिया। अच्छी नस्ल के देशी–विदेशी सूअर और सूअरियों र खे गए। एक–एक सूअरिया बारह–बाहर बच्चों को जन्म देती है। तीन सौ सूअर और तीन सौ सूअरियें एक साल में तीन हजार से ऊपर निकल गए। इनकी सप्लाई देश–विदेश में होने लगी। चारों अपने–अपने फन में माहित थे। कोई किसी से कम नहीं था। सभी में आपस में प्यार और भाईचारा था। चालाकी, चापलूसी किसी में नहीं थी। चारों ईमानदारी की प्रतिमूर्ति थे। छः सालों के अन्दर चारों करोड़ों के आदमी बन गए थे। चारों की उम्र तीस साल से कम थी चारों अविवाहित थे। इतने धानाढ़य होने के बाद भी लड़कियों की कमी थी। कन्या भ्रूण हत्या की वजह से कन्याओं का अकाल पड़ गया था। चारों शादी करना चाहते थे। कोई लड़की नजर नहीं आ रही थी।

''रामचन्द्र त्रिवेदी और उनके पार्टनरों का सूअर फार्म मन्दिर से चौबिस मीटर दूर था। इनके घर की डगमगाती हालत को इस सूअर फार्म ने संभाला था। जैसे मकान की गिरती हुई छत को एक मोटी लकड़ी की धन्नी संभाल लेती है। सारे गांव के ब्राह्मणों ने रामचन्द्र त्रिवेदी का विरोध किया था कि सूअर पालना मेहतरों का कार्य है। तू तो मेहतर बन गया है। सदियों से ब्राह्मणों का कार्य ज्ञानी बनना है। ज्ञान बांटना है। ज्ञान के बदले भिक्षा ग्रहण करना है। अगर तेरी तरह सभी मेहतर बन गए तों इस धरती में धर्म विलुप्त हो जाएगा।''

मिस हैरी सिल्वा जो इंग्लैड में उनके साथ पढ़ी थी। अचानक भारत आती है और उनसे मिलने उनके फार्म जाती है। वे चारों ही उसे बहुत पसन्द करते थे, लेकिन एक–दूसरे के लिए त्याग करना चाहते थे। वह भी उन चारों को ही पसंद करती थी। आखिरी निर्णय के रूप में वह कहती है–''मैं चारों से एक साथ शादी करूंगी और आप लोग जिस समय आपस में लड़ेंगे उसी समय मैं चारों को तलाक देकर इंग्लैड चली जाऊंगी।'' चारों उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि समाज में कन्या भ्रूण हत्या के कारण समाज में लड़कियों की कमी उनको ऐसा करने पर विवरश कर रही थी। सोनकर ने स्वयं ही लिखा है कि यह महाभारत युग की याद दिला रहा थ जब द्रौपदी ने पांचों पांडवों से शादी की थी। इस समय आज वह युग दोबारा दोहराया जा रहा था।

सोनकर लिखते हैं कि पुजारी दयाशंकर को यह शादी व्याभिचार तथा धर्म के विरूद्ध लग रही थी। ''उनको यह शादी कुत्तों की याद दिला रही थी। जैसे अगस्त–सितम्बर माह में एक कुतिया के पीछे पांच–छः कुत्ते दौड़ा करते हैं। अपनढ़ औरतें आश्चर्यचकित हो रही थी। पढ़ी लिखी औरतें और लड़कियां इसमें कोई भी बुराई नहीं देख रही थी। लड़कियों की कमी इस समस्या का समाधान कर रही थी।''

सोनकर ने कथा साहित्य में पाठक वर्ग को बांधे र खने की अक्षम्य क्षमता है। वे जानते हैं कि किस प्रकार पाठक वर्ग को सम्मोहित करना है। वे कथा साहित्य के

जादूगर हैं। उन्हें पता है कि किस प्रकार चीनी को शहद में परिवर्तित किया जाता है। सोनकर उस घुड़सवार की भांति हैं जो जानता है कि घोड़े की लगाम कब और कहां खींचकर रखनी है? वे भी अपनी कथा साहित्य में घटनाओं की डोर अपने हाथ में उस घुड़सवार की भांति अंत तक ढीली नहीं छोड़ते।

सोनकर अपनी बात को पूरी तरह समझाते है। अपनी शैली की परिपक्वता तथा शिशिष्टता के कारण पाठक को बांधकर रखना, इनकी शैली की विलक्षणता है। पाठक को पहली ही पंक्ति से ऐस बांध लेते हैं जैसे कोई जादूगर नये–नये करतब दिखाकर दर्शकों को बांध लेता है। उपन्यास की पहली ही पंक्तियों से सोनकर की दार्शनिकता तथा देशप्रेम के साथ–साथ समाज की चिन्ता की भी अभिव्यक्ति होती है– ''आदिकाल से धर्म और कर्म का युद्ध चलता रहता है। सदैव धर्म कर्म पर भारी पड़ता है। अब कर्म धर्म पर भारी पड़ रहा है। धर्म एक कपोल कल्पित चीज पर नर संहार हो जाते हैं। सृष्टि को मिटाने तक की नौबत आ जाती है। सच्चा कर्म सृष्टि को बचाता है और बनाता भी है।'' कहना चाहूंगा कि सोनकर ने अपनी सम्पूर्ण कथा का बीज इस कथन के माध्यम से डाल दिया है। वे अपने कथाक्रम को मकड़ी के जाले की भांति चुनते–बुनते हैं। वास्तव में सोनकर उस खांटी लौहार की भांति हैं, जो जानता है कि लोहा कहाँ से गर्म है और हथौड़े की चोट कहाँ चलानी है। वास्तव में सोनकर एक चतुर शिल्पकार हैं, जो पाठकवर्ग के मनोभाव को भांप लेते हैं कि किस प्रकार उनके मन में पैठ स्थापित करनी है। समाज में व्याप्त बुराईयों का शमन कैसे करना है? उसका सही रास्ता क्या है? बिल्कुल एक दार्शनिक की भांति एक वैज्ञानिक की भांति अपने तथ्यों का प्रयोगबद्ध रूप से लेखन तथा पाठक वर्ग की सहमति के साथ अभिव्यक्त करते हुए लिखते चले जाते हैं। सोनकर में यही चातुर्थ है कि वे एक चतुर शिकारी की भांति अपनी बातों और अपने साहित्य की कला के माध्यम से अचूक निशाना लगाते हैं।

आज समाज में फैले नरसंहार का मुख्य कारण क्या है– धन का अत्यधिक मोह तथा निम्न वर्ग का अत्यधिक गरीब होना। धर्म तभी संभव है जब आपके पास प्रर्याप्त जीवनोपयोगी वस्तुएं उपलब्ध हैं अन्यथा मनुष्य धर्म को भूलकर ही ऐसे कार्यो को अंजाम देता है जो समाज विरोधी होते हैं। 'सूअरदान' उपन्यास के अंत में सोनकर ने हताशवादियों द्वारा चारों पार्टनरों के ट्रकों को लूट लेने का यह सबसे बड़ा कारण बतलाया है। कर्म ही वास्तविक सत्य है, बाकि सब कुछ निरर्थक है, मिथ्या है। कर्म से बड़ी दूसरी कोई सच्चाई नहीं है।

उपन्यास में सोनकर द्वारा उठाया एक कथ्यांश ''कन्या भ्रूण हत्या'' उपन्यास का प्राण है। मुख्य कथानक के साथ इसे ऐसे जोड़ा गया है जैसे मुर्दे में जान डाल दी गयी हो। चारों पार्टनरों के हाथ केवल मात्र एक लड़की के विवाह का चित्रण करके समाज में लड़कियों की कमी तथा 'कन्या भ्रूण हत्या'' के प्रति समाज को भविष्य में आने वाले खतरे से सावधान करवाने का प्रयास किया है। इस कथांग के माध्यम से सोनकर की दूरदर्शिता के दर्शन होते हैं। मिस हैरी सिल्वा के साथ चारों का विवाह की घटना पूरे गांव में चर्चा का विषय बन जाती है। ''कन्या भ्रूण हत्या की वजह से कन्याओं का अकाल पड़ गया था। चारों शादी करना चाहते थे। कोई लड़की नजर नहीं आ रही थी।''

प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' तथा सोनकर के उपन्यास 'सूअरदान' की समीक्षा निर्धारित तीन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया जाना ही इस समीक्षा का मुख्य ध्येय है। प्रेमचन्द के उपन्यास में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का उल्लेख हुआ है, वहीं सोनकर ने भी अपने उपन्यास में विभिन्न समस्याओं को उकेरा है, लेकिन इस समी क्षा की सीमा को ध्यान में रखते हुए उन सभी का उल्लेखन करना संभव नहीं है। समीक्षा बिन्दुओं का प्रारूप निम्नलिखित है–

(क)

1.किस उपन्यास में मानवतावादी दृष्टिकोण और विश्व बन्धुत्व का संदेश ज्यादा परिलक्षित होता है।

मानवतावाद और विश्वबन्धुता की भावना की भावना का चित्रण प्रस्तुत करने में प्रेमचन्द का 'गोदान' तथा सोनकर का 'सूअरदान' दोनों उपन्यास सफल रहे हैं। प्रेमचन्द के पात्र गरीब, असहाय, दलित वर्ग से सम्बन्धित हैं, जो मानवतावाद के सिद्धान्त का पालन करते हुए दिखाई देते हैं, क्योंकि प्रेम. चन्द गांधीवाद से प्रभावित नजर आते हैं। वास्तव में इस उपन्यास की रचना ही ऐसा काल में हुई थी अब मुन्शी प्रेम. चन्द अपने जीवन के आखिरी पड़ाव पर थे। जीवन के सभी दौरों से गुजर चुके थे। समाज को चारों ओर से देख–परख चुके थे। समाज में रहने वाले प्रत्येक वर्ग की स्थितियों–परिस्थितियों से पूर्ण रूप से वाकिफ़ थे। कहा जा सकता है कि 'गोदान' प्रेमचन्द की प्रौढ़ कृति है। यह उपन्यास उनका अंतिम उपन्यास है।

प्रेमचन्द 'गोदान' में होरी और भोला के माध्यम से मानवता और बन्धुता की भावना का चित्रण प्रस्तुत करते हैं। होरी गाय की इच्छा रखता था और भोला के पास गायें थी। इसलिए वह भोला से गाये उधार मांगता है, क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे। भोला कहता है, ''तुम तो ऐसी बातें करते हो होरी, जैसे हम–तुम दो हैं। तुम गाय ले जाओ, दाम जो चाहे देना। जैसे मेरे घर रही, वैसे तुम्हारे घर रही। अस्सी रूपये में ली थी, तुम अस्सी रूपये ही दो। लेकिन मेरे पास नगद नहीं हैं दादा समझ लो।' तो तुमसे नकद मांगता

कौन है भाई।'' उस समय ऐसी बन्धुता की भावना सचमुच समाज में थी, लेकिन अब ऐसा देखने को कम ही मिलता है।

'गोदान' में प्रेमचन्द मेहता के माध्यम से एक दार्शनिक की भाति मानववाद और विश्वबन्धुता के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं, 'मानव समाज की एकता में मेहता का दृढ़ विश्वास था, मगर इस विश्वास के लिए उन्हें ईश्वर तत्व के मानने की जरूरत न मालूम होती थी। उनका मानव प्रेम इस आधार पर अवलम्बित न था कि प्राणि मात्र में एक आत्मा का निवास है। द्वैत और अद्वैत का व्यवहारिक महत्व के सिवा वह और कोई उपयोग न समझते थे और यह व्यवहारिक महत्व उनके लिए मानव जाति को एक दूसरे के समीप लाना, आपस में भेदभाव को मिटाना और भ्रातृ भाव को दृढ़ करना ही था।'' इस तरह मानववाद और विश्वबन्धुता की भावना प्रेमचन्द के उपन्यास में भी दिखाई देती है।

दूसरी ओर सोनकर के पात्र निम्न वर्ग से होते हुए भी संघर्ष करते हैं और एक मुकाम में पहुंचने के उपरान्त विभिन्न प्रकार से अपने गांव तथा देशवासियों की मदद करना चाहते हैं। यहां तक इंग्लैंड से आयी हुई मिस हैरी सिल्वा गांववालों को जागरूक कर रही है। हर तरह से उनकी मदद कर रही है। गांव में पुजारी को एड्स हुआ है, यह सभी जान चुके थे और सत्यनारायण त्रिपाठी सभी गांववालों को उससे दूर रहने के लिए कहता है। ''एक बजुर्ग नन्दन महतो बोला– यह कैसे बीमारी है जो छूने से लग जाती है।''

उच्चवर्ग के लोग पुजारी को उसके घर से निकालकर दूर कहीं रहने के लिए मजबूर कर रहे थे। ''सत्यनारायण पंडित से कहता है– देखिए पुजारी जी, जाति और धर्म की मर्यादाऐं तभी तक निभाई जाती हैं जब तक उनसे कोई विपत्ति न आने वाली हो। हम इधर जाति और धर्म की मर्यादाऐं निभाऐं, उधर हमारी अर्थी तैयार हो जाये।''

लेकिन दलित जाति का प्रधान संकटा प्रसाद चिकवा पंडित को उनके चंगुल से बचाता है। वह गांववालों को जागरूक करता है तथा जिम्मेदारी लेता हुआ कहता है कि वह बीमारी छुआछूत नहीं है। पुजारी की पत्नी कहती है– ''बहुत–बहुत धन्यवाद बेटा! तुमने इन निर्दयी लोगों से पुजारी जी को बचा लिया। जाति धर्म कुछ नहीं होता। मानवता ही सब कुछ होती है। विपति के समय अपनी जातिवाला सत्यनारायण त्रिपाठी कहां काम आया? बेटा! तुम काम आए। तुमने इंसानियत दिखाई। पुजारी जी को छूने से सभी डरते हैं। तुमने उनको छूकर दिखाया। बेटा! तुम सदैव खुश रहा।'' ऐसे सन्दर्भों में सोनकर के उपन्यास में विश्वबन्धुता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

चिकवा का चारों पार्टनरों से पुजारी के सम्बन्ध में बात करना। उसका इलाज करवाने के लिए उसे अमेरिका ले जाना तथा पुजारी की बेटियों को पिगरी फार्म में काम पर र खना आदि मानवता और विश्वबन्धुता की ही भावना परिलक्षत होती है। ''तीनों बेटियों का मानना था– आदमी जाति से नहीं बल्कि कर्म से बड़ा होता है। जातिवाद, ऊँच नीच की भावना समाज में एक कोढ़ की तरह है। यदि इसका इलाज न किया गया तो पूरा समाज रोगी बन जाएगा।

मानवता तथा विश्वबन्धुता की भावना में सोनकर का उपन्यास पूर्ण रूप से सफल रहा है। तभी तो कामता प्रसाद बिष्ट पंडित के पिगरी फार्म की देखभाल करने पर उससे कहता है– आपको लोग नीच कहेंगे। मेहतर कहेंगे। आपको ब्राहम्ण बिरादरी से निकाल देंगे।'' लेकिन पंडित ऐसे समाज को ठुकरा देता है जिसमें नीच भावना परिलक्षित होती है। जहां जाति–पाति का टंटा लगाने वाले लोग समाज को चलाते हैं। पंडित कहता है– मुझे कोई फर्क नहतीं पड़ने वाला ऐसे घातक विचारधारा वाली जाति से मैं स्वयं निकल जाता हूँ। अब मेरी वही जाति है जिसने मुझे नया जीवन दिया है।''

सत्यनारायण त्रिपाठी तथा गांव के एक–दो लोगों ने मिलकर उन चारों पार्टनरों के खिलाफ एक गाय फार्म खोला। गांववालों से गायें तो दान ले ली लेकिन उनका चारा नहीं जुटा पाये। फार्म की सारी गाएं भूखी मरने लगती हैं लेकिन पिगरी फार्म के पार्टनर उस फार्म को भी खरीद लेते हैं। इस तरह सूअरों के साथ गाये फार्म भी चलाते हैं तथा गांवावालों को दूध फ्री मिलने लगता है। हजारों की संख्या में बेरोजगारों को रोजगार मिलने लगता है। सोनकर का यह कथ्यांक मानवता के दृष्टिकोण को चित्रित करने में सक्षम है।

यह भी चारों पार्टनरों का मानवतावादी दृष्टिकोण तथा विश्वन्धुता की भावना ही थी जिसने सत्यनारायण जैसे क्रूर, शोषक, अत्याचारी, व्याभिचारी तथा शातीर दिमाग वाले मनुष्य को भी बदल दिया। सत्यनारायण त्रिपाठी उनके पिगरी फार्म जाता है और झेंपता हुआ कहता है–''आप लोग सही हैं। मैं ही गलत था। बेकार मे मैं धर्म को लकर आप लोगों से टकरा रहा था। मैं चाहता हूँ कि आप लोग दिन रात तरक्की करें।'' सत्यनारायण त्रिपाठी को उनके दरवाजे पर जाना ही पड़ता है क्योंकि वह जलने से बदसूरत हो चुका था और आशा की किरण के रूप मे वह चारों पार्टनरों के पास अपने इलाज करवाने मे मदद के लिए गया था। उन्होनें उस पर दया की और उसका भी इलाज करवाया।

इस तरह वह भी अब चारों पार्टनरों से बहुत ही प्रभा. वित था। वह भी अब जी जान से पिगरी फार्म का काम करता है। गांव के बेरोजगारों तथा दूसरे इलाकों यहां तक कि विदेशो से आये मजदूरों, गरीबों को रोजगार देना मानवता और विश्वन्बधुता की भावना से भरा हुआ है, जो चारों पाटर्नर

बिना किसी भेदभाव के कर हरे थे। यहां तक उनके छः ट्रकों को हताशावादियों द्वारा लूट लेने पर भी वे उनसे कारण जानते हैं तथा उनका सहयोग करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

चिकवा प्राधानाचार्य को समझाता है कि आप गुरूजन हैं गुरूजन का काम करो। बच्चों का भविष्य सुधारों। उन्हें जातिप्रथा का पाठ न पढ़ाकर बन्धुत्व की भावना का पाठ पढ़ाओं। संकटा प्रसाद चिकवा ने गांव के डॉ. को समझाया कि गरीबों तथा दलितों की मदद करो। सरकार द्वारा दी गयी दवाईयां मरीजों को दो। उन्होनें गांव में दलित उत्पीड़न के मामले के प्रति सख्त रवैया अपनाते हुए कहा कि जो दलितों से घृणा करते हैं उनके खिलाफ 'एस.सी/एस.टी. उत्पीड़न एक्ट के तहत उनके खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज कराइए।'' संकटा प्रसाद चिकवा मुनादी करवाता कि पाठशालाओं मे एक पंक्ति मे बैठकर बच्चों को भोजन करवाओ।

निष्कर्शतः कहा जा सकता है कि सोनकर के उपन्यास मे विश्वबन्धुता तथा मानवता का संदेश प्रेमचन्द के उपन्सास से कहीं ज्यादा है। मैं ये नहीं कहता कि प्रेमचन्द्र के उपन्यास में इन तथ्यों की कमी है। लेकिन इस दृष्टिकोण से सोनकर आगे निकलते नजर आ रहे हैं।

(ख)

2. किस उपन्सास मे किसानों, मजदूरो और फटेहाल जिन्दगी जीने वाले लोगों के चित्रण के साथ–साथ उनको इस दयनीय अवस्था से बहार निकालने की पुरजोर कोशिश ही गयी है और उपन्यासकार इसमें ज्यादा सफल हुआ है।

दोनो उपन्यासों में फटेहाल जिन्दगी का चित्रण ब खूबी देखने को मिलता है। यदि प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास मे होरी तथा उसके परिवार और अन्य असहाय लोगों के माध्यम से फटेहाल जिन्दगी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है, तो वहीं सोनकर ने भी अपने विभिन्न पात्रों से 'सूअरदान' में दलित जाति से संबधित विभिन्न फटेहाल जिन्दगी के चित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रेमचन्द के 'गोदान' में एक जमींदार और पूंजीपति वर्ग है जो भोग–विलास वृति, स्वार्थपरकता तथा शोषक का रूप प्रस्तुत करते हैं, वहीं कृषक, दलित, गरीब, असहाय वर्ग करूणा को उभारने मे सहायक सिद्ध होता है। पूंजीपति मौज–मस्ती, मुकदमेंबाजी, इलेक्शन शिकार धनुष यज्ञ पर बहुत सा धन व्यर्थ करते हैं, तो वहीं गरीब दो रोटी के लिए मोहताज है। '' प्रेमचन्द होरी तथा धनिया के परिवार की विपन्नता तथा फटेहाल जिन्दगी का चित्रण करते हुए लिखते है–तीन लड़के बचपन में ही मर गए क्योंकि वह एक धेले की भी दवा न मंगवा सकी थी। उसकी उम्र अभी क्या थी पर सारे बाल पक गये थे, चेहरे पर झुरियां पड़ गयी थीं'' इसी गरीबी के कारण उनके परिवार को भूखे भी सोना पड़ता था।

प्रेमचन्द होरी की दयनीय तथा फटेहल जिन्दगी का चित्रण करते हुए लिखते हैं, ''होरी की दशा दिन–दिन गिरती जा रही थी। जीवन के संघर्ष में सदैव हार हुई।.....।'' प्रेम. चन्द ने ऐसे चित्रण के माध्यम से अपने पात्रों के लिए दया तो बटोरी है, लेकिन उनको इस जिन्दगी से बाहर निकालने का कोई रास्ता नहीं सुझाया। उपन्यास के अंत में होरी की इतनी दयनीय स्थिति हो गई कि वे अब मरणासन्न हो गए। '' सारा गांव जमा हो गया। होरी खाट पर पड़ा शायद सब कुछ देखता था, सब बुछ समझता था, पर जुबान बंद हो गई थी। हां, उसकी आंखो से बहते हुए आंसू बतला रहे थे कि मोह का बंधन तोड़ना कितना कठिन हो रहा है।''..... मगर सब कुछ समझकर भी धनिया आशा की मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी। आंखों से आंसू गिर रहे थे, मगर यन्त्र की भांति दौड़–दौड़कर कभी आम भूनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूं की भूसी की मालिस करती। क्या करे पैसे नहीं हैं, नहीं किसी को भेजकर डॉक्टर बुलाती।

प्रेमचन्द के उपन्सास 'गोदान' का एक और पात्र अप. ने जीवन में सुख नहीं भोगता, वह है भोला। प्रेमचन्द लिखते हैं,, 'उसने अपने जीवन मे कभी यह न सुना था कि किसी स्त्री ने अपने पति को जूते से मारा हो। जूतों से क्या, थप्पड़ या घूंसे से मारने की भी कोई घटना उसे याद न आती थी और आज नोहरी ने भोला को जूतों से पीटा और सब लोग तमाशा देखते रहे। इस औरत से कैसे उस अभागे का गला छूटे ! अब तो भोला को कहीं डूब ही मरना चाहिए।'' आगे गांव की दशा और दयनीय स्थिति के संबध में लिखते हैं– ''गांव क्या था, पुरवा था, दस–बारह घरों का जिसमें आधे खपरैल के थे, आधे फूस के। मथुरा के घर, भोला की बैठक और सीलिया की झोंपड़ी के चित्र गांव वाले के रहन–सहन पर पूरा प्रकाश डालते हैं– 'एक किनारे मिट्टी का घड़ा था, दूसरी और चूल्हा था, जहां दो–तीन पीतल और लोहे के बासन मंजे–धुले थे, बीच में पुवाल बिछा था, गांव वालों के लिए खेत और खलिहान विशेष महत्व र खते हैं क्योंकि उनका अधिकांश समय यहीं बीतता है।

उपन्यास के अंत में "धनिया यंत्र की भांति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली– महाराज घर में गाय है, न बछिया न पैसा। यही पैसे है, यही इनका गोदान है।" प्रेमचन्द के उपन्यास का अंत बड़े गजब तरीके से हुआ है।

वहीं सोनकर अपने उपन्यास 'सूअरदान' में फटेहल जिन्दगी के सम्बन्ध में लिखते हैं, 'रामचन्द्र त्रिवेदी और उनके पार्टनरों का पिगरी फार्म मन्दिर से चौबिस मीटर दूर था

इनके घर की डगमगाती हालत को इस सूअर फार्म ने संभ. ाला था। जैसे मकान की गिरती हुई छत को एक मोटी लकड़ी की घन्नी संभल लेती है।" सोनकर ने एक अन्य कथाक्रम को जोड़ते हुए पिछड़े, गरीब तथा दलितों की फटहेल जिन्दगी का चित्रण सन्नों के माध्यम से करते हुए लिखते हैं कि पंजाब में सैंकड़ों मजदूरों के साथ ट्क में लादकर अपना घर बार छोड़कर यहां भट्टों पर काम करने आये थे। ठेकेदार उन्हें घर नहीं जाने देता था। मजदूरों की औरतों और लड़कियों की इज्जत लूट लेते थे। सन्नों ने ठेकेदार जयन्त सिंह से मुक्ति के लिए अपने आपको दांव पर लगा दिया था। "सन्नो घसिटते हुए बोली– तू हिजड़ा है। अगर तू हिजड़ा न होता तो औरत पर इस तरह अत्याचार नहीं करता। छोड़ मेरा हाथ नासपीटे! दादा गयादीन तुम लोग आओ इस हरामी को ठीक कर दो। आज यह मेरे साथ अत्याचार कर रहा है, कल तुम्हारी लड़कियों और स्त्रियों के साथ भी करेगा।" सन्नों उससे संघ र्ष करती है और उसके सिर पर ईंट दे मारती है और फिर सारे मजदूर उन लठैतों तथा ठेकेदार पर टूट पड़ते हैं। इस तरह वे मुक्ति पाकर गांव वापस आकर पिगरी फार्म में नौकरी करते हैं।

सत्यनारायण त्रिपाठी ने एक दलित लड़की को जबरन रखैल बनाकर रखा था। वह कहती है– "हमका अपने अम्मा बप्पा के पास जाए देव" वह कहती है– ठाकुरो, कुर्मियों–यादवों और तुम्हारी जाति ब्राह्मनों की बहुत लड़कियां खूबसूरत हैं। तुम उनकी तरफ आंख उठाके दे खन कौ हिम्मत नही करत हौ क्योंकि वे लोग दबंग है। यदि तुम ऐसा करिहौ तो तुमका अपनी जान से हाथ ध ावावय का पड़ी।" यहां सोनकर ने बड़ी ही चतुराई से उच्च वर्ग को चेतावनी दी है कि तुम केवल निसहाय और दुर्बल पर अत्याचार करते हो, यदि तुम अपने से ताकतवर के साथ ऐसा करते हो, तो तुम्हारा शोषण उसी दिन समाप्त हो के साथ ऐसा करते हो, तो तुम्हारा शोषण उसी दिन समाप्त हो जायेगा। सुनयना को वे इस दलदल से बाहर निकालने में सक्षम रहे हैं।

सोनकर दलित वर्ग को उनका अधिकार दिलाने की कोशिश करते हैं और उसमें सफल भी होते दिखाई देते है, जिसमें वे उच्च वर्ग के शोषण से बाहर निकालने का साहस भी रखते हैं। सोनकर लिखते हैं–'मुनादी करने वाला तेज आवाज लगाता है– सुनो–सुनो सुनो गांव वासियों! सरकार का आदेश सुनो।'

सत्यनारायण त्रिपाठी जोर आवाज में बोला–"क्या है सरकार का आदेश"?

मुनादी करने वाले ने कहा– "इस गांव सिंहासन खेड़ा की आबादी में साठ प्रतिशत दलित हैं बाकि दूसरी जाति के हैं। अब इस गांव का ग्राम प्रधान दलित होगा। यह गांव दलितों को लिए रिजर्व हो गया है।" उच्च वर्ग से जब सता छिनने वाली हो तो कैसे तड़फता है–"सत्यनारायण त्रिपाठी चिल्लाते हुए बोला– बंद करो डुग्गी पीटना। इस गांव का ग्राम प्रधान मैं हूं और मैं ही रहूंगा। दलित हम सवर्णो पर कैसे शासन कर सकते हैं। यह आदेश झूठा है गांववालों के साथ मैं आन्दोलन करूंगा। लेकिन इस गांव में एक दलित को अपने उपर शासन करने नहीं दूंगा।"

"पन्द्रह साल से मैं लगातार ग्राम प्रधान हूं। मुझे आज तक कोई नहीं हरा पाया जो भी साला मेरे सामने आया उसको यमपुरी पहुंचा दिया। गांव वाले तो यही समझ रहे हैं कि तुम नहीं बल्कि मैं इलैक्शन लड़ रहा हूं। इसलिए मेरे भय के कारण तुमको वोट मिलेगा। इस पढ़े लिखे चिकवा को गांव छोड़कर भागना पड़ेगा। नहीं तो यमलोक जाना पड़ेगा।" लेकिन संकटा प्रसाद चिकवा इलैक्शन जीत जाता है। यह दलित वर्ग की जीत थी। उच्च वर्ग के आतंक से बच गए थे।

"सत्यनारायण त्रिपाठी जैसे ग्राम प्रधानों ने गांव की तरक्की को भूलकर अपनी स्वयं की तरक्की करने लगे। अप. ने बड़े–बड़े साम्राज्य स्थापित करने लगे। उन्होंने गुंडो की सेना रख ली। उनके बल पर गांव के विकास के लिए आया धन हड़पने लगे। उनके अत्यचारों से गांव की जनता त्राहि–त्राहि करने लगी। संकटा प्रसाद चिकवा ने इस लुटेरी प्रथा को तोड़ा।"

चिकवा ने पूर्व प्रधान द्वारा बनाई झूठी मजदूरों की लिस्ट को रद्द कर दिया जो उसने अपने रिश्तेदारों के नाम लिखे थे और उनकी पगार हजम करता रहा था। पूर्वप्रधान इस बात से बौखला जाता है। वह चिकवा को मारने की ध ामकी देता है। चिकवा कहता है– "मैं शहर छोड़कर अपने गांव की पवित्र मिट्टी में मिलने आया हूं। मैं इस गावं की मिट्टी को तुम जैसे लोगों से अब और अपवित्र नहीं होने दूंगा। मैंने अपने एक साल के कार्यालय में चौतरफा विकास कर दिया है। सारा गांव मेरे साथ है।"

पूर्वप्रधान सुनयना के साथ चिकवा के नाजायज संबंध ों का झूठा आरोप लगाता है, जिसे पूर्वप्रधान ने जबरन अप. नी रखैल बनाकर रखा था। वह कहता है–"सरकार को लि खकर भेजो की मैं सातवें दिन आत्मदाह कर लूंगा। यदि ग्राम प्रधान चिकवा को नहीं हटाया गया।" लेकिन सत्यनारायण त्रिपाठी अपने ही चकव्यूह में फंस जाता है। उन्होंने नाटक रचा था कि मिट्टी के तेल की जगह पानी की केन उड़ेलेंगे, लेकिन सुनयना ने इस योजना को सुन लिया था और पानी की केन के स्थान पर मिट्टी का तेल रख देती है और वह अपने शरीर पर इसे उड़ेलकर आग लगा लेता है और जल जाता है। ''त्रिपाठी बोला– मैं वास्तव में जल रहा हूं। डाक्टर बचाओ, बचाओ, बचाओ।''.....डॉ. जोरावर सिंह–अरे यह क्या हो रहा है? अरे! पानी तेल कैसे बन गया ?'' इस तरह

सुनयना ने पुलिस को सारी व्यथा बताई तथा बताया कि सत्यानारायण ही उसके बच्चे का बाप है।

संकटा प्रसाद चिकवा को उसक कार्यों के लिए सरकार द्वारा सराहना मिलती है। सोनकर बड़े ही जबरस्त तरीके से पापियों के अन्दर छिपे राक्षसों को दहन करके उनमें सद्भावना का संचार किया है। उन्हें एक नई राह दि खाई है।

सोनकर कहते हैं कि यदि गांवो कस्बो, जिलों प्रदेशों व देश का व्यापारी या उद्योगपति एक–एक गांव, एक–एक कस्बा, एक–एक जिला, एक–एक प्रदेश से गरीबी दूर करने का बीड़ा उठा ले, तो देश से गरीबी दूर हो जाएगी। लोगों को मेढ़क और चूहे भुनकर नहीं खाने पड़ेगे।'' इस देश में ऐसे बहुत से मानव रहते है जो अन्न के अभाव में उपरोक्त जीवों को खाते हैं। उनको देखकर क्या देश के धनाढ़य लोगों को शर्म नही आती? लगता ऐसे लोग बेशर्म हैं। ऐसे लोगों को रात में नींद कैसे आती है? ऐसे लोग मुर्दा होते हैं जिनमें कोई भी हलचल नहीं होती है। लेकिन शराब और शबाव की गंध पड़तें ही ये मूर्दा लोग जिन्दा हो जाते हैं और जिन्दा मानवों को खाने लगते हैं। जिनमें लड़कियां और औरतें ज्यादा होती है। सोनकर ऐसे प्रश्न को उड़ेलकर मन को झकझोर कर रख देते हैं।

झम्मन, छक्कन और बक्खन मिस हैरी से अपनी दशा का चित्रण करते हुए कहते हैं।–''जब बच्चे भूख से तड़फते थे। हम लोग जानवरों के गोबर से जो दाने निकलते थे उनको धुलकर एवं सुखाकर पीसते थे फिर उनकी रोटियां बनाकर खाते थे।'' वे बताते हैं कि जब बड़ी बहुमंजिला इमारतों में काम करते यदि कोई मजदूर मर जाता था तो ठेकेदार उन्हें मिट्टी में दफनवा देता था और मुवावजा वगैरा कुछ नहीं दिया जाता था। उनके घर खबर तक भी नहीं दी जाती थी।

कलकता से आए सोमराज मजूमदार मिस हैरी को बताता है कि कोलकता में आदमी घोड़े की तरह रिक्शा खींचता है। यह बहुत ही दर्दनाक दृश्य होता है। रिक्शा खींचने वाला मजूदर चार पांच बजे सुबह जग जाता है फिर सड़क के किनारे नाले आदि के पास मल विसर्जन करता है। यदि वह लेट हो जाता है तो मल विसर्जन करने का स्थान नहीं मिलता है। दिन भर मल को पेट के अन्दर दबाए सड़क पर दौड़ता रहता है। घोड़ों की तरह तेजी से दौड़ता रहता है। घोड़े को स्वतंत्रता है कि वह खुले आम सड़क के उपर मल विसर्जन करे लेकिन मानव को यह छूट कतई नहीं है।''

सोनकर ने मुंबई हमले से आहत एक बुढ़िया के माध्यम से झुग्गी झोपड़ियों की जिन्दगी और उनकी फटेहाल जिन्दगी का चित्रण किया है। गन्दी–गन्दी नालियां, और भूख से परेशान जीवन का नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है।

पूंजीवाद शोषण पर आधारित होता है। मार्क्स के अनुसार समाज में दो ही वर्ग होते हैं शोषक और शोषित। शोषक वर्ग शोषित वर्ग से लाभ उठाता है और शोषित पिसता है। गोदान का मुख्य कथानक भी शोषण पर आधारित है। गांव में जमींदार, रायसाहब, अमरपाल सिंह, महाजन–दातादीन, पुलिस का दारोगा, पटवारी, झिंगुरीसिंह तथा गांव के पंच ये सब शोषक हैं। उपन्यास में रामसेवक इन शोषकों के शोषण का पर्दाफाश करता हुआ कहता है–'थाना, पुलिस, कचहरी, अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों तरफ लूट है, जो गरीब है, वेबस है, उसी की गर्दन काटने के लिए सब तैयार हैं।''रायसाहब रामलीला के नाम पर चंदा वसूलते हैं तो महाराज ऋण पर ज्यादा बयाज लगाकर पैसे ऐंठता है। खन्ना मजदूरों को कम पगार देकर लूटता है।

होरी दिन रात पसीना बहा करके अपनी छोटी सी इच्छा द्वार पर गाय बांधने को पूरा नहीं कर पाता। उसकी मेहतो कहलवाने की इच्छा अपूर्ण रह जाती है। वह मात्र दूसरों के खेतों में काम करने वाला मजदूर बनकर रह जाता है। पूंजीवादी व्यवस्था उसका जमकर शोषण करते हैं। उपन्यास में गांव के पंचायत और गांव के पंच होरी पर अनेक अवसरों पर दण्ड देते हैं और उसका खूब शोषण करते हैं। गो हत्या के कारण, गोबर के अन्तर्जातीय विवाह के कारण उसे जुर्माना देना पड़ता है और उसकी हालत के लिए यही सब जिम्मेदार हैं। उसके उपर कर्ज का बोंझ बढ़ता ही जाता है और उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त होता है।

अंत में सोनकर ने एक ओर समस्या को उजागर किया है। 'हताश लोग गांवों में मारकाट करके जंगलों में भाग जाते हैं। प्रशासन बिल्कुल लुंजपुज हो जाता है। जनता ऐसे लोगों से इतनी भयभीत है कि शाम छः बजे से ही अपने घरों में कैद हो जाते हैं। हताशावादी लोगों में गरीब, किसान मजदूर आदि हैं। वे अपनी फटेहल जिन्दगी से परेशान होकर यह कार्य करते हैं। सोनकर ने चारों पार्टनरों के माध्यम से इस समस्या का समाधान निकालने का प्रयास किया है। उनका आर्थिक सहायता देकर उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किए जाने की परिचर्चा होती है।

मानना पड़ेगा कि प्रेमचन्द के उपन्यास के पात्र सोनकर के पात्रों से कहीं ज्यादा दयनीय दिखते हैं और वे अपने लिए पाठक वर्ग की संवेदना, दया और करूणा भी बटोर लेते हैं। पात्रों की फटेहाल तथा दयनीय चित्रण करने में प्रेमचन्द की पकड़ सोनकर से कहीं अधिक है। लेकिन प्रेमचन्द ने उन्हें फटेहाल जिन्दगी से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं सुझाया। यह कार्य तो केवल सोनकर के उप. न्सास 'सूअरदान' में दिखाई देता है। जिसमें सोनकर ने

लगभग सभी शोषित पात्रों को शोषण से विमुक्त होने का मार्ग दिखाया है। उनके पात्र अपनी फटेहाल जिन्दगी को अलविदा कहने में, पूरी तरह सफल रहें है। सोनकर के पात्र शुरू से अंत तक जिन्गी से जुझते रहे ओर आखिर मे सिंहासनखेड़ा गांव मे आकर पिगरी फार्म मे नौकरी करते हुए अपने जुझारू जीवन को सफल बना देते हैं। सोनकर ने पूरी कोशिश की है कि दलित वर्ग को एक चेतना दी जाए कि वह केवल शोषित होने के लिए ही नहीं बना है। शोषक के प्रति आन्दोलन करके उसका पुरजोर विरोध करने मे भी सक्षम है, लेकिन उन्हें एकजुट होकर यह कार्य करना होगा।

(ग)

किस उपन्यास में अंध धार्मिका मिथको को स्थापित किया गया है और किस उपन्यास मे इनको जड़ से उ खाड़कर फैंका गया है।

गांव तथा देहातों में किसान, मजदूर, गरीब तथा दलित वर्ग धर्माडम्बरों के ज्यादा शिकार होते हैं। प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' में भारतीय परम्परा तथा अंध धार्मिक मिथक पूर्ण रूप से देखने को मिलते हैं। ग्रामीण संस्कृति परम्परावादी तथा अंध धार्मिक मिथको में विश्वास करने वाली है। वह ब्राह्मण से लिया गया उधार नहीं रखना चाहता, क्योंकि वह इसे पापा समझता है। वह समझता है कि यदि ऐसा न किया तो आदमी कोढ़ी हो जाता है। घर आंगन में पुलिस का आना अपनी प्रतिष्ठा और मान–मर्यादा के खिलाफ समझता है। होरी का चचेरा भाई जब गाय को जहर दे देता है तो उसके घर की तलाशी होने वाली है। वह बहुत चिन्तित हो जाता है ''तलाशी! होरी की सांस ऊपर नीचे होने लगी। उसके भाई हीरा के घर की तलाशी होगी और हीरा घर मे नहीं है और फिर होरी के जीते जी, उसके देखते यह तालाशी न होने पायेगी।.....तलाशी उसके घर की हुई या उसके भाई के घर की, हुई तो एक ही बात, हीरा अलग सही पर दुनियां तो जानती है, वह उसका भाई है, मगर इस वक्त उसका कुछ बस नहीं।'' अतः उससे बचने के लिए कुछ भी करता है। उसे रिश्वत ही क्यों न देनी पड़े और उस रिश्वत के लिए उधार ही क्यों न लेना पड़े लेकिन पुलिस घर में नही आनी चाहिए। बेटी के विवाह में खूब खर्चा करना चाहिए। धनिया पूरे ठाठ से विवाह करने में शान समझती है। तभी तो सोना के विवाह में धनिया दहेज भी देना चाहती है। वह कहती है, हमें भी तो अपनी मर्जाद का निर्वाह करना है.....कुल की मर्जाद नही छोड़ी जाती।'' इन्हीं धार्मिक आडम्बरों से ग्रस्त होने के कारण वे और दीन हो जाते हैं।

होरी का अपनी बिरादरी से बाहर निकालने के डर से जुर्माना भुगतना पड़ता है। वह पंचायत द्वारा लगाये ये दण्ड के सौ रूपये नकद और तीस मन अनाज चुकाता है। 'वह कहता है, ''धनिया तेरे पैरों पड़ता हूं, चुप रह। हम सब बिरादरी के चाकर हैं, उसके बाहर नहीं जा सकते। वह जो डांड लगाती है, जिसे सिर झुकाकर मंजूर कर।'' धर्म और ब्राह्मण का भय भी दुरावस्था का एक कारण है। उसका बेटा इन अंधविश्वासों को नहीं मानता लेकिन होरी मानता है। गो हत्या के उपरान्त प्रायश्चित रूप में हीरो को तीर्थ यात्रा करनी पड़ती है और भोज देना पड़ता है। अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ किसान मानता है कि कुछ लोगों की नजर लग. ने से ही गाय का दूध सुख जाता है। गांव वाले सत्य–असत्य की परख के लिए गंगाजल लेकर शपथ ग्रहण करते हैं। परदेश से लौटने पर बैना बांटा जाता है, सत्यनारायण की कथा सुनी जाती है। कथा के बाद आरती में पैसा न डालना मर्यादा के विरूद्ध माना जाता है। वह कहता है, 'भगवान ने जब यह दिन दिखाया है तो हमें सिर झुकाकर चलना चाहिए।'' होरी पारिवारिक मर्यादाओं को बचाने की नाकाम कोशिश में पंचायत के जुर्माने का भागीदार बनता है, जिसकी वजह से उस पर कर्ज का बोझ लद जाता है।

सोनकर 'सूअरदान' में धार्मिक आडम्बरों के विरूद्ध जाते दिखाई देते हैं, साथ में ही उन्हें उखाड़ फैंकने के लिए भी तैयार हैं। उनके उपन्यास से लगता है कि वे जाति–पाति तथा धार्मिक आडम्बरों के घोर विरोधी हैं। उपन्यास में राम. चन्द्र त्रिवेदी बंधनो और मिथ्याचारों के विरूद्ध जाता है वहीं वह अपने पिगरी फार्म में शराब पी रहा होता है औ सूअर के बच्चे का नर्म–नर्म मांस खा रहा होता है। सोनकर लिखते हैं– 'रामचन्द्र त्रिवेदी सूअर की हड्डियां चूसते हुए एवं शराब का एक–एक घूंट मुंह से पेट के अन्दर गटक रहा था। यदि उस समय उसको अमृत दिया जाता तो वह उस अमृत को विष समझता और पीने से इंकार कर देता। रामचन्द्र त्रिवेदी ने सज्जन खटिक से कहा– ब्राह्मणों ने दकियानुसी धर्म को बीच में लाकर हजारों सालों से ऐसे स्वादिष्ट भोजन से दूर र खा है। ..... मुसलमानों को सूअर का मीट खाने से दूर रखा जाता है। रूढ़िवादी हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म में इसको खाना वर्जित है लेकिन पाकिस्तान के महान नेता व संस्थापक मौहम्मद अली जिन्ना सूअर का मीट खाते थे। मैं भारत का मौहम्मद अली जिन्ना हूँ मैं सूअर का मीटर चाव से खाता हूँ।''

उपन्यास में पुजारी दया शंकर रामचन्द्र त्रिवेदी के सूअर फार्म और उसकी कटु आलोचना करते हुए कहता है– 'धर्म का राज्य समाप्त हो गया है। अधर्म का राज्य स्थापित हो गया है। ....अब हमारा एक कपूत ब्राह्मण हिला रहा है। उसने दलितों के सारे अवगुण सीख लिये हैं। शराब पीना, गोश्त खाना, लड़कियों की महफिलें जमाना अब उसका व्यसन बन गया है।'' उस पर 'देवीदीन सचान ने पंडित से कहा– क्यों परेशान होते हैं पुजारी जी। ईश्वर की सेवा में लीन रहिए। जो आदमी लाखों रूपये महीने कमा रहा हो वह

पूजापाठ करके क्या करेगा? समय क्यों बर्बाद करेगा? आप वर्षो से इस मंदिर के पुजारी हैं। पैसे के अभाव में आपकी जवान तीन तीन बेटियां बैठी हैं। मन्दिर के देवता आपको छप्पड़ फाड़ कर रूपये क्यों नहीं देते हैं?

वह पुजारी से पूछता है, ''इसमें क्या बुराई है।''

पंडित कहता है, ''सूअर पालन मेहतरों का कार्य है। वह मेहतर बनकर सूअरों का गू–मूत साफ करता है।''

''आप घर में गाय पालते हैं, उसका भी तो गू–मूत आप साफ करते हैं।''

''गौ–मूत्र और गोबर बहुत ही शुद्ध व पवित्र माना जाता है।'

''यह आप लोगों ने धारणा फैला रखी है। मूत्र, मूत्र होता है, पाखाना, पाखान होता है। चाहे वह आदमी का हो या जानवर का।'' ऐसे संदर्भो से पता चलता है कि सोनकर ऐसे दकियानुसी ख्यालों और बातों को जड़ से उखाड़ फैंकना चाहते है।''

''पुजारी दयाशंकर गांव वालो को धर्म के बड़े–बड़े उपदेश देते थे। किसी भी मां बेटियों का ताकना उनकी नजर में महापाप था। जिसका किसी भी जन्म में कोई उद्धार नहीं था। लेकिन उसका आचरण इसके बिल्कुल विपरीत था। किसी युवा लड़की या औरत को देखकर मचल उठते थे। मीठी– मीठी बातें करने लगते थे।.. तब पुजारी दयाशंकर पूरी रास लीला कृष्ण की मूर्ति के समाने पूरी कर देते थे।'' धर्माडम्बरों को मानने वाला पंडित भी मानता है कि 'इन पत्थर की मूर्तियों को जिनको हम देवता कहते हैं। रात दिन इनकी सेवा में लगे रहते हैं, इस विश्वास के साथ ये हमारा कल्याण करेंगी। यह सभी कोरी चीजें हैं। इन्होंने कभी भी किसी मानव का कल्याण नहीं किया हैं। हमारे संस्कारों को वेबजह इतना धार्मिक बनाकर हमे कर्महीन बना दिया है एवं फिजूल के धार्मिक कर्मकांड में लगा दिया है।'' वह अपना सम्पूर्ण जीवन पिगरी फार्म के लिये लगाने का निर्णय लेता है। वह अंध धार्मिक मिथको के विरूद्ध जाकर अपनी तीनों बेटियों की शादी उन पार्टनरों से करवाता है।

उपन्यास के अंत में पुजारी मरते वक्त गोदान नहीं करता और उसे धार्मिक पाखंड समझता है। वह कहता है कि ''स्वर्ग और नर्क सभी कल्पित की चीजें हैं, मरने के बाद आदमी इसी मिट्टी में विलीन हो जाता है वह कभी भी गाय की पूंछ नहीं पकड़ सकता है। '' पंडित आगे कहता है, मरने के बाद मृत व्यक्ति के लिये काल्पित भवसागर की बात करना मिथ्या है। झूठ है। फरेब है। यदि मुझे दान करना पड़ा, तो मैं प्यार, भाईचारा, साम्प्रदायिक सद्भावना, समानता, देशप्रेम, जानवरों और मानवों के प्रति लगाव का दान करूंगा। पूरे विश्व में शान्ति रहे, इसलिए मैं अहिंसा के उपदेश का दान करूंगा। पूरा संसार प्रदूषण मुक्त रहे, इस उद्देश्य का दान करूंगा। प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा करें, इस संकल्प का दान करूंगा। ''पंडित सूअर के बच्चे से बहुत प्रेम करते थे इसलिए उन्होंने मरते वक्त उसके ऊपर अपना हाथ रख दिया। इसी के साथ उनकी आंखें बंद हो जाती हैं। मिथ्याचारी पंडितों को लगा कि पंडित ने गोदान के वजाय सूअरदान कर दिया।

अंध धार्मिक मिथकों का प्रयोग दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। लेकिन दोनों का ध्येय अलग–अलग है। जहां प्रेमचन्द ने कथानक को आगे बढ़ाने तथा गरीबों, किसानों, दलितों तथा असहाय लोगों के कष्ट तथा फटेहल जिन्दगी को दिखाने में इसका प्रयोग किया है, वहीं सोनकर ने इन अंध धार्मिक मिथकों का शमन करने के लिये इनका चित्रण करके समाज को जागरूक करने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द धार्मिक आडम्बरों के विरोधा में दिखाई नहीं देते। लेकिन सोनकर ने जमकर इनका विरोध किया है तथा समाज से धर्माडम्बरों को जड़ से उखाड़ फैंकने का सफल प्रयास भी किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है प्रेमचन्द्र तो प्रेमचन्द थे। उनका कोई शानी नहीं। यह बात में आरंभ में भी कह चुका हूं। लेकिन वह दिन दूर नहीं जब सोनकर को कबीर, निराला, प्रेमचन्द, नागार्जुन जैसे फक्कड़ लेखको की पंक्ति में गिना जायेगा। इन लेखकों ने दलित, बेसहारों तथा गरीबों के प्रति अपनी सहानुभूति जताई है। शीघ्र ही जमसामान्य तथा आलोचक वर्ग यह मानने से इन्कार नहीं करेंगे कि सोनकर भी इन दिग्गज लेखकों की भान्ति समाज सुधारक हैं तथा डॉ अम्बेडकर के नक्शे कदम पर चलने वाले लेखक हैं। सोनकर दलित समाज को चेतित करना अपना ध्येय समझते हैं। इनके कथा साहित्य को पढ़ने से नागार्जुन की याद हो आती है, बिलकुल उसी प्रकार की शैली की तारतम्यता, क्रमबद्धता, फक्कड़पन, विचारों की स्वतंत्रता, पाठक को बांधने की क्षमता, वाग्वैदग्धता, चुटिलापन, प्रौढ़ता, भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति तथा सशक्त अभिव्यक्ति पक्ष, विचारों में आधुनिकता, शैली की परिपक्वता, घटनाक्रम को बांधने की क्षमता आदि विभिन्न गुणों से परिपूर्ण हैं। साहित्य के माध्यम से दलित वर्ग के लिए इनके द्वारा किया गया कार्य अति सराहनीय है। दलित चिंतको की तरह इन्होंने दलितों के लिये दया, करूणा तथा संवेदना न संजोकर उनके लिये चेतना का संचार किया है। सोनकर एक जनचेतक लेखक के रूप में उभरकर सामने आए हैं। डॉ0 अम्बेडकर की भान्ति एक दिन दलित वर्ग इन्हें याद करेगा। इनके कथा साहित्य से पता चलता है कि सोनकर एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी, बातों तथा विचारों के चितेरे लेखक हैं। दलितों के प्रति इनका दृष्टिकोण अति उच्च कोटि का है।

*****

सूअर दान: एक अध्ययन

-प्रोसेसर राजमुनि
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय बनारस

हिंदी दलित साहित्य में यदि ध्यान से देखा जाए तो आत्मकथा के अलावा उपन्यास ,नाटक, कहानी ,कविता आदि विधाओं में भी साहित्य लेखन बहुत तीव्र गति से हो रहा है। साहित्य की प्रत्येक विधा अपने आप में भारतीय समाज का स्वरूप चित्रित करने में एक से बढ़कर एक है चाहे वह कहानी हो चाहे उपन्यास। दलित साहित्य ने आज अनेक भारतीय भाषाओं में अपनी उपस्थिति बड़ी दमदारी के साथ प्रस्तुत की है। इसकी प्रमुख वजह है कि दलित साहित्यकार जब साहित्य सृजन करता है तो वह किसी दूसरे से कोई कला उधार नहीं लेता और ना ही वह किसी दूसरे की नकल करता है। इसके साथ ही सबसे बड़ी बात यह है कि दलित साहित्यकार की अपनी भाषा होती है अपनी संस्कृति होती है अपने पात्र होते हैं अपनी संवेदना होती है और अपनी सभ्यता होती है इन सब से मिलकर बनता है उसका परिवेश जिसमें वह पल-पल जीता है और मरता है। हां एक बात अवश्य है कि साहित्यकार अपने अस्तित्व को याद रखते हुए एक समतामूलक समाज की संकल्पना करता है। एक ऐसे भविष्य का सपना देखता है जिसमें पूरा देश सुख में जीवन व्यतीत कर सकें कोई किसी के साथ अत्याचार और भेदभाव ना करे। इन्हीं दलित साहित्यकारों की श्रंखला में रूपनारायण सोनकर जी का नाम अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से नागफनी आत्मकथा के साथ-साथ 'जहरीली जड़े ",कहानी संग्रह -'डंक 'उपन्यास 'सूअर दान 'जैसी अनेक कालजई रचनाओं का सृजन किया और आज भी वे निरंतर एक बेहतर भविष्य की कामना के साथ साहित्य सृजन कर रहे हैं।

इनके द्वारा रचित 'सूअर दान 'उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिसके विषय में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसकी प्रशंसा की है। उपन्यास में लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है की पूरी दुनिया में जितने भी विकसित देश हैं वहां पर व्यक्ति की कला और कर्म को सम्मान और महत्व दिया जाता है। दूसरी हो भारत एक ऐसा देश है जहां कर्म को छोड़कर धर्म और ईश्वर पर सबसे अधिक खर्च किया जाता है। यही वजह है कि भारत आज भी अनेक स्तरों पर विकसित देशों से हजारों वर्ष पीछे है। आर्थिक संपन्नता के विषय में लेखक का मानना है कि यदि आपके पास संपत्ति है तो जीवन की बहुत सारी समस्याएं अपने आप हल हो जाती हैं। इसी बात को पुष्ट करते हुए वह कहते हैं कि-" धन की शक्ति वह शक्ति होती है जो सारी परेशानियों पर विजय प्राप्त कर लेती है। अमेरिका, इंग्लैंड और अन्य पश्चिमी देशों में वहां के मूल निवासी टाई सूट पहनकर झाड़ू लगाते हैं लेकिन उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में कोई आंच नहीं आती है लेकिन भारतवर्ष में किसी सवर्ण ने अच्छा कार्य किया तो सामाजिक प्रतिष्ठा और धर्म उनको लहूलुहान कर देता है।"1(सूअर दान, पृष्ठ संख्या 9)

यह उस समय का प्रसंग है जब रामचंद्र त्रिवेदी और उसके अन्य दलित जाति के साथी आपस में मिलकर एक सूअर फार्म खोलते हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती जाती है। इसके बाद भी रामचंद्र त्रिवेदी कभी भी अपने आप को हीन भावना से नहीं देखता है। बल्कि वह पूरे गांव में सीना उठाकर चलता है और इस बात पर गर्व महसूस करता है कि वह सूअर पालन से संपन्न हुआ है। और वहां यहां तक भी कह देता है कि मानव जीवन में वही कार्य सबसे उत्तम है जिसमें आपको आत्म संतुष्टि मिले। यह बात उसने उस समय कहीं जब वह अपने साथियों के साथ बैठकर मयखाने में शराब पी रहा था और स्वर्ग के विषय में चिंतन करते हुए कह रहा था कि वास्तव में यदि कहीं स्वर्ग है तो वह है मेरे सूअर फार्म में।

पूरे विश्व में प्रत्येक व्यक्ति अधिकतर दो प्रकार के सुखों की तलाश में रहता है। इनमें से पहला सुख है शारीरिक सुख और दूसरा है मानसिक। यह दो तरह के सुख हैं और यह दोनों तरह के सुख किसी भी धर्म और जाति के बंधन को स्वीकार नहीं करते। यह बात रामचंद्र त्रिवेदी के संबंध में घसीटे चमार ,सज्जन खटीक और सावंत यादव ने कही। क्योंकि यह चारों बहुत अच्छे मित्र हैं जिनके अंदर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है। इस सूअर पालन को लेकर सबसे अधिक सामाजिक विरोध रामचंद त्रिवेदी को झेलना पड़ता है इसके बाद किसी का नंबर आता है। क्योंकि उनके लोग जो यह मानकर बैठे थे कि सबसे अधिक अधर्मी और पापी केवल दलित और पिछड़े होते हैं लेकिन उन्हें पता चला एक ब्राह्मण भी अपने लाभ के लिए इतना गिर सकता है।

लेखक ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में अपने उपन्यास में यह बताने का प्रयास किया है की शिक्षा और धर्म में क्या अंतर है। वे कहते हैं कि शिक्षा तर्क करना सिखाती है और धर्म अंधभक्त बनाता है। लेकिन यह सच है कि सही बात को कितना भी न करने की कोशिश की जाए आप उसे नकार नहीं सकते। तभी तो जो लोग उनको समझाते हैं कि सूअर पालन मेहतर का काम है तो वह इसका जवाब देते हुए कहते हैं कि-"आप लोगों ने धारणा फैला रखी है। गोमूत्र पवित्र होता है और शुद्ध होता है लेकिन सच तो यह है कि मूत्र -मूत्र होता है पाखाना -पाखाना होता है चाहे वह आदमी का हो या जानवर का।"2 (12)

सच तो यह है कि आज मानव ने जमीन से लेकर आसमान तक जीवन को सुलभ बना लिया है। उसने अपने विकास के बहुत सारे संसाधन अपने बुद्धि और विवेक से विकसित कर लिए। आज 21वीं सदी में आधुनिक शिक्षा पद्धति ने हमें सिखाया है जीवन जीने के लिए दो चीजें बहुत जरूरी है सबसे पहला श्रम करना और दूसरा ईमानदारी ।क्योंकि इनका हमेशा चोली दामन

का साथ रहा है। वर्तमान समय में संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपना व्यापार चुनने का अधिकार है। कोई अब दूसरे को किसी भी प्रकार का व्यापार करने से नहीं रोक सकता। इसी बात को स्पष्ट करते हुए लेखक कहते है कि -"आज के युग में कोई भी व्यापार करना अधर्म नहीं होता। मेहनत और ईमानदारी से किया गया कार्य उस कस्तूरी को प्राप्त करता है जो मिरग में रहती है। पुजारी दयाशंकर हजारों वर्षों पुरानी अंधविश्वास मान्यताओं और परंपराओं को धो रहे थे जो स्वयं सवाना और विशेषकर ब्राह्मण समाज के लिए घातक साबित हो रही है। पृष्ठ संख्या-12) श्रम की फसल सदैव हरी भरी रहती है लेकिन हराम की फसल बहुत जल्दी सूख जाती है। धर्म के नाम पर पुजारी दयाशंकर गांव वालों को ईश्वर के बारे में बहुत बड़े-बड़े उपदेश देते थे लेकिन उनकी नजर सदैव गांव की बहन बेटियों पर टिकी रहती थी। उनकी कथनी -करनी में बहुत अंतर था कहा जाता है खाने के दांत और दिखाने के दांत और। यही वजह है कि वह इस बात से दुखी है अब उसके धर्म के धंधे चौपट हो जाएंगे।

समाज को अपने वश में करने के लिए पाखंडियो ने हजारों वर्ष से यही भय दिखा रखा है कि यह आस्था का विषय है इसमें तर्क नहीं चलता। अगर तुम ईश्वर के विरुद्ध कार्य करोगे तो भगवान ही रूठ जाएगा। ऐसा हो भी क्यों ना इनके अनेक तुलसी जैसे कवियों ने लिख ही दिया है-भय बिनु प्रीत न होई गुसाई। आधुनिक शिक्षा पद्धति तर्क करना सिखाती है स्वस्थ परिवर्तन चाहती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो सभी लोगों के मानसिक रोगों का बेहतर इलाज कर सकती है। शिक्षा के बिना व्यक्ति आवारा पशुओं की तरह होता है। इसीलिए हजारों वर्ष से दलितों और पिछड़ों को शिक्षा से वंचित रखा गया और आगे भी रखने के प्रयास निरंतर जारी है।

भ्रूण हत्या किसी भी सभ्य देश के लिए सबसे घिनौना काम है। भ्रूण हत्या जैसे अपराध भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि बहुत सारे देशों में भ्रूण हत्या हैं आज भी हो रही है। लेकिन इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है कि अगर इसी तरह से लड़कियों की हत्या होती रही तो एक दिन ऐसा आएगा जहां देश में एक लड़की दस लड़कों से शादी करेगी। भारत में तो लड़कियों का अकाल महाभारत काल से है। वह भी धार्मिक पाखंडो की वजह से। पाश्चात्य देशों में समझदारी भी है और प्यार भी है। इसके विपरीत भारतीय सभ्यता और संस्कृति में धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़िवादिता कदम कदम पर दिखाई देती है। इसी सच्चाई को ध्यान में रखते हुए लेखक ने मिस हैरी सिल्वा और उसके चारों मित्र रामचंद्र त्रिवेदी ,सज्जन खटीक ,घसीटे चमार और सलवंत यादव की प्रेम कथा के द्वारा एक सुखद भविष्य की कल्पना की है-"हम सभी लोग अच्छे हैं। धन्यवाद मिस हैरी सिल्वा तुम्हें हमारी याद आई।

तभी तो इंग्लैंड से आप लोगों से मिलने भारत आई हूं।

रामचंद्र त्रिवेदी ने कहा-'आपकी बहुत याद आ रही थी।'

सज्जन खटीक ने कहा-'तुम्हारी पोएट्री के प्रेम गीत मुझे विचलित कर रहे थे।'घसीटे चमार ने आतुर भरी आंखों से हैरी को देखा और बोला मैं तुम्हारे संबंध में कानून का आर्टिकल खोज रहा था ताकि हम चारों का जीवन संभल जाए।'सलवंत यादव इस वक्त में बायोलॉजी का कोई गूढ सूत्र ढूंढने लगे और कहा-'लगता है हम चारों की किस्मत सुधरने वाली हैं।"(पृष्ठ संख्या 17)

हिंदी साहित्य में रामधारी सिंह दिनकर अपनी प्रसिद्ध रचना 'रश्मिरथी 'कर्ण और दुर्योधन की मित्रता के विषय में कहते हैं-'मित्रता बड़ा अनमोल रत्न .....।'इसका मतलब यह है कि एक जैसी जीवनशैली और विचार है मित्रता को अनवरत रूप से आगे चलने में मदद करते हैं। आदर्श मित्र और आदर्श परिवार से ही सभ्य समाज का निर्माण होता है। लेकिन दूसरी ओर जो लोग कीचड़ में रहते हैं उन्हें अच्छे पानी में रहना पसंद नहीं आता। लोगों ने सही कहा है कि गोबर का कीड़ा गोबर में ही रहना पसंद करता है। रूपनारायण जी ने पुजारी दयाशंकर जैसे दोगले लोगों के विषय में बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि ऐसे लोगों को स्वस्थ परंपरा पसंद नहीं आती। भारतीय गांव की संरचना और पाश्चात्य गांव की संरचना में इसीलिए फर्क दिखाई पड़ता है। इन दो तरह की चीजों में व्यवस्था और सोच का फर्क है। भारतीय समाज के गांव की संरचना ऐसी संरचना है जो पर्दे के भीतर सब कुछ चाहती है और सहन भी करती है लेकिन खुलकर खेलने से भागती है। भारत में पर्दा जरूरी है लेकिन पर्दे के पीछे कुछ भी करो। यहां धर्म और ईश्वर विज्ञान पर भारी पड़ता है क्योंकि धर्म के आगे तर्क नहीं किया जाता है। यदि कोई तर्क करता है तो उसे समाज विद्रोही कहा जाता है। इतना ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा पापी भी समझा जाता है।

किसी भी देश को विकसित बनाने के लिए सबसे बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा की होती है। यदि किसी देश को बर्बाद करना हो तो वहां की शिक्षा व्यवस्था को समाप्त कर दीजिए। यही हो रहा है भारतीय समाज में आजादी से पहले और आजादी के बाद। पूरे विश्व में जितने भी देश हैं जो विकसित हैं वहां की सरकार अपने प्रत्येक नागरिक की शिक्षा की जिम्मेदारी स्वयं लेती हैं। इसीलिए वहां का प्रत्येक नागरिक अपने देश के विकास के विषय में सोचता है और उसमें सहयोग करता है। इसी बात को लेखक ने बहुत स्पष्ट शब्दों में अपने उपन्यास में अभिव्यक्त किया है-"वहां पर सरकारी और प्राइवेट सेक्टरों का एक सुव्यवस्थित संचालन होता है। लड़के -लड़कियों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का सारा भार सरकार उठाती है।"पृष्ठ संख्या 22

पूरी दुनिया में पाप और पुण्य की अनेक परिभाषाएं देखने को मिलती है। वहीं पर गौतम बुध कहते हैं कि पाप क्या है? और पुण्य क्या है? यह तो मैं नहीं जानता लेकिन हां जब किसी व्यक्ति या समाज की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य किया जाता है तो वह पाप होता है। महापुरुषों ने ही नहीं बल्कि हमारे अनेक साहित्यकारों ने भी अन्याय के विषय में स्पष्ट रूप से लिखा है। उनका मानना है कि अन्याय करने वाले से अन्याय सहने वाला अधिक जिम्मेदार होता है। इसीलिए दलित समाज पर आजादी से पहले से लेकर आज तक अनेक तरह के अन्याय अत्याचार हो रहे हैं। लेकिन अब उन अत्याचारों का विरोध भी किया जा रहा है और उनके प्रति चारों और विद्रोह के स्वर भी सुनाई दे रहे हैं। लेखक कहते हैं कि किस प्रकार ईट के भटटो पर काम करने वाले मजदूरों का हर तरह से मानसिक और शारीरिक शोषण किया जाता है। जब उसकी सारी हदें पार हो जाती हैं तब वह अपने बिखरने की चिंता किए बिना उसके विरुद्ध हो जाते हैं और उससे डटकर मुकाबला करते हैं। इसी प्रकार के शोषण और अन्याय के शिकार धर्म परसी और सन्नो होते हैं। जयंत सिंह जब सन्नो को घसीटते हुए अपने कमरे पर ले जाता है तब वह ठाकुर से कहती है-

"तू हिजड़ा है। अगर तू हिजड़ा ना होता तो औरतों पर इस तरह अत्याचार न करता। छोड़ मेरा हाथ नासपीटे दादा गयादीन तुम लोग आओ इस हारामी को ठीक कर दो। आज यह मेरे साथ अत्याचार कर रहा है कल तुम्हारी लड़की और स्त्रियों के साथ भी करेगा।"पृष्ठ संख्या -26 फिर क्या था सभी लोगों ने लाठी-डंडे लेकर के जयंत सिंह की चटनी बनाई और इतना मारा कि वह बेहोश हो गया। इसके बाद सारे मजदूर अपना सामान बांध कर अपने अपने गांव चले गए। इससे स्पष्ट होता है कि बंधी हुई झाड़ू किसी भी गंदगी को साफ करने में सक्षम होती है लेकिन खुली हुई झाड़ू तिनका भी साफ नहीं कर सकती। लेखक ने यहां इसी बात को अपने उपन्यास में बहुत सहज ढंग से पाठकों के सामने रखा है।

लेखक ने अपने उपन्यास में शिक्षा प्राप्ति के बाद मानवी विकास की ओर भी इशारा किया है। वे उस चीज को भी बताने से नहीं चूकते हैं जो शिक्षित होने के बाद भी अपने समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चलते हैं। लेखक का मानना है कि बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावनात्मक विकास भी जरूरी है तभी तो हम एक बेहतर समाज की कल्पना कर सकते हैं। लेखक गांव और शहर दोनों के विषय में अपनी समझ स्पष्ट रखते हैं। वे कहते हैं कि गांव के शोषण की जड़ें बहुत गहरी होती हैं। वे सैकड़ों पीढ़ियों का हिसाब रखते हैं। शहरों के शोषण की अपनी हदे होती हैं लेकिन सच्चाई यही है गांव और शहर दोनों में जातिवाद और भेदभाव का जहर आज भी देखने को मिलता है।

किसी भी देश के विकास के लिए स्वास्थ्य ,शिक्षा ,न्याय ,सुरक्षा चारों आवश्यक। लेकिन भारत का दुर्भाग्य रहा है कि आजादी से लेकर आज तक इन चारों पर उस प्रकार ध्यान नहीं दिया जैसा देना चाहिए। रूपनारायण जी आगे बताते हैं कि गुंडे और बेईमान की ना कोई जाति होती है ना कोई धर्म होता है। जिसके मुंह में खून लग जाता है उसे केवल मांस चाहिए कहां से आएगा इसकी उसे कोई चिंता नहीं। सरकारी सुविधाओं का शोषण करने में सभी लोग अपना अपना योगदान देते हैं। तभी तो लेखक कहता है- "सत्यनारायण त्रिपाठी जोरावर सिंह से पूछता है-'क्यों बे डॉक्टर तेरे हेल्थ सेंटर का क्या हाल है? डॉक्टर जोरावर सिंह ने शराब के प्याले को हाथ में घुमाते हुए और प्याले में नजर बढ़ाते हुए उत्तर दिया-'आपके आशीर्वाद से हम तीनों के शराब के प्याले में प्राइमरी हेल्थ सेंटर की समस्त दवाइयां घुल गई है। उन तीनों का हेल्थ सही रहा तो गांव वालों का भी हेल्थ सही रहेगा। दूसरी हो जो पैसा सरकारी स्कूल के लिए आता है उसको भी लोग अपने सुख सुविधा के लिए इस्तेमाल कर लेते हैं। जब जितेंद्र यादव सत्य नारायण त्रिपाठी से कहता है कि मैंने भी तो आपके अनुसार स्कूल में काम किया है मेरे बारे में तो कुछ कहे। इस पर सत्यनारायण त्रिपाठी बोला-"दवाइयों का टॉनिक पीने के बाद मुझे नींद नहीं आएगी। स्कूल के लिए जो पैसा फर्नीचर खरीदने के लिए दिया गया था तूने हम तीनों के घरों में लगवा दिया। तुझे मैं सफल स्कूल प्रिंसिपल होने का पूरा क्रेडिट देता हूं।" पृष्ठ संख्या 30 यहां हम देखेंगे किस प्रकार शिक्षा स्वास्थ्य में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। इसमें भ्रष्टाचार करने वाले केवल वे ही लोग हैं जो धन बल और जन बल से संपन्न है। इसी में एक नाम है सत्यनारायण त्रिपाठी उसने सभी को डरा धमका कर रखा है। यहां तक कि वह सभी से खुलेआम कहता है मैंने 15 मर्डर किए हैं 15 वर्षों की प्रधानी में। यहां हम देख सकते हैं कि भ्रष्टाचार और अन्याय करने में गैर दलित ही सबसे आगे दिखाई देते हैं।

वही उपन्यासकार ने दूसरी ओर यह भी बताने का प्रयास किया है कि दलितों ने भयंकर विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मानवीय व्यवहार को नहीं बदला और ना ही दूसरे से मानवीय व्यवहार की आशा छोड़ी जैसे काला बच्चा नाम का एक पात्र है जो लंगड़ा है इसके बाद वह सुनैना से कहता है कि तुम भाग जाओ मैं लड रहा हूं इसीलिए लोग मुझे नहीं मारेंगे। लेकिन इसके बाद भी उन्होंने सुनैना और काला बच्चा को खूब डंडों से मारा।

किसी भी देश का समग्र विकास शिक्षा की धुरी पर टिका होता है। शिक्षा के महत्व के विषय में विश्व के अनेक विद्वानों ने अपनी राय इस प्रकार दी है। नेलसन मंडेला का मानना है कि शिक्षा दुनिया का सबसे ताकतवर हथियार है लेकिन इसका प्रयोग समाज को बदलने के लिए किया जाना चाहिए न कि बदला लेने के लिए। वहीं दूसरी ओर विश्व के महान तर्क शास्त्री डॉक्टर भीमराव अंबेडकर कहते हैं कि शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पियेगा वही दहाड़ेगा। इस तरह से वास्तव में लेखक ने अपने उपन्यास में शिक्षा के महत्व को सबसे प्रथम श्रेणी में रखा है। तभी तो वे अपने उपन्यास सूअर दान में संकटा प्रसाद चिकवा नाम के पात्र को सामने लाते हैं जो सभी को अपने शिक्षित होने का एहसास कराता है। प्रत्येक गलत कार्य का विरोध करता है। जब डॉक्टर जोरावर सिंह संकटा प्रसाद चिकवा ते कहता है-"महाशय आपने शहर में चार अक्षर क्या पढ़ लिया सरकारी कार्य सरकारी कर्मचारियों और डॉक्टरों के कार्य में नुक्ताचीनी निकालने लगे।'डॉक्टर साहब मैं आपकी सेवा में खोट नहीं निकाल रहा हूं। दवाइयों के अभाव में जो मरीज तड़प रहे हैं उनको दवा देने की आपसे गुजारिश कर रहा हूं।.....सूचना अधिकार अधिनियम 2005 के आधार पर मैं आपसे सारी सूचनाएं मांग सकता हूं।" पृष्ठ संख्या 34-35

नशा भी किसी समाज को तबाह करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही नशा मनुष्य को अकर्मण्य और गुलाम बनाता है। इसीलिए दलितों को इससे बहुत दूर रहना चाहिए। यही संदेश सूअर दान उपन्यास में लेखक ने बहुत ईमानदारी के साथ दिया है। भौतिक सुख-सुविधाओं ने आदमी का मानसिक चैन छीन लिया है। बनावटी जीवन शैली ने मानवीय संवेदना को कुचल कर रख दिया है। इसीलिए संकटा प्रसाद चिकवा शहरी जीवन से ऊब गया और वह गांव वापस आता है जहां पर अपनी शिक्षा का उपयोग जी भर करता है। लेखक कहता है कि शिक्षा के माध्यम से कृषि और स्वरोजगार को भी बेहतर ढंग से किया जा सकता है। महाराष्ट्र के संत संत गाडगे महाराज ने भी जीवन भर भारतवासियों से नशा न करने की अपील की। और उन्होंने संदेश दिया कि नशा को छोड़ो और शिक्षा से नाता जोड़ो।

आजादी के पहले और उसके बाद भी दो तरह की विचारधाराएं सदैव समाज में चली पहली सामाजिक विनाश की और दूसरी सामाजिक विकास की। इसके बाद लेखक अंत में स्वीकार करते हैं कि समाज को बिगाड़ने वाले से अधिक बनाने वालों की ही जीत होती है। सतनारायण त्रिपाठी जो कि छल कपट के माध्यम से चुनाव जीता है और गरीब और असहाय लोगों का शोषण करता है वहीं दूसरी ओर संकटा प्रसाद चिकवा जैसे लोग भी हैं जो निरंतर समाज को बनाने में लगे रहते हैं और अंत में उनकी जीत भी होती है। तभी तो लेखक जनसेवा करने वाले लोगों के विषय में अपनी बात बड़े

आत्मविश्वास से कहते हैं-"समाज सुधारकों के पीड़ित मानवता के प्रति किए कार्य पानी की तेज धार की तरह होते हैं जो बेईमानी जुल्म और घिनोने कृत्यो की लपटों को बुझा देते हैं। संपूर्ण मानवता झुलसने से बच जाती है।"पृष्ठ संख्या 41

लेखक ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि फूट डालो और राज करो की विचारधारा अंग्रेजों की नहीं बल्कि हिंदू धर्म की वर्णवादी व्यवस्था की देन है। सत्यनारायण त्रिपाठी ने भगतू पासी से कहा कि तुम संकटा प्रसाद चकवा के खिलाफ चुनाव लड़ो। हम सभी तुम्हारे साथ हैं। आजाद भारत में आज भी नारी के प्रति पुरुषवादी सोच में कुछ विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। आज भी नारी को केवल रबड़ स्टांप की तरह यूज किया जाता है। क्योंकि जब भगतू पासी सत्यनारायण त्रिपाठी से कहता है कि मैं तो अनपढ़ हूं प्रधानी कैसे करूंगा इस पर वह कहता है कि तुम चिंता मत करो सारा काम मैं कर लूंगा केवल तुम हस्ताक्षर करना। उसे आगे समझाते हुए कहता है तुमको पता है जिस गांव की प्रधान महिला होती है उसमें वह काम थोड़े ही करती है सारा काम तो उसका पति करता है। बस ऐसे ही समझ लो।

रूप नारायण जी मानते हैं कि यह अजीब देश है। जहां पर ताकतवर एवं अपराधी व्यक्ति गरीब आदमी का जी भर शोषण करता है। लेकिन वह भूल जाता है कबीर की उस बात को जब वे कहते हैं दुर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय। मुई खाल की सांस सो सार भसम हुई जाए। आज 21वीं सदी की राजनीति का भी यही शोषण का चेहरा है। वहीं दूसरी ओर कुशल राजनीतिज्ञ काशीराम के द्वारा कही गई बातें आज भी सार्थक हो रही है। उन्होंने कहा था मेरे लोगों की चमड़ी खा पीकर मोटी हो गई है। इसीलिए आंदोलन नहीं करते। इसी बात को लेखक बड़ी ईमानदारी से स्वीकार करते हुए कहते हैं-"सत्ता पाकर कुछ लोग बिल्कुल बैल की तरह होते हैं जिनका मात्र काम होता है भार ढोना। खेतों में हल व बैलगाड़ी को खींचना।"पृष्ठ संख्या 43

शिक्षा के विषय में लेखक मानते हैं कि शिक्षा से ही समाज का विकास और विनाश संभव है। शिक्षा ही किसी भी देश और समाज की दशा और दिशा तय करती है। तभी कोई देश निरंतर विकास की ओर उन्मुख हो सकता है। वे कहते हैं गलत आदमी जो सबसे हार जाता है तो उससे बदला लेने के लिए साम दाम दंड भेद की नीति अपनाता है। यही काम किया सत्यनारायण त्रिपाठी ने क्योंकि उसके द्वारा खड़ा किया गया काठ का उल्लू भगतू पासी हार गया था, ग्राम प्रधान के चुनाव में। ईमान के विषय में कहा जाता है कि ईमान अनमोल होता है ना वह बिकता है ना खरीदा जाता है। इसी बात पर स्पष्ट करते हुए लेखक कहते हैं-"डॉक्टर जोरावर सिंह ने प्रधान को लालच में फंसाना चाहा-देखिए प्रधान जी पहले वाले प्रधान जी हमारे साथ मिलकर काम करते थे। हम दोनों को फायदा होता।,"इसीलिए तो इस गांव का हेल्थ सेंटर अंतिम सांसे ले रहा है। अपना और हमारा फायदा भूल जाइए। हमें गांव के फायदे और गांव के बीमार लोगों की चिंता करनी है। कुछ तो आदमीयत और मानवता दिखाएं। यदि गांव के लोग स्वस्थ रहेंगे तो पूरे देश के लोग स्वस्थ रहेंगे। " पृष्ठ संख्या -47 लेखक ने स्पष्ट रूप से कहा है कि दलितों ने कभी भी ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ा। और ना ही उन्होंने सच के रास्ते को बदला। सच का रास्ता तो सीधा ही होता है। क्योंकि बुराई भी बहुत दिन तक नहीं छुपती है।

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था में जब तक जातिवाद रहेगा तब तक शिक्षा महत्वहीन हो जायेगी। लेखक ने दया शंकर प्रसाद चिकवा के माध्यम से इस बार सच करके दिखाया है। जातिवादी लोगों के लाख विरोध करने के बाद भी शिक्षित ग्राम प्रधान शिक्षा में जातिवाद को समाप्त करने के लिए पूरा प्रयास करता है और वह सफल होता है। प्राइमरी स्कूल में भोजन से लेकर फर्जी मजदूरों के नाम भी वह अपनी लिस्ट से हटा देता है। इसके बाद भी जब इनकी नहीं चलती है तो प्रधान पर चरित्र हीनता का आरोप लगाते हैं उसमें भी यह अपने मुंह की खाते हैं। सच्चाई यही है चरित्रहीन है सबसे ज्यादा चरित्र के साथ खेलते हैं ।उनकी कथनी -करनी में जमीन आसमान का अंतर होता है। इस बात को लेकर सत्यनारायण त्रिपाठी और ग्राम प्रधान संकटा प्रसाद चिकवा के माध्यम से बहुत सहज भाषा में अभिव्यक्ति किया है। अंत में जीत ईमानदार की ही होती है।

लेखक का मानना है कि एक बेहतर समाज बनाने के लिए शासन की सत्ता ईमानदार लोगों के हाथ में होनी चाहिए। लेकिन आजादी से लेकर आज तक राजनीति में ईमानदारी के लिए कोई स्थान रिक्त नहीं है। सच तो यह है कि शोषित पीड़ित लोग ही सदियों से समाज की सेवा करते आ रहे हैं। कुलीन लोगों की मानसिकता सदैव दूषित रही है। जो लोग सामंती व्यवस्था के समर्थक हैं उनका व्यवहार बाहर भीतर अलग-अलग होता है। जैसे रूपनारायण जी कहते हैं कि मिस हैरी सिल्वा को गांव के सभी सवर्ण तरह-तरह के आरोप लगाते हैं लेकिन पसंद करते हैं-"यह कुलटा गांव में व्यभिचार फैला रही है। यह तो एक रंडी है। दूसरा कहता -यह एक बहुत ही बड़ी धनाढय वेश्या है। तीसरा सवर्ण कहता था जो पढ़ा लिखा था-यह तो हाई प्रोफाइल कॉल गर्ल है।'

लेकिन एक की सुंदरता को देखकर सभी मंत्रमुग्ध हो जाते थे।"पृष्ठ संख्या-59 यह एक ऐसा उपन्यास है जो बराबर स्त्री शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देता है।

लेखक इस बात पर विशेष ध्यान देते हैं की अज्ञानी और मूर्ख की कोई जाति और धर्म नहीं होता। धर्म और अंधविश्वास का चोली -दामन का साथ सदैव रहा है।

लेखक ने अपने सूअर दान उपन्यास में व्यापार और जीवन के संबंध को बहुत तर्क पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। रूपनारायण जी ने पिगरी फार्म के द्वारा यह साबित करने का प्रयास किया है कि व्यापार की सबसे पहली शर्त गिव एंड टेक होती है। इसे आप हिंदी में लेना और देना कह सकते हैं। दूसरी ओर कोई भी व्यक्ति जब व्यापार करता है तो सबसे पहले वह अपने लाभ और हानि के विषय में जरूर मंथन करता है। धन जीवन के लिए सब कुछ नहीं लेकिन बहुत कुछ होता है। लेखक बताते हैं कि किस प्रकार दलित और गैर दलित दोनों मिलकर अपने विकास की योजना बनाते हैं और वह सफल भी होते हैं। इस प्रकार के व्यापार को करने के लिए उन्हें पूरे गांव में विरोध का सामना करना पड़ता है जो लोग ढोंग और पाखंड की मानसिकता से ग्रसित हैं उनका। कहा जाता है कि व्यापार करने के लिए तकनीकी रूप से दक्ष होना बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखकर लेखक ने बड़ी तर्क और इमानदारी के साथ स्पष्ट किया है कि कुशल व्यक्ति और तार्किक सोच किसी के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी बात को लेखक कहता है -"पुजारी की तीनों बेटियां शिमला ,हिमला ,तरना को उनकी योग्यता के अनुसार दो

को सहायक मैनेजर और तीसरी को अकाउंटेंट की नौकरी दी गई। इन्होंने कंप्यूटर का डिप्लोमा भी ले रखा था। बड़ी स्पीड से कंप्यूटर चलाती थी। वे सभी मिस हैरी सिल्वा रामचंद्र त्रिवेदी ,सज्जन खटीक, घसीटे चमार ,बलवंत यादव के साथ कार्य करती थी। मिस हैरी सिलवा को मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया गया था। चारों पाटनर मालिक थे।"पृष्ठ संख्या- 66 लेखक के इस प्रकार के प्रगतिशील विचार से एक बात साफ नजर आती है कि भूखे पेट व्यक्ति को पेट भरने के लिए भोजन चाहिए चाहे वह किसी के भी द्वारा और किसी भी तरह से पैदा किया गया हो। समझदार व्यक्ति अपना विकास करने के लिए कोई भी व्यवसाय चुन सकता है।

लेखक ने अपने उपन्यास में भेदभाव को मिटाने के लिए कितना शानदार उपाय बताया है। यह बार-बार इस बात पर जोर देते हैं कि मानव ने प्रकृति और पशु पक्षियों से प्रेम करना शायद लिखा होता तो वह समाज के टुकड़े-टुकड़े न कर रहा होता। जितना भेदभाव इस भारत देश में है उतना शायद ही कहीं देखने को मिले। इस प्रकार के भेदभाव से संपूर्ण भारतीय समाज की पूरे विश्व में बदनामी होती है। और हम हैं कि सारी पृथ्वी ही अपना घर है। इस बात को बड़े गर्व से दूसरे देशों के सामने रखते हैं। वहीं दूसरी ओर लेखक आशावादी सोच को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है कि इस देश में मानवता को बचाने वालों की भी कभी कमी नहीं रही। तभी तो वे कहते हैं-" यह भारत की मिट्टी का कमाल था जो सभी सूअरों को एक बना रही थी। ऐसा कमाल कभी-कभी होता है। जब सारा विश्व एक नजर आता है ।दूरियां सीमाएं सभी समाप्त हो जाती हैं। एक रंग में सभी नजर आते हैं। केवल दोस्ताना ,प्यार ,भाईचारा नजर आता है सभी सूअर आपस में कलरव कर रहे थे ।देशी-विदेशी सुअर और सूअरिया प्रेमालाप कर रहे थे। वो ऐसी संताने पैदा करने जा रहे थे जिन्हें अंतरराष्ट्रीय संताने कहा जा सकता है ।देशों के खून संतानों में दौड़ रहे थे ।जैसे दो नदियों के मिलने के बाद पानी दौड़ता है, कौन किस नदी का पानी है ,पहचानना मुश्किल है और फिर समुद्र में मिलकर महासागर बन जाता है।

सूअर दान उपन्यास में लेखक ने कुछ ऐसे सवाल भी उठाए हैं जहां नारी अस्मिता और सम्मान की बात आती है। जहां लोकतंत्र और नारी के बीच जो संबंध है उसके विषय में बार बार सोचना पड़ता है। इसी तरह के समसामयिक सवालों से जूझते हुए लेखक कहता है कि ईमानदारी और देश भक्ति यह दोनों सगी बहन है केवल शोषित पीड़ित लोगों के पास ही सुकून से रहती हैं। धन पशुओं के यहां इनके लिए कोई स्थान रिक्त नहीं होता। इसी बात को स्पष्ट करते हुए वह एक गरीब औरत का चित्र खींचते हैं -"देखता हूं एक औरत को
जो चीथड़ों में है
दूध पिला रही है बच्चे को
तन ढकने को बेबसी है
खाने को रोटी नहीं
पीने को गंदी नाली का जल है ....
वह बाबा साहेब को याद कर रही है
हे बाबा साहेब मेरा देश दुश्मनों से बचा रहे
बस मेरी यही फरियाद है।"संख्या 71 इसमें आप देखेंगे किस तरह से वह स्वयं दर्द खेलते हुए अपने संपूर्ण देश की खुशहाली की कामना करती है।

लेखक ने अपने सुअर दान उपन्यास में मानव जीवन के संघर्ष को कई रूपों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। वे बताते हैं किस प्रकार आजादी से पहले से लेकर आज तक धर्म में अंधविश्वास और तर्क में सत्य और असत्य में निरंतर संघर्ष विद्यमान रहता है। एक बार तो ऐसा लगता है चारो और पाखंड और अत्याचार के बादल छाए हुए हैं। अब ऐसे समय में सत्य का जीतना बहुत मुश्किल है। लेकिन लेखक ने कभी अपने विश्वास को नहीं डगमगाने दिया। इस प्रकार के संघर्ष में विजय सदैव मानव धर्म की ही होती है। लेखक का मानना है कि भारत जैसे देश में धर्म और ईश्वर के नाम पर सब कुछ जायज है नशा ,गुंडई ,अत्याचार ,रेप ,हत्या सब कुछ होता है। लेकिन जब गुनाहों की पोल खुलती है तो वह धर्म के ठेकेदार सलाखों के पीछे नजर आते हैं। इसी बात को पुष्ट करते हुए लेखक ने मंदिर के अंदर का दृश्य को इस प्रकार दिखाया है-"मंदिर के अंदर चारों भांग छान रहे थे। थोड़ी-थोड़ी देर बाद गांजा और अफीम का नशा अंदर अत्याचारियों को ऐसी दुनिया में ले जाता था जहां विनाशी विनाश था ।जोर-जोर से ठहाके लग रहे थे जैसे उन लोगों ने विजय प्राप्त कर ली हो। "पृष्ठ संख्या -76 सच्चाई तो यही है आज पूरी दुनिया में धर्म का नशा फैला हुआ है। यह ऐसा नशा होता है जो एक बार चढ़ जाए तो मृत्यु पर्यंत नहीं उतरता।

लेखक कहते हैं कुछ लोग यह मान लेते हैं कि मैं ही दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हूं अब आगे कोई ना होगा औरन आज है। लेकिन परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है यह बात सभी को ध्यान रखनी चाहिए। समय के साथ साथ लोगों की सोच में भी परिवर्तन होता है। जब राम चंद्र त्रिवेदी मिस हेरी सिलवा और तीनों पार्टनर सज्जन खटीक ,घसीटे चमार और सलवंत यादव के साथ पुजारी की तीनों बेटियों को विदेश ले जाते हैं तो गांव में चारों ओर हाहाकार मच जाता है। उसी समय मारकंडे अग्निहोत्री दांत पीसते हुए कहता है-"मैं होता तो तीनों लड़कियों को जान से मार देता। यदि भी मेरी बेटियां होती। ब्राह्मणों की शान, प्रतिष्ठा और गौरव इस पुजारी की बेटियों ने गर्त में मिला दिया है। पहले ब्राह्मण दलितों पिछड़ों की खूबसूरत लड़कियों और औरतों को रखेल बनाकर रखा करते थे। मेहतरो की नव विवाहित पत्नियों के साथ सुहागरात पहले ब्राह्मण मनाया करते ।थे अब उल्टा हो गया है। राम! राम ! राम!" पृष्ठ संख्या -81 यहां आप देख सकते हैं कैसे उन्हें अपने हजारों साल पहले किए गए कुकर्म याद आ रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि आधुनिक शिक्षा पद्धति ने पुरानी परंपराओं और रूढ़ियों को तबाह करके रख दिया है। प्रत्येक व्यक्ति को तर्कशील मानव के रूप में तब्दील कर दिया है।

इस उपन्यास के चौथा भाग में रूपनारायण जी ने दिखाया है जब पुजारी दयाशंकर की तबीयत बहुत खराब होती है तब वे चारों लोग राम चंद्र वेदी घसीटे चमार सलवंत यादव और पुजारी की तीनों बेटियां उनको अमेरिका इलाज के लिए ले जाती हैं और वहां वह ठीक होता है। इससे स्पष्ट होता है लेखक ने इस बात को प्रमाणित करने का प्रयास किया है की मानवता पत्थर को भी संवेदनशील बना देती है बड़े-बड़े जानवर भी आदमी बन जाते हैं। इस पूरी घटना से प्रेरित होकर दयाशंकर पुजारी की तीनों बेटियां डंके की चोट स्वीकार करती हैं-"आदमी जाति से नहीं बल्कि कर्म से बड़ा होता है। जातिवाद ऊंच-नीच की भावना समाज में एक कोढ की तरह है। यदि इसका इलाज न किया गया तो पूरा समाज रोगी बन जाएगा।"पृष्ठ संख्या- 83

लेखक ने पूरी ईमानदारी के साथ इस बात का समर्थन किया है कि अपने और पराये की पहचान मुसीबत में होती है। अर्थात समय पर जो अपने काम आए और आपका जीवन रक्षक बने वही अपना होता है रक्त संबंध ,जाति ,धर्म सब व्यर्थ हैं। यह इस बात का प्रमाण है जीवन धर्मशास्त्र एवं भगवान से नहीं बल्कि विज्ञान से चलता है और संरक्षित भी होता है। यह बात उसे समय देखने को मिलती है जब दयाशंकर पुजारी अमेरिका से ऐडस की बीमारी का सफल इलाज कराके लौटता है। इसके बाद वह धर्म कर्म पूजा पाठ सब भूल गया। तभी तो हुआ अब इन सब का विरोध करते हुए कहता है-"इन पत्थर की मूर्तियों को जिनको हम देवता रहते हैं। रात - दिन इनकी की सेवा में लगे रहते हैं, इस विश्वास के साथ यह हमारा कल्याण करेंगी। यह सभी कोरी चीजे हैं। इन्होंने कभी किसी मानव का कल्याण नहीं किया। हमारे संस्कारों को बेवजह इतना धार्मिक बनाकर हमें कर्महीन बना दिया है एवं फिजूल के धार्मिक कर्मकांड में लगा दिया है।।…….. आप लोग कुछ भी समझो। मानव से बड़ा कोई नहीं होता। सज्जन खटीक ,घसीटा चमार और सलवंत यादव सही मायने में मानव है……. उसने आगे कहा मैंने उनके साथ बुरा व्यवहार किया आप लोगों के भड़काने पर। लेकिन उन्होंने मेरी गलतियों को क्षमता ही नहीं किया बल्कि मरते आदमी का इलाज करा कर जीवन दिया।₹5000000 मेरी बीमारी में खर्च कर दिए ऐसे ही लोगों को महामानव कहा जाता है।"पृष्ठ संख्या 84

धर्म और मानवता की बात की जाए तो आप पाएंगे कि इन दोनों का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। बल्कि धार्मिक अंधविश्वास एवं धार्मिक कट्टरता ने पूरे के पूरे भारतीय समाज को मानसिक एवं शारीरिक रूप से गुलाम ही नहीं बनाया बल्कि बहुत बड़ा नुकसान किया था और आज भी कर रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर पुजारी दयाशंकर ने मारकंडे अग्निहोत्री से कहा जब कुत्ता मूर्तियों के ऊपर पेशाब कर सकता है तो सुअर मंदिर के अंदर क्यों नहीं जा सकता। यही वह पड़ाव है जहां से लेखक समतामूलक समाज की नीव रखना चाहता है जिससे भविष्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम रह सके। जब पुजारी दयाशंकर की तीनों बेटियों की शादी खटीक चमार, यादव के साथ होती है तो गांव वाले बहुत विरोध करते हैं लेकिन स्वयं पुजारी दयाशंकर इस बात पर अपनी सहमति देते हुए कहते हैं-"आप कौन होते हैं? मेरी बेटियों की शादी रुकवाने वाले।'पृष्ठ संख्या -91 और अंत में पुजारी दयाशंकर ने संविधान की समानता और मौलिक अधिकारों की धाराएं पढ़कर अपनी बेटियों की शादी संपन्न करा दी । यहां लेखक अंतर्जातीय विभाग को समाज के लिए वरदान मानता है। क्योंकि यही एक संबंध ऐसा होता है जहां पर सभी मानव एक समान हो जाते हैं और किसी में कोई भेदभाव शेष नहीं रह जाता।

समाज को विभाजित करने वाले मानसिक विकलांग लोगों की की जब एक नहीं चलती है तो वह सामने वाले पर तरह-तरह के व्यंग बाण छोड़ते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं जिससे परेशान होकर सामने वाला अपना रास्ता छोड़ दे और पुनः अपनी परंपराओं और रूढ़ियों के जाल में आकर फस जाए। लेकिन ऐसा होते हुए लेखक ने दिखाई नहीं। मारकंडे अग्निहोत्री जब दयाशंकर की तीनों लड़कियों पर तरह-तरह की जाति के आधार पर व्यंग करता है तब भी वे अपने रास्ते से पीछे नहीं लौटती आगे ही चलती जाती हैं। बल्कि उसे करारा जवाब देते हुए कहती हैं लगता है जेल में कुछ कम धुलाई हुई है इस बेचारे की।

जिन संस्कार ,संस्कृति और इज्जत के नाम से एक छाता कुछ तथाकथित मूरखो ने बना रखा था, आज उसमें आधुनिक शिक्षा पद्धति और भारतीय संविधान की आग में अनेक छेद कर दिए हैं जिससे वह जर्जर हो चुका है। आप लोगों के मानस पटल और हृदय पर ज्ञान का पानी धीरे-धीरे जा रहा है। जिसे रोक पाना अब संभव नहीं। दयाशंकर पुजारी की तीनों लड़कियां ज्ञान और तर्क के पानी से पूरी तरह भीग चुकी है। उनके ऊपर आप किसी संस्था ,जाति ,धर्म और बदनामी का असर नहीं होता है। बल्कि सभी लोगों को बुरी तरह लताड़ लगाते हैं और अपने रास्ते पर निरंतर आगे बढ़ रही है।

सुअर दान उपन्यास में लेखक ने सारे परिवर्तनों में शैक्षिक परिवर्तन को सबसे प्रथम स्थान दिया है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो अनेक प्रकार की मानसिक गंदगी को दूर करती है। इस उपन्यास के छठ में भाग में लेखक सिंहासन खेड़ा गांव के मजदूरों के विषय में बताता है। वहां के मजदूर दिन रात मेहनत करते हैं उन्हीं का एक लड़का डिप्टी कलेक्टर हो जाता है। यह खुशी पूरे गांव की खुशी के रूप में सामने आती है। एक मजदूर के बेटे का डिप्टी कलेक्टर होना समग्र गांव को मानसिक मजबूती प्रदान करता है। इसके साथ ही लोघ उज्जवल भविष्य की कामना करने लगते हैं। लेखक ने इसमें यह चित्रित करने का प्रयास किया है की शिक्षा से तर्कशील पीडिया का निर्माण होता है जो न्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ सकती है।

भारतीय समाज में आजादी के 76वर्ष बाद भी दहेज की समस्या प्रत्येक जाति और धर्म में बनी हुई है। अब यह प्रत्येक परिवार का एक मानसिक रोग बन गया है। बिना दहेज जैसे शादी करना कोई अपराध हो। दहेज की समस्या सबसे पहले जमींदार और पूंजी पतियों के यहां हुआ करती थी। लेकिन आज यह शोषित पीड़ित समाज के लिए भी गले की हड्डी बन गई है। पूरा विश्व अच्छी तरह से जानता है कि पैसे से सुख नहीं खरीदा जा सकता। फिर भी लोग उससे नहीं बच पाते हैं। दौलत का नशा सच में आदमी को जानवर बना देता है। रतनलाल और अनुसुइया के माध्यम से रूप नारायण जी ने इससे समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।जब रतनलाल अनुसूया के रहते हुए दूसरी शादी करता है तब अनसूया बार-बार उससे निवेदन करती है - "ऐसा जुल्म मत करिए। मेरे मां-बाप मर चुके हैं। मेरा भाई बहुत छोटा है। चाचा -चाची उसको पालते हैं। मैं घर में पढ़ना लिखना सीख लिया है। मैं गणित में हिसाब किताब कर लेती हूं। इस पर जोर से बोलते हुए कहा-'क्या तुम अंग्रेजी बोल सकती हो? पढ़ सकती हो? लिख सकती हो?..... अनपढ़ गवार औरत तू मुझे शिक्षा दे रही है इस बचपन की शादी को मैं नहीं मानता हूं।"पृष्ठ संख्या- 107

लेखक ने यहां इस बात की ओर इशारा किया है कि इंसान बनना कठिन है विद्वान बनना आसान है। ऐसी शिक्षा किस काम की जो मानवीय पक्ष को स्वीकार न कर सके। रतनलाल सरकारी अधिकारी तो बन गया लेकिन उसके अंदर मानवीय संवेदना नहीं है। इसीलिए वह अपनी पहली पत्नी और 6 साल

की बेटी पर तरस नहीं खाता है। उसकी पत्नी यहा तक कहती है कि मुझे बस अपने घर में रहने दो,मैं कभी भी पत्नी का अधिकार नहीं जताऊंगी। इसके बाद भी रतन लाल का दिल नहीं पिघलता है। यहां एक बात साफ नजर आती हैं वह यह है कि आज समाज में बौद्धिक विकास तो हो रहा है लेकिन मानवीय विकास उतना ही कम दिखाई दे रहा है। इसलिए समाज में अनेक तरह की समस्याएं जन्म ले रही हैं।

नारी के शोषण के पीछे ब्राह्मणवादी मानसिकता, वेद शास्त्र आदि हैं। क्योंकि पतिव्रता नारी की जो कल्पना है वह केवल वेद शास्त्रों और पुराणों में ही देखने को मिलती है। यही वजह है जब अनसूया का पिता उसे कहता है बेटी तुम अपनी दूसरी शादी कर लो। तो इस पर अनसूया इस मानसिक बीमारी से ग्रस्त है पतिव्रता की दुहाई देती हूई कहती है चाचा में मर जाऊंगी लेकिन दूसरी शादी नहीं करूंगी। जब तक जिंदा रहूंगी तब तक डिप्टी कलेक्टर की बीवी कहलाऊंगी। इसलिए हम यहां कह सकते हैं कि भौतिक विकास ,अति महत्वाकांक्षा ,पूंजीवादी मानसिकता ,आधुनिक जीवन शैली ने मानवीय संवेदनाओ को कोमा में डाल रखा है। इन्हीं सब की वजह से आज समाज में जीवन को बचाने के लिए, उसकी वास्तविकता को दर्शाने के लिए दलित विमर्श ,बाल विमर्श ,वृद्धा विमर्श, थर्ड जेंडर, आदिवासी आदि हिंदी साहित्य में दिखाई देते हैं। नारी को पुण्य -पाप नीति -नीति मान-अपमान यह सब धार्मिक परंपराओं के कारण ही सिखाया गया है। लेखक यहां बहुत ईमानदारी से स्वीकार करते हैं की नारी की जिंदगी को नर्क करने का एक ही कारण है मनुवादी व्यवस्था का आज भी पालन करवाना। और यह व्यवस्था ईश्वर और धर्म दोनों के द्वारा संरक्षित की जाती है जहां पर कोई तर्क काम नहीं करता है। लेकिन लेखक का दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक है मानते हैं कि अन्याय के खिलाफ अंत तक लड़ना चाहिए परिणाम चाहे जो हो।

उपन्यास के अंत में लेखक ने बताया है कि किसी भी अव्यवस्था को बार-बार गंदा गंदा कहने से साफ नहीं हो सकती। उस सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए जब तक प्रयास नहीं है होगा तब तक वह दूर नहीं होगी। आगे वे यहभी कहते हैं कि कुछ पाने को कुछ खोना पड़ता है, व्यक्तिगत स्वार्थ को त्यागने से ही सामाजिक परिवर्तन संभव होता है। जो व्यक्ति ,वस्तु ,विचार एवं व्यवसाय जीवन को बेहतर बनाए वही मूल्यवान होता है। यह बात पुजारी दयाशंकर की समझ में अच्छी तरह से आ गई है इसीलिए वह कहता है -"मैं अब कोई गोदान नहीं करूंगा। स्वर्ग और नर्क सभी कल्पना की चीजें हैं मरने के बाद आदमी इसी मिट्टी में विलीन हो जाता है। आदमी की सांस रोकने के बाद उसको कुछ पता नहीं रहता, क्योंकि उसके सारे क्रियाकलाप बंद हो जाते हैं। वह बिल्कुल मिट्टी हो जाता है। मिट्टी कभी भी गाय की पूछ नहीं पड़ सकती है। और अंत में पुजारी दयाशंकर ने गाय दान की जगह सूअर के बच्चों पर हाथ रखते हुए अंतिम सांस ली।"पृष्ठ संख्या -160

यदि हम प्रेमचंद के गोदान और रूपनारायण सोनकर के सूअर दान की समीक्षा करें तो हम पाएंगे कि सूअर दान जिन सामाजिक कुरीतियों का बड़े तार्किक ढंग से विरोध करता है गोदान वहीं उन्ही धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का प्रत्यक्ष -अपरतक्ष समर्थन करता हुआ नजर आता है। प्रेमचंद के गोदान के जितने भी पात्र हैं वे लगभग सभी कहीं ना कहीं धर्म और ईश्वर के डर से भयभीत नजर आते हैं। सूअर दान के अगर सभी पात्रों को आप देखें तो वह सभी अपनी आधुनिक सोच और बेहतर समाज की संकल्पना के साथ स्वयं आगे बढ़ते हैं बल्कि अपने विरोधियों को भी सही रास्ते पर लाने के लिए मजबूर करते हैं। इसलिए आप देखेंगे सूअर दान उपन्यास गोदान उपन्यास से अधिक महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि की एक कालजई उपन्यास है जिसकी प्रासंगिकता भविष्य मे सदैव बनी रहेगी।

अब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि रूपनारायण सोनकर जी ने प्रारंभ से लेकर अंत तक शिक्षा के माध्यम से मिथक को तोड़ते हुए आगे की यात्रा प्रारंभ की है और बड़े तार्किक ढंग से धार्मिक रूढ़ियों अंधविश्वास और परंपराओं को ध्वस्त करते हुए एक समता मूलक समाज की नींव रखी है। इसके साथ ही उन्होंने आधुनिक सोच, आधुनिक शिक्षा और व्यवसाय के माध्यम से जो हृदय परिवर्तन किया है वह वास्तव में काबिले तारीफ है। उन्होंने समाज की तमाम बुराइयों को एक-एक कर खोल कर रख दिया है। इसके बाद उन्होंने सभी बुराइयों का इलाज भी बखूबी किया है। आपका यह उपन्यास तत्कालीन समाज की सच्चाई को बयां करता हुआ नजर आता है। इसलिए हम कह सकते हैं की सूअर दान उपन्यास में भविष्य की अनेक संभावनाएं छिपी हुई हैं जो एक बेहतर समाज के निर्माण में अपनी भूमिका अदा करती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि सूअर दान उपन्यास ने हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाई है जो अन्य उपन्यास कारों से एकदम अलग एवं मौलिक है।

*****

नागफनी : जाति के जंगल में साहस की विकल्प गाथा

-मूलचंद सोनकर

आदमी को पहले हमला नहीं करना चाहिये। लेकिन अपनी रक्षा जरूर करनी चाहिये। यदि हमला करनेवाले आपकी जान लेने पर उतारू हो जायें तो सामने वाले पर जोरदार प्रहार करना चाहिये। वह आदमी बहुत बड़ा कायर होता है जो बगैर संघर्ष किये हुए मरता है। दलितों की आत्मा इतनी दबा दी जाती है कि वे संघर्ष करना भूल जाते हैं। वह इसीलिये सवर्णों से हर जगह पिटते रहते हैं। जिस दलित की आत्मा दब जाती है वह हट्टा–कट्टा होते हुए भी दुबले पतले सवर्ण से हार जाता है। मेहनत मजदूरी करने वाले दलित हट्टे–कट्टे होते है। यदि वह अपनी अंर्तात्मा को हट्टा–कट्टा और मजबूत बना लें तो अत्याचारी सवर्णों के अत्याचारों का माकूल उत्तर दे सकते है। दलितों को शारीरिक और आंतरिक दोनों तरह से मजबूत बनना है। जिस दिन पन्द्रह प्रतिशत ग्रामीण दलितों में यह भावना आ जायेगी उस दिन सम्पूर्ण भारत में शोषण और अत्याचार का नामोनिशान नहीं रहेगा। (पृ0 26–27) यह एक बानगी है, उस तेवर की, जो रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा 'नागफनी' में आद्यांत फैला हुआ है और यही विशिष्टता नागफनी को अन्य दलिता आत्मकथओं से अलग करती है। इसे 'संघर्ष की चाहत' से 'संघर्ष छेड़ने की परिणति' के प्रस्थान–बिन्दु के रूप में देखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह ललक की निष्पत्ति की आत्मकथा है।

भारतीय समाज की विसंगतियों के विरुद्ध विद्रोह दलित–चिंतन की धुरी है। दलित रचनाकर किसी भी विधा में लेखन करें, सामाजिक व्यवस्था के प्रति उनका आक्रोश छलक–छलक जाता है। यद्यपि आज गैर दलित लेखकों और बुद्धिजीवियों की एक बड़ी संख्या इन विसंगतियों को स्वीकार करके दलितों के पक्ष में खड़ी है लेकिन परंपरावादी चिंतकों, लेखकों और बुद्धिजीवियों की संख्या इनसे कहीं अधिक है, जो येन केन प्रकारेण वर्ण–व्यवस्था को जायज ठहराती है। बात यहीं पर नहीं रुक जाती है। दलितों की पक्षधरता का दावा करने वाले गैर दलित साहित्यकार को बनाये रखने के एकमात्र उद्देश्य से निर्दोष दलित चिंतक शंबूक की हत्या करने वाले राम की मर्यादा पुरुषोत्तम की तरह गुणगान करते हैं तो उनकी नीयत पर सन्देह होता है, लेकिन इसके लिए उन्हें एकतरफा दोष भी नहीं दिया जा सकता है। यह उनकी संस्कारता नियति का एक हिस्सा है जो उनके मस्तिष्क में हमेशा सुप्तावस्था में विद्यमान रहती है और अवसर पाते ही अपने वास्तविक स्वरूप में सक्रिय हो जाती है इसलिये परंपरावादी चिंतन के साथ दलित चिंतन की टकराहट बनी ही रहती है।

भारत आज भी गांवों का देश है जहां मर्यादा और परंपरा के नाम पर युगों पुरानी सामाजिक कुरीतियां और विसंगतियां उसी तरह व्याप्त है जहां जातीय हैसियत ही आदमी मापने का एकमात्र पैमाना है चूंकि यह मानसिकता से जुड़ा मामला है जो स्वयं को जुड़ावस्था में अनुकूलित कर लेता है, इसलिये इसकी व्याप्ति शहरों तक विस्तारित है। शहर के आधुनिकतम परिवेश में जन्मा है पालित–पोषित आदमी भी जाति को लेकर पूरी तरह दकियानूस और कुंठित होता है। जाति व्यवस्था ने इस अच्छे–खासे देश को नरक बना दिया है। जाति व्यवस्था का ही कमाल है कि इस देश को नरक बना दिया है। जाति व्यवस्था का ही कमाल है कि देश में समरस समाज की कौन कहे–व्यक्तिगत स्तर पर भी सहज स्वाभाविक सम्बन्ध की स्थापना संभव नहीं हो पाती। इस व्यवस्था के आगे बड़े से बड़ा समाजशास्त्री और उसके सामाजिक सिद्धान्त पानी भरते हैं। इसी व्यवस्था ने माक्स. वादियों का इतना नैतिक पतन कर दिया कि मार्क्स और सामाजद्रोही होने में उन्हें कोई लाज नहीं आती। यही व्यवस्था है जो संविधान और कानून का निर्लज्ज उल्लंघन करने के लिए उकसाती है और उन्हें यह कहने में कोई घ ाबराहट नहीं होती कि–"हमारे गांव में उस चमरे का संविधान नहीं चलेगा। यहां हमारा हमारा संविधान चलता है।" (नागफनी, पृ0–32) यही व्यवस्था है जो दलितों को पल भर

चैन से बैठने नहीं देती और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये उन्हें सतत् संघर्ष करना पड़ता है इसी संघर्ष की निसृति है दलित साहित्य और इसके अग्रणी रचनाकारों में रूपनारायण सोनकर एक विशिष्ट नाम है।

रूपनारायण सोनकर के यहां दलित–देश की कराह नहीं है बल्कि इस व्यवस्था के प्रति खुला विद्रोह। अन्याय, शोषण, दमन और अत्याचार के प्रतिकार के लिये संघर्ष है। 'नागफनी' को पढ़ते हुए पृष्ठ दर पृष्ठ यही संघर्ष दिखाई देता है। इस संघर्ष में पलायन नहीं विजय है इसके लिये वह सभी दलित जातियों को संगठित भी करते हैं। आत्मकथा का प्रारम्भ ही इस विजय गाथा से होता है। कथाकार की चाची द्वारा कलश को सिर पर रखने के कारण एक ब्राह्मण द्वारा उनकी पिटाई की जाती है। प्रतिरोध में गांव की खटीक, पासी, चमार, कोरी, वाल्मीकि सभी दलित, जातियाँ एकजुट होकर मरने मारने पर उतारू हो जाती है। फिर क्या था, ब्राह्मण पश्चाताप करते हुए पीतल का कलश चाची के सिर पर रख देता है। यही सिलसिला आगे भी चलता है, चाहे वह सुअर–गाय का युद्ध हो, चाहे कुश्ती लड़ने का प्रसंग हो, चाहे कोई अन्य।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार, स्त्री तथा दलित विमर्श के मुखर पैरोकर और इन्हें परवान चढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले 'हंस' के निर्भीक व तेजस्वी संपादक राजेन्द्र यादव ने अपनी पत्रिका के सितम्बर, 2006 के संपादकीय में प्रभा खेतान और रूपनारायण सोनकर की आत्मकथाओं के बारे में टिप्पणी की है। प्रभा खेतान की धारावाहिक 'आत्मकथा' ने जिस तरह यथास्थितिवादी तबके में तहलका मचाया है वह दिलचस्पी है। मेरा ख्याल है कि अजीत कौर की पंज. ाबी आत्मकथा 'खानाबदोश' के बाद यह हिंदी की पहली आत्मकथा है। जहां सम्पन्न–वर्ग की एक 'अन्या' ने साहस के साथ अपने निजी और सार्वजनिक इन्द्रों को बेबाकी से सामने रखा है। न जाने किन स्तरों पर स्त्रियाँ आज पर्सनल को पॉलिटिकल बना रही है।

इस बार दलित लेखक रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा के वे अंश दिये जा रहे हैं। जहां 'हाय मार डाला' की चीत्कार नहीं है, मगर संघर्ष है जो दैनिक जीवन के साथ जुड़ा है। शायद प्रभा और सोनकर दोनों की आत्मकथाएं उस परिवर्तन का हिस्सा है जिसे अंग्रेजी में 'साइलेंट रिवोल्यूशन' कहा जाता है। मेरे ख्याल से नागफनी के बारे में यह किंचित संकोचभरी टिप्पणी है उनकी। इस पुस्तक के लोकार्पण के समय राजेन्द्र यादव की यह टिप्पणी– "यह पुस्तक व्यक्तिवाद से अस्मितावाद तक की यात्रा का विस्तार है। यह एक अच्छा प्रारम्भ है और कहना चाहिये कि यह बेहतर संभावनाओं की किताब है" कहीं ज्यादा सार्थक एवं सारगर्भित है। (अपेक्षा अंक 22, जनवरी–मार्च 2008, पृ0 135) नागफनी को पढ़ते हुए इसके प्रत्येक एपिसोड में मुझे एक खुला विद्रोह दिखायी देता है जिसकी परिणति हर बार दलित पक्ष की विजय में होती है।

दलित चेतना के उभार से वर्ण–व्यवस्था की संरचना में जो वास्तविक परिवर्तन आया है, वह यह है कि कुछ पिछड़ी जातियाँ वर्चस्वशाली हो गयी है। समाज में उनकी वहीं हैसियत हो गयी है जो उच्चजातीय सवर्णों की है। वे वस्तुतः उन सभी सामाजिक सुविधाओं का उपभोग करने लगी है। जो अन्य उच्चजातीय सवर्ण लोग करते हैं। इसमें उनका साध ान–संसाधन विहीन अथवा अशिक्षित होना उसी प्रकार आड़े नहीं आता, जिस प्रकार उच्चजातीय सवर्णों के मामले में। पिछड़ी जातियाँ अपने शुद्रत्व की मानसिक कुंठा से उभर कर दलितों को सताने में किसी से कम नहीं है और आज की स्थिति में ये पिछड़ी जातियाँ भी दलितों के सामने एक बड़ी चुनौती के रूप में खड़ी है। दलित बुद्धिजीवियों को इसका सामाजिक विश्लेषण करना चाहिये। दिसम्बर 2006 के हंस में संपादकीय में आत्मकथाओं पर चर्चा करते हुए राजेन्द्र यादव ने यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया है कि धर्मशास्त्रों पने सारी वर्जनाएं दलितो–धर्म का निर्वाह करता रहे, हर कहीं धर्मों के कोतवाल और शास्त्रों की गीता हाथों में लिये तालिबान बैठे है जो किसी भी तरह का विचलन स्वीकार नहीं कर पाते। परंपरा और मर्यादाओं की रक्षा के नाम पर हर तरह की हिंसा, षडयंत्र वहां जायज है। धर्मशास्त्र–स्त्री दलितों की दासता के सबसे बड़े प्रताड़ना कोश है। स्त्री–दलित अस्मिताओं की मुख्य लड़ाइयाँ इन्हीं परंपराओं, मर्यादाओं और शास्त्रों के मोर्चा पर होती है, क्योंकि ज्ञान शक्ति है और उसे प्रश्नों, शंकाओं और असहमतियां से ही प्राप्त किया जाता है। दलितों और स्त्रियों को ऐसे अवसरों से सायास वंचित रखा जाता है। यह कथन मेरे कथन की स्वीकारोक्ति है कि अनेक पिछड़ी जातियों में आती है और इस कारण सेवाक्रम की पात्र है, धार्मिक वर्जनाओं की कुंठा से उबर चुकी है और उनकी यह स्थिति समाज द्वारा स्वीकार्य भी हो चुकी है।

'नागफनी' में पिछड़ी जातियों के सामाजिक वर्चस्व को स्वीकार किया गया है लेकिन सुखद आश्चर्य यह है कि ये

दलितों के पक्ष में है, यद्यपि मेरी अनुभवजन्य धारणा इसे 'यूटोपियाई' कल्पना मानने को विवश करती लेकिन चूंकि यह आत्मकथा है, इसलिये इस पर सवाल करने की गुंजाइश नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि 'नागफनी' में मात्र ब्राह्मणों को ही शोषक बताया गया है और ठाकुर समेत सभी पिछड़ी जातियाँ ब्राह्मणों के विरोध में दलितों के साथ खड़ी हैं। स्वयं लेखक के शब्दों में– 'मेरे गांव के ठाकुर, कुर्मी और यादव सदैव हमारे परिवार की मदद करते हैं।" (पृ0 41) अनेक स्थलों पर इसी प्रकार की टिप्पणियां मिल जाती है पढ़ने को। निश्चित रूप से भारतीय सामाजिक संरचना के परिपेक्ष्य में यह दिलचस्प स्थिति है जो समाजशास्त्रियों को नये सामाजिक सिद्धान्त गढ़ने के लिये सामग्री उपलब्ध करा सकती है।

आगे बढ़ने से पहले मैं कुछ व्यवहारिक प्रतिकार के दृष्टांतों पर चर्चा करना चाहूंगा। डॉ0 अम्बेडकर को अपना प्रेरणा–स्रोत मानते हुए लेखक ने उन्हें इन शब्दों में याद किया है– "डॉ0 अम्बेडकर अकेले थे। उन्होंने अकेले ही सारे देश से गैर बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया था। उनके तेज के सामने गांधी, जवाहर की चमक धीमी पड़ गई थी। इन लोगों ने भी मानवता के प्रति किये गये डॉ0 अम्बेडकर के कार्यों को सही माना था। पीड़ित बहुसंख्यक मानवता के प्रति हमदर्दी रखने वाले विश्व के एकमात्र जननायक अम्बेडकर ही थे। यदि वे संघर्ष से डर जाते तो दलित जिस स्थिति में आज ही कभी न होते। (पृ0–57) ले खक ने डॉ0 अम्बेडकर को किस तरह आत्मसात किया उसके कई दृष्टांत इस आत्मकथा में मौजूद हैं। ब्राह्मणों ने जब यह मुनादी करवा दिया कि कोई दलित उनके खेत से होकर नहीं जायेगा तो प्रत्युत्तर में लेखक द्वारा भी यह मुनादी करवाकर कि कोई भी ब्राह्मण खटीकों के खेत से होकर नहीं जायेगा। उन्हें झुकाने के लिये विवश कर दिया गया। मेहतरों को यह सलाह दी कि वे गंदे काम करना छोड़ दें। मलिन बस्ती के बच्चों को स्वयं पढ़ाकर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इन शब्दों में उम्मीद की लौ जलाने की कोशिश की– "वास्तव में पढ़े लिखे दलित जहां रहते हों। अपने आसपास के गरीब बच्चों की इसी तरह पढ़ाये तो डॉ0 अम्बेडकर का मिशन पूरा हो सकता है। सभी दलित शिक्षित हो सकते हैं। इस कार्य में त्याग, परोपकार और तपस्या की जरूरत होती है।" (पृ0–89) इसी प्रकार दलितों की गरीबी से विचलित होकर लेखक का पिछले चौबीस सालों से एक वक्त केवल रात्रि में ही भोजन करना दलित–आंदोलन की ऊर्जा और सफलता में नये आयाम जोड़ सकता है। नये कपाट खोल सकता है और बेहतर संभावनायें पैदा कर सकता है।

'नागफनी' लेखक के आत्म–वृतान्त ही नहीं, उसकी वैचारिक अभिव्यक्ति के लिये भी जाना जायेगा। जैसा कि लेख की शुरूआत में ही कहा जा चुका है, अनेक स्थलों पर इन्हें सूक्तियों के रूप में ही कहा जा सकता है। इनमें इसकी वैचारिक प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सहानुभूति और स्वानुभूमि के दायरे से निकलकर उसके द्वारा दलित साहित्य की जो परिभाषा की गयी है वह अकाट्य है। उसे यहां उद्यत करना अनिवार्य है, जो इस प्रकार है– "मेरे जैसे परमपंथी लेखकों का कहना है जो आदमी झुग्गी–झोपिड़यों में रहता है। वह स्वयं सवर्णों द्वारा सताया गया है। अपने लड़के व लड़कियों की शादी दलितों के साथ करता है। डॉ0 अम्बेडकर की विचारधारा को मानता है। ध ार्मिक प्रतीकों को नकारता है तो अगर दलित साहित्य लि खता है तो उसके दलित साहित्यकार होने के बारे में विचार किया जा सकता है। जो भी क्रूर यातनाओं को सहता है। यातनाओं को सहने वाला व्यक्ति हमारा अपना भाई है। चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो। इसमें नस्ल, जाति और भौगोलिक सीमाओं का कोई सम्बन्ध नहीं है। ब्लैक लिट्रेचर के साहित्यकार हमारे अपने सगे भाई है।" (पृ0–158)

रूपनारायण सोनकर ने दलित लेखक व भारतीय दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष सोहनपान सुमानाक्षर और ओमप्रकाश वाल्मीकि का भी पर्दाफाश किया है।

सुमनाक्षर के बारे में मेरी भी वही राय है। मैं दिसम्बर 2006 में दिल्ली गया था। डॉ0 अम्बेडकर फैलोशिप सम्मान लेने के लिये। मुझे लगा कि इस संस्था को वह अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये प्रयोग करते हैं, सम्मान की एवज में धन उगाही करते हैं और बदइंतजामी ऐसी कि लिखते हुए शर्म आये। हजारों–हजार लोगों को देशभर से बुलाकर भेड़–बकरियों की तरह अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है ठंड में ठिठुरने के लिये। घोषित कार्यक्रम भी नहीं कराये जाते। किसी दानी ने कृपा कर दी तो खिला दिया, नहीं तो भूखे मरिए। पहला दिन तो किसी तरह कट गया मगर दूसरे दिन हद हो गयी थी। तालकटोरा स्टेडियम में लोग इकट्ठा थे। पहले दिन जैसी भीड़ नहीं थी। यही लगभग दो सौ आदमी होंगे। घ ोषणा हुई कि कोई बाहर नहीं जायेगा। सबसे पास लंच

पैकेट पहुंच जायेगा। लंच के समय डायस पर बैठे लोगों के पास खाना पहुंच गया। वे खाने भी लगे। हाल में शोर मच गया। मैं सुमनाक्षर के पास गया। उनसे बात कर ही रहा था कि पता नहीं कौन टी0एम0 कुमार जिसका नाम स्वग. ताध्यक्ष रूप में प्रचारित था, मुझसे गाली–गलौच करने लगा, मारपीट पर अमादा हो गया। इससे ज्यादा बदतमीजी तो सुमनाक्षर ने की। अपना खाता हुआ खाना उठाकर मुझे देने लगा। मैं उससे कहता ही रह गया कि मैं अपनी नहीं सबकी बात कर रहा हूं। लेकिन उसने एक नहीं झल्लाकर मैं अपने स्थान पर वापस आया।

सम्मान स्वरूप मिले मेडल और प्रमाण–पत्र को ले जाकर सुमनाक्षर के मुंह पर मार दिया। डायस पर भूतपूर्व राज्यपाल महामहिम माता प्रसाद जी भी थे। मेरे साथ कवि व कथाकार श्री जवाहर लाल 'व्यग्र' जो अतिरिक्त जिला जज के पद से सेवानिवृत्त हैं, गए थे। माता प्रसाद जी उनके परिचित है। कौल जी ने उनसे हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया। उनके हस्तक्षेप करने पर मैंने सम्मान ले तो लिया लेकिन इनती विरक्ति हो गई कि आज तक उसकी तरफ देखा तक नहीं। मुझे याद नहीं कि वह प्रमाण पत्र और मेडल कहां रखा है। इसके बाद मुझे– 'अम्बेडकर विशिष्ट सेवा सम्मान' के लिये बुलाया गया। वाराणसी के जोनल अध्यक्ष का पद देने की पेशकश की गई। मैंने सबको ठुकरा दिया। मेरा मानना है कि सुमनाक्षर की जांच कराई जाये तो उनके अनेक घपले उजागर होंगे। देखिये वह घड़ी कब आती है। इस अपमानजनक घटना की साक्षी मेरी पत्नी व उसकी बहन भी रही।

ओमप्रकाश वाल्मीकि से मेरी व्यक्तिगत मुलाकात नहीं है। बड़े साहित्यकार है, इसलिये जानता हूं, आदर भी करता हूं लेकिन उन्हें अपनी प्रशंसा कराने की इतनी भूख है कि साहित्यिक बेईमानी करने में भी नहीं झिझकते। ऐसा ही एक दृष्टांत यहां उद्धत है। वर्ष 1996 में गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक सदानंद शाही द्वारा एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। विषय था, 'दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद इसमें नामवर सिंह सहित अनेक मूर्धन्य साहित्यकार आये थे लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि नहीं आये थे।' आयोजन में मेरी सक्रिय हिस्सेदारी थी। वागर्थ का जून 2004 का अंक ओमप्रकाश वाल्मीकि पर केन्द्रित था।

इसमें देवेन्द्र चौबे का भी एक लेख था। चौबे जी ने अपने लेख में लिखा कि गोरखपुर वाले आयोजन में वाल्मीकि का भाषण सुनकर नावर सिंह बेहोश हो गये। मैंने झूठ को इंगित करते हुए चौबे, वाल्मीकि और वागर्य के संपादक को पत्र लि खे। 'वागर्थ' में यह प्रकाशित भी हुआ, लेकिन चौबे वाल्मीकि ने इसका संज्ञान तक नहीं लिया।

अंत में, मैं इतना चाहूंगा कि रूपनारायण सोनकर की आत्मकथा जाति के जंगल में साहस की गाथा है। रूपनारायण सोनकर को दलितों के संघर्ष–रथ का कृष्ण कहा जा सकता है। जो कृष्ण को अर्जुन कह तरह दीक्षित करके शब्दों के लक्ष्य–भेदी बाण का संचालन करवाने में दक्ष है। अंततोगत्वा यह प्रत्येक मनुष्य के अंदर बैठा हुआ साहस ही है जो किसी भी वार को झेलने के लिये सबसे पहले आगे आता है। इसे ही जाग्रत करने का महती काम किया है ले खक ने 'नागफनी' के माध्यम से। यह सचमुच बेहतर संभावनाओं की पुस्तक है जिसे प्रत्येक दलित को पढ़ना चाहिये।

*****

डंक : विषैली बरैयों के छत्तों को जलाने का औपन्यासिक प्रयास

-प्रो.ओमराज

रूपनारायण सोनकर का उपन्यास प्रथम दृष्टि से इब्नेबतूता के भारत की यात्रा के ऐतिहासिक विवरण के समान एक भ्रमण वृत्तात प्रतीत होता है। इब्नेबतूता की तर्ज पर विराट और संध्या देश के विभिन्न प्रदेशों के नगरों, गांवों तथा जंगल में स्थित कबीलाई आदिवासी बस्तियों में रहकर एक सजग व संवेदनशील प्रत्यक्षदर्शी के रूप में घटनाओं का सूक्ष्म अवलोकन व निरीक्षण करते हैं। घटनाओं में व्याप्त वैचित्रय से उपजी सामाजिक यथार्य के प्रति विराट तथा संध्या में वैचारिक प्रतिक्रिया ही इस प्रयोगात्मक उपन्यास के तीव्ररूप से प्रभावशाली कथानक को आधार प्रदान करती है।

'डंक' उपन्यास के रूप में ई0एम0 फोस्टर द्वारा निर्धारित वांछित शर्तों को कहां तक पूरा करता है। यह प्रबुद्ध उपन्यासकारों तथा विद्वान समालोचकों के मध्य बहस का मुद्दा है। कथानक किसी एक विशिष्ट विषय पर केन्द्रित काल्पनिक कथा के तानों–बानों से नहीं बुना गया है। इसमें विधिक आकार और रंग की पट्टियों के रूप में कहानियाँ हैं, सच्ची कहानियाँ। उपन्यास में चरित्र है, कल्पित नहीं वास्तविक जीवन के वास्तविक चरित्र जो आसानी से पहचान में आने वाले फ्लैट कैरेक्टर्स हैं। इसमें पुरातन, जर्जर और अव्यवहारिक सामाजिक परंपराओं की समाधि पर समतामूलक साम्यवादी समाज के भव्य निर्माण के लिये प्रोफेसी भी है। पाठकों को सामाजिक कुरुपता और विद्रूपता से रूबरू तो कराता ही है, साथ ही उनको दूर करने के उपाय सुझाता है।

उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। 'डंक' बर्रैयों के हैं। बर्रैये कई प्रकार की होती है, लेकिन सभी के डंक तेज होते हैं। उनके अंदर जातिवाद, छूआछूत, ऊँच–नीच, असमानता सांप्रदायिकता का विषैला द्रव भरा होता है। उनके डंक चुभते ही दलित पिछड़े कराहने लगते हैं। (पृ0–31) बर्रैयों के छत्ते शहद नहीं जहरीले बंशज पैदा करते हैं, ऐसे बर्रैयों के छत्तों को मशाल से जलाया जाता है। (पृ0–90) स्लमडॉग मिलिनेयर के लेखकों तथा फिल्म निर्माताओं की श्रेणी के लोगों को वह विदेशी बरैंया कहता है, जिनकी शिकार, नग्नावस्था में रहने वाली आदिवासी औरतें हैं, जिनकी तस्वीरें खींचकर ये लोग विदेशों में दिखाते हैं और लाखों डालर कमाते हैं। बरैंयों की प्रजातियों में उपन्यासकार ने बुद्धिजीवी बरैंयों का उल्लेख भी किया है जो ज्ञान के भंडार, ऊर्जा से भरपूर साहित्यकारों को अपना पैना डंक चुभोते रहते हैं। (पृ0–126) किंतु इस प्रजाति को उपन्यासकार ने फिल्म तक ही सीमित रखा है। सन् 2000 के अंत में *आजकल* के माध्यम से दलित साहित्य पर एक बहस छिड़ी थी जिसमें गैर दलित लेखकों के साहित्य को अधिकांश दलित चिंतकों ने 'दलित चेतना का साहित्य' अथवा 'दलित सहानुभूति' का साहित्य बताया था तथा *अपेक्षा* के संपादक तेज सिंह ने दलितों द्वारा लिखे गये साहित्य को 'सहानुभूति' का साहित्य कहा था। विद्वान प्रोफेसर और प्रसिद्ध दलित साहित्यकार श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने दलित साहित्य की आधारभूत विशेषताओं में श्रम, संघर्ष तथा सपनों की जीवंत आशाएं रेखांवित की थी। रूपनारायण सोनकर तब तो नहीं किंतु आज दलित साहित्यकारों में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। यदि 'डंक' को दलित साहित्य की दृष्टि से परखा जाय तो इसमें उपन्यासकार की अनुभव जनित दलित चेतना सतह पर तैरती नजर आयेगी तथापि उपन्यासकार ने अपने को मात्र दलितों का मसीहा नहीं वरन् भारतीय समाज के दलित, पिछड़ों तथा दलितों की तरह जीवनयापन करने वाले अति निर्धन सवर्णों का भी मसीहा सिद्ध किया है। रूपनारायण सोनकर दलित साहित्यकारों में संभवतः पहले उपन्यासकार है जिन्होंने वर्ण–व्यवस्था की विषैली बर्रैयों के डंक से दलित आदिवासी तथा पिछड़ों को ही छटपटाते नहीं देखा है, वरन् उनकी दृष्टि पूंजीवाद के छत्ते में आश्रय लिये उन बर्रैयों पर भी पड़ी है, जिनके डंक से हेवनाट्स पल–पल, तिल–तिल छटपटाकर जीवनयापन की मूलभूत सुविधाओं से सारे जीवन वंचित रहकर अंत में निर्धनता और निराशा से सारे जीवन

वंचित रहकर अंत में निर्धनता और निराशा के घोर अंधेरे में गुमनाम मर जाते हैं। उपन्यास के 'कायाकल्प' कथानक का नायक शिक्षित दलित युवक चुगनलाल बाघमारे जब गाय, भैंस, सूअर, मुर्गी, भेड़ पालन के लिये जब योजना बनाता है तो उसके द्वारा वह सभी के आर्थिक कल्याण की आकांक्षा करता है। योजना के फलीभूत होने पर सवर्ण गरीब मजदूर कैलाश चंद्र जोशी तथा पिछड़े वर्ग का मजदूर जगत भी अन्य दलितों की तरह लाभान्वित होते हैं। उपन्यासकार की दलित चेतना पूर्व तरह लाभान्वित होते हैं। उपन्यासकार की दलित चेतना पूर्व निर्मित संकीर्ण गलियारों से होकर प्रव. ाहित नहीं हुई है, वरन् जातीय तटबन्धों को तोड़कर वर्गीय चेतना को साथ लेकर जीवनदायिनी विशाल नदी का रूप ध ारण करती प्रतीत होती है। उपन्यासकार की बुनियादी सोच के लाहन में महुआरूपी दलित चेतना है, लेकिन फरम. ेटेंशन लिये जिस कसौंजी का प्रयोग किया है वह मार्क्स के दर्शन की साम्यवादी लकड़ी की छाल है। दोनों के मिश्रण से खींची गई यह शराब पीने वाले पाठक को विवेकाशून्य बनाकर उसे दलित उपन्यासकार पर अनावश्यक एवं पूर्वाग्र. हपूर्व दोषारोपण के लिये उत्तेजित नहीं करती, वरन् एक बुद्धिजीवी दलित लेखक की समतावादी सोच को समझाने के लिये मानसिक रूप से उद्वेलित करती है। दोस्तोवोस्की के क्राइम एंड पनिशमेंट के नायक रसकोलानिकोव की तरह चुगनलाल बाघमारे कहता है–"समाज में इतना अंतर क्यों है, कोई तो इतना अधिक धनवान है। सुख सुविधा उसे प्राप्त है। आलीशान महल हैं, लक्जरी गाड़ियां हैं, शादी–ब्याह में करोड़ो रूपये खर्च करते हैं। दूसरी तरफ नंगे, भूखे लोग, रहने के लिये घर तक नहीं.....। अपने बच्चों के शादी–ब्याह, गिलट के जेवारों, एक जोड़ी ध ोतीकुर्ता और छह बोतल महुए की शराब में निबटा लेते है। समाज में यह कितनी बड़ी बिडम्बना है। (पृ0–144)

उपन्यासकार का यह वैचारिक दृष्टिकोण पूरे उपन्यास में छाया रहा है। पंजीपति अथवा शोषक वर्ग की सांप तथा साधनविहीन निर्धन शोषित वर्ग को नेवले का रूप प्रदान करके उपन्यासकार कहता है। "जब एक छोटा नेवला विश. ालकाय विषैले सर्प से लड़ सकता है और अपने पराक्रम तथा होशियारी से उसे परास्त कर सकता है। हम तो मानव है तो हम नेवले से हजार गुना विकसित जीवन हैं, हम क्यों नहीं अपने साहस और चालाकी से विषैले मानवों को नेस्तनाबूद कर सकते हैं। (पृ0–95) उपन्यासकार जिस संघर्ष का आह्वान करता है वह विशुद्ध जातीय नहीं सर्वहारा का वर्गीय संघर्ष है। प्रोमिथीयस की तरह वह स्वर्ग से आंच चुराकर निर्धनों, दलितों, दमितों तथा शोषितों के सर्द चूल्हों में रखने का इच्छुक है। यातना, शोषण और दमन से मुक्ति के लिये जो मार्ग निर्मित किया गया है, न तो वह संसद तक जाने वाला राजमार्ग है, न किच्छमपुरा की वाल्मीकि बस्ती की परिक्रमा करने वाला कच्चा गलियारा, यह पेरिस से वसीय के महल तक जाने वाली 1789 की फ्रांस की वह सड़क है जिस पर 'रोटीवालों' तक पहुंचने के लिये 'मार्च' ऑफ दी फ्यूरीज हुआ था।

पूरे उपन्यास में घटनायें तथा पात्र गढ़े हुए नहीं है, हां उपन्यासकार द्वारा विराट का आश्रय लेकर समस्याओं के जो समाधान और निदान प्रस्तुत किये गये हैं, उसमें कल्पना का पुट है किंतु बिना किसी कल्पित आदर्श के किसी व्यवहारिक संस्था और संगठन की उत्पत्ति भी नहीं हो सकती। जंगल–पशुओं, पक्षियों आदि की प्रजातियों की विनाश, निरंतर कटते हुए जंगल, प्रदूषण, भ्रूण हत्या, मैला ढोने की अमानवीय कलुषित प्रथा आदि ऐसी ज्वलंत समस्यायें है जिनसे हम सभी परिचित है। उपन्यासकार ने कल्पना के पंखों पर सवार होकर देशगत उद्योगपतियों तथा विदेश में रहने वाले एन0आर0आई0 के सक्रिय आर्थिक सहयोग से एक 'अंतर्राष्ट्रीय जंगल' नाम की संस्था बनाई है, जिसका अभीष्ट प्रत्येक गांव का अपना जंगल है। कृषकों से भूमि क्रय करके वह जो जंगल बनाना चाहता है उसके द्वारा यह प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियर का पिघलना और मौसम परिवर्तन जैसी विनाशकारी समस्याओं पर विजय प्राप्त करने का स्वप्न संजोता है। वास्तव में उपन्यासकार की प्रस्तावित योजना को अमलीयजामा पहनाया जाये तो निसंदेह इस देश की धरती शस्य श्यामला हरित भूमि का रूप धारण कर लेगी और हर वृक्ष की डाल पर सोने की चिड़ियाएं बसेरा करने लगेंगी। उपन्यासकार किसी परलोक की कल्पना नहीं करता इसी लोक में उपस्थित संभावनाओं को मूर्त रूपों तथा प्रतिमानों में परिवर्तित करना चाहता है। समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने में वह कोरा आदर्शवादी नहीं रहा है। प्रत्येक समस्या के हल को व्यवहारिक रूप प्रदान करने में उसने विवेक का प्रयोग किया है। गांव सेवती कला में मैला ढोने की घिनौनी प्रथा जारी है (शाहजहांपुर, उ0प्र0 की तहसील जलालाबाद में इस प्रथा के आज भी जारी रहने में स्वयं प्रत्यक्षदर्शी हूं) संच. निया का लड़का आकाश उसे ठाकुरों और ब्राह्मणों के घर में

मैला उठाने से रोकता है तो उनके घर मक्खियों, गंदगी और सडांध से भर जाते हैं। आकाश अपनी माँ संचिनया को सवर्णों की धमकियों से डरकर आत्मसमर्पण नहीं करने देता। बाध्य होकर सवर्ण अपना मैला स्वयं ढोते हैं संचिनया और उस जैसी औरतों की मैला ढोने की अमानवीय यातना से मुक्ति का श्रेय उसके बी0ए0 पास बेटे आकाश को जाता है। जहां भी आकाश होगा, कोई संचानिया मैला नहीं ढोयेगी। उपन्यासकार मुक्ति के लिये शिक्षा को आवश्यक और अनिवार्य मानता है।

उपन्यास में एक शीर्षक हैं–एक ब्राह्मण औरत द्वारा दलितों के घरों के बर्तन साफ करना। उपन्यासकार द्वारा विराट के माध्यम से प्रस्तुत चित्रण यथार्ववादी है। विराट के फ्लैट में गोस्वामी (ब्राह्मण) जाति की औरत बर्तन धोने तथा सफाई का काम करती है। उपन्यासकार ने ब्राह्मण स्त्री से दलित के यहां बर्तन धुलवाकर सवर्णों के प्रति अपनी घृणा की भावना को अभिव्यक्त करके मानसिक तृष्टि अनुभव नहीं की है। वरन् अपार्टमेंट और फ्लैट की नई संस्कृति में छुआछूत के दानव विकराल छाया को स्वतः नष्ट होते हुए देखा है। इन फ्लैटों में सवर्ण जाति के फ्लैटों में दलित समाज की औरतें चाहे वह मेहतर ही क्यों न हों, बर्तन धोने, सफाई करने और खाने बनाने का काम करती है और सवर्ण औरतें दलितों के यहां। यह सच है कि छुआछूत की भावना गांव और कस्बों तक है। मैट्रोपोलिटन नगरों में यह तितर–बितर हो जाती है। उपन्यासकार के अनुसार दलित, पिछड़े और कमजोर सवर्ण गगनचुंबी इमारतों में तभी चढ़ सकते हैं, जब गगनचुंबी शिक्षा की इमारतों को नाप लें। इसके लिये वह डॉ0 अम्बेडकर को प्रेरणा–स्रोत मानता है।

डंक में उस सवर्ण वर्ग के प्रति आक्रोश और घृणा भी है, जो जातिवाद और छुआछूत के प्रभावशाली धर्मशास्त्रीय मंत्रों तथा प्रवचनों द्वारा सामाजिक वातावरण को विषैला बना रहा है। शिक्षित और प्रबुद्ध सवर्णों की ओर प्रवाहित सामाजिक समानता व समरसता के प्रवाह को अपने षडयंत्रों द्वारा अवरूद्ध कर रहा है। उपन्यासकार के हृदय में उन सवर्णों के प्रति अगाध प्रेम और सम्मान की भावना है, जो समतामूलक समाज की स्थापना के लिये वैचारिक तथा व्यवहारिक रूप से सक्रिय। विराट के माध्यम से उपन्यासकार उन ब्राह्मणों को यशोगान करता है जिन्होंने चमारटोले की लड़कियों और लड़कों को शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी है। उपन्यास में बेईमान ब्राह्मण एस0डी0एम0 है लेकिन ऐसा ब्राह्मण एडवोकेट भी है जो जातिवाद से ऊपर उठकर एक दलित मुकदमा ईमानदारी से लड़कर दलित पक्ष को विजय दिलाता है उपन्यास का सूत्रधार विराट उन शिक्षित ब्राह्मणों और ठाकुरों के लड़कों को गले लगता है, जो समतावादी और मानवतावादी है, जो दलित की बारात को सवर्णों की गली से गुजरने के लिये अन्य सवर्णों का सकारात्मक विरोध करते हैं, दलितों की हिमायत करते है तथा दलित की डोली को अपने कंधों पर उठाते हैं।

सोनकर के उपन्यास में सैक्स पर भी भरपूर मसाला है किन्तु सैक्स पर सैद्धान्तिक और व्यवहारिक बहस अधिक है। उपन्यास ने न तो शब्दों द्वारा न्यूड्स उकेरे हैं जो 'गीत गोबिंद' की तरह कामोत्तेजना उत्पन्न करें और न ही उसने संभोग और सहवास का ऐसा पोर्नोग्राफिकल चित्रण किया है कि लिंगीय उत्तेजना उत्पन्न हो। सैक्स के विषय में उपन्यासकार ने एक 'वर्गीय विभाजक रेखा' खींची है, जिसके लिये एक ओर धनाढ्य वर्ग के वह लोग है, जिनकी अंग तो केले विहीन छिलकों के समान हैं, लेकिन संभोग से पूर्व वियाग्रा का सेवन करती है इसीलिये तो इनकी पत्नियां, बेटियां, ड्राइवरों, नौकरों, मालियों से अपने दमित सैकस की पूर्ति करती हैं। (पृ0–84) रेखा के दूसरी ओर कामशक्ति से भरपूर आदिवासी और दलित राजस्थानी है। धनिक औरतों के प्रति उपन्यासकार की टिप्पणी से चिरमिराहट नहीं होनी चाहिये। वर्षों पहले (इंडिया टुडे के अनुसार) देहली में गिगोली (कामतुष्टि हेतु पुरुष) का अस्तित्व था। नौकरों आदि के साथ मालकिनों के अवैध सम्बन्धों की खबरे समाचार पत्रों में छपती रहती हैं। कीमती किटी पार्टियों में औरतों अपने पुरुष रखैलों का चटखारे लेकर जिक्र करती है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि निचले धड़ से अक्षम और नपुंसक लार्ड क्लिफोर्ड चैटर्ली आज भी होंगे और जहां होंगे वहां लेडी चैटर्ली गेमकीपर आलिवर मैलर को खुद तलाश कर लेगी। पाठक इस उपन्यास में नजर सैक्स के बारे में जानेंगे। उपन्यास में विराट और संध्या के मध्य सहवास का चित्रण है। सैक्स कंपटीशन का सुझाव है तथा उसके संभावित परिणाम का भी जिसमें दलित प्रथम, पिछड़े द्वितीय तथा सवर्ण तृतीय स्थान पर है। विराट के सैक्स कंपटीशन के सुझाव को उसकी सवर्ण गर्लफ्रैंड एक क्रांतिकारी विचार मानती है, बहरहाल यहां निर्धन सवर्णों को दूसरे नंबर पर र खने से भी कतराया गया है। उपन्यास में गधी–गधे, कुत्ते और कुत्तिया की रति क्रियाओं की प्रशंसा है। उपन्यासकर

सैक्सोलोजिस्ट के दायित्व का निर्वाह करता है। उसकी खोज के अनुसार सूअर के मूत्र में पौरुष शक्ति बढ़ाने वाला तत्व होता है तथा बूढ़ी औरतें इसे पीकर जवान हो जाती है। उपन्यासकार अपनी यात्रा के क्रम में यूलीसीज की तरह एक ऐसे विचित्र द्वीपरूपी स्थान छत्तीसगढ़ छल्लमपुरा में पहुंच गया है जहां के आदिवासी पत्नी को शुद्ध रखेने के लिए उसके गुप्तांग पर लेहे के ताले वाली चढ्ढी चढ़ा देते हैं और ताला लगाकर बाहर जाते हैं। उपन्यासकार ने प्रतीकात्मक भाषा द्वारा एक सैकस सीन इन शब्दों में उकेरा है– "वह एकाएक मेरे ऊपर गिर पड़ी। उसके झोले के दो कड़े–कड़े अमरूद मेरे बदन के टकरा गए। इन अमरूदों में इतनी महक थी कि मैं अपना मुँह झोले में अंदर डालकर उन अमरूदों का रस चूसता रहा। वह एक नैसर्गिक आनन्द था।" (पृ0–33) निरोध के प्रयोग का एक विकल्प भी उपन्यास में उपस्थित है–"संध्या को संतुष्ट करने के बाद जब स्खलन की बारी आती थी हम दोनों एक–दूसरे से दूर हट जाते थे इसलिए संध्या को कभी गर्भ नहीं ठहरा।" (पृ0–85)

उपन्यास में हमारे परिचित सनाम और अनाम अनेक पात्र हैं। बहू से बलात्कार करने वाला कोरी भगतुआ है, पिछड़े वर्ग का डिप्टी एस0पी0 जगन सिंह है जो छोटी बहू के साथ हम बिस्तर होता है। पंडित देव नारायण और उसके बेटे की बहू के मध्य पारस्परिक रजामंदी पर आधारित अवैध सम्बन्ध हैं। दुनिया जिन्हें पोता समझती है वह अपने दादा के वीर्य से उनकी बहू के गर्भ से पैदा दादा का बेटा है। ससुर बहू के बीच अवैध सम्बन्ध काल्पनिक नहीं हैं, समाज के यथार्थ का यह भी एक अंग है। भले ही उपस्थिति अप. वाद के रूप में हो। उपन्यास में बालीबुड के अय्याश अभिनेता, निर्देशक और अभिनेत्रियां हैं। मठों में नेकेड डांस करने वाले सुरा–सुंदरी का भोग करने वाले साधू महात्मा हैं, किन्तु इनके मध्य सच्चरित्र महात्माओं की उपस्थिति को उपन्यासकार ने नकारा नहीं है। लखनऊ के एक समाजसेवी से0 के0 गांधी हैं, जो महात्मा गांधी का हवाला देकर पार्वती और सीता को नंगा करके अपने बिस्तर में सुलाते हैं।

उपन्यास ने विराट और संध्या के माध्यम से स्वयं की उपलब्धियों का विवरण भी दे दिया है। यहां उपन्यास, उपन्यास न रहकर आत्मकथा का अंश बन गया है। उपन्यासकार का नाम पदमश्री अवार्ड के लिए संस्तुत किया गया था। पदमश्री अवार्ड के लिये सोनकर का नाम उत्तरा खण्ड के महामहिम राज्यपाल, मुख्यमंत्री व पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी0 पी0 सिंह द्वारा किया गया था किन्तु श्रीमती सोनिया गांधी ने क्रिश्चियन होने के नाते यह अवार्ड टाम आल्टर को दिलवा दिया। "दलितों की जिंदगी में सैंकड़ो वर्ष बाद कभी–कभी ऐसे अवसर आते हैं कि वह राष्ट्रीय स्तर पर चमक सके लेकिन जातिवाद, साम्प्रदायवाद और धर्मवाद से ग्रस्त नेता उनकी जिन्दगी में उजाला नहीं आने देते हैं। इस उजाले को अपने धर्म के लोगों की ओर मोड़ देते हैं। दलितों को अंधकार में ही रहना पड़ता है। (पृ0–121) इंदिरा गांधी को वह दलितों का हम दर्द मानता है मायावती को जाति. विहीन समाज बनाने में गांधी परिवार से आगे निकल जाने का दावा करता है तथा बहिन मायावती जी के इस प्रण की भी प्रशंसा करता है वह जब भी शादी करेगी। किसी मुसलमान लड़के के साथ अन्यथा कुंआरी रहेगी। उपन्यासकार ने राहुल गांधी से एक विनम्र अनुरोध किया है जो जातिवाद तोड़ने में इस रूढ़िवादी भारतीय समाज के लिए एक आदर्श हो सकता है।" राहुल गांधी दलितों के घरों में जाकर उनके साथ खाते हैं। झोपड़ियों में रहने वाले लोगों के दुख दर्द सुनते हैं। गरीब बच्चों को गोदी में उठाकर उनसे प्यार करते हैं। फटे कपड़े पहने दलित आदमियों और औरतों को गले लगा लेते हैं। ऐसी हमदर्दी आज तक किसी भी सवर्ण राजनेता ने दलितों के साथ नहीं दिखाई। वास्तव में राहुल गांधी का गरीब दलितों के प्रति ऐसा व्यवहार दिखाना उनकी महानता को दर्शाता है यहां तक कि राहुल गांधी का गरीब दलितों की झोपड़ी के अन्दर बैठकर दलितों के साथ महुऐ की शराब पीने की इच्छा जाहिर करते हैं। यदि राहुल गांधी वास्तव में दलितों के प्रति दिली हमदर्दी इच्छा रखते हैं तो किसी दलित की बेटी से शादी करें तो उनकी महानता में और चार चांद लग जाएंगे। (पृ0–120) आमकथा का रूप देकर रूपनारायण सोनकर ने ओम प्रकाश वाल्मीकि द्वारा संजीव खुदशाह की चर्चित पुस्तक 'सफाई कामगर समुदाय' से सामग्री चुराकर 'दलित देवता' की रचना का उल्लेख किया है तथा श्यौराज सिंह बेचैन द्वारा 'ओमप्रकाश वाल्मीकि के विरुद्ध आवाज उठान के वक्तव्य को उद्धत किया है' समी क्षक की हैसियत से इस सम्बन्ध में मैं इसलिए कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं कि मैं ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्यौराज सिंह बेचैन, रूपनारायण सोनकर तथा अजय नावरिया आदि से व्यक्तिगत रूप से परिचित हूं साहित्यिक चोरियां होती रही

हैं। तुलसी ने जाने कहां–कहां से क्या चुराया, यहां तक कि कबीर को भी चुरा लिया किंतु न तो कबीर की प्रतिष्ठा और हैसियत पर कोई प्रभाव पड़ा और न ही साहित्यकारों ने तुलसीदास को साहित्य जगत से बहिष्कृत किया। एक लेखक का दूसरे लेखक से प्रभावित होना अपराध नहीं है।

उपन्यास का अंत अत्यन्त नाटकीय घटना के साथ हुआ है गुजरात दंगों का आश्रय लेकर जो कथानक गढ़ा गया है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से उपन्यासकार की बाबा साहेब अंबेडकर के प्रति भावनात्मक श्रद्धांजलि निहित है। बाबा साहेब द्वारा जीवन के अंत में बौद्ध धर्म अंगीकार करने की घटना तब हजारों के लिये थी और आज लाखों के लिये प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। बौद्ध धर्म में व्याप्त उद्दात गुणों में क्षमा, अहिंसा, सत्य, शील आदि से हम सब परिचित हैं। उपन्यासकार ने कल्पित घटना के माध्यम से बौद्ध धर्म की एक अत्यंत गरिमा और महिमा पूर्ण विशेषता को उजागर किया है। बौद्ध धर्म में शरणागत के लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण की कामना प्रबल रूप से परिलक्षित होती है। विधर्मी शरणागत को बौद्ध विहार में उसके जीवन को सुरक्षा प्रदान करने में उपन्यास में उल्लेख अत्यंत हृदयस्पर्शी है। उपन्यास का यह संक्षिप्त अंश ही कथानक की दृष्टि से एक बड़े महान उपन्यास की रचना के लिये सार्थक और पर्याप्त है। हिन्दुओं के हत्यारे मुसलमान हिन्दू बलबाइयों से अपनी जान बचाने के लिये एक बौद्ध विहार में शरण लेने के लिये चले आते हैं। विहार के अन्दर उपस्थित तीन भिक्षुओं के पास केवल बारह के गेरूवे वस्त्र हैं। मुसलमान संख्या में पन्द्रह हैं। बौद्ध भिक्षु अपने वस्त्र शेष तीन मुसलमानों को पहनाकर स्वयं मुसलमानी वस्त्र धारण कर लेते हैं तथा हिन्दुओं द्वारा मारे जाते हैं।

उपन्यास में 'पोयेटिक डिवाइस' के रूप में उपन्यासकार ने अपनी कविताओं का उल्लेख किया है, किन्तु यह कविताएं उपन्यास के सीधे सपाट विकासक्रम में ऊपर से पंच किया अस्वाभाविक अंश प्रतीत नहीं होती वरन् विषयवस्तु को और अधिक सारगर्भित बना देती है। अंग्रेजी के काव्यांश तथा वाक्यांश भी अखरते नहीं। उपन्यास के विस्तारण का स्वाभाविक अंग प्रतीत होते हैं।

मेरी दृष्टि में विराट और संध्या उपन्यास के नायक तथा गायिका नहीं, उपन्यास में वर्णित घटनाओं को उद्घोषित करने वाले कथानक को आगे बढ़ाने वाले पेड़ की डाल पर बैठे तोता–मैना की तरह मात्र सूत्रधार हैं। उपन्यास क्योंकि घटनाओं से बंधा हुआ है, अतः प्रत्येक घटना को गतिशीलता प्रदान करने के लिये हर घटना में एक सक्रिय पात्र नायक की भूमिका का निर्वाह करता प्रतीत होता है। कहीं–कहीं हमें खलनायक ही नायक जैसे दिखाई देते हैं क्योंकि कथानक का पूरा भार उनके वजूद पर टिका है। भगतुआ, जगत सिंह, देव नारायण, सी0के0 सांधी ऐसे ही पात्र हैं। चेखोव की मान्यता है कि उपन्यासकार को प्रश्न उभारने चाहिये, उनका हल प्रदान नहीं करना चाहिये। रूपनारायण सोनकर इसको अमान्य घोषित करते हुए प्रश्न भी उभारते हैं और उनका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

डंक किस्सागोई पर आधारित गुलेबकावली की तरह कोई किस्सा नहीं है। अतः किस्सों में निहित अथवा रोमांस या मारवेल्स में निहित कथारस जैसे रस से डंक पूर्णतया शुष्क है, फिर भी इसमें एक रस है जो पाठक को पृष्ठ दर पृष्ठ आगे पढ़ने के लिये उत्तेजित करता है। पाश्चात्य समीक्षकों ने उपन्यास को पोर्टरेट ऑफ लाइफ कहा है। उपन्यास को पोर्टरेट बनाकर केवल व्यक्ति विशेष अथवा वर्ग विशेष के जीवन को ही चित्रित किया जा सकता है। वास्तव में उपन्यास 'सोशल लाइफ का पैनोरमा (सामाजिक जीवन की झांकी) होना चाहिये और डंक पैनोरमा ऑफ सोशल लाइफ' है, पोर्टरेट नहीं। वैसे भी हमें प्रयोगवादी उपन्यासों तथा दलित लेखकों के उपन्यासों को पढ़ने के लिये नई दृष्टि पैदा करनी होगी तथा अपने अंदर नया सौंदर्य बोध जागृत करना होगा। अंत में डंक की एक और विशेषता का उल्लेख अनिवार्य है इस उपन्यास को आधा पढ़ने के बाद पाठक को पिछले पृष्ठ उलट कर नहीं देखना पड़ता कि अमुक कौन है, क्योंकि कथानक का विकास उन्हें पृष्ठभूमि में फेंक देता है। डंक में हर पात्र निर्धारित भूमि अदा करने के बाद परिदृश्य से गायब हो जाता है। कोई पात्र किसी अन्य पात्र को पीछे खींच कर आगे नहीं बढ़ता है।

*****

डंक उपन्यास और हाशिए का समाज

-डॉ. सुमा.टी.आर.

आज साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी दलित साहित्य एक सैलाब की तरह उमड़ता चला आ रहा है ये एक शुभ लक्षण है। कई लोग उसके उभार पर नाक भौंह सिकोड़ते हैं। पर यह साहित्य किसी की परवार न कर अपने प्रसिद्धि की राह में अबाध्य गति से बढ़ रहा है। दलित साहित्य मानव मुक्ति के संघर्ष को स्पष्ट रूप से दिखाता है। परंपरागत मान्यताओं एवं निष्किय मूल्यों को अस्वीकार करते हुए आज के दलित साहित्य समस्त शासन तंत्र व्यवस्था का विरोध करता है। दलित साहित्य स्वयं क्रांति, विद्रोह व मुक्ति का पर्याय है।

रूपनारायण सोनकर जी एक उभरते हुए दलित साहित्यकार है। जिन्होंने अपने 'डंक' उपन्यास के माध्यम से हिन्दी साहित्य में अपनी अमिट छाप छोड़ दी है। सोनकर जी दलित साहित्यकार है। दलितों के दर्द व जीवन को स्वयं झेला व भोगा है इसीलिए यही दर्द हम उनके 'डंक' उपन्यास में देख सकते हैं। 'डंक' उपन्यास में दलित व नारी समस्याओं का खुलकर वर्णन मिलता है। साथ ही अन्य क्षेत्र में जहां शोषितों पर अत्याचार हो रहा है उसका वर्णन भी लेखक ने अपने उपन्यास में बखूबी किया है। यहां एक बात प्रशंसनीय है कि रूपनारायण सोनकर जी का यह उपन्यास एक प्रयोगात्मक उपन्यास है। जिसमें स्वयं उपन्यासकार उपस्थित होकर अपने जीवन में घटित घ टनाओं को कहते जाते हैं। जिसमें वास्तविकता के साथ–साथ मानवीय संवेदनाए तर्क सम्मत दृष्टिकोण और विचारात्मक संतुलन दिखाई देता है। उपन्यास पूर्ण होते–होते हमारे सामने यह सच्चाई उजागर हो जाती है कि पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक एक जैसा भारत है जहां हर दलित, नारी तथा आदिवासियों की समस्या भी एक समान है, वही दर्द, वही तड़प, वही बेबसी और वही लाचारी।

दलित विमर्श व नारी विमर्श दोनों उनके उपन्यास में साथ–साथ चलते हैं। सदियों से दोनों ने आज़ादी के लिए तड़पते–तरसते रहे हैं पर उनकी फरियाद अरण्य रोदन ही रहती थी। तुलसीदास ने तो अपने ग्रंथ 'रामचरितमानस' में स्पष्ट लिखा है–

'ढोल' शूद्र गवार, पशु नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी

पहली बार रूपनारायण सोनकर जैसे उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में दलित, नारी, आदिवासी व मजदूरों की समस्या का चित्रण खुलकर किया है साथ ही उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास भी किया है। यह अपने आप में बहुत बड़ा योगदान है। नारी स्वतंत्रता की बात सभी करते हैं पर आज भी नारी की दशा शोचनीय है। 21वीं सदी में नारी विमर्श, नारी स्व. तंत्रता व नारी को भी समान अधिकार की बातें बड़े जोरों में होने लगी हैं। नारी को अपने अधिकार मिलकर भी समाज में उसकी स्थिति आज भी दोयम दर्जे की ही है–

"लोग औरत को फकत जिस्म समझ लेते हैं, रूह भी होती है उसमें ये कहां सोचते हैं।"

रूपनारायण सोनकर ने इस दर्द को महसूस किया और अपने उपन्यास 'डंक' में नारी समस्याएं उसकी बेबसी को दिखाने के साथ उस समस्या को समाप्त करने की कोशिश भी की है। नारी के हक के लिए अनेक कानून तो बने हैं पर कहां सभी नारी को अपना हक मिलता है– स्वयं सोनकर जी ने यह महससू किया था।

"औरतों के हक में कानून कितने ही बने, दर हकीकत बेअसर है औरत की जिंदगी।"

सोनकर जी अपने उपन्यास की शुरूआत मध्यप्रदेश के आदिवासी दलित गांव से करते हैं। आज़ादी के 66वर्ष के बाद भी वहां की स्थिति में कोई बदलाव नहीं है। अज्ञानता, गरीबी, बेबसी, लाचारी, अशिक्षा, अंधविश्वास जैसा का वैसा ही है। भूर्मडलीकरण के दौर में ऐसे गांव का जिक्र होता है। टेलिविजन और समाचार पत्रों में उनकी तस्वीर भी दि खाया जाता है। यह सब मीडिया द्वारा पैसा कमाने के एक ज़रिया मात्र है। किसी को उनसे कोई लगाव या हमदर्दी

नहीं है। विदेशी सैलानी भ्रमण करने आते हैं, आदिवासी के जीवन पर किताब भी लिख देते हैं। इस किताब पर उन्हें अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड भी मिल जाता है। आज हर कोई पैसा व प्रसिद्धि के पीछे भाग रहा है। उन्हें आदिवासी व उनके समस्याओं से कोई वास्ता नहीं है। आज ऐसे गांव हजारों की संख्या में मिलेंगे जो इस तरह की अंधकार भरी जिंदगी जी रहे हैं। अंग्रेजों के जमाने से यह नज़ारा देखने को मिलता है कि वे अपनी कामइच्छा की तृप्ति आदिवासी युवती से करते और आदिवासी युवक से कोल्हु के बैल की तरह काम करवाते। आज अंग्रेज तो नहीं हैं पर इनकी जगह सेठ, साहूकार, जमीनदारए, ठेकेदारों ने ले ली है।

आज भी दलित आदिवासी की बहू–बेटियों के साथ बदसल. ूकी किया जाता है। उन्हें समाज में सम्मान भरी जिंदगी भी जीने नहीं देते। केरल में "स्वर्ग" नामक गांव है जहां आदिवासी दलित रहते हैं। (केवल गांव का नाम "स्वर्ग" है पर यहां के आदिवासियों की जिंदगी नरक ये भी बदतर है) इनकी जिंदगी मध्य प्रदेश के आदिवासियों से अलग नहीं है। आर्थिक स्थिति बेहद खराब है, टूटी–फूटी झोपड़ी में रहते हैं। उच्चवर्ग का दबदबा इनपर हमेशा बना रहता है। उच्चवर्ग के युवक आदिवासी युवतियों से सम्बन्ध तो बना लेते हैं पर विवाह नहीं करते हैं। युवती आजीवन कुँवारी माँ बनकर अपने बच्चों का पालन–पोषण करती रहती है। बच्चों को यह भी पता नहीं रहता उनके पिता कौन है– दलित आदिवासी अनपढ़ होने के साथ–साथ अंधविश्वासी भी होते हैं। औरतें व बच्चों को बदन ढकने के लिए ढंग का कपड़ा भी नसीब नहीं होता। नियति का विडंबना देखिए कई जगह औरतें फैशन की दौर में अपना अस्तित्व बनाए र खने के लिए कम कपड़े पहनकर अपने आप को "मॉडर्न लेडी" बताती हैं और कुछ औरतों (दलित आदिवासी महिलाओं) को अपने बदन ढकने के लिए ढंग का कपड़ा नसीब न होने की वजह से अधनंगी रहना पड़ता है।

आदिवासी दलितों में अपने अलग रीति रिवाज होते हैं। युवक अपना शक्ति प्रदर्शन कर युवती से शादी कर लेता है। शारीरिक रूप से शक्तिशाली, मेहनती व कर्मठ होते हुए भी सही शिक्षा की कमी, अज्ञानता, मूढ़ता, अंध ाविश्वासी होने के कारण इनकी कमजोरी का फायदा जम. ीनदार, ठेकेदार, उठाते हैं और इनको गुलाम बनकर जम. ीनदारों की गुलामी करते ही रहना पड़ता है। एक तरफ आदिवासी दलित युवक अपनी प्रेमिका को पाने के लिए जान की बाजी लगा देता है वहीं दूसरी ओर आधुनिक सभ्य समाज में कई ऐसे एन0आर0आई0 (अप्रवासी भारतीय) परिवार है जो अपने संस्कार भूलकर पैसा, शोहरत और झूठी शान व शौक के लिए अपनी प्रेमिका व पत्नी को दूसरों के हम बिस्तर बनाते हैं। जसविंदर ऐसी ही साहसी युवती है जो हिम्मत के साथ ऐसे भवंडर से निकल आती है। आजकल समाज में एक नया फैशन शुरू हुआ है अगर लड़का एन0आर0आई0 है तो माता–पिता सोचते हैं कि उसके साथ शादी कर हमारी लड़की सुखी रहेगी। ऐसा वर पाने के लिए लड़कियों के माता–पिता में होड़ मची हुई है। कोई भी माता–पिता ये नहीं सोचते हैं कि उनकी बेटी विदेश जाकर नौकरानी जैसी जिंदगी गुजारती है या अपने पति के कारण नहीं तो विदेशी माहौल के कारण अपने संस्कार भूल सकती है। सोनकर जी कहते हैं– "जितना अधिक हम सभ्य और आधुनिकता का जामा पहनते जा रहे हैं उससे ज्यादा हम सेक्स के लिए औरतो के प्रति अधिक क्रूर होते जा रहे हैं। नारी उतनी ही विवश होती जा रही है। दरिंदगी सदैव विवशता पर विजय पाती है। जब रखवाला ही अति आधुनिकता के नाम पर वहशी दरिंदों के साथ देने लगा तो स्त्री की रक्षा कैसे होगी, नारी केवल उनके लिए भोगने की चीज बनकर रह गई है। औरत की गरिमा और गौरव से उनका कोई मतलब नहीं है।" आज नारी में जागृति आ गयी है। वह डटकर हालात का सामना कर रही है। वह अपनी मंजिल खुद तय कर उसे पाना चाहती है।

गांव हो या शहर चारों ओर नारी की दशा शोचनीय है। वैसे भी नारी अपने ही घर में सुरक्षित नहीं है। वह अपने ही लोगों से शोषित व उत्पीड़ित होती है। उच्चवर्ग हो या निम्नवर्ग नारी के हालात चिंताजनक हैं। कहीं पर बहु अपने ही ससुर के अत्याचार का शिकार होती है तो कहीं पर अपने ही करीबी रिश्तेदारों से हुए अत्याचार को नारी सहन कर खामोश रहती है। कहीं–कहीं पर अपने दबंग ससुर का अत्याचार सहन करते हुए चुपचाप जिंदगी गुजारती है। जब अपनों के द्वारा ही अत्याचार होता है तो मदद कौन करेगा, विराट के माध्यम से सोनकर जी कहते हैं– मेरा विचार है समाज में करीब 15 प्रतिशत बलात्कार की घटनाएं घरवाले ही अपनी महिलाओं को साथ करते हैं। बाहर के दरिंदे तो दि खायी देते हैं लेकिन घर के अंदर के दरिंदे दिखायी नहीं देते हैं। उनकी असलियत खुल नहीं पाती। तालाब के अंदर भैंस

के बदन पर जोंक चिपक जाती है और उसका खून चूसती रहती है। सोनकर जी एक डिप्टी एस0पी0 का उदाहरण देते हैं। डिप्टी एस0पी0 होने के नाते घर में उनका दबदबा अलग ही है। डिप्टी एस0पी0 के दो पुत्र हैं। अपने दोनों बहुओं पर इस डिप्टी एस0पी0 की नजर है। बड़ी बहु तो अपने ससुर का विरोध करती है तो वह बहु और बेटा दोनों को घर से बेदखल करता है। छोटी बहु ससुर के साथ हमबिस्तर हो जाती है तो उसकी किस्मत ही बदल जाती है। पिता अपनी सारी जायदाद छोटे बेटे के नाम कर देता है। हकीकत जानते हुए भी छोटे बेटे ने अपना मुँह बंद र खा है, क्योंकि सारी जायदाद जो उसके नाम हो गई है। लेकिन समाज में आज भी बड़ी बहु जैसे कई सारी ऐसी महिलाएं हैं जो किसी भी कीमती पर ऐसे अनैतिक रिश्तों को नहीं अपनाती हैं। ऐसे ही महिलाओं के कारण घ ार–समाज में नैतिकता कायम है।

भारत में आज भी कई ऐसी जगह, गांव, शहर हैं जहां पुरुष अपनी पत्नी पर विश्वास नहीं करता है। छत्तीसगढ़ में छल्लमपुरा नामक एक आदिवासी गांव है (उपन्यास में इस गांव का वर्णन है) जो अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी, अंध ाविश्वास से भरा हुआ है। यहां के आदिवासी युवक जब काम पर जाते हैं तो अपनी पत्नियों के गुप्तांग पर लोहे की चड्ढी पहनाकर ताला लगाकर जाते हैं। उन्हें डर है कि उनके काम पर जाते ही उनकी पत्नियां किसी अन्य पुरुष से शारीरिक सम्बन्ध न बना लें। इस तरह की घटनाएं नयी नहीं हैं यह तो बहुत पुरानी हैं। "यूरोप के अंधकार युग में वहां की लड़कियों की देह पर भी लोहे से निर्मित कौमार्य बंधन (चेस्टिटि बेल्ट) बांधा जाता था। काम के सिलसिले से दूर देश जाने से पहले स्त्रियों की योनि पर भारी भरकम चेस्टिटि बेल्ड नाम का लोहे का पिंजरा डालकर ही बाहर जाते थे। महिलाएं उस पिंजरे को तब तक नहीं खोल पाती जब तक स्वयं उसका स्वामी आकर ताला न खोले यानि योनि की अधिकारिणी महिलाएं नहीं उनके पति हैं। वे अपनी व्यक्तिगत सम्पदा की रक्षा चहे जैसे करें।" पुरुष सत्तात्मक उस अंधकार युग में स्त्रियों की योनि पर ताला जड़ते थे, वही मानसिकता इन लोगों में भी दिखाई देती है।

हाल ही की एक घटना इन्दौर की है। एक सभ्य व्यक्ति ने पिछले चार सालों से अपनी पत्नी की योनि पर ताला जकड़ रखा था। परेशान होकर पत्नी ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की पर वह बच गयी। उसे अस्पताल ले जाया गया तो वहां यह राज खुला। यह सब दे खकर घृणा आती है और मन में सवाल उठने लगता है कि क्या 21वीं सदी में भी कोई सभ्य पुरुष ऐसी हरकत कर सकता है – विराट और संध्या ने वहां के आदिवासी औरतों में जागृति की भावना जगायी और इस दर्दनाक स्थिति से भी छुटकारा दिलाया। कितनी अजीब बात है कोई पुरुष के कौमार्य पर शक नहीं करता है। पुरुष के यौनांग पर कोई ताला जड़ने की पाबंदी नहीं है। पुरुषों के लिए सारी दुनिया में पतितालय खुले हुए हैं। पुरुष जब चाहे अपनी यौनच्छा शांत कर सकता है। कौमार्य को लेकर जो भी सवाल किए जाते हैं वह केवल स्त्रियों के लिए ही होते हैं। इसलिए ऐसे दर्दनाक रिवाजों को खत्म करने का प्रयास विराट व संध्या के माध्यम से सोनकर जी ने किया है।

"भ्रूण हत्या" का प्रचलन समाज में सदियों से चलता आ रहा है। लड़की को लक्ष्मी का रूप तो माना जाता है पर उसक जन्म लेना अपशगुन माना जाता है। पराये के घर में पैदा हुई है तो लक्ष्मी और अपने घर में पैदा हुई है तो अपशगुन। इसका एकमात्र कारण है दहेज। लड़का पैदा हुआ तो ढेर सारा दहेज आएगा और लड़की हुई तो ढेर सारा दहेज ले जाएगी और मायके वालों को कंगाल कर देगी, इसीलिए, यह भेदभाव किया जाता है। इसी कारण आज हालात ऐसा हो गया है कि कुछ प्रदेशों में लड़कियों की संख्या इतनी कम हो गई है कि माता–पिताओं को अपने बेटों के लिए अन्य प्रदेश से लड़की ढूंढना पड़ रहा है। "भ्रूण हत्या" रोक कर खूब अभियान चल रहा है। विराट और संध्या के माध्यम से सोनकर जी ने लोगों का "भ्रूण हत्या" के कारण समाज पर होने वाले कुप्रभाव से भी अवगत करवाया है। डॉ0 बाबा साहेब अंबेडकर अपने एक व्याख्यान में कहा है– "जिसका मन स्वतंत्र नहीं है वह जेल में न होते हुए भी कैदी है, वह भेड़ियों में न होते हुए गुलाम है और वह जिंदा होते हुए भी मृतक है।" डॉ0 बाबा साहेब अंबेडकर का जीवन संघर्ष से भरा था। हर एक कदम पर उन्हें संघर्ष करना पड़ा। उनका संघर्ष अपने लिए नहीं था अपितु भारत के करोड़ों दीन–दलितों के उत्थान के लिए था। डॉ0 बाबा साहेब अंबेडकर का कहना था– "पढ़ो, शिक्षित बनो, संगठित बनो, प्रचारक बनो और आत्मविश्वासी बनो।" इसी तरह डॉ0 रूपनारायण सोनकर का जीवन संघर्ष का पर्याय बन गया है। वे भी "डंक" उपन्यास में विराट के माध्यम से मानव

को मानवता का हक दिलाने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। उन्हें मालूम है संघर्ष का जो रास्ता वे चुन लिया है वह बेहद कठिन है लेकिन उसमें तृप्ति भी है। अब वे अपने अधिकारों को समझने तो लगेंगे। वैसे भी सोनकर जी ने अपना जीवन संघर्ष के पथ पर चल कर ही बिताया है।

"पथ क्या पथ पर चलना क्या, जिस पथ में बिखरे शूल न हो, नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, धारा, थोड़ी प्रतिकूल न हो।"

"दलित" शब्द का प्रयोग डॉ0 रूपनारायण सोनकर ने शोषित, पीड़ित और आर्थिक रूप से दुर्बल वर्गों के लिए किया है। इन सभी जातियों की गुलामी और दास्तां का स्वरूप सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक ही है। इसलिए सोनकर जी ने दलित शब्द का उपयोग उन सभी उपेक्षित जातियों, जनजातियों के लिए किया है।

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था– "मेरे मन में दिनोंदिन यह विश्वास बढ़ता जा रहा है कि जात–पात का भाव सबसे अधिक भेद पैदा करने वाला है और माया का भी मूल है। सभी प्रकार के जातिभेद चाहे वह जन्मजात हो या गुण के अनुरूप हो आखिर में कष्टदायक ही है। पुरोहितों द्वारा लिखी पुस्तकों में ही जात–पात जैसे खोखलेपन के विचार पाए जाते हैं। इसे पूरी तरह खत्म कर देना चाहिए तभी समाज व देशा का उद्धार संभव है। स्वामी विवेकानंद की तरह सोनकर भी इस भेदभाव को पूरी तरह मिटाना चाहते हैं। सोनकर जी का उपन्यास "डंक" भी सदियों पुराने सड़े गले अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, रीत रिवाज, मान्यताएं, आदि को जलाकर भस्म कर देने का आह्वान करता है। सोनकर जी चाहते हैं कि दलित, शोषित, अस्पृश्य समाज के बंधु गुलामी मनसिकता से मुक्त होकर नवीन समाज की नींव रखें जहां दलित को भी मानव समझा जाए और उन्हें भी जीने का बराबर हक मिले और जो सपना डॉ0 बाबा साहेब अंबेडकर जी ने देखा था वह पूरा हो सके।

दलितों पर अत्याचार तो सदियों से हो रहा है। उनका उपयोग उच्चवर्ग के लोग हर हाल में करते हैं। राजा महाराजाओं के समय में भी दलित व पिछड़े वर्ग के लोगों को बलि का बकरा बनाया जाता था। उस समय बड़े–बड़े महल या पुल बनाते समय उसे मजबूत बनाने के लिए दलितों तथा पिछड़े वर्ग के लोगों को दीवार में चुनवा देते थे। ऐसी घटनाओं का जिक्र सोनकर जी ने अपने उपन्यास "डंक" में किया है। यह कोई काल्पनिक घटना नहीं है। भारत में ऐसे कई उदारहण मिल जाते हैं। ऐसे ही दो घटनाओं के बारे में मैं यहा उल्लेख करना चाहती हूं– "कुडची" नामक एक गांव जो महाराष्ट्र और कर्नाटक के ठीक बॉर्डर पर बसा हुआ है, जो कर्नाटक राज्य के बेलगांव जिले में आता है, उसमें कृष्णा नदी बहती है। कई साल पहले उस नदी पर जब पुल बांधा जा रहा था तो वह बार–बार टूटकर गिर रहा था। कई बार कोशिश करने पर भी पुल टिक नहीं रहा था। तब किसी पंडित ने कहा कि अगर किसी गर्भवती महिला की बलि दी जाए तो यह पुल बन जाएगा। पंडित के कहे अनुसार एक गरीब गर्भवती महिला को पुल की दीवार में चुनवा दिया गया तब वह पुल बन गया। वहां के लोग आज भी कहते हैं कि इतने सालों बाद भी यह पुल इसी कारण मजबूती से टिका हुआ है। दूसरी घटना इसी जिले की "बैल. होंगल" नामक शहर का है। इस शहर में कभी रानी चेन्नम्मा नामक एक रानी का राज था जिसने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़कर शहीद हुई है। इस शहर के आस–पास अनेक छोटे–छोटे रजवाड़े थे। उनमें से एक रजवाड़े के राजा जब अपना महल बनवाने जा रहा था तो महल की दीवार बार–बार गिर रही थी। राजा के पुरोहित से पूछने पर पुरोहित ने कहा कि एक गर्भवती महिला को किले की दीवार में चुनवा दें तो कहा कि एक दीवार बन जाएगी। पुरोहित के अनुसार एक गरीब गर्भवती महिला को दीवार में चुनवा दिया गया तब महल बन पाया। आज न राजा उस गर्भवती महिला की समाधि पर (उस महल की दीवार के सामने) दिया जरूर जलाया जाता है। "डंक" उपन्यास में ऐसे ही घटनाओं को पढ़कर इतना तो प्रतीत होता है कि ये घटनाएं काल्पनिक नहीं हैं इसमें सच्चाई जरूर है। पूरे भारत वर्ष में दलित व असहाय नारी की स्थिति एक समान है, उन पर हो रहे अत्याचार में कोई अंतर नहीं है।

सामाजिक कुरीतियां सुनामी लहरों में भी भयंकर हैं। सुनामी लहरें तो केवल समुद्र में उठती हैं लेकिन ये कुरीतियां (छुआछूत) समाज के हर कोने से निकलती है। ऐसे ही अनगिनत दलित व असहाय निरपराधी है जिन्हें उच्चवर्ग विशेषकर पंडित, पुजारी तथा पुरोहितों ने धर्म के नाम पर मरवाया है। ये सब देखकर अनायास ही मन में एक प्रश्न उमड़ने लगता है कि– क्या पुल व राजा– महाराजाओं के महलों को अपनी मजबूती के लिए केवल दलित व असहाय गर्भवती स्त्री की ही बलि चाहिए– क्या इसलिए कि

उच्चवर्ग या अन्य लोगों में वो मासूमियत, वो इन्सानियत, वो निरूस्वार्थ भावना नहीं है "क्या उच्चवर्ग के लोगों के शरीर दलितों के शरीर से भी गया गुजरा है।"

भारत के अधिकार राज्यों में दलितों की स्थिति बंधुआ मजदूर की रही है। सरकार दलितों की मदद करना चाहती है तो भी पुरोहितशाही वर्ग इसमें बाधाएं उत्पन्न कर देते हैं। वे नहीं चाहते हैं कि दलितों की आर्थिक स्थिति सुधर जाए। अगर दलितों की आर्थिक स्थिति सुधर गयी तो उन्हें सस्ते में मजदूर कहां से मिलेंगे, दलित बंधुआ मजदूर की हालत दिन–ब–दिन खराब होती जा रही है। जानवर और उनमें कोई फर्क नहीं है। कोल्हू के बैल की तरह भूखे पेट दिन रात मजदूरी करते रहते हैं। अनेक संघ व बैंक इनकी मदद करना चाहते हैं लेकिन उच्चवर्ग के दबदबे के कारण नहीं कर पाते। इस संदर्भ में सोनकर जी का यह वाक्य बिलकुल सटीक लगता है– "स्वार्थ सिद्ध और मानव मुक्ति का द्वंद सदैव चलता रहता है। स्वार्थी मानव के सामने कमजोर, असहाय मानव सदैव हारता आया है। आसमान से जैसे ही ओले बरसते हैं तो हरा–भरा पेड़ उजड़ जाता है उसी तरह बंधक मानव पत्ती फलविहीन ठूण्ठ की तरह होता है इसमें दोबारा पत्तियां और फल नहीं उगते है। "आगे कहते है, बंधक बना मानव न अपना अलग घर बसा सकता है न ही खुलकर सांस ले सकता है। एक जीवित व्यक्ति जानवर बनकर कर्ज की डोर से साहूकार रूपी मजबूत खूंटे से बांध दिया जाता है। वह व्यक्ति उस खूंटे से छुड़ाने के लिए छटपटा तो सकता है लेकिन छूट नहीं सकता है। अधिकतर दलित ही ऐसा जीवन व्यतीत करता है। साहूकार के कर्ज रूपी पर्वत सदैव दलितों पर ही गिरते हैं।" दलित बंधुआ मजदूर की हालत बहुत ही खराब है। अगर पढ़े लिखे विराट जैसे व्यक्ति उनकी मदद करेंगे और उन्हें जीने का राह बता देंगे तो शायद उनमें सुधार आ सकता है। "डंक" उपन्यास में विराट के रूप में सोनकर जी ने बैंक से लोन दिलवाकर पीड़ितों की माली हालत को ठीक कर उन्हें बंधुआ मजदूरी से मुक्ति दिला दी है। दलित हो या अन्य कोई, सभी पढ़े–लिखे लोग ऐसे अत्याचार यदि किसी पर हो रहा है तो उसे रोकने की कोशिश करनी चाहिए ताकि इस तरह की अनिष्ट पद्धति समाज से खत्म हो। समाज में संध्या और विराट जैसे लोगों की अति आवश्यक है जो बंधुआ मजदूरों को अपने हक के लिए लड़ना सिखा सके ताकि वे लोग भी गुलामी की ज़ंजीरों से मुक्त होकर आज़ादी की सांस ले सके।

बाबासाहेब डॉ0 बी0आर0 अंबेडकर ने अहमदाबाद के दरियागंज में आम सभा को संबोधित करते हुए कहा था– "हम मुनष्य है और मनुष्य होने के नाते मनुष्ट के समान नागरिक अधिकारों के अधिकारी हैं। जब तक ये अधिकार हम प्राप्त नहीं कर लेते, हमें चैन से नहीं बैठना चाहिए। अपने उचित मानवीय अधिकार को हम प्राप्त करेंगे, यही हमारा ध्येय होना चाहिए।" दलितवर्ग में अपने अस्तित्व की विद्यमानता के लिए जन विरोधों, शोषकों से लड़ने की आक्रोशी ज्वाला दहक रही है। वे अपने अधिकार चाहते हैं। सोनकर भी समता समाज की रचना करना चाहते हैं। जहां किसी पर अन्याय न हो और सभी को समान हक मिलें।

बाबासहेब डॉ0 बी0 आर0 अंबेडकर ने महाड तालाब से पानी पीकर यह साबित कर दिया कि दलित भी मानव है और उनके छूने से पानी दूषित नहीं हुआ। यह एक क्रांतिकारी घटना थी। आज भी ऐसे ही क्रांतिकारी घटनाओं की बहुत आवश्यकता है क्योंकि आज भी अनेक ऐसे गांव हैं जहां दलितों की हालत बहुत खस्ता है। गांव के तालाब में दलितों को पानी भरने की इज़ाजत नहीं है और जिस तालाब या कुएं का पानी ये लोग पीते हैं वह पानी मटमैला है और गांव से कोसे दूरी पर है। "डंक" उपन्यास में विराट और संध्या ऐसे जगहों पर जाकर लोगों में जागृति लाते हैं और पानी की समस्या को कम करते हैं। अगर प्रत्येक व्यक्ति यह काम करेगा तो बाबासाहेब डॉ0 बी0 आर0 का सपना साकार हो जाएगा।

दलित ग्राम प्रधान नाम मात्र के प्रधान है, उनकी औकात आज भी उच्चवर्ग के लिए नौकर जैसी ही है। गांव के ठाकुर, जमीनदार उन्हें केवल दलित ही मानते हैं और मनचाहे काम उनसे करवाते हैं। ग्राम प्रधान के बारे में ठाकुर अहंकार से कहता है– "देखिए पत्रकार महोदय! गांवों के कायदे–कानून अलग होते हैं। सरकार अगर इन अछूतों को बढ़ावा दे रही है तो कागजों में देती रहे। असली ग्राम प्रधान तो हम ही हैं। यह हमारा नौकर है और केवल नौकर ही रहेगा। मेरी मर्जी के बिना कोई काम नहीं कर सकता है। यह केवल हस्ताक्षर करता है। गांव पंचायत का सारा निर्णय तो मैं ही लेता हूँ। दूसरी घटना महिला प्रधान की है। वह भी नाम मात्र प्रधान है बाकि काम तो उसका पति ही करता है। वह जिला मजिस्ट्रेट से मिलने जाता है और पर्ची पर लिखकर देता है– श्याम सुदर त्रिवेदी, प्रधानपति। यानि महिला प्रधान

का पति प्रधानपति। इस तरह की घटनाएं हर जगह देखने को मिलेंगी। आज भी दलित व महिला को कोई अधिकार देना नहीं चाहते हैं। लेकिन विराट और संध्या उन लोगों को ये एहसास दिलाते हैं कि वे ग्राम के प्रधान और उन्हें प्रधान के जो कर्तव्य हैं उसे निभाना है। अब वो जमाना चला गया डरकर जीने की आवश्यकता नहीं है। दलित समाज की लड़की पढ़–लिखकर अच्छे पद नियुक्त हो गई है तो परिवार वाले ही उसकी शादी अपने बिरादरी में कर उसकी अच्छी जिंदगी बरबाद कर देते हैं। ऐसी पढ़ी–लिखी युवती को समाज के साथ–साथ खुद के परिवार वालों से भी लड़ना पड़ता है। समाज में स्त्री का जीवन कष्टदायक है। उसे कदम–कदम पर मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह हिम्मत के साथ आगे बढ़ रही है। मैला ढ़ोने जैसी क्रूर, अमानवीय प्रथा को भी समाप्त करने का प्रयास इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किया है।

महात्मा गौतम बुद्ध व महात्मा ज्योतिबा फुले के विचारों में हम "स्वांत सुखाय बहुजन हिताय" को संदेश पाते हैं। इस संदेश का असर सोनकर जी पर भी है। इसीलिए "डंक" उपन्यास के माध्यम से सोनकर जी ने मानव स्वभाव और मानवीय सम्बन्धों की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। मानवीय सम्बन्धों के गतिशील पक्षों को अपने उपन्यास में दिखाया जो सराहनीय है। रूपनारायण सोनकर अपनी जमीन से जुड़े हुए साहित्यकार है इसलिए शोषितों के दर्द, तड़प, छटपटाहट को स्वयं देखा है और सहा है। साहित्य के माध्यम से उनका प्रयास यही रहा है कि जहाँ अन्याय हो रहा है वहाँ न्याय दिलाना, लोगों ने मानवता की मिसाल देखी। हिंदू औरतें अपनी जान बचाने के लिए मस्जिद में घुस गए तो मुलसमान दंगाई उनके पीछे–पीछे आ गए। मस्जिद में जो मुसलमान औरतें थीं वे अपनी जान गंवाकर उन हिंदू महिलाओं की जान बचाई। ऐसी ही एक घटना बौद्ध बिक्षुओं की है, जिन्होंने अपनी जान देकर मुसलमान भाइयों की जान हिंदुओं से बचायी जो उनके खून के प्यासे थे। ऐसे अनगिनत मिसाल देखने को मिलती हैं जिसमें लोगों ने अपनी जान गंवाकर अन्य धर्म के भाई बंधुओं की जान बचायी और उन्हें ऐसे समय अपने घर में पनाह दी जबकि उनकी जान को खतरा था।

भारत में आज भी ऐसे गांव हैं जहां सौहार्द, मानवीयता, प्यार, भाईचारा पनपता है। मोटे रस्से को खींचना उस गांव का एक खेल है। रस्सी के एक सिरे को ब्राह्मण और दूसरे सिरे को दलित व पिछड़े वर्ग के लोग खींचते हैं। ऐसे खेलों से आपसी मनमुटाव, भेदभाव समाप्त हो जाते हैं। आजकल ऐसी पार्टियां जोरों पर हैं जहां सभी वर्ग के, सभी धर्म के युवा मिलकर बिना भेदभाव के मांस व शराब का सेवन करते हैं। बाबा साहेब अंबेडकर ने कहा था हिंदुस्तान से जातिप्रथा या छुआछूत तभी मिटेगी जब अंतर्जातीय विवाह होंगे और ऐसे विवाह ही सदियों से बसी बीभत्स प्रथाओं को तोड़ सकता है। कुछ उत्साही दलित युवक अंतर्जातीय विवाह कर समाज में समानता लाने की कोशिश कर रहे हैं। राह कांटों से भरा कठिन जरूर है पर उन्हें इन कांटों की परवार कहां है।

गांव की हालत आज़ादी के बाद ज्यादा बदली तो नहीं है पर इतना तो सच है कि गांव की पहचान धीरे–धीरे खत्म हो रही है। गांव के लोग रोजी–रोटी की तलाश में शहर–शहर भटक रहे हैं। विराट और संध्या का सपना है कि गांव में हरियाली हो, जंगल हो। जंगल है तो वर्षा होगी, वर्षा होगी तो गांव हरियाली से लहरा उठेगा। जिन जंगली जानवरों की नस्लें खत्म हो रही हैं, उनको आसरा मिल जाएगा। जंगल खत्म होने से जंगली जानवर मैदान में आ जाते हैं और आसानी से शिकारी के हाथों शिकार होते हैं। रूपनारायण सोनकर की तरह हर कोई गांव की खुशहाली के बारे में सोचेगा तो गांव के लोग भूख प्यास से नहीं मरेंगे, उनकी भी आर्थिक स्थिति में सुधार आ जाएगा, जानवरों को भी आसरा मिल जाएगा और आजकल पर्यावरण को लेकर जो बहस चल रही है वह भी खत्म हो जाएगी। उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि रूपनारायण सोनकर को ग्लोबलवार्मिंग की चिंता भी है और वे इस समस्या का हल भी चाहते हैं। उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, प0 बंगाल, आंध्र प्रदेश ऐसे प्रान्त हैं जहां गरीबी, महामारी की तरह फैली है। मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे के सामने भीखमंगों की तादाद बढ़ती जा रही है। सरकार आर्थिक मदद कर इन्हें अच्छी जिंदगी देना चाहिए। इससे भिखारियों की समस्या खत्म हो जाएगी। आजकल युवा वर्ग भी इतने मतलबी बनते जा रहे हैं कि अपने ही माता–पिता को वे बोझ समझने लगे हैं। ये सब आधुनिकता का प्रभाव है। अपने ही माता–पिता को घर से बेदखल कर उन्हें भिखारियों जैसी जिंदगी जीने पर मजबूर कर रहे हैं। नौकरी से रिटायर हुए वृद्ध अपनी बाकी जिंदगी वृद्धाश्रम में गुजार रहे हैं। जो नौकरी नहीं करते हैं उन्हें तो भिखोरियों की जिंदगी ही जीनी

पड़ती है। युवा वर्ग को सोचना चाहिए कि आज जो वे अपने माता–पिता के साथ कर रहे हैं, कल उनके अपने बच्चे भी उनके साथ इससे भी बदतर व्यवहार करेंगे। माता–पिता का दर्जा भगवान से भी ऊँचा होता है। इसका एहसास युवा वर्ग को होना जरूरी है। तभी वे अपने माता–पिता का आदर करेंगे।

प्रत्येक क्षेत्र में जहां अन्याय हो रहा है उपन्यासकार ने उसका जिक्र उपन्यास "डंक" में जरूर किया है। फिल्मी जगत भी इससे अछूता नहीं है। फिल्मी जगत की सच्चाई दिखाते हुए सोनकर जी कहते हैं– ये किरदार परदे पर जितनी अच्छी तरह से अपनी भूमिका निभाते हैं असलियत में उनकी जिंदगी उतनी ही कष्टदायक होती है। महिला कलाकार, नए कलाकार, संगीतकार, गीतकार पर अधिक शोषण होता है, साथ ही वे उनेक कुकर्म से जकड़े रहते हैं। तांत्रिका व कपटी संन्यासी भी मासूम जनता को लूटने लगे हैं। दलित मठाधीश न के बराबर है। अगर कोई बन भी जाए तो सवर्ण मठाधीश उसका कत्ल कर देते हैं। ताकि कोई दलित दोबारा ऐसी हरकत न कर सके। यही हाल महिला मठाधीश का है। लेकिन ऐसे हालात में हरिद्वार में एक महिला मठाधीश ने यह साबित कर दिया कि वे किसी से कम नहीं है। उसी तरह लखनऊ में एक मुस्लिम महिला मौलवी बनकर अपनी काबिलियत दिखा रही है। महिलाएं महिला सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण है। आज नारी पढ़–लिखकर हर क्षेत्र में पुरुष की बराबरी कर रही है। नौकरी के साथ–साथ अपनी घर गृहस्थी भी अच्छी तरह चला रही है। फिर भी उस पर अत्याचार हो रहा है और वह इसका करारा जवाब भी दे रही है। समाज के हर एक क्षेत्र में नारी पर अत्याचार हो रहा है, शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। आजकल भारत के हर एक विश्वविद्यालय में एक घटना तो जरूर सुनी या देखी जा सकती है कि फलाना प्रोफेसर ने शारीरिक शोषण के बदले में पी0एच0डी0 की उपाधि दी या किसी स्वाभिमानी छात्रा ने प्रोफेसर के यौन शोषण से परेशान होकर आत्महत्या कर ली है। कुछ छात्राओं ने बड़ी हिम्मत के साथ ऐसे प्रोफेसर का विरोध करते हुए उनके काले करतूतों का भांडाफोड़ कर उन्हें सजा दिलवायी है।

रूपनारायण सेनकर जी ने एक और मुद्दा उठाया है कि आजकल राष्ट्रीय पुरस्कार भी योग्यता के बल पर नहीं अपितु जातीयता एवं रिश्तेदारी के आधार पर दिया जा रहा है। इसका विरोध अवश्य होना चाहिए, अगर यही स्थिति रही तो योग्य साहित्यकार ऐसे पुरस्कारों से वंचित रह जाएंगे। स्वयं रूपनारायण के साथ भी ऐसा ही हुआ है। सोनकर जी नहीं चाहते हैं कि ऐसा अन्याय अन्य साहित्यकार के साथ भी हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि "डंक" उपन्यास के माध्यम से रूपनारायण सोनकर जी ने न केवल दलित व नारी की समस्याओं को उजागर किया है बल्कि समाज के हर एक क्षेत्र में हो रहे अन्याय, अत्याचार को दिखाने के साथ ही इसे सम्पूर्ण रूप से खत्म करने का प्रयास किया है। इसलिए यह उपन्यास अपने आप में एक मिसाल है जो हर शोषित व्यक्ति को न्याय दिलाने की कोशिश करता है। "डंक" शीर्षक भी अपने आप में सार्थक है। "डंक" यानि चोट पहुंचाना या दर्द देना या अत्याचार करना। समाज के हर क्षेत्र में उच्चवर्ग या धनवान हाशिए के लोगों पर अत्याचार करते ही रहते हैं। ये लोग दलित, नारी, गरीब, मजदूर, मजबूर, बेबस, लाचार, कमजोर व्यक्तियों पर अपना जहरीला डंक मारते ही रहते हैं। बेचारे ये लोग इस जहरीले डंक से उभर नहीं पात. । रूपनारायण सोनकर जी हाशिए के लोगों को इस जहरीले डंक से उभरने के लिए प्रेरित करते हैं। रूपनारायण सोनकर जी ने अपने उपन्यास "डंक" में जिन लोगों का दारुण दोहन व शोषण हो रहा है तथा समाज में हर संसाधनों से वंचित और उपेक्षित, प्रताड़ित लोग है उन्हें ही अपने उपन्यास का पात्र बनाया है। शोक जिसका आहार और अभिशाप जिसका उपहार रहा है उन्हें न्याय दिलाने की कोशिश की है ताकि वे भी एक खुशहाल, सुखद जिंदगी जी सके। इनका यह प्रयास कुछ हद तक सफल भी रहा है। इस प्रयास को देख मुझे महात्मा ज्योतिबा फुले का यह कथन याद आता है– "इस देश के शूद्रों का रक्त चूसने वाले ग्रंथ यदि बदले नहीं गए तो उन्हें शूद्र खुद बदलकर दिखायेंगे।"

*****

छायावती-सत्ता के गलियारे में दलित स्त्री का हस्तक्षेप

-कल्पना पन्त (शोधछात्रा)

इतिहास पर यदि दृष्टिपात किया जाये तो राजनीति और सत्ता के गलियारों में स्त्रियों की आवाजाही लगभग न के बराबर रही है। भारत एक बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। आज स्वतंत्रता के 66 वर्ष बीत जाने के बावजूद भारत के राजनीतिक क्षितिज पर स्त्रियों की उपस्थिति उंगलियों पर गिनी जा सकती है। उस पर भी दलित स्त्रियों की उपस्थिति बिलकुल नगण्य है। डॉ0 अम्बेडकर ने राजनीति को महत्व देते हुए कहा था कि यह सर्वविदित है कि जिस व्यक्ति के पास सत्ता होती है, वह उस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक ताकतवर होता है, जिसके पास यह नही होती–**दलित महिलाएं इतिहास, वर्तमान और भविष्य,** संपादक एस विक्रम (पृष्ठ 243) राजनीति को किसी भी देश की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। ऐसे में राजनीति में पुरूषों के समकक्ष स्त्रियों की सहभागिता का न होना उनकी ताकत को कमतर आंकना ही है। रूपनारायण सोनकर का नाटक छायावती एक दलित स्त्री के राजनीति में प्रवेश करने और तमाम बड़े अफ्सरों और समाजिक समस्याओं से निपटने की उसकी विशेष कार्यशैली पर प्रकाश डालता है। छायावती आई0ए0एस0 बनना चाहती है। हाथीराम छायावती की अद्भुत प्रतिभा और अदम्य साहस को देखकर अभिभूत हो जाते है। वह छायावती से कहते हैं कि अम्बेडकरवाद पर जो तुमने लैक्चर दिया, वास्तव में ऐसा लैक्चर वही दे सकता है, जो कुचले, दबे, पिछड़े लोगों के नजदीक रहा हो या वह स्वंय कुचला गया हो (छायावती, रूपनारायण सोनकर, पृष्ठ 3) छायावती एक दलित वर्ग की स्त्री है इसलिए वह दलित स्त्रियों की स्थिति से भी बखूबी परिचित है। वह आई0ए0एस0 बनकर उनके कष्टों को दूर करना चाहती है। हाथीराम के समक्ष वह अपने दृढ इच्छाशक्ति को प्रकट करते हुए कहती है कि सर! मैंने निर्बलो पर अत्याचार होते देखा है। मैं इन सभी के दुःख दर्द को दूर करना चाहती हूं (वही, पृष्ठ 4) हाथीराम उसकी दृढ इच्छाशक्ति को देखते हुए उसे राजनीति में प्रवेश दिला देते है और छायावती एक प्रदेश की मुख्यमंत्री बन जाती है।सत्तासीन होने के बाद छायावती तमाम कामचोर प्रशासनिक अधिकारियों को आड़े हाथों लेने के साथ ही सर्वप्रथम अम्बेडकर गांवों के विकास की ओर ध्यान देती है। अम्बेडकर गांवों के तहत 51 प्रतिशत दलित और 49 प्रतिशत गैर दलित जनता निवास करती है, छायावती इन गांवों में स्त्री–शिक्षा को सरलता से मुहैया कराना चाहती है। छायावती का मुख्य सचिव इसका समर्थन करता हुआ कहता है, गांव में स्कूल, अस्पताल हो जाने से बहू, बेटियों को शहर नही जाना पड़ेगा शहर जाने की दिक्कतों से बच जाएगी। सभी लड़कियां शिक्षित हो जाएगी (वही, पृष्ठ 11) स्त्री शिक्षा की महत्ता को रेखांकित करते हुए डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर ने भी कहा था ''माता–पिता बच्चे को जन्म देते हैं, कर्म नहीं। बच्चों को पढ़ना–लिखना चाहिए। लड़कों के साथ लड़कियों को भी शिक्षा देनी चाहिए, ताकि समाज की प्रगति अधिक हो सके। इस कारण लड़कियों की शिक्षा का प्रसार अधिक करना चाहिए'' (औरत इतिहास रचा है तुमने से उद्धत) कुसुम त्रिपाठी, (पृष्ठ 69) नाटककार ने गांवों मे बिजली, पानी और चिकित्सालयों की समस्या को भी गंभीरता से उठाया है। मुख्यमंत्री छायावती गांव का निरीक्षण करने पहुंचती है। सबसे पहले वह बिजली विभाग के इंजीनियर को तलब करती है। तेरे कार्यो से महक नहीं बल्कि बदबू आ रही है। तू तो अपने घर में हीटर और ए0सी0 में सोता है। तुझे इस गांव की सुध नहीं

आयी। यहां के बच्चे स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने जाते है, वह बिना बिजली के कैसे पढ़ेंगे, तेरे बच्चे तो मुफ्त की बिजली में पढ़ते है (मुख्य सचिव से) आप बिजली विभाग के इंजीनियरों को मुफ्त बिजली देना बंद करो। इसको तत्काल सस्पेंड किया जाता है (छायावती, पृष्ठ 15) इसके बाद वह जल विभाग के इंजीनियर की भी कड़े शब्दों में खबर लेती हुए कहती है कि गर्मी में लोग पानी के लिए त्राहि–त्राहि करते है। तेरे जैसे कमजोर इंजीनियर सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को फेल कर देते है। (मुख्य सचिव से) इसको तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है (वही, पृष्ठ 16) वह गांव के सरकारी अस्पताल का भी मुआयना करती है। इस अस्पताल का सरकारी डॉक्टर अपना प्राइवेट क्लिनिक चलाता है और सरकारी दवाएं भी बेच देता है। इस अस्पताल की हालत दयनीय है। छायावती कहती है कि इस जिले के समस्त प्राथमिक चिकित्सालयों को 5 लाख रूपये से अधिक देती है। गांव वालों को दवाइयां मुफ्त देने को आती है ये सब दवाइयां कहां जाती है (वही, पृष्ठ 17) वास्तव में यह स्थिति भारत के अधिकांश गांवों की है। गांवों में बिजल, पानी, चिकित्सालय और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं के ठीक ढंग से न होने के कारण ही हर वर्ष सैकड़ो ग्रामीण गांव से शहर की ओर पलायन कर रहे है। इसके लिए हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था सबसे अधिक जिम्मेदार है। नेतागण चुनाव के समय केवल वोट के लिए इन गांवो में जाते हैं। अधिकांश गांवो में न तो पीने के लिए स्वच्छ पानी है, न ही स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएं और न तो उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था ही मौजूद है। नाटक में एक स्थान पर छायावती नेताओं के दायित्व को इंगित करते हुए कहती है कि जनता इस क्षेत्र के एम0एल0ए0 व एम0पी0 को इसलिए चुनती है कि उनकी परेशानियों को सरकार तक ले जाया जाये। सरकार द्वारा इन जनप्रतिनिधियों को जनकल्याणकारी कार्यो के लिए करोड़ो रूपये दिया जाता है। इनका उत्तरदायित्व बनता है कि ये सारे कार्य समय से पूरा करवाये (वही, पृष्ठ 19) किन्तु विडम्बना यह है कि नेतागण अपने दायित्व से विमुख होकर केवल अपने हित साधन में ही लगे रहते है।

दलित महिलाओं के साथ आये दिन होने वाली बलात्कार और अपमान की घटनाओं पर भी नाटक में प्रकाश डाला गया है। ऐसा नही है कि बालात्कार केवल दलित स्त्री के साथ ही होता है। अभी हाल ही में दिल्ली में हुआ क्रूरतम बलात्कार कांड इस बात का प्रमाण है कि सवर्ण और पढ़ी–लिखी स्त्रियां भी महफूज नही है। लेकिन इस बात से इनकार नही किया जा सकता है कि गांवो में अभी भी अधिकांश दलित स्त्रियों को सार्वजनिक तौर पर अपमानित और शोषित किया जाता है। भंवरी बाई, फूलन देवी जैसी अनेक स्त्रियां इसका उदाहरण हैं। इस सन्दर्भ में छायावती कहती है कि देश को आजाद हुए 75 साल से अधिक हो गये लेकिन आज महिलाओं की विशेषकर दलित महिलाओं की इज्जत और आबरू सुरक्षित नही है। प्रभावशाली और दबंग लोग उनको आज भी नंगा कर सार्वजनिक तौर पर घुमाते है। कितने अफसोस की बात है (वही, पृष्ठ 25) छायावती अत्याचारियों को तुरंत अरेस्ट करने और प्रत्येक कस्बे और शहर में एक महिला थाना खेलने का भी निर्देश देती है। आज भी हमारे देश में प्रत्येक कस्बे या शहर में एक महिला थाना नहीं है जहां जाकर स्त्रियां बेखौफ अपने साथ हुए अन्याय के विरूद्ध रिपोर्ट लिखवा सके और जल्द न्याय की उम्मीद कर सके।

कुछ समय पहले संसद में महिलाओं के आरक्षण बिल को लेकर खूब हंगामा हुआ। हमारे देश की संसद में जहां दोनो सदनों को मिलाकर भी पच्चीस प्रतिशत महिलाएं नही है। यानि देश की आधी आबादी का ठीक–ठीक प्रतिनिधित्व ही नही है। वहां स्त्रियों को सामान सहभागिता के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण देने का पुरजोर विरोध हमारे राजनेताओं द्वारा किया गया। ऐसे में आम भारतीय महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त करने और प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के

समकक्ष सहभागिता दर्ज कराने में अभी एक कड़े संघर्ष के दौर से गुजरना होगा। अम्बेडकर गांव के निरीक्षण के दौरान बहन छायावती वहां की स्त्रियों की अशिक्षा और आर्थिक असम्पन्नता को देखकर यह घोषणा करती है कि– समस्त सरकारी, अर्धसरकारी, शिक्षण संस्थाओं, इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि नौकरियों में महिलाओं को आरक्षण 33 प्रतिशत निर्धारित किया जाए। शासनदेश जारी कर तुरंत लागू किया जाए। इसमें दलित महिलाओं के लिए 21 प्रतिशत स्थान निर्धारित हो (वही, पृष्ठ 27) आरक्षण सम्बन्धी तमाम बातें अभी दूर की कौड़ी ही साबित हुई है, वास्तव में आर्थिक आत्मनिर्भरता का अभाव स्त्री के शोषण का सबसे प्रमुख कारण है। चाहे वह स्त्री किसी भी वर्ण की हो। दलित वर्ग की स्त्री की स्थिति और भी निम्न इसलिए हो जाती है क्योंकि उनमें शिक्षा का प्रतिशत आज भी बहुत कम है स्त्रियों की आर्थिक अक्षमता के संदर्भ में डॉ0 अम्बेडकर ने बहुत महत्वपूर्ण बात कही थी, वह यह कि– जब तक स्त्रियों को समान आर्थिक दर्जा समाज मे प्राप्त नही होता, तब तक संविधान में समानधिकार का दर्जा देने पर भी कानून उन्हें कोई खास फायदा नही होगा (औरत इतिहास रचा है तुमने से उद्धत, कुसुम त्रिपाठी, पृष्ठ 72)

भारत में दलित, स्त्री, आदिवासी और अल्पसंख्यकों की समस्याएं बहस के केन्द्र में बनी हुई है। नाटक में अल्पसंख्यको के मुद्दे को भी उजागर किया गया है (छायावती के शब्दो में) मै जानती हूं कि अल्पसंख्यकों में बहुत अशिक्षा है। बेरोजगारी है। अल्पसंख्यकों में जो जातियां पिछड़ी जाति में आती हैं तुरंत उनके लिए पिछड़ी जाति का सर्टिफिकेट जारी करने का निर्देश समस्त जिला मजिस्ट्रेटों को दो मैं शासन में रहते गरीबों, दलितों, अल्पसंख्यकों और महिलाओ के भलाई के कार्य कर सकूं। प्रदेश में अशिक्षा, बेरोजगारी दूर कर सकूं (छायावती पृष्ठ 27) अल्पसंख्यकों एंव अन्य हाशिये के लोगो को केन्द्र में लेने के लिए आवश्यक है कि उनमें व्याप्त अशिक्षा, आर्थिक विपन्नता और गरीबी जैसे तमाम कारणों पर गंभीरता से विचार किया जाए और सर्वप्रथम दलित, अल्पसंख्यक आदि महिलाओं में चेतना औरजागरूकता का संचार उचित रूप मे किया जाए।

हमारे देश की 75 प्रतिशत जनता आज भी गांवो मे निवास करती है और खेती ही उनका मुख्य व्यवसाय है। इन किसानो के कड़े श्रम से उत्पादित अनाज से ही शहरो मे निवास करने वाले लोगो का पेट भरता है। किन्तु पिछले कुछ वर्षो से भू–माफियोओ द्वारा इन किसानो की जमीन पर जबरन कब्जा किया जा रहा है ऐसा ही एक दृश्य नाटक मे भी आया है जहां ताजा भैया (एक राजनेता) का पिता एक किसान नानक यादव से जबरन उसकी जमीन हथियाने की कोशिश करता है। वह नानक यादव की दस बीघा जमीन को अपने झील के निर्माण में बाधा बताते हुए उस जमीन को औने–पौने दाम मे खरीदना चाहता है। उनके बीच का संवाद कुछ इस प्रकार है।

नानक यादव –सरकार आप बीस लाख की जमीन के केवल पांच लाख रूपये ले रहे है। इस पैसे से हम दो बीघे जमीन भी नही खरीद पायेगें।

ताजा भैया का पिता– साले, मैं पांच भी नही दूंगा। अभी दे रहा हूं। सोच ले! मेरी झील में तुम्हारी जमीन आज ही मिल. ाई जायेगी।

नानक यादव–सरकार! मेरी बीबी, बच्चो पर तरस खाओ। हम कही के नही रहेंगे। मेरी दो जवान बेटियां है। उनकी शादी नही हो पायेगी। मेरी जमीन मत छीनों।

ताजा भैया के पिता–ये साला ऐसे नही मानेगा। इस साले को मार डालो। इस इलाके का जो भी आदमी मेरी बात काटेगा, मैं उसको सजाए मौत दूंगा (वही पृष्ठ 33) ऐसे भू–माफिया गरीब किसानो पर हुक्म चलाते है और किसानो की जमीन को अपनी बपौती समझते है। सरकार भी इन भू–माफियाओं के खिलाफ कोई ठोस कदम नही उठाती है। इसका बड़ा कारण यह है कि ये भू–माफिया कही तो स्वंय एम0एल0ए0 व एम0पी0 होते है और कही बड़े राज नेताओ

और सत्तासीनो से इनका सघन गठजोड़ होता है। नाटक मे मुख्य सचिव छायावती को ताजा भैया और उसके पिता के बारे मे जानकारी देते हुए बताता है कि – बहिन जी, यह बहुत बड़ा डान है। बहुत बड़ा भू माफिया है। बहुत बड़ा ड्रग माफिया है। बहुत बड़ा गुंडा व आतंकवादी है। लेकिन बहिन जी यह एम0एल0ए0 भी है (वही पृष्ठ 37) छायावति ऐसे लोगो के खिलाफ सख्त कानून लगाने और सख्ती से निपटने की बात करती है किन्तु वास्तविकता यह है कि सरकार इन भू–माफियाओ के खिलाफ कोई कठोर कदम नही उठा पा रही है। किसान मजदूर मे तब्दील होते जा रहे है। आर्थिक संकट उन पर इस कदर हावी होता जा रहा है कि पिछले कुछ वर्षो से बड़ी संख्या मे किसानो की आत्महत्या की खबरे अखबार और न्यूज चैनलों की हैडलाइन बनी हुई है। भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि आखिर क्यों सबसे बड़े प्रजातंत्र के तहत दलितों, स्त्रियों और किसानो आदि की आवाज को दबा दिया जाता है– क्यो शोषको और दमनकारियों की पहचान के बावजूद कोई निश्चित और कठोर कदम नही उठाये जाते है, जब तक शोषण और दमन के खिलाफ कोई सख्त और सार्थक कार्यवाही नही की जायेगी तब तक ऐसे ही तमाम प्रश्न बार–बार उठाये जाते रहेंगे।

नाटक एक दृश्य–श्रव्य माध्यम है। उसका एक बड़ा पाठक और दर्शक वर्ग होता है। इसीलिए किसी भी नाटक की सफलता का एक बड़ा पक्ष उसकी रंगमंचीय सफलता–असफलता से आंका जाता है। रंगमंच के माध्यम से पात्रों के बीच हुए संवादो का सटीक प्रभाव एक बड़े दर्शक वर्ग तक सीधे पहुंचाया जा सकता है। इस दृष्टि से छायावती नाटक एक सफल नाटक है। नाटक की कथ. ावस्तु वर्तमान परिस्थितियो से गुम्फित है। पात्रों की संख्या सीमित और भाषा पात्रों एंव उनके व्यवसाय के अनुरूप है, मंचीयता की दृष्टि से नाटककार को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

रचना के सन्दर्भ मे एक अन्य महत्वपूर्ण बात समय के साथ उसकी प्रासंगिकता और अप्रासंगिकता का है। आज जब दलितों के उत्थान और उन्हे हाशिए, से केंद्र मे लाने की कवायदें जोर–शोर से चल रही है। ऐसे समय मे यह नाटक बेहद प्रासंगिक हो जाता है दलित स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत अभी बहुत निम्न है। ऐसे मे छायावती पढ़–लिख कर एक प्रदेश की मुख्यमंत्री का पदभार ग्रहण करती है और एक सफल राजनेता के रूप मे प्रतिष्ठित होती है। वह गांवो मे व्याप्त अशिक्षा, बिजली, पानी और चिकित्सालयों की समस्या तथा इनके प्रति प्रशासनिक, अधिकारियो की उदासीनता से भी परिचित होती है। इसके साथ दलित महिलाओं के शोषण, किसानो पर होने वाले अत्याचार और अल्पसंख्यक समुदायों का भी जायजा लेती है। ग्रामीणो की समस्याओ को ध्यान से सुनती है और तुरंत कार्यवाही कर उन समस्याओं को हल करती है। वास्तव मे रूपनारायण सोनकर ने मुख्यमंत्री छायावती के चरित्र को एक आदर्श चरित्र के रूप मे गढ़ा है। वह एक दलित स्त्री का प्रतिनिधत्व करती है। मुख्यमंत्री पद के माध्यम से अम्बेडकरवाद का पुरजोर प्रचार करती है। संभवतः ऐसे एकाधिक नेता हुए हो किन्तु पूर्ण रूप से छायावती जैसी एक नेता की उपस्थिति को रूपनारायण जी का यूटोपिया भी कहा जा सकता है जो नितांत भिन्न और आज के सन्दर्भ मे बेहद महत्वपूर्ण है।

*****

बाजार में गाय का मोल

-सुरेश पंडित

सूअरदान उपन्यास के बारे मे इधर–उधर से पढ़ सुनकर जो जानकारियां थी ये कुछ खास उत्साहजनक नही थी। अधिकार समीक्षकों की राय ने यह धारणा बना दी थी कि प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्द की उल्लेखनीय कृति गोदान की प्रतिक्रिया मे लिखा गया यह एक ऐसा उपन्यास है जो उन्हे नीचा दिखलाने और उनकी कृति से अपनी को बेहतर साबित करने के लिये लिखा गया है। दलित लेखन में पिछले कुछ समय से यह प्रवृत्ति फैशन के बतौर सामने आती रही है और इसने प्रबुद्ध पाठकों का ध्यान बलात् अपनी ओर आकर्षित भी किया है। इस तरह के लेखन के पक्ष विपक्षी मे गर्म, गर्म चर्चा परिवर्चाये आयोजित होती रही है और फिर उसे भुला दिया जाता रहा है। उसका यह हश्र साबित करता है कि प्रतिक्रिया में लिखी गई रचनाये अक्सर स्थायी महत्व की नही होती। क्योकि उसमें जीवनानुभव कम तात्कालिक आक्रोश की अभिव्यक्ति अधिक रहती है। लेखक अपनी बात कहने की बजाय दूसरे की बात को काटने के लिय अधिक आतुर रहता है।

बहराल अब जब मैंने सूअरदान को पढ़ लिया है मैं यह सच स्वीकारने की स्थिति मे आ गया हूं कि मेरी धारणा गलत थी। यह तो वास्तव मे उन कतिपय मिथकों को ध्वस्त करने का एक सफल प्रयास है जिन्हें हिन्दू धर्म के स्वयंभू कार्यकताओं ने न केवल प्रचलित किया है बल्कि पालपोस कर इस कदर मजबूत भी बना दिया है कि ज्ञान विज्ञान द्वारा उनकी असलियत को साकने ला दिये जाने पर भी उनके प्रति लोगो की आसक्ति कम नही हो पा रही है, गौ, गंगा, ब्राहमण, स्वर्ग, नरक और चान्द, सूरज के बारे में अब तक प्राप्त वैज्ञानिक जानकारियां जो कुछ प्रकट करती है अफसोस है अब भी अधिसंख्य हिन्दू उन्हे अनदेखा अनजाना बनाये रखकर अपने धर्म और उसके प्रति लोगो की अस्था को अटूट रखने की कोशिश मे लगे है। अपने इस तरह के अन्धविश्वासो को सही साबित करने के लिये वे शास्त्रों की तो मनोनुकूल व्याख्या करते ही है वैज्ञानिक तथ्यों को भी झुठलाने से भी बाज नही आतें

विडंबना यह है कि आज तेजी से आगे बढ़ती प्रौद्योगिकी के साथ लोगो की समझ कदमताल नही मिल पा रही है। परिणाम यह है कि नये आविष्कारो को प्रयोग मे लाते हुए भी व पुरानी वस्तुओं का मोह नही छोड़ पा रहे

है। रूपनारायण सोनकर अपने इस उपन्यास में यह स्थापित करने की कोशिश करते दिखाई देते है कि पुराने वस्त्रों की तरह लोगो को पुराने मिथको, मान्यओ, रीति–रिवाजों और विचारो से पीछा छुड़ा लेना चाहिये। यदि वे ऐसा नही करते है तो उनकी भी वैसी ही गति हो सकती है जैसी सूअर फार्म विरोधियो की होती है। लोगो को अब यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि कृषि प्रधान संस्कृति गाय का जो मूल्य था, उसे बनाये रखने के लिये धर्म के महाप्रभुओ ने उसका महिमामडन किया था। लेकिन अब संस्कृति, कृषि का अवलंबन तजकर प्रौद्योगिकी के युग मे प्रवेश कर चुकी है। इसलिये गाय का वह महत्व नही रह सकता है जो पहले हुआ करता था। गाय अब न व्यावहारिक रूप से फायदेमन्द रही है और न इसकी पूंछ पकड़कर भव सागार की वैतरणी से पार जाया जा सकता है। गाय यहां पशु विशेष का प्रतीक मात्र नही है बल्कि उस पुरानी सोच, वैचारिक प्रक्रिया की संकेतक है जो लोगो को आगे बढ़ने, नव उदार अर्थवयवस्था द्वारा पैदा किये गये अवसरो का लाभ उठाने से रोकती है और जहालत मे जिन्दगी गुजारने को ही अपने धर्म और संस्कृति का पालन करने के लिये जरूरी मानती है।

असल मे सोनकर सूअर फार्म के माध्यम से जिस आने वाली सामाजिक व्यवस्था की फैन्टेसी को रचते है उसकी विश्वसनीयता भले ही सन्देहस्पद हो उसे सिरे से खारिज किया जा सकता। आखिर वह एक मॉडल तो पेश करती ही है। उनका यही मॉडल रूढ़ियो को नष्ट करने, जातिवाद की दीवारो को तोड़ने और गरीब अमीर के बीच की खाई के विस्तार को रोकने स्ट्रेटेजी को रचता दिखाई देता है। आर्थिक दृष्टि से अब गाय के मुकाबले सूअर अधिक उपयोगी, लाभदायक साबित होने लगा है। नई अर्थवयवस्था जिस तरह प्रचलित मूल्यों, मान्यताओ, पर फिर से विचार करने के लिये समाज को बाध्य कर दिया है। उसी तरह व्यक्ति पर भी यह दायित्व डाल दिया है कि वह नई चुनौतियों से मुठभेड़ करने के लिये नई रणनीतियां बनाये व अपनायें। पुरखो के जमाने से चली आ रही सोंच और उनके द्वारा काम मे लाये जा रहे औजार अब किसी काम के नही रहे है। इसलिये यदि बाजार मे खड़े रहना है, उसके कार्य व्यवहार से लाभ उठाना है तो उसके अनुरूप स्वंय को ढालना होगा। भावनाओं मे बहने की बजाय वास्तविकता को पहचानना व स्वीकारना होगा। बाजारवादी अर्थशास्त्र ने यह साबित करके दिखा दिया है कि गाय की महत्ता खत्म हो चली है इसलिये धर्माधिकारियों द्वारा किया गया उसका महिमा मंडन पहले जैसा बना नही रह सकता। इसके मुकाबले दूसरे प्राणी जो कभी घृणा या उपेक्षा के शिकार थे अब व्यावसायिक दृष्टि से अधिक उपयोगी साबित हो रहे है। इसलिये व्यावहारिकता को नकार कर भावुकता को छाती से चिपकाये र

खने का परिणाम आत्महत्या के अलावा और कुछ नही हो सकता।

सोनकर का यह मत पूरी तरह से तर्क संगत है, विवेकानुमोदित होने के बावजूद पाठकों के लिये आसानी से हजम होने लायक नही है। लेकिन यह भी सच है कि हर रेडिकल विचार शुरू मे विवादस्पद होता है और इसलिये सुग्राहय नही होता। उसका पुरजोर विरोध होता है। बाद मे धीरे–धीरे समाज उसे अपना लेता है। हो सकता है गाय की जगह सूअर का महिमामंडन आज लोगो की आस्था को चोट पहुंचाये उनके संस्कारो को क्षतविक्षत करें और धर्म व समाज के मुखिया उसे लेकर लोगों की भावनाओ को उकसाने मे सफल हो जावे। लेकिन आने वाला समय उन्हे सच को स्वीकार कर लेने के लिये तैयार करके ही रहेगा।

मुझे नही लगता कि इससे प्रेमचन्द और उनके गोदान की ख्याति को किसी तरह की क्षति पहुंच सकती है। प्रेमचन्द्र ने अपने उपन्यास मे गौ की वही प्रतिष्ठा दी थी जो उस समय के समाज मे मान्य थी। तब भी देश की अर्थव्यवस्था कृषि केन्द्रित थी। इसीलिये गाय के महत्व को कम नही किया जा सकता है। अब हम प्रेमचन्द्र के जमाने से बहुत आगे आ गये है और देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था व सामाजिक आचार विचार बहुत बदल गये है इसलिये सोनकर वही लिखते है जो प्रेमचन्द्र से आगे का अर्थात इस जमाने का सच है। वर्तम. ान की स्थितियो को ध्यान मे रखते हुए वे भावी समाज की जिस रूपरेखा को आकल्पित करते है हो सकता है उसका भौतिक स्वरूप हूं ब हूं वैसा ही सामने न आवें लेकिन यह सुनिश्चित है कि लोगो का आचार व्यवहार, जीवन शैली और सोच विचार वैसा ही होगा जैसा इसमें दर्शाया गया है। इसे वर्तमान मे भविष्य को तलाशने का एक सार्थक प्रयास माना जा सकता है।

*****

संवैधानिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति : 'सूअरदान'

-डॉ अलका नारायण गडकरी,
प्रोफेसर,हिंदी विभाग,
शिवाजी कला वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय
कन्नड़.(महाराष्ट्र)

रूपनारायण सोनकर जी अंबेडकरवादी एवं दलित रचनाकार है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से दलित, पीड़ित, शोषण, दीन-हीन समाज के जीवन को रेखांकित किया है। भारतीय समाज व्यवस्था में अनेक कुप्रथाएं, कुरीतियां, सामंतवाद, ब्राह्मणवाद, जातिवाद, धार्मिक, पाखंड आदि को सवर्णो ने अपने हित हेतु स्थापित कर रखा है।जिसे जड़ से उखाड़ने का कार्य रूपनारायण सोनकर जी ने अपनी कलम से किया है। उनके उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी साहित्य कृतियों में भारतीय संवैधानिक मूल्यों को केंद्र में रखकर रचनाओं का सृजन किया है। डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर जी के 'शिक्षित बनो,संगठित रहो और संघर्ष करो', इस मूल मंत्र को उन्होंने अपने जीवन का मंत्र बनाया और कर्तव्य पूर्ति करते हुए अपने अधिकारों को हासिल किया है। अपनी आत्मकथा ' नागफनी' में उन्होंने इसका अंकन किया है। भारत का संविधान विश्व स्तर पर सबसे उदार और प्रगतिशील कहा जाता है किंतु अपने ही देश में अधिक लोग इसके संदर्भ में जागरूक नहीं है। साहित्य समाज परिवर्तन का साधन है इसके माध्यम से संवैधानिक मूल्य युवा पाठकों तक पहुंचाने का कार्य दलित साहित्यकार कर रहे हैं। 'सुअरदान' उपन्यास के माध्यम से रूपनारायण सोनकर जी ने यह बखूबी किया है। उनका यह उपन्यास विविध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जाता है। यूजीसी नेट जेआरएफ 2012 में इस उपन्यास पर प्रश्न पूछे गये थे। यह उपन्यास भविष्य वेधी है। उनका समग्र साहित्य दलित विमर्श और संवैधानिक मूल्यों को प्रचारित -प्रसारित करता है।

'सूअरदान' यह बहुचर्चित उपन्यास कुल दस अध्यायों में विभाजित हैं। इस उपन्यास का केंद्र बिंदु 'सुअर फार्म-पिंगरी फार्म 'है । सुअर इस पशु की ओर देखने का सवर्ण समाज का दृष्टिकोण हेय है। वे गाय को पवित्र मानते हैं और सूअर को अपवित्र। इसलिए उपन्यास के शीर्षक पढ़कर बड़े-बड़े साहित्यकारों के नाक-भौ सिकुड़ने लगे थे। इस संदर्भ में युवा दलित साहित्यकार अजय नावरिया ने लिखा है- "मैंने दलित लेखक रूपनारायण सोनकर के बारे में पहले ही कहा था कि हो सकता है कुछ समय बाद सोनकर दलितों का प्रेमचंद बन जाए। सोनकर ने कहानी 'कफन', 'सद्गति', 'दूध का दाम' उपन्यास 'सूअर दान' लिखकर मेरे कथन को मजबूती प्रदान की है। मैं पहले 'सूअर' को विष्ठा खाने वाला जानवर मानता था। लेकिन 'सूअर दान' उपन्यास पढ़ने के बाद पता चला कि सूअर शकरकंदी भी खाते हैं। मेरी इस जानवर के प्रति धारणा बदल गई। सुअरदान'शीर्षक को लेकर गैर दलित साहित्यकारों में हिच-किचाहट देखी जा सकती है। लेकिन उपन्यास पढ़ने के बाद उनकी हिच-किचाहट दूर हो जाती हैं। क्योंकि यह उपन्यास सर्वजन हिताय की बात करता है।"1 संवैधानिक मूल्यों में न्याय, समता, बंधुत्व और समानता को महत्वपूर्ण माना गया है। इसलिए उपन्यासकार ने इन्हीं मूल्यों के तहत उपन्यास की संरचना की है। जो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के लिए सर्वथा लाभकारी सिद्ध हुई है।

किसी भी देश का भविष्य वहां के युवा शक्ति पर निर्भर होता है। रूपनारायण सोनकर जी ने सिंहासन खेड़ा गांव के रामचंद्र त्रिवेदी, सज्जन खटीक, सलवंत यादव, घसीटे चमार इन चार युवा दोस्तों के माध्यम से देश की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को खत्म किया है। यह सभी उच्च शिक्षित है। अलग-अलग जाति-धर्म के हैं। फिर भी उनकी सोच धर्मनिरपेक्ष है। उनको विदेशों में अच्छी खासी नौकरियां मिल सकती थी लेकिन "वे लोग कोई ऐसा बिजनेस चाहते थे जो अशिक्षित, शिक्षित, बेरोजगारों को नौकरी दे सके विशेष कर ग्रामीणों नव-युवकों को। गांव में एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे जहां प्यार, समानता और भाईचारा हो। गांव की गरीबी को वे लोग जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। सदियों से चली आ रही और धार्मिकता को उखाड़ फेंकना चाहते थे। जातिवाद को समूल नष्ट करना चाहते थे। विश्व बंधुत्व पर यकीन करते थे।"2 स्वतंत्रता के 76 सालों बाद भी भारत से गरीबी नष्ट नहीं हुई है। बेरोजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। रोजगार की खोज में लोग शहर की ओर आ रहे हैं। शहर में भी आबादी बढ़ने के कारण रोजगार मिलना संभव नहीं हो पा रहा है। शहरों के ठेकेदार मजदूरों के मजबूरी का फायदा उठाते हैं। उपन्यास के पात्र झक्कन और बक्खन रोजी रोटी की खोज में मुंबई पहुंचते हैं और वह स्थिति -गति को स्पष्ट करते हुए कहते हैं "काम तो मिल गया था, लेकिन इतना जोखीम वाला होता है की जरासा चुकें है तो कई सौ फीट ऊंचाई से जमीन पर गिरकर प्राण निकल जाते हैं। फिर भी बच्चों का पेट भरने के लिए वह काम करते हैं। लाल मोहम्मद पच्चीस माले की बन रही ऊंची बिल्डिंग पर हम सभी के साथ रस्सी और बासों से लटक कर मसाले से भरा तसला राजगीर को पकड़ रहा था। एकाएक उसका हाथ बांस से छूट गया और वह जमीन पर गिर कर मर गया। तुरंत, फुरंत ठेकेदार ने उसकी मिट्टी को दफनवा दिया।"3 इस तरह की जिंदगी भारतीय मजदूर जीते हैं और ठेकेदार उन्हें मुआवजा न देना पड़े इसलिए तुरंत मिट्टी में दफना देते हैं। ऐसे शोषण के एक नहीं बल्कि अनेकों

उदाहरण हम मीडिया के माध्यम से देखते सुनते हैं। बेरोजगारी की इस भीषण समस्या में कई युवा आत्महत्या भी कर लेते हैं, तो कई बताते हैं कि "जब बच्चे भूख से तड़पते थे। हम लोग जानवरों के गोबर से जो दाने निकलते थे उनको धुलकर एवं सुखाकर पिसते थे फिर उनकी रोटियां बनाकर खाते थे।"4 डिजिटल इंडिया ने बहुत तरक्की कर ली किंतु रोटी, कपड़ा और मकान के लिए लोग आज भी परेशान है।

ग्राम केंद्रित इस उपन्यास में भ्रष्टाचार की जड़े गांव में भी कितनी मजबूती से खड़ी है। इसका अंकन ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी, जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाचार्य जितेंद्र यादव, प्रायमरी हेल्थ सेंटर के डॉक्टर जोरावर सिंह के माध्यम से किया गया है। प्रशासक का कार्य गांव को उन्नति की ओर ले जाना है लेकिन यहा के प्रशासक तो गांव के लोगों का खुलेआम शोषण कर रहे हैं। उन्हें मूलभूत सुविधाओं से कोसों दूर रखने में लगे हुए थे।" सिंहासन खेड़ा गुंडागर्दी मारकाट और शोषण का पर्याय बन गया था। गांव की संस्कृति ने शहरों की संस्कृति को मात दे दिया था। ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति त्राहि त्राहि कर रही थी। ग्रामीण और शहरी सभ्यता ने मिलकर महानगरीय अपराधिक संस्कृति को जन्म दे दिया था। जो बहुत ही कुरूप, डरावनी और विनाशकारी थी।"4 हेल्थ सेंटर की दवाइयां प्राइवेट मेडिकल में बेची जाती थी, स्कूल के लिए आने वाले अनुदान से सत्ताधीश अपने घरों में फर्नीचर करवा लेते थे। दलितों की युवा लड़कियों को अपने घरों में जबरन रखेल बना लेते थे। गांव का पुजारी स्त्रियों के साथ अवैध संबंध स्थापित करता था। जब अनैतिकता अपनी सीमा पार करती है, तब संकटा प्रसाद चिकवा जैसे प्रशासनिक अधिकारी अपनी नौकरी से वी.आर.एस. लेकर गांव को तथा ग्राम वासियों को भ्रष्टाचारियों, गुण्डो, शोषकों के चुंगल से बचा लेते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब अन्य अत्याचार सीमा पार करता है तब तब विकास पुरुष जन्म लेते हैं। संकट प्रसाद चिकवा एम.ए. समाजशास्त्र पास व्यक्ती है। वह गांव के लोगों की स्थिति-गति से परिचित है। ग्राम प्रधान और उसके साथियों की हरकतें उसे पता है। इसलिए वह कानूनी तौर पर सूचना अधिकार अधिनियम 2005 के तहत कार्यवाही करके गांव को संपन्न करने के लिए तथा गांव के लोगों तक सारी सुविधाएं पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय बैंकों से लोन और सरकारी योजनाओं के संदर्भ में गांव वालों को अवगत करता है। परिणाम स्वरुप गांव के लोगों के जीवन में परिवर्तन आता है। ग्रामवासियों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा मिलता है।

सिंहासन खेड़ा गांव की आबादी में साठ प्रतिशत दलित और बाकी दूसरी जातियां थीं। अतः सरकारी आदेश अनुसार मुनादी की जाती है कि यह गांव दलितों के लिए रिजर्व हुआ है। मुनादी सुनकर ग्राम प्रधान सत्यनारायण त्रिपाठी चिल्लाते हुए बोलता है "बंद करो डुग्गी पीटना। इस गांव का प्रधान मैं हूं और मैं ही रहूंगा। यह आदेश झूठा है। गांव वालों के साथ में आंदोलन करूंगा। लेकिन इस गांव में एक दलित को अपने ऊपर शासन नहीं करने दूंगा।"6 हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। वैज्ञानिकों ने इतनी क्रांति की है कि मनुष्य चंद्रमा तक पहुंच गया है। समाज सुधारो को ने जाति-पाति के भेद से समाज को बाहर निकालने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया है। इतने सारे प्रबोधन पर कार्यक्रम होते हैं। संविधान ने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की बात रखी है। कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, दवाइयां किसी पर भी किसी जाति -धर्म का लेबल नहीं है। वह हर इंसान के लिए एक जैसा कार्य करती है। सवर्ण मानसिकता इसे कब समझने वाली है? सदियों से चली आ रही घिनौनी जाति प्रथा इनके दिमाग से जाने का नाम ही नहीं लेती। भारतीय चुनाव प्रक्रिया में लोकसभा, विधानसभा, पंचायत या नगर पालिका सभी जगह दबंग, असामाजिक तत्व और गुंडे अपना प्रभाव और रंग दिखाते हैं। सिंहासन खेड़ा में ऐसी स्थिति में भी लोक संकटा प्रसाद चिकवा जैसे नेक इंसान को अपना नेता चुनते हैं और संगठन की शक्ति और संविधान ने दिए वोट अधिकार की उपयोगिता सार्थक करते हैं। 2024 के चुनाव में भी कई जगहों पर लोगों ने अपने कीमती वोट सोच समझकर दिए, परिणाम स्वरुप देश को एक सशक्त विरोधी पक्ष मिला है।

एकीसवीं सदी में भी जाति प्रथा नष्ट होने का नाम नहीं ले रही है। सिंहासन खेड़ा के स्कूल में बच्चों का भोजन बनाने का काम एक दलित महिला करती हैं उसे गांव वाले सवर्ण विरोध करते हैं। दलित और स्वर्ण के बच्चों को अलग-अलग पंगत में बिठाकर खाना खिलाया जाता है। किंतु ग्राम प्रधान संकट प्रसाद चिकवा आदेश देते हैं कि "दलित, गैर-दलित सभी बच्चे एक पंगत में बैठकर खाना खाएंगे। बड़े दुर्भाग्य की बात है बच्चों में शुरुआत में ही छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, छुआछूत की भावना भरी जा रही है। ये सारी बातें समाप्त होनी चाहिए। वरना शेड्यूल कास्टस/ शेड्यूल ट्राईबल्स उत्पीड़न एक्ट के अंतर्गत केस दर्ज होने पर लोगों की जमानत भी नहीं होगी। बच्चों को पढ़ाइए। सभी मानव एक है, ना कोई छोटा है और ना कोई बड़ा। ना कोई उच्च जाति का है और ना कोई नीच जाति का। सभी एक ही परमपिता की संताने हैं।"7

संविधान निर्माण के पूर्व भारतीय समाज व्यवस्था वर्णों पर आधारित थी। इसलिए शोषितों बहुजनों को अपने अधिकारों से वंचित रखा गया था। उन्हें पशु-प्राणियों से भी हीन समझा जाता था। गाय और गोमूत्र पवित्र थे और जीता जागता मनुष्य अपवित्र, अछूत। कैसी विचित्र सामाजिक संरचना थी। छुआछूत की इस महाभयानक बीमारी ने डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर का भी अत्यधिक शोषण किया था। फिर भी उन्होंने उच्च शिक्षा लेकर अपने अशिक्षित समाज के लिए देश-विदेश में पढ़-लिखकर अपनी अस्मिता और अस्तित्व को बनाया। फलस्वरुप में आज विश्व मानव के रूप में जाने जाते हैं। भारत को मानवतावादी संविधान दिया है। समग्र मानव जाति का विकास हो इसलिए अलग-अलग प्रावधान बनाए हैं किंतु यह व्यवस्था उन प्रावधानों को तोड़ मरोड कर एवं अपनी सुविधा अनुसार अर्थ लगाकर आज भी अपना हित साध रही है। जिस जहरीले मनुस्मृति को डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर ने 25 दिसंबर 1927 को जलाकर नष्ट किया था वही संप्रति शालेय पाठ्यक्रमों में लगाकर बच्चों को फिर से मनुवादी बनाने का कार्य कर रही है। लेकिन संकट प्रसाद चिकवा जैसे अंबेडकरवादी विचारधारा के नेता उन्हें रोक कर रहेंगे। इस विचारधारा को जीवित रखना हम सभी भारतवासियों की जिम्मेदारी है ।यही संदेश रूप नारायण सोनकर जी ने इस उपन्यास के माध्यम से दिया है।

अपने गांव को पर्यावरणीय दृष्टि से समृद्ध करने हेतु ग्राम

प्रधान बंजर भूमि को जंगल में रूपांतरित करने का संकल्प करते हुए पानी बिजली की समस्या को खत्म करने के लिए बांध या तालाब तथा बिजली प्लांट निर्माण की योजनाएं बनाता है। वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण न हो इसलिए धुआं और ध्वनि रहित वाहनों का उपयोग करने का अनुरोध ग्राम वासियों से करता है। होली और दीवाली जैसे पारंपरिक त्यौहारों को शालीनता से मनाने का आग्रह किया जाता है। जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियर का पिघलना और जलवायु परिवर्तन की समस्या हल हो सकती है। प्रशासक चाहे गांव, नगर, शहर, राज्य या देश का हो वह यदि लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं पर विचार करके आर्थिक निधियों को विकास कार्य पर खर्च करता है तो सभी स्थानों पर सुविधा प्राप्त होगी लेकिन हमारी प्रशासनिक व्यवस्था इतनी भ्रष्ट हो गई है कि घोटालों को भी आदर्श के रूप में देखती हैं। राजनीतिक पक्ष एक दूसरे के भ्रष्टाचार को मीडिया के माध्यम से लोगों के सामने ला रहे हैं इससे स्पष्ट होता है कि काम अधिक मात्रा में सभी प्रशासक भ्रष्टाचारी है राजनीति में भी संवैधानिक मूल्य चकनाचूर होते नजर आ रहे हैं जो राजनीति का पक्ष थोड़ी बहुत नैतिकता रखता है उसे जेल भिजवा दिया जा रहा है। रूपनारायण सोनकर जी ने ग्राम प्रधान के कार्य करतूतों के संदर्भ में लिखा है "कुछ गांव में सत्यनारायण त्रिपाठी जैसे ग्राम प्रधानों ने गांव की तरक्की को भूलकर अपनी स्वयं की तरक्की करने लगे। अपने बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित करने लगे। उन्होंने गुंडो की सेना रख ली उनके बल पर गांव के विकास में आया धन हड़पने लगे। उनके अत्याचारों से गांव की जनता त्राहि -त्राहि करने लगी।"8 गांव की स्थिति इतनी भयानक है तो शहर और राज्य एवं राष्ट्र की क्या होगी?

पिंगरी- फॉर्म के चारों दोस्तों की एक क्रिस्चियन मिस हैरी सिल्वा नामक विदेशी दोस्त है, उसका सिंहासन खेड़ा में आना जाना है। अपने दोस्तों के साथ-साथ वह भी ग्राम विकास में उनकी सहायता करती हैं। वह उच्च शिक्षित होने के कारण गांव की लड़की और औरतों को स्वच्छता के संदर्भ में समझाकर एक स्त्री के शिक्षित होने पर परिवार की उन्नति कैसे होती है यह मनोरंजन और फिल्मों के माध्यम से बताती है।"विज्ञान या मनोरंजन में एक ऐसी ताकत होती है जो सारी असमानताओं को मिटा देती है। लैपटॉप से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम इंटरनेट से दिखाकर ग्रामीण औरतों को इंटरनेट के कार्यक्रमों का अनुसरण करने को कहती है। विभिन्न प्रकार के खेलकूद के प्रोग्राम लड़कियों को दिखाती.. उसने गांव की समस्त अनपढ़ औरतों को शिक्षित कर दिया था। उसने देखा कि गांव के औरतें और लड़कियां पढ़ाई में बहुत ही ब्रिलिएंट होती है। उसने अधिकतर लड़कियों और औरतों को प्राइवेट हाई स्कूल इंटर कर दिया था। कॉरस्पॉडेंट कोर्स से उच्च शिक्षा भी दिलाना शुरू कर दिया।"9 इतना ही नहीं तो उसने पुजारी दयाशंकर को एड्स के उपचारों की उचित जानकारी दी। संकटप्रसाद चिकवाने दयाशंकर को छूकर ग्राम वालों को यह बता दिया यह छूत वाली बीमारी नहीं है। यह किसी भी धर्म जाति के व्यक्ति को हो सकती हैं। अतः जाति धर्म कुछ नहीं होता। मानवता ही सब कुछ होती है। इस मूल्य को सभीने समझना चाहिए। पुजारी दयाशंकर की तीन उच्च शिक्षित बेटियों को पिंगरी-फार्म में नौकरी दे दी जाती है। मिस हैरी सिल्वा चारों पार्टनरों से लिव्ह इन रिलेशनशिप में रहने के बजाय शादी करने का निर्णय लेती है किंतु पुजारी दयाशंकर की बेटियां भी उन लोगों के संपर्क में आने के कारण अपना निर्णय बदल कर स्वयं रामचंद्र त्रिवेदी शादी कर लेती है और शेष तीनों दोस्त दयाशंकर की बेटियों से। अंतरजातीय विवाह जाति प्रथा नष्ट करने के लिए अच्छा प्रयास है। मजदूर स्त्रियों के शारीरिक शोषण की कहानी सुनयना के माध्यम से कही गई है। वह मजदूरों के संगठन से ठेकेदार जयंत सिंह को कैसे मार गिराती है और उसके चुंगल से सारे मजदूर कैसे छूट जाते है। इसका अंकन भी रचनाकार ने किया है। संगठन की ताकत प्रशासक / शोषक जानता है। इसलिए वह किसी भी समाज को संगठित होकर रहने नहीं देता। रूपनारायण सोनकर जी इसे भली-भांती जानते हैं। सभी जाति धर्म के लोगों को संगठित करके राष्ट्र कैसे विकसित किया जाता है, इसकी सटीक अभिव्यक्ति सुअरदान उपन्यास की खासियत है।

हताशावादी लोगों द्वारा की गई लूट की कारण मीमांसा करते हुए लिखा गया है कि "यह हताशावादी समाज के दुश्मन नहीं है, बल्कि हम उनके दुश्मन हैं। हमने जमीन-जायदाद, कल-कारखानों, उद्योग - व्यापार, शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, पुलिस और विज्ञान सभी जगह कब्जा कर रखा है। सरकारी और गैर सरकारी नौकरियों में हम सभी लोग दिखाई पडते हैं। हताशवादियों का इन पर कोई अधिकार नहीं है। उनके बच्चे एक -एक रोटी के लिए मोहताज है। उनकी लड़कियों और स्त्रियों के लिए तन ढकने के लिए कपड़ा नहीं है। रहने के लिए झोपड़ी तक नहीं है।"10 हताशवादी लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लूटमार करते हैं। यदि उनकी ज़रूरतें सामान्यों की तरह पूरी हो जाए, तो वह इस तरह ऊंची ऊंची पहाड़ियों और जंगल घाटियों में छिपकर लोगों को नहीं लूटेंगे। गरीबी और बेरोजगारी ने इन्हें जन्म दिया है। इस विकराल समस्या का निवारण करने हेतु सज्जन खटीक ने उपाय सुझाए हैं कि जिले के प्रथम श्रेणी के उद्योगपतियों ने हताशावादियों को पक्के घर देने चाहिए, द्वितीय श्रेणी के उद्योगपतियों ने मुफ्त गेहूं चावल कपड़े बच्चों को निशुल्क पढ़ाई कर देनी चाहिए, अन्य श्रेणी के लोगों ने लड़कियों के विवाह कर देने चाहिए। स्कूल, कॉलेज, औषधालय और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में हताशवादियों को और उनके बच्चों को नौकरी देनी चाहिए। प्रत्येक सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अपनी तनख्वाह से पांच और दो प्रतिशत माह स्वेच्छा से वेतन कटौती कर देनी चाहिए। देश में शांति आएगी और सभी नागरिकों के जानमाल की रक्षा होगी। बुद्ध, फुले, शाहू, अंबेडकर की विचारधारा को प्रस्थापित करने का कार्य यह उपन्यास कर रहा है। इन सभी महानुभावों ने वैचारिक क्रांति की है। उन्होंने सभी जाति एवं वर्गों के लिए उन्नति पथ का निर्माण किया था। हताशावाद मिटाने का सफल प्रयास कैसे हो सकता है। इसका रेखांकन किया है। प्रशासन तथा सरकार ने संविधान के अनुसार जो योजनाएं दलित, पीड़ित, पिछड़े, आदिवासियों के लिए बननी चाहिए थी वह नहीं बनाई गई। अतः देश में आज भी गरीबी-अमीरी की खाई उतनी ही गहरी है जितनी वह स्वतंत्रता मिलने के बाद थी। कुछ एक अपवाद जरूर है। लेकिन जितनी बड़ी मात्रा में उन्नति होनी चाहिए थी वह नहीं हुई है। इसका कारण यह भी

है कि सरकारी कार्यों में असीमित भ्रष्टाचार होता है। समाज अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं है। जो सजग है उनमें लालच के बीज बोए जाते हैं। परिणामता: जो बोया जाता है वही पाया जाता है। इस संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन करने की कारगर योजनाएं रचनाकार ने रेखांकित की है।

उपन्यास के अंत में पुजारी दयाशंकर अंतिम सांसे गिनते हुए षड्यंत्रकारी ब्राह्मणों से यह कहता है -"नहीं मैं गोदान नहीं करूंगा।... स्वर्ग और नरक सभी कल्पना की चीजें हैं, मरने के बाद आदमी इसी मिट्टी में विलीन हो जाता है। मिट्टी कभी भी गाय की पूछ नहीं पकड़ सकती है। मरने के बाद मृत व्यक्ति के लिए काल्पनिक भवसागर की बात करना मिथ्या है। झूठ है। फरेब है। यदि मुझे दान करना पड़ा, तो मैं प्यार, भाईचारा, सांप्रदायिक सद्भावना, समानता, देश प्रेम, जानवर और मानव के प्रति लगाव का दान करूंगा। पूरे विश्व में शांति रहे, इसलिए मैं अहिंसा के उपदेश का दान करूंगा। पूरा संसार प्रदूषण मुक्त रहे, इस उद्देश्य का दान करूंगा। प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा करें, इस संकल्प का दान करूंगा"11 साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज में जो घटित हो रहा है उसे वह चित्रित करता है और समाज परिवर्तन की मांग भी करता है। 1936 में प्रेमचंद द्वारा लिखे गया गोदान उपन्यास कृषि जीवन, साहुकारी शोषण, ऋणग्रस्त पिछड़ा समाज और सवर्ण विकृत मानसिकता तथा नारी शोषण को उजागर करता है किंतु परिवर्तन के लिए कोई भविष्योन्मुखी पर्याय नहीं देता है। 'सूअरदान' उपन्यास 2010 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास ने पारंपरिक धार्मिक सांप्रदायिक, आर्थिक सारे मिथक जो कपोल-कल्पित थे तोड़ दिये है। पूर्णतः वैज्ञानिक और संवैधानिक मूल्यों को केंद्रित करके परिवर्तनवादी वैचारिक क्रांति कर सवर्णो की मानसिकता बदलता है। आज तक गोदान करने वाला पुजारी दयाशंकर गोदान के बदले प्यार, बंधुत्व,समानता, सद्भावना, मानवता, शांति, अहिंसा, नारी सम्मान, प्रदूषण मुक्त परिवेश एवं देश रक्षा के संकल्प को दान करता है। 'सूअर-फार्म' के कारण उसे एड्स जैसी भयानक बीमारी से मुक्ति मिली थी। उसके परिवार की उन्नति भी इससे हुई थी। इसलिए वह सूअर के बच्चे पर हाथ रखकर इस लोक से विदा होता है। समाज को नई दिशा देने की पहल उपन्यासकार ने की है। 'सुअरदान'के रूप में एक नया मिथक गढ़ा गया है। किंतु आर्थिक संपन्नता प्रदान करने वाला यह मिथक भारतीय युवकों को बेरोजगारी, गरीबी, लाचारी और समाज से जाति, धर्म, संघर्ष, दहशतवाद, चोरी, डकैती, हताशावाद, नारी शोषण से शाश्वत मुक्ति दिलाने का सार्थक प्रयास है। "हिंदू समाज में गौ से जितनी धारणाएं जुड़ी है, सब मिथक है। मिथक तोड़ने का ख्याल सोनकर को आया। सोनकर को छोड़कर किसी अन्य रचनात्मक लेखन को मिथक तोड़ने का ख्याल नहीं आया। गोदान के लिए सुअरदान की कल्पना भी सोनकर की अपनी कल्पना है और बड़ी मौलिक कल्पना है। यदि गोदान एक मिथक है तो सूअरदान भी मिथक है। लोहा लोहे को काटता है, इस ख्याल के साथ सोनकर ने सूअर दान का मिथक गढ़ा है लेकिन सोनकर ने सिर्फ मिथक नहीं रहने दिया, बल्कि उसे हकीकत में मूर्त रूप दे दिया है।

निष्कर्षत: सुअरदान उपन्यास में रूप नारायण सोनकर जी ने सदियों से चली आ रही वर्णवादी व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है। संवैधानिक मूल्यों पर आधारित तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा का अमल करने पर प्रजातांत्रिक भारत की धर्मनिरपेक्ष छवि में निखार लाने के विचारों को अभिव्यक्त किया है। प्रत्येक भारतीयों के मन में सेवा, त्याग, समर्पण, मानवता बसी हुई है किंतु रूढी-परंपरा को कुनीतियों के बोझ तले वह दबी हुई है। शिक्षा, संगठन और संघर्ष से उसे नष्ट किया जा सकता है। पिंगरी-फार्म इसका ज्वलंत उदाहरण है। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान में इसका कार्य महत्वपूर्ण है। साथ ही ग्रामीण शासन व्यवस्था, पंचायत राज के माध्यम से जनकल्याण हेतु बनाई गई योजनाओं ने भूमिहीन किसानों और बेरोजगारी की समस्याएं खत्म करने का प्रयास किया है। ग्राम विकास हेतु, गांव से पूर्णतया जातिवाद और छूआछूत नष्ट करने के लिए अंतरजातीय विवाह को समर्थन दिया गया है। स्कूल, कॉलेज व औषधालय जैसी जरूरी सेवाएं हर किसी को मिलनी चाहिए। इसका प्रबंध उस-उस प्रदेश के अधिकारियों ने करना चाहिए। सर्वधर्म समभाव से जीवन यापन करके पर्यावरण की सुरक्षा की होनी चाहिए। गरीबी-अमीरी के खाई को तथा हताशावाद को मिटाने के लिए सरकारी, गैर-सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने आर्थिक दृष्टि से सहायता करके उसे जड़ से हटाकर बहुजन-हिताय, बहुजन-सुखाय के मंत्र का स्वीकार कर भारतीय जनतंत्र को जीवित रखना है। रूपनारायण सोनकर जी ने इस उपन्यास में जिस परिवर्तनवाद को व्यक्त किया है, उसकी जड़े संवैधानिक मूल्यों में है।

संदर्भ

1.http://jansatt.wordpress.com/25/3/2011

2. सुअरदान, रूपनारायण सोनकर, पृ.15
3. वही, पृ.69
4. वही, पृ.69
5. वही, पृ.30
6. वही, पृ.40
7. वही, पृ.49
8. वही, पृ.50
9. वही, पृ.60
10. वही, पृ.159
11. वही, पृ.159-160
12. वही, पृ.163-164

*****

आत्मकथा

भटकटैया

✍...रूपनारायण सोनकर

जगनंदिनी पैलेस

डांडा लाखउंड

साहस्टरधारा रोड देहरादून

उत्तराखंड 248013

MOB-8279789405

Email- sonkar.roopnarayan@gmail.com

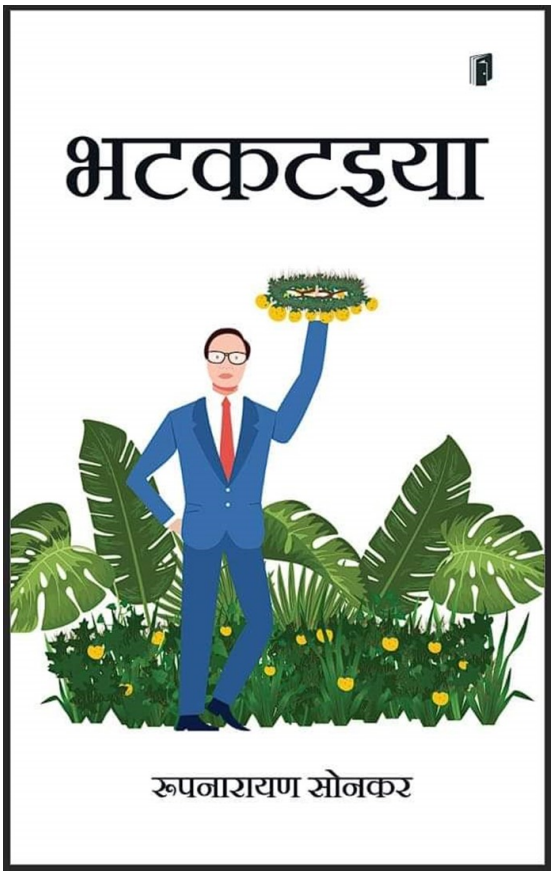

हिन्दू समाज ऐसा है जहां दलितों, अति पिछड़ो और बहुत ही गरीब सवर्णों को बन्दूक से नही बल्कि तोप से उड़ाया जाता हैं अंग्रेजों के शासन काल में क्रांतिकारियों को इसी तरह मारा जाता था। क्रांतिकारी आजादी की मांग कर रहे थे। अंग्रेजों से छुटकारा पाना चाहते थे। बोलने की आजादी चाहते थे, शोषण और अत्याचार को मिटाना चाहते थे। बराबरी का दर्जा चाहते थे। अंग्रेजों को यह सब पंसद नही था। इसीलिए जलियांवाला कान्ड कर डाला।

भारत देश के अन्दर प्रत्येक गांव, कस्बा, शहर प्रदेश की राजधानियों और देश की राजधानी में सैकड़ों ऊना जैसे काण्ड हो रहे हैं जो जलियांवाला बाग कान्ड की याद दिलाते हैं। स्वतंत्रता संग्राम की पहली आजादी अंग्रेजों के विरूद्ध हम जीत गये। शोषण, असमानता, धार्मिक कट्टरता, दलितों और उनकी स्त्रियों पर ढाये जा रहे अत्याचारों के विरूद्ध क्रांति जारी है। दूसरी आजादी पाने के लिये संघर्ष जारी है। यह आजादी की लड़ाई काले, अंग्रेजों के विरूद्ध जोरदार ढंग से लड़ी जा रही है। इसमें बहुत सारे कमजोर वर्गो के लोग शहीद हो रहे हैं। सुनियोजित ढंग से बेसहारा लोगों का कत्ल किया जा रहा हैं। उनकी औरतों के साथ बलात्कार किये जा रहे हैं। उन्हें जिन्दा आग में झोंका जा रहा है। सारे सवर्ण ऐसा नही कर रहे हैं बल्कि कुछ कट्टरपंथी सनातनी हिन्दू इनं जघन्य अपराधों को अंजाम दे रहे हैं। कभी गाय की खाल उधाड़ने के नाम पर दलितों को नंगा करके पीट रहे हैं। कभी–कभी गाय का मांस पकाने के नाम पर अल्पसंख्यकों को मौत के घाट उतार रहे हैं। कट्टर सवर्ण हिन्दू कोई भी खूंखार सेना या आर्मी का गठन करें, उनको यह अधिकार जन्म से प्राप्त है ले. किन यदि कोई दलित या पिछड़ा समाज का आदमी आर्मी का गठन करे तब कट्टरवादी हिन्दुओं को यह पसंद नही है उनको जेल में डाल दिया जायेगा। उन पर रासुका जैसा कठोर कानून लगा दिया जायेगा। पिछड़े और दलित समाज के लोग ऐसे गैर–बराबरी के विरूद्ध आजादी चाहते है।

रिजर्वेशन का मुद्दा कट्टर हिन्दूवादी संगठनों द्वारा उठाया

जाता है। यहां तक कि फासिस्ट ताकतें आरक्षण को सदैव सदैव के लिये समाप्त करना चाहती हैं। समाज में समानता लाने के लिये विश्व के जननायक डा0 भीमराव अंबेडकर ने संविधान में कमजोर वर्गो के लिये आरक्षण की व्यवस्था की थी। आज भी किसी भी प्रथम, द्वितीय या तृतीय श्रेणी की नौकरियों में आरक्षण का कोटा सम्पूर्ण रूप से भरा नही गया है। सरकारी नौकरियों में आउटसोर्सिंग के जरिये दलितों, पिछड़ों को नही भर्ती किया जा रहा है। पिछले दरवाजे से सरकारी नौकरियों में उनका कोटा धीरे–धीरे समाप्त किया जा रहा है। सरकार द्वारा प्राइवेट सेक्टर को बढ़ावा दिया जा रहा है। ये सेक्टर करोड़ो की संख्या में प्रतिवर्ष लोगों को रोजगार देते हैं। वहां दलितों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों का प्रतिशत नगण्य है। सरकार को चाहिये कि सरकारी नौकरियों की तरह वहां भी आरक्षण लागू हो। प्राइवेट सेक्टरों में भी आरक्षण की व्यवस्था हो। तभी समतामूलक समाज का निर्माण होगा। भारत मजबूत बनेगा। दुनिया में भारत एक ताकत बनकर उभरेगा।

ग्रामीण भारत में आज भी लोग झुग्गी–झोपड़ियों और कच्ची मिट्टी के बने घरों में रहते हैं। सर्दी–गर्मी और बरसात में बेमौत मारे जाते हैं। उनके पास तन ढकने के लिये कपड़े नही हैं। दस साल तक के बच्चे नंगे बदन रहते हैं। औरते एक धोती और एक ब्लाउज में पूरा साल काट देती हैं। यही हालात आदमियों का भी है। बच्चों के पढ़ने के लिये घरों में कोई बिजली की व्यवस्था नही हैं ऐसी परिस्थितियों में यदि सरकार संविधान के अनुसार आरक्षण प्रदान करती है तो कुछ निम्न मानसिकता के लोग आरक्षण का विरोध करते हैं। गरीबी सीमा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों को क्या जीने, पढ़ने, खाने व नौकरी करने का अधिकार नही है? बिना इन लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाये भारत देश एक शक्तिशाली देश नही बन सकता है।

अंध धार्मिकता, अंध विश्वास ने देश को बहुत अक्षम बना दिया है। वैज्ञानिक तरीके से सोचने की शक्ति को पंगु बना दिया है। सामाजिक बुराइयों की वजह से भारत में समानता नही है। जातिवाद व छूआछूत अब भी पूर्णतया देश में सम. ाप्त नही हुआ है। प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया अपने–अपने टी0वी0 चैनलों में अंध विश्वास से भरे कार्यक्रम दर्शकों के सामने परोस रहे हैं। इसका प्रभाव यह हो रहा है कि नौजवान पीढ़ी की कर्म के प्रति आस्था घटती जा रही है। अंध धर्म के प्रति ज्यादा लगाव बढ़ता जा रहा है। कोई भी काम शुरू करने के पहले देवी–देवताओं की पत्थर की मू. र्तियों के सामने दूर–दूर तक चल कर सर झुकाया जाता है। ऐसा लगता है कि ये बेजान पत्थर की मूर्तियां उनकी सारी अभिलाषा पूर्ण करती हैं। यहां तक कि नई पीढ़ी के बच्चे परीक्षा देने के पहले मंदिर के सामने शीश झुकाते हैं। उनका कीमती समय बर्बाद होता है। यही अज्ञान है इसी अज्ञान को कट्टर हिन्दूवादी शक्तियां बढ़ावा देती हैं। जो भी आदमी इस तरह के अंध विश्वास व सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आवाज उठाता है उसका कत्ल कर दिया जाता है। गौरी लंकेश, कुलवर्गी, गोविन्द पनेसर, रोहित बेमूला इसका जीता जागता उदाहरण है। बुहुत सारे समाज सुध ारकों की निर्मम हत्या की गयी है जो सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठाते हैं।

ऐसे में सत्य घटनाओं पर आधारित आत्मकथा लि खना एक बेहद जोखिम भरा काम है लेकिन मेरे जैसे ले खक ऐसे जोखिमों से भिड़ना अपना नैतिक कर्तव्य समझते हैं। जो लेखक ऐसे जाहिल समाज के क्रूर लोगों से डर गया, वह सही मायने में लेखक नही हैं वह सही मायने में क्रूर समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत नही कर सकता है।

मेरी प्रथम आत्मकथा 'नागफनी' ने दलित साहित्य में जो स्थान दिलाया वह मेरे लिये एक गौरव की बात है। प्रख्यात लेखक व 'हंस' के संपादक राजेन्द्र यादव ने नागफनी के बारे में सटीक टिप्पणी की थी ''अभी तक जितने भी दलित लेखकों की आत्मकथाएं आयी है उनमें

हाय–मार डाला की चीखें सुनाई पड़ती है लेकिन 'नागफनी' में चीखें सुनाई नही पड़ती है बल्कि इसमें संघर्ष है जिसको अंग्रेजी भाषा में साइलेंट रेव्यूलूशन कहा जाता है।'

इस सदी के सबसे ख्याति प्राप्त साहित्यकार प्रो0 नामवर सिंह ने नागफनी के बारे में अपनी राय व्यक्त की है ''नागफनी की भाषा शैली व बिम्ब सराहनीय है।'' प्रो0 अजय नावरिया ने 'नागफनी के लिये 'एक्सीलेंट' शब्द का प्रयोग किया है। डा0 डी0के मेहरा, डा0 खन्ना प्रसाद अम. ीन प्रो0 इशपाक अली, प्रो0 ओमराज, कंवल भारती श्री मो. हनदास नेमिशराय, डा0 तेजसिंह, प्रो0 जी.वी. रत्नाकर, डा0डोडा बाबू, डा0 कामले अशोक, प्रो0 कालीचरण स्नेही, प्रो0एस0एस0 सांवत, प्रो0 राजेश करनकाल, प्रो0 पंडित सुरेश जयप्रकाश कर्दम, डा0 अल्पना मिश्रा ने 'नागफनी' की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। डा0 भूरेलाल 'नागफनी' को इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद में एम0ए0 हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया। प्रो0 जी.वी.रत्नाकर व प्रो0 डोडा बाबू नागफनी से इतना प्रभावित हुए कि इस आत्मकथा को एम0ए0 हिन्दी के पाठ्यक्रम में मौलाना आजाद नेशनल उर्दु विश्वविद्यालय हैदराबाद में सम्मिलित कर लिया। इसके अलावा यह आत्मकथा स्वामी रामानन्द तीरथ मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी नान्देड़, गुजरात यूनिवर्सिटी अहमदाबाद व ओसमानिया यूनिवर्सिटी इलाहाबाद में भी पढ़ाई जा रही है। ओसमानिया यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर माया देवी व अन्य प्रोफेसरगण का बहुत आभारी हूं जिन्होने इस आत्मकथा को अपने–अपने विश्वविद्यालयों में एम0ए0 हिन्दी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने की महति कृपा की। इसके लिये मैं उपरोक्त विद्वानों का आभार व्यक्त करता हूं। इस आत्मकथा का मराठी, तेलगू, कन्नड़, उड़िया, अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

मेरा एक नाटक 'एक दलित' डिप्टी कलेक्टर' प्रोफेसर जयश्री शिंदे ने सोलापुर विश्वविद्यालय सोलापुर में एम.ए. हिन्दी में सम्मिलित कर पढ़ाना शुरू कर दिया है। नागफनी यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा 2013 में स्थान पा चुकी है। मेरी कहानियां देश विदेश के विश्व विद्यालयों में पढ़ायी जा रही है। मेरी एक कहानी 'समाजद्रोही' कहानी संग्रह (जहरीली जड़ें) लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, जहरीले जड़ें (कहानी संग्रह 'जहरीली जड़े') की कहानी इलाहाबाद विश्व विद्यालय इलाहाबाद 'खटिक का घर' (कहानी संग्रह 'जहरीली जड़े') टेरिनों यूनिवर्सिटी टोरीनो इटली में एम.ए. हिन्दी में पढ़ायी जा रही है इसका श्रेय मैं अजय नावरिया जी को देता हूं।

'Poisonous Roots Collection of stories in English' की एक कहानी ''Hunters house" Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, M.P. में English M.A. में पढ़ायी जा रही है और मुझे बताने में बहुत गौरव हो रहा है कि Poisonous Roots Collection of stories in English is being taught in M.A English in Bombay University, Mumbai and Dr. Homi Bhabha State University, Mumbai, Maharashtra. This credit goes to Prof.Rajesh Karnkal'.

मेरा एक चर्चित उपन्यास 'सूअरदान' गुजरात विश्वविद्यालय–अहमदाबाद, गुजरात, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट व कर्नाटक स्टेट ओपन विश्वविद्यालय, मैसूर मे पढ़ाया जा रहा है। यह उपन्यास यूजीसी /जेआर एफ नेट परीक्षा 2012 में भी स्थान पा चुका है। प्रख्यात फिल्म प्रोडयूसर, डायरेक्टर, राकेश रोशन ने इस उपन्यास की कथावस्तु चोरी करके सुपर हिट फिल्म 'Krish–3' बना दी जिसने एक हजार करोड़ रूपये से ज्यादा का बिजनेस किया। मैं हाईकोर्ट नैनीताल, उत्तराखण्ड से मुकदमा उसके विरूद्ध जीत गया हूं। इस सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा आगे करूंगा। मेरे समस्त साहित्य पर लगभग एक सौ रिसर्च वर्क (एम.फिल, पी.एच.डी. व डि.लिट्) हो चुके हैं या हो रहे हैं।

मैं सरधना मेरठ, उत्तर प्रदेश से पी.सी.एस. अलाइड

आफिसर, सब रजिस्ट्रार के पद पर देहरादून वर्ष 1995 में हस्तान्तिरत हुआ था। नौकरी मे रह कर किस तरह ब्राहमणवादी व्यवस्था से टकराया इसका सजीव चित्रण आत्मकथा नागफनी के द्वितीय भाग 'भटकटैया' में वर्णन कर रहा हूं। मैं पहले भी कह चुका हूं कि हमारा विरोध समस्त ब्राहमणों से नहीं है। उनके द्वारा अपनायी गयी क्रूर ब्राहमणवादी व्यवस्था से हैं। इस ब्राहमणवादी व्यवस्था ने अच्छे ब्राहमणों को भी बदनाम कर दिया है। इस ब्राहणवाद ने दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर कुठाराघात किया। ब्राहणवादी व्यवस्था वह है जो उपरोक्त वर्गो का अपमान करती है। मानव को मानव नही समझती है। उनके अधिकारों का हनन करती है। उनका शोषण करती है। उनके अत्याचारों से मानवता शर्मसार हो जाती है। छूआछूत की भावना इनमें जन्म से ही कूट–कूट कर भरी जाती है। असमानता पर विश्वास करती है। दलितों, पिछड़ो, की उन्नति इनको पसन्द नही है। इन वर्गो का शोषण करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है। दलितों पिछड़ो की बहन माताओ की इज्जत नही करते हैं इनको पीछे ढकेलने के लिये सारे हथकण्डे अपनाते हैं।

जब कोई दलित अधिकारी एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित होता है। उस अमुक स्थान पर उसके ज्वाइन करने के पहले ही उसके बारे में कार्यालय के स्टाफ में उसके चरित्र का हनन होने लगता है जिस अधिकारी को कार्यरत स्टाफ ने कभी देखा नही है उसके बारे में गलत धारणा बना लेता है जैसे पनिहा सर्प को भी विषैला कहकर प्रचार करते हैं जबकि पानी मे रहने वाला सर्प बिल्कुल विषैला नही होता है।

देहरादून सब रजिस्ट्रार कार्यालय में दो सब रजि. स्ट्रारों के कार्यरत पद थे। उनमें सब रजिस्ट्रार प्रथम व सब रजिस्ट्रार द्वितीय के पद थे। मै सब रजिस्ट्रार प्रथम के पद पर स्थानान्तरित हुआ था। श्री मुकुल जोशी इस पद पर कार्यरत थे। वह पूर्व मानव संसाधन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी के रिश्तेदार थे। श्री मुकुल जोशी को देहरादून में कार्य करते हुए लगभग 6 वर्ष हो चुके थे फिर भी वे वहां से जाना नही चाहते थे। मेरे स्थानान्तरण की भनक पड़ते ही वह उक्त केन्द्रीय मंत्री से मिले और अपना ट्रांसफर रूकवाने के लिये ऐड़ी चोटी का दम लगा दिया।

उत्तराखण्ड पहले उत्तर प्रदेश का भाग था। मैने अपना स्थानान्तरण सरधना (मेरठ) से देहरादून कराने के लिये तत्कालीन प्रमुख सचिव श्री खंजन लाल आई0ए0एस0 की मदद ली थी। आदमी को किन–किन स्थानों पर नौकरी करना चाहिये। यह मेरे दिमाग में था। जहां पर प्रदूषण कम हो। मुख्य बात यह जरूरी है कि शिक्षा की व्यवस्था बहुत अच्छी हो। किराये के मकान दलितों को सुगमता से मिल जाते हों। शिक्षा के मामले में मसूरी व देहरादून अपना प्रथम स्थान रखते हैं। दून कालेज ने अधिकतर वी.वी.आई.पी व प्रधानमंत्री देश को दिये हैं। देहरादून वैल्हम गर्ल्स कालेज लड़कियों के लिये बहुत ही अच्छा माना जाता है जो डालनवाला, देहरादून में स्थित है। मसूरी में लड़कियों के लिये वेवरली कालेज भी अपनी ख्याति रखता है।

मेरे सम्बन्ध श्री खंजन लाल आई.ए.एस. से उस समय से थे जब मैं सब रजिस्ट्रार सरधना हरदोई, उत्तर प्रदेश में कार्यरत था। यह सन् 1981 की बात है। वह सरधना तहसील के एक गांव के रहने वाले थे। वह उस समय लखनऊ में तैनात थे। वह अपनी जमीन उत्तर प्रदेश सरकार को एक सरकारी योजना के अन्तर्गत विक्रय करना चाहते थे। उस समय जिस भूमि का विक्रय पचास हजार रूपये से ज्यादा होता था उसके लिए आयकर प्रमाणपत्र जरूरी था। श्री खंजनलाल आई0ए0एस0 हरदोई के तत्कालीन जिलाधिकारी श्री एच.एल. विरदी के साथ मेरे कार्यालय आये। मेरी पोस्टिंग को लगभग छः माह हुआ था। बिना आयकर प्रमाण पत्र के उनकी रजिस्ट्री नही कर सकता था। उन्होने कहा–''कोई तरकीब निकालिए। मैं

आयकर प्रमाण पत्र बाद में दे दूंगा।'' मैने अपने रिस्क पर उनकी रजिस्ट्री की कार्यवाही कर दी और दस्तावेज स्थगित कर दिया। जब आयकर प्रमाणपत्र आ जायेगा फाइनल रजिस्ट्री कर दी जायेगी। श्री खंजनलाल व जिलाधिकारी मुझसे बहुत प्रभावित हुए। श्री खंजनलाल जी ने मुझसे कहा कि, ''यदि भविष्य में कोई मेरे लायक काम हो आप मुझसे मिलें। मै आप जैसे योग्य अधिकारी की मदद करूंगा। मेरी काम के प्रति समर्पण की भावना काम आयी। किसी भी अधिकारी में यह गुण होना चाहिये कि वह परिस्थितियों के अनुसार स्वयं निर्णय ले। नियम, कानून केवल रास्ता दिखाते हैं। उनको बगैर उल्लंघन किये हुए थोड़ा रिस्क लेकर कार्य सम्पादित किया जा सकता है।

श्री खंजनलाल आई.ए.एस. जब प्रमुख सचिव परिवहन थे मै उस समय सरधना (मेरठ) में तैनात था। मेरा तीन वर्ष का कार्यकाल पूरा हो चुका था। मेरा स्थानान्तरण महानिरीक्षक निबन्धन, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद करने वाले थे। उस समय मेरे विभाग के विभागाध्यक्ष श्री देश दीपक आई0ए0एस0 थे। श्री देश दीपक को महानिरीक्षक निबन्धन उत्तर प्रदेश का चार्ज लिये मात्र तीन दिन ही हुआ था। वह लखनऊ के रहने वाले थे। वह उस समय लखनऊ में मौजूद थे। मैं दस बजे सुबह सचिवालय, उ0प्र0 लखनऊ गया और श्री खंजनलाल, प्रमुख सचिव, परिवहन से मिला। मैने अपनी पोस्टिंग देहरादून में कराने हेतु निवेदन किया। वह ग्यारह बजे सुबह से सांय पांच बजे तक महानिरीक्षक निबन्धन श्री देश दीपक को कुछ अन्तराल बाद टेलीफोन मिलाते रहे लेकिन उनका फोन लग नही रहा था। मैं साढ़े पांच बजे सांय प्रमुख सचिव, परिवहन के चैम्बर से जाने लगा तभी उन्होने मुझसे कहा–''एक प्रयास करके और देखते हैं'' उन्होने लास्ट कॉल की, यह कॉल लग गयी जिसको श्री देश दीपक जी ने रिसीव किया और मेरा स्थ. ानान्तरण सरधना से देहरादून करने को कहा। चूंकि मेरे विभाग के प्रमुख सचिव, वित्त श्री वी0के0 दीवान थे। श्री देश दीपक ने श्री खंजनलाल से कहा ''सर, इस स्थान. ान्तरण के लिये प्रमुख सचिव से भी बात कर लें''

श्री खंजनलाल ने कहा–

''यदि आप कर सकते हैं तो स्थान. ान्तरण रूपनारयण सोनकर का कर दें। मैं प्रमुख सचिव वित्त, से बात नही करूंगा, यदि आप कर सकते हैं तो कर दीजिये।''

श्री देश दीपक ने कहा–

''ठीक है सर, मैं रूपनारायण सोनकर सब रजिस्ट्रार का स्थानान्तरण सरधना से देहरादून कर देता हूं।''

''धन्यवाद, दीपक जी''।

मेरा स्थानान्तरण का आदेश श्री मुकुल जोशी सब रजिस्ट्रार प्रथम देहरादून के स्थान पर हो गया। आदेश मिलने के तुरन्त बाद मैने अपना चार्ज वरिष्ठ सहायक निबन्ध ान, सरधना को, अतिरिक्त जिलाधिकारी वित एवं राजस्व/जिला निबन्धक के आदेशानुसार दिन के ग्यारह बजे सौप दिया। मैं मेरठ से एक टैक्सी लेकर देहरादून के लिये प्रस्थान किया। लगभग चार बजे देहरादून सब रजि. स्ट्रार कार्यालय प्रथम का चार्ज एक वरिष्ठ सहायक से ले लिया। उस समय अपना स्थानान्तरण रूकवाने हेतु श्री मुकुल जोशी सब रजिस्ट्रार प्रथम, देहरादून, पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी के पास इलाहाबाद गये हुए थे। महानिरीक्षक निबन्धन एंव स्टाम्प का मुख्यालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में है।

प्रचलित परिपाटी के अनुसार सब रजिस्ट्रार को चार्ज लेने का आदेश अतिरिक्त जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व/जिला निबन्धक से लेना पड़ता है। हालांकि निबन्ध ान नियमावली में ऐसा नही लिखा है। मैने बिना जिला निबन्धक के आदेश के चार्ज कार्यालय सब रजिस्ट्रार प्रथम देहरादून का ले लिया और रजिस्ट्री करने लगा।

मेरे चार्ज लेने की जानकारी होने पर अतिरिक्त जिलाधिकारी वित एंव राजस्व/जिला निबन्धक ने मुझे अपने

कार्यालय में बुलाया और कहा ''मेरे आदेश के बगैर आपने चार्ज कैसे ले लिया''? मैने उत्तर दिया–

'' सर! यदि मैं चार्ज न लेता तो मेरी पोस्टिंग कैन्सिल हो जाती।''

वह बोले–'' वह कैसे''?

''सर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी, मुकुल जोशी का स्थानान्तरण रूकवाने व मेरा स्थानान्तरण निरस्त कराने के लिये जी जान से अपने पावर के जरिये प्रयास में लगे हैं।''

''यह तो नियम विरूद्ध है।''

''सर! निबन्धन एक्ट व नियमावाली में कहीं नही लिखा है कि अतिरिक्त जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व/जिला निबन्धक की अनुमति से चार्ज लेना अनिवार्य है।''

उसी समय पूर्व केन्द्रीय मंत्री के दबाव के कारण महानिरीक्षक निबन्धन (विभागाध्यक्ष) श्री देश दीपक आई0ए0एस0 का फोन तत्कालीन जिलाधिकारी देहरादून के पासा आया–

''क्या रूपनारायण सोनकर ने सब रजिस्ट्रार प्रथम, देहरादून का चार्ज ले लिया''।

अतिरिक्त जिलाधिकारी ने कहा–

''हां–रूपनारायण सोनकर ने चार्ज ले लिया है''

यदि मै जरा सी भी चूक जाता या डर जाता तो मेरा स्थानान्तरण निरस्त हो जाता।

पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के दबाव में देहरादून रजिस्ट्री कार्यालय मे सब रजिस्ट्रार तृतीय का पद सृजित किया गया। श्री मुकुल जोशी की पुनः पोस्टिंग सब रजिस्ट्रार तृतीय देहरादून के पद पर हो गयी। ब्राहणवाद इस तरह कार्य करता है। यह एक उदाहरण है। एक ब्राहमण दूसरे ब्राहमण की कैसे मदद करता है चाहे वह उनका रिश्तेदार हो या चाहे न हो। ब्राहमण जाति ही उनका सबसे बड़ा औजार है। इसी औजार से अन्य जातियों को बेरहमी से काटते हैं। उस समय उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री एन0डी0 तिवारी, उत्तराखण्ड के प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व वाद में मुख्य सचिव श्री इन्द्र कुमार पान्डेय, महानिरीक्षक निबन्ध उत्तराखण्ड देहरादून श्री वी.सी. चंदोला ब्राहमण जाति के थे। सभी ने श्री मुकुल जोशी की मदद की। ब्राह्मणवाद इस तरह कार्य करता है। श्री तिवारी जी एक नेक मुख्यमंत्री रहे हैं। सभी वर्गो का ध्यान रखते थे लेकिन ब्राह्मण ब्यूरोक्रेसी किस तरह उनसे गलत कार्य करवा लेती थी।

मेरे जैसे दलित अधिकारी को प्रताड़ित करने वाली एक और घटना बता रहा हूं। कुछ सालो बाद मुकुल जोशी का प्रमोशन सहायकर महानिरीक्षक निबन्धन/सहायक आयुक्त स्टाम्प के पद पर देहरादून में हो गया। उनके स्थान पर श्री जी0पी0 सिंह सब रजिस्ट्रार द्वितीय, देहरादून स्थानान्तिरत होकर आये। श्री जोशी के प्रमोट होते ही तृतीय सब रजिस्ट्रार कार्यालय का अतिरिक्त चार्ज जूनियर सब रजिस्ट्रार जी0पी0 सिंह को दे दिया। यह कानून की दृष्टि से गलत था। सीनियर सब रजिस्ट्रार को ही किसी अन्य कार्यालय का अतिरिक्त चार्ज दिया जात है। एक दलित अधिकारी होने के नाते मुझे सब रजिस्ट्रार तृतीय देहरादून का अतिरिक्त चार्ज नही दिया गया।

दलित अधिकारियों के मान सम्मान को इस तरह चोट पहुंचायी जाती है। वरिष्ठ व योग्य होते हुए भी उनको नजरदांज किया जाता है। कार्यालय के स्टाफ के सामने बेइज्जत होना पड़ता है। दलितों के साथ ऐसा सदियों से होता आया है। अपमान का घूंट पीकर भी सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता के साथ, मैं सरकारी कार्य तन मन से करता रहा। अपने कार्यालय का सबसे ज्यादा रेवेन्यू सरकार को देता रहा। मेरे जैसे दलित अधिकारी के शोषण की एक और घटना बता रहा हूं। सवर्ण वरिष्ठ आई0ए0एस0 अधिकारी जो प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व उत्तराखण्ड थे उनका नाम भी इन्द्र कुमार पाण्डेय था। निबन्धन शुल्क जो विक्रय पत्रों के निबन्धन से आता हैं कई–कई लाख रूपये

प्रत्येक कार्यालय में आता है। सरकार द्वारा सब रजिस्ट्रारों को चेस्ट (लोहे का बड़ा लॉकर) प्रदान किये जाते हैं। उन्हीं में निबन्धन शुल्क रखा जाता है। सब रजिस्ट्रार कार्यालय की खिड़की तोड़कर चोरो ने कई लाख रूपये चोरी कर लिया। कार्यालय में चोरी की घटना की खबर महानिरीक्षक निबन्धन, उत्तराखण्ड एल0एम0 पंत व प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व श्री इन्द्र कुमार पाण्डेय के पास पहुंचायी गयी। मुझे और जी0पी0 सिंह को बुलाया गया। प्रमुख सचिव ने महानिरीक्षक, एल0एम0 पंत व सहायक महानिरीक्षक मुकुल जोशी व सब रजिस्ट्रार द्वितीय जी0पी0 सिंह के सामने श्री इन्द्र कुमार पाण्डेय ने मुझे बहुत लताड़ा व प्रताड़ित किया।

''तुम्हारे काम करने का तरीका सही नही है। तुम बहुत ही लापरवाह अधिकारी हो। तुम्हें यहां से क्यों न दूर दराज के स्थानों पर भेज दिया जाये। तुमने विभाग को बदनाम कर दिया। कार्यालय से चोर कार्यालय की सरकारी फीस चोरी करके चले गये और तुम सोते रहें।''

मैने कहा–

''सर, मेरी बात तो सुनिए''।

''अब क्या सुनाओगे। अपनी अक्षमता का परिचय दोगे। चुपचाप बैठ जाओं नही तो चैम्बर से बाहर निकाल दूंगा।''

मैने कहा ''सर–आप मुझे बेकार में डांट रहे हैं क्योंकि मैं एक दलित अधिकारी हूं और मुझे पूरी बात नही बताने दे रहे हैं''।

''अब क्या बताओगे''?

''मेरे कार्यालय में चोरी नही हुई है बल्कि सब रजि. स्ट्रार द्वितीय श्री जी0पी0 सिंह के कार्यालय में हुई है।''

''लेकिन सीनियर तुम हो। तुम्हारा उत्तरदायित्व है।''

''सर–चेस्ट (लॉकर) अपने–अपने कार्यालय में रखे जाते हैं। यह घटना सब रजिस्ट्रार द्वितीय कार्यालय की है। सरकारी फीस की रक्षा करना जी0पी0 सिंह का उत्तरदायित्व है।''

श्री जी0पी0 सिंह पूरी मीटिंग में मौन बने रहे और मुझे डांट दिलाते खुश होते रहे जबकि डांट उन्हें पड़नी चाहिऐ थी। यदि दलित अधिकारी कोई गलती करे तो उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाता है। यदि कोई दूसरा सवर्ण अधिकारी अक्षम्य गलती करे तो उसकी गलती को दलित अधिकारी के सिर मढ़ दिया जाता है। प्रमुख सचिव वित्त श्री पाण्डे ने श्री जी0पी0 सिंह को कुछ नही कहा। चोरों ने दोनो कार्यालयों के चेस्ट (फीस बाक्स) के तालों को तोड़ने की कोशिश की थी लेकिन मैने अपने कार्यालय में स्टाफ की मदद से फीस बाक्स को दीवाल में चुनवा दिया था केवल उसका मुंह आगे रहता था। चोरो ने मेरे कार्यालय के चेस्ट को बहुत तोड़ने की कोशिश की लेकिन वे सफल नही हुए। श्री जी0पी0 सिंह सब रजिस्ट्रर द्वितीय ने अपने चेस्ट को ऐसा करना उचित नही समझा। उसको ताला लगाकर एक टेबल में छोड़ दिया। चोरो ने इनके कैश बाक्स को तोड़कर कई लाख सरकारी फीस चोरी करके ले गये।

दलित अधिकारियों और कर्मचारियों को अक्सर कहा जाता है कि वे लोग आरक्षण से आये हैं। काबिल नही होते हैं लेकिन इस घटना ने यह साबित कर दिया कि दलित अफसर योग्य होने के साथ–साथ भविष्य दृष्टा व व्यवहारिक ज्ञान से भरे होते हैं। दलित समाज के लोग बिल्कुल भटकटैया की तरह होते हैं। अगर किसी ने उनको हाथ लगाया तो उनके हाथों में नुकीले कांटे चुभ जाते हैं। उनको लहूलुहान कर देते हैं। प्रमुख सचिव श्री पाण्डेय जी सत्यता जानकर अपना सर नीचे कर लिया था और शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे क्योंकि भटकटैया का कांटा उनको चुभ गया था।

मेरी नौकरी से जुड़ी एक और घटना मैं आपको बताने जा रहा हूं। जब उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश से

विभाजित होकर अलग नही हुआ था। यह घटना वर्ष दो हजार के थोड़ा पहले की है। उत्तर प्रदेश सरकार ने मेरा प्रमोशन असिस्टेंट कमिश्नर स्टाम्प/असिस्टेंट इंस्पेक्टर जनरल रजिस्ट्रेशन के पद पर कर दिया था। मेर प्रमोशन स्थाई रूप से नही किया गया। मैने उक्त पद पर पीलीभीत जनपद में ज्वाइन कर लिया था। मैने सरकार का राजस्व जो लगभग करोड़ो रूपयों में था वसूल करवाया था। विक्रयपत्र होने के बाद उनमें जो स्टाम्प कमी होती है उसकी सुनवाई सहायक आयुक्त स्टाम्प करते हैं। करीब पन्द्रह साल से निर्णीत किये गये वाद जिनमें करोड़ो रूपयो की कमी सहायक स्टाम्प आयुक्त/स्टाम्प कलेक्टर द्वारा निकाली गयी थी उनकी वसूली आर0सी0 (रिकवरी सर्टिफिकेट) काट कर व पक्षकारों को नोटिस भेजकर सरकारी खजाने में उक्त धनराशि जमा करवाया था। सरकार के पक्ष में मेरे द्वारा किया गया यह एक बहुत बड़ा काम था।

सहायक आयुक्त स्टाम्प/स्टाम्प कलेक्टर पीलीभीत के पद से मुझे कभी भी हटाया जा सकता था क्योंकि यह एक टेम्पेरेरी पोस्ट थी। मेरे साथ अन्य तीन अधिकारियों को उक्त पदो के लिये परमानेंट पोस्टिंग दी गयी थी। मुझे पता चल गया था कि मुझे यहां से हटाकर व डिमोशन करके किसी ऐसे स्थान पर भेजा जाने वाला था जहां पर बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नही था। मुझे जान बूझकर अस्थाई प्रमोशन दिया गया था। मेरे बच्चे उस समय मसूरी में पढ़ रहे थे। मेरी पत्नी सपना मेरे बच्चों के प्रति समर्पित थी। मैं एक हफ्ता या पन्द्रह दिन में पीलीभीत से मसूरी आता था फिर एक दिन रूक कर पीलीभीत चला जाता था। मुझे हर हाल में बच्चों की शिक्षा मसूरी में जारी रखनी थी। जब मैं सब रजिस्ट्रार प्रथम देहरादून था तो मुझे मसूरी का अतिरिक्त चार्ज मिला हुआ था। मै मसूरी रहता था। हफ्ते में एक दिन मुझे मसूरी में बैठकर कार्य करना होता था। यह मेरे लिये वरदान था। श्री मुकुल जोशी जब उस समय सब रजिस्ट्रार तृतीय देहरादून में थे उन्होने मेरा विरोध बहुत किया था कि मुझे मसूरी का अतिरिक्त चार्ज न दिया जाए। एक ब्राहमण श्री वी0सी0 चन्दोला, आई0ए0एस0, महानिरीक्षक निबन्धन उत्तराखण्ड थे। उन्होने तीनों सब रजिस्ट्रारों को हफ्ते में एक–एक बार मसूरी में बैठकर कार्य करने का आदेश पारित कर दिया। श्री मुकुल जोशी मेरी शिकायत श्री चन्दोला से करने लगे। श्री वी.सी.चन्दोला ने कहा–'' आप मसूरी में क्यों रह रहे हैं। आपके खिलाफ ऐक्शन लिया जायेगां''

''सर! मसूरी, सब रजिस्ट्रार कार्यालय देहरादून का भाग है। मैं दोनो स्थानों में से कहीं भी रह सकता हूं। मै समय से कार्यालय आता हूं। निष्ठा और लगनपूर्वक कार्य करता हूं। मेरे व्यवहार व मेरे कार्य करने के तरीके के बारे में जनता से पूछा जा सकता है।''

वह बोले, ''यह सरकारी नियमों के विरूद्ध है आपके खिलाफ कार्यवाही की जायेगी।''

''ठीक है सर! लेकिन दलित अधिकारी के साथ ऐसा करना उचित नही होगा।''

''क्या उचित है और क्या अनुचित है इसका निर्णय मैं करूंगा।''

एक बहुत ही शक्तिशाली आई0ए0एस0 अधिकारी श्री सुभाष कुमार थे जो गढ़वाल के कमिश्नर के पद पर देहरादून मे तैनात थे। श्री आर0डी0 सोनकर तत्कालीन गवर्नर उ0प्र0 के पी0ए0 व सदस्य राजस्व परिषद रह चुके थे व इलेक्शन कमिश्नर लोकल बॉडीज उत्तर प्रदेश थे इन्होने मुझे मिलने के लिये श्री सुभाष कुमार आई0ए0एस0 के पास भेजा था। मैं उनसे कई बार मिला। उनकी एक जमीन की रजिस्ट्री करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। एक बार उनकी धर्मपत्नी की एक पावर आफ अटार्नी की रजि. स्ट्री कमीशन के जरिये घर में जाकर कर दी। वह उस समय बाहर थे। उनका फोन मेरे पास आया कि घर जाकर रजिस्ट्री कर दें। इस तरह मैं श्री सुभाष कुमार के नजदीक

आ गया। कुछ सालों बाद वह मुख्य सचिव उत्तराखण्ड के पद पर तैनात हुए। विभाग के विभागाध्यक्ष व प्रमुख सचिव को पता चल गया था कि मेरे सम्बन्ध मुख्य सचिव से हैं। वे अन्दर से मेरे विरूद्ध कोई सख्त कार्यवाही करने के लिये डरते रहे। फिर भी मौका पड़ने पर मुझे हानि पहुंचाने में कोई कोर कसर नही छोड़ी।

मैं पुनः उत्तर प्रदेश के दो प्रमुख सचिव, वित्त की बात करूंगा। एक प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व श्री वी0के0दीवान आई0ए0एस0 जो हमेशा दलित अधिकारियों का उत्पीड़न करना अपना नैतिक कर्त्तव्य समझते थे। जब मैं अस्थायी रूप से सहायक आयुक्त स्टाम्प पीलीभीत तैनात था तब वो मेरा डिमोशन करके मुझे सब रजिस्ट्रार के रूप में उत्तर प्रदेश की एक ऐसी तहसील में भेजना चाहते थे जहां पर बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नही था। तब मैंने एक बार कड़ा फैसला ले लिया। मैं टेम्परेरी प्रमोशन नही चाहता था। मै स्थायी प्रमोशन चाहता था। यदि मेरा स्थायी प्रमोशन न किया जाये तो मेरे मूल तैनाती स्थान पर सब रजिस्ट्रार, प्रथम, देहरादून के पद पर पुनः भेज दिया जाये। मैने प्रार्थना पत्र प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व व महानिरीक्षक, निबन्धन उत्तर प्रदेश इलाहाबाद को दिया। मेरे प्रार्थनापत्र निरस्त कर दिये गये तब मैने माननीय उच्च न्यायालय उत्तर प्रदेश इलाहाबाद की शरण ली। मेरे अस्थायी प्रमोशन पर दो माह के लिये स्टे मिल गया और मेरी पुनः तैनाती सब रजिस्ट्रार प्रथम, देहरादून के पद पर करने का आदेश हुआ। प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व श्री वी0के0 दीवान ने माननीय न्यायालय इलाहाबाद के आदेश को मानने से इंकार कर दिया और कोई भी आदेश पुनः मेरी तैनाती सब रजिस्ट्रार, देहरादून प्रथम के पद पर नही किया। मेरे पास पीलीभीत का सहायक आयुक्त स्टाम्प का चार्ज था। मैने माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद का आदेश लेकर कार्यवाहक सहायक आयुक्त स्टाम्प पीलीभीत से मिला और कार्यालय का चार्ज दे दिया और फिर देहरादून जाकर सब रजिस्ट्रार प्रथम के पद पर पुनः कार्य करने लगा। ऐसा करने के लिये मेरे पास मात्र तीन दिन का समय बचा था। मैने हिम्मत दिखाई और मै पुनः देहरादून कार्यालय आ गया। माननीय उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद का आदेश मेरे लिये तिनके का सहारा न होकर एक नाव बन गया। मैं एक भंयकर समुद्र को पार कर गया था जहां पर शासन की कार्य प्रणाली रूपी समुद्र में भयंकर, जहरीले सांप व मगरमच्छ थे। वे मुझे समूचा निगलना चाहते थे। मै एक अजगर था जो बड़े–बड़े मगरमच्छों को निगलना जानता था। माननीय उच्च न्यायालय उत्तर प्रदेश इलाहाबाद द्वारा जारी मेरा दो माह का स्टे आदेश स्थायी कर दिया गया था। माननीय उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में उत्तर प्रदेश शासन को निर्देश दिया था कि यदि कोई सरकारी अधिकारी व्यक्तिगत कारणों से अपना प्रमोशन नही लेना चाहता है तो उसे प्रमोशन पर जाने के लिये बाध्य नही किया जा सकता है और उत्तर प्रदेश सरकार को कड़े शब्दों में निर्देश दिया कि–"The Government will not interfere in the functioning of petitioner as Sub Registrar, Dehradun".

माननीय उच्च न्यायायल उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद का उपरोक्त आदेश मेरे लिये एक हथियार का काम करता रहा जब भी मुझे क्रूर, सवर्ण अधिकारियों द्वारा जहरीले बाण मुझ पर फेंके जाते रहे यह आदेश ढाल बनकर मेरी रक्षा करता रहा।

जब आपकी उचित मांग या परेशानी को शासन अनसुना कर दे तब न्यायालय का दरवाजा खटखटाना चाहिये। भारत की न्याय व्यवस्था सुदृढ़ व निष्पक्ष प्रतीत होती है। ऐसी न्याय व्यवस्था पर पूरा देश गर्व कर सकता है और ऐसी भारत की ईमानदार न्याय व्यवस्था विश्व के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण है। दलितों के लिये सदैव न्यायालय का दरवाजा खुला रहता है। दलितों को हिम्मत

करके शोषण के विरूद्ध आवाज उठाना चाहिये।

प्रत्येक जगह व प्रत्येक विभाग में दो तरह के कर्मचारी होते हैं। प्रथम श्रेणी में इस तरह के सरकारी कर्मचारी व अधिकारी आते हैं जो शोषण सहन करते रहते हैं लेकिन शोषण करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध आवाज नही उठाते हैं और न ही न्यायालय की शरण में जाते हैं। ये लोग समझते हैं कि ऐसा करने से उनकी नौकरी खतरे में पड़ जायेगी।

दूसरी श्रेणी के वे कर्मचारी व अधिकारी होते हैं जो ज्यादती व शोषण के विरूद्ध आवाज बुलन्द करते हैं और मौका पड़ने पर न्यायालय की शरण में जाते हैं। जो लोग ऐसा करते हैं और अपनी हिम्मत दिखाते हैं। वे लोग शोषण और गैर इसांफी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तब उनको न्यायालय का सहारा मिल जाता है। उनका शोषण व अत्याचार कम होता है। उनकी नौकरी भी खतरे में नही पड़ती है बल्कि वे स्वयं सरकारी मगरमच्छों के लिये खतरा बन जाते हैं। अगर सरकारी मगरमच्छों ने माननीय न्यायालय के आदेशों की अवहेलना की तो उन्हें जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है जिसको कन्टेम्प्ट आफ कोर्ट कहा जाता है।

श्री वी0के दीवान के बाद एक ऐसा प्रमुख सचिव वित्त एवं राजस्व उत्तर प्रदेश आया जो अपने को सबसे ज्यादा ईमानदार आई0ए0एस0 अधिकारी मानता था। एक विक्रय पत्र जो मेरे द्वारा रजिस्ट्री किया गया था जो बिल्कुल सही था। उस प्रापर्टी के विक्रय पत्र के बाद यह कहा गया था कि सब रजिस्ट्रार ने प्रापर्टी से सम्बन्धित लीगल जांच नहीं की है। सब रजिस्ट्रार दोषी है।

प्रमुख सचिव, वित्त श्री टी0आर0 जोसेफ ने मुझसे पूछा–''तुमने इस प्रापर्टी की जांच किये बगैर बैनामा कैसे कर दिया?''

मैने उत्तर दिया–

''Sir- Sub Registrar is not concerned with the legality of the document".

वह डांटते हुए बोला–

''क्या तुम ताजमहल की भी रजिस्ट्री कर दोगें।''

मैने विश्वास भरी आवाज में कहा–

''जी सर, मैं ताजमहल की रजिस्ट्री भी कर दूंगा।''

वह गुस्से में बोला–'' कैसे कर दोगे?''

''यदि कोई आदमी या औरत सब रजिस्ट्रार के सामने ताजमहल के मालिकाना हक के कागज दिखाये और पूरी मालियत का स्टाम्प व सरकारी फीस अदा करे और दो गवाह प्रस्तुत करे तो मैं ताजमहल की रजिस्ट्री कर दूंगा क्योंकि सरकारी राजस्व की वृद्धि करना, सब–रजिस्ट्रार का परम कर्तव्य है। लीगलटी की जांच करना न्यायालय की परिधि में आता है।''

मेरी यह बात सीनियर आई0ए0एस0 अधिकारी श्री टी0आर0 जोसेफ को चुभ गयी। मेरे उत्तर को सुनकर उनके बुद्धिमान, सक्षम व ईमानदार आई0ए0एस0 अधिकारी होने की हवा निकल गयी थी। मेरी कमियों को महानिरीक्षक निबन्धन उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से फोन करके मंगाने लग. `। महानिरीक्षक निबन्धन/विभागाध्यक्ष को मेरे विरूद्ध कोई ऐसा मामला नही मिला जिसमें मैने गलती की हो।

*****

उपन्यास

सोलह सौ किलोमीटर

✍...रूप नारायण सोनकर

जब नदी उफना रही हो तब उसको पार करने के लिए नौका काम आती है। जब प्लेन क्रैश होने की चेतावनी दे रहा हो तब छतरी जान बचाती है। जब संक्रामक जान लेवा बीमारी चारो तरफ फैली हो। आप शहर में हों। आप का गांव, शहर से सोलह सौ किलोमीटर दूर हो। बस, ट्रेन, प्लेन सभी का चलना बंद हो। तब आपके पैर से चलने का हौसला काम आता है।

कोरोना वायरस महामारी से मरने वालों की लाशे चारो तरफ फैली हों। सड़कों, नदियों ,पार्कों और खेल के मैदानों में लाशें ही लाशें दिखाई दे रही हो। जहां आप रहते हैं वहां की सड़कों से अनगिनत लाशें आपकी आंखों के सामने से प्रति क्षण गुजर रही हों।

आप मुंबई जैसे शहर में काम रहे हैं और आपकी फैक्ट्री एकाएक बंद कर दी गई हो। आप मजदूर, मैकेनिक, राजमिस्त्री हों। ऐसे विकराल समय में मौत कभी भी अपने खूनी पंजे आप पर चुभो सकती है और आपको पता तक नहीं चलेगा। तब आदमी, औरतें और बच्चे अपने अपने गांवों और कस्बों की ओर प्रस्थान कर देते हैं। उनके दृढ़ निश्चय और आत्म विश्वास के सामने दूरी चाहे सोलह सौ या दो हजार किलोमीटर क्यों ना हो परास्त हो जाती है।

यह कहानी ऐसी ही लोगों की है जो सही मायने में ओलंपिक खेलों के रेस, वेट लिफ्टिंग, साइकलिंग और पैदल दौड़ आदि में गोल्ड मेडल पाने के लिए सही मायने में हकदार हैं।

सेवालाल प्रजापति, भरोसेलाल पासी, दुलारी भारद्वाज, सनसनी सिंह,शहजाद आलम और गौरव धनगर सभी लोग देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में एक कांच बनाने वाली फैक्ट्री में काम कर रहे हैं। फैक्ट्री मालिक ने एक कमरा इन सभी लोगों को दे रखा है। कमरे में छोटी–छोटी चटाई बिछाकर एक साथ सभी मजदूर रह रहे हैं। दुलारी भारद्वाज ने अपनी चटाई एक कोने में बिछाकर उसी में सोती है। सभी उच्च शिक्षित हैं।

एक जवान लड़की, पांच जवान लड़कों के साथ अकेले रहती है। ऐसी परिस्थितियां होती हैं जहां जवानी की उमंग, अपंग हो जाती है। अपने घर वालों और अपना पेट भरने के लिए विपरीत परिस्थितियों का बहादुरी से सामना करना पड़ता है। अपनी जवानी को बलिदान करना पड़ता है।संसार में जवानी का बलिदान सभी बलिदानों से बड़ा होता है क्योंकि इसमें प्रकृति की कारीगरी जुड़ी होती है। क्या ये सभी अपनी अपनी इच्छाओं को कंट्रोल कर लेंगे ? गरीबी, निर्धनता,और वेबशी एक ऐसी चीज होती है जो अपने जिगर के टुकड़े को भी बेचने को मजबूर कर देती है। चंद पैसों के लिए औरतें दूसरों की बाहों में समा जाती हैं। दूसरे पुरुष के वीर्य को अपने पेट के अंदर धारण कर लेती हैं। जवान लड़कियां दूसरे पुरुषों की रखैल और वेश्याएं मजबूरी में बन जाती हैं। देहातों, कस्बों से आई खूबसूरत लड़कियां बॉलीवुड में फिल्मों में रोल पाने के लिए फिल्म डायरेक्टर की शारीरिक भूख मिटाने की डिमांड पर अपना कौमार्य लूटा देती हैं।

भारत की सभ्यता और संस्कृति के अनुसार एक कमरे में एक जवान लड़की पांच जवान लड़कों के साथ कैसे रह सकती है ? भारत में लड़कियों को बहुत कमजोर समझा जाता है। अकेली लड़की को देखते ही लड़के उस पर झपट्टा मारने को तैयार रहते हैं। भारतीय परिवारों में लड़की को अबला और निरीह माना जाता है। भारत में लड़कों से मुकाबला करने के लिए लड़कियों को जुडो कराटे की शिक्षा बहुत कम दी जाती हैं। देश में प्रत्येक समय लड़कियों के साथ छेड़खानी, बदसलूकी और बलात्कार की घटनाएं घटती रहतीं हैं। स्कूल,कॉलेज और विश्वविद्यालय में जूडो कराटे की शिक्षा लड़कियों को देना अनिवार्य होना चाहिए। जूडो कराटे की ट्रेनिंग पाई लड़कियां निडर और निर्भीक बन जाती है। उनका पूरा शरीर फौलादी बन जाता है। किसी भी परिस्थिति में तमाम लोगों से एक साथ लड़कर विजय प्राप्त कर लेती हैं। वे अपनी मर्जी से कही भी जा सकती हैं और कही भी रह

सकती है और वे कही भी सो सकती हैं।

विदेशी मुल्क चाहे इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा आदि हो।वहां पर एक अनजान आदमी एक अनजान महिला के साथ एक कमरे के अंदर एक दूसरे के बिना भय के रह सकते हैं। अकेली महिला बिना किसी डर के एक अपरिचित व्यक्ति के साथ बहुत सालों तक एक कमरे में अपना जीवन गुजार सकती है। बिना औरत की मर्जी के आदमी उसको छू नहीं सकता है। वहां की यही कल्चर है। विदेशों से युवा लड़के और लड़कियां विभिन्न देशों में घूमने आते जाते रहते हैं।एक होटल के एक रूम में दोनो एक साथ रहते हैं।यह उनके जीने का तरीका है। विदेशी धरती के लोग जब प्लेन,ट्रेन और बस में सफर करते हैं तब उनके हाथों में किताब,लैपटॉप होता है। वे अपने एक एक क्षण का सदुपयोग करते हैं। वे सदैव रचनात्मक कार्यों को करने में लगे रहते हैं। अब भारत के कुछ पढ़े लिखे लोगों में ये विदेशी गुण देखे जा सकते हैं।

सेवालाल प्रजापति, भरोसेलाल पासी, दुलारी भारद्वाज, सनसनी सिंह, शहजाद आलम और गौरव धनगर सभी उम्र में लगभग चौबीस साल से कम हैं। कोरोना वायरस महामारी काल में एक दूसरे से दूरी बनाकर रहना पड़ता है। यह भयंकर बीमारी प्रेमी प्रेमिकाओं को एक दूसरे से दूरी बनाकर रखने को कहती है। लेकिन कुछ प्रेमी प्रेमिका इस बीमारी से ना डरते हुए दोनो एक दूसरे की बाहों में समा जाते हैं।

दुलारी भारद्वाज दृढ़ता से गांव वालो का सामना करती है। गांव की पंचायत की मीटिंग में बुलाई जाती है। गांव में ढिंढोरा पिटवाया जाता है। ''दुलारी गांव के नवजव. ानों के साथ मुंबई जाने या नहीं जाने का फैसला पंचायत में होगा''। पंचायत का हाल गांव वालों से खचा खच भरा है।अ. ापस में वार्तालाप जारी है।गांव वाले दुलारी को एक अपराधी की तरह देख रहे है हलाकि उसने कोई भी अपराध नहीं किया है। पंचायत एक तालीवानी नियमों का पालन करने वाली पंचायत लग रही थी। जहां पर बिना कोई अपराध किए शक के आधार पर मानव को दंडित किया जाता है। यह भारत है। यहां पर प्रजातंत्र के नियमों के आधार पर फैसले किए जाते हैं। लेकिन ग्रामीण भारत के पंचायती राज सिस्टम में यह पंचायत तालिवानी नियमों का पालन करने जा रही थी। एक युवा असहाय महिला को बिना अपराध किए कठोर दण्ड देने वाली थी।

सरपंच पंडित नोखेलाल नफरत भरी आवाज में कहता है–

''गांव वालो दुलारी भारद्वाज बॉम्बे जाने के लिए कृत संकल्प है। वह किसी का भी कहना नही मान रही है।वह दलितों, पिछड़ों, और एक मुसलमान के साथ बॉम्बे जाने के लिए अप. ना सामान बांध लिया। है।इस टोली में मात्र एक ऊंची जाति का युवा है। दुलारी भारद्वाज के इस कृत्य से क्या गांव की इज्जत धूल में नही मिल जायेगी?''

एक गांव पंचायत सदस्य देवीलाल शर्मा कहता है–

''आज तक इस गांव से कोई भी लड़की गैर युवाओं के साथ इतनी दूर बाहर नौकरी करने नही गई है। इससे पूरे जिले में हमारे ब्राह्मण समाज की बहुत बदनामी होगी।''

दुलारी भारद्वाज इस रूढ़िवादी पंचायत का हिम्मत से सामना करते हुए बोली–

''आप सभी लोग चाहते हैं कि मेरा पूरा परिवार भूंखो मर जाए या आपकी भीख पर जिंदा रहे। ये सभी गांव के ही लड़के हैं।उनके साथ मुंबई में नौकरी करने जाना कोई अपराध नहीं है। इसमें गांव की बेइज्जती नाम की कोई चीज नहीं है। दलित, पिछड़े और मुसलमान सभी इंसान हैं।''

सरपंच पंडित नोखेलाल गुस्सा करते हुए बोला–

''यह ग्राम पंचायत ब्राह्मण लड़की दुलारी भारद्वाज को पांच युवा लड़कों के साथ जिनमे दलित, पिछड़े और मुसलमान शामिल हैं मुंबई जाने से दृढ़ता पूर्वक रोकती है। दलितों, पिछड़ों और मुसलमानों के साथ एक ब्राह्मण समाज की लड़की अपना धर्म नष्ट करके नही रह सकती है। सर्व प्रथम इस गांव की प्रतिष्ठा को बचाना है। दुलारी भारद्वाज के इस कदम से इस गांव और अन्य गांव की लड़कियां भी दुलारी भारद्वाज के कदमों का अनुसरण कर सकती हैं। गांवों में ऐसी कलुषित सभ्यता और संस्कृति का पदार्पण होगा जो हमारी सदियों से चली आ रही ग्रामीण भारत की सभ्यता और संस्कृति धूल धूसरित हो जायेगी।''

सरकारी पंचायत सचिव अभिमान धानुक बोला–

'' सरपंच जी, आप ऐसा फैसला नहीं कर सकते हैं। यह फैसला समाज, प्रजातंत्र और संविधान के विरुद्ध है। इस देश के सभी नागरिकों को कहीं भी नौकरी करने का अधिकार है। कोई भी देश का नागरिक चाहे पुरुष हो या महिला वह अपनी मर्जी से देश के नागरिकों के साथ रह सकती है। उसके साथ खाना खा सकती है और अपनी इच्छानुसार उसके साथ सो भी सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने ऐसा आदेश पारित किया है।''

''तुम शूद्र हो इसीलिए शूद्रों का पक्ष ले रहे हो। तुम नीच जाति के लोगों और मुसलमानों को हमारी उच्च जाति की बहिन बेटियों के साथ एक कमरे के अन्दर रहने की छूट दे रहे हो। तुम्हारा यह घिनौना वक्तव्य निंदनीय है।''

''मैं आपके इस आदेश का विरोध करता हूं। मैं आपके इस आदेश पर सरकारी पंचायत सचिव की हैसियत से हस्ताक्षर नहीं करूंगा।''

'' तुमको हस्ताक्षर करना पड़ेगा। मेरे आदमी ,मेरे आदेश पर तुमसे मेरे आदेश पर हस्ताक्षर करा कर रहेंगे। तुम हस्ताक्षर अपनी मर्जी से करो या मेरी मर्जी से।''

उसी समय सरपंच के पांच छः लठैत सचिव को घेर लेते हैं। दुलारी भारद्वाज के घर के सामने बहुत सारे गुंडे पहरा देते है कि कही वह मुंबई न चली जाये। पंचायत में मौजूद एक युवा हिम्मत कुर्मी जिसने दिल्ली विश्वविद्यालय से ग्रामीण भारत की आर्थिक सामाजिक दशा और दिशा पर पीएचडी की है। उसने कहा–

''समाज बदल रहा है। बहुत तेजी से प्रगति पथ पर जा रहा है। लड़कियां जातिवाद के बंधन को तोड़ रही हैं। ग्रामीण भारत की उच्च शिक्षित लड़कियां देश विदेश में नौकरी करने अपने मित्रों के साथ या अकेले जा रही हैं। वे धन कमाकर ग्रामीण भारत के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। आप लोग मनुस्मृति में व्यक्त समाज विरोधी विचारों का पालन

करके समाज और देश का बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं। इस वैज्ञानिक युग में ऐसे सड़े गले और मानवता विरोधी विचारों का कोई महत्व नहीं है। ऐसे विचारों को तुरंत दफन कर देना चाहिए।''

''तूने पीएचडी की डिग्री लेकर हमारे धर्मग्रंथों को बदनाम कर रहा है। मनुस्मृति का युग पुनः आने वाला है। एक शूद्र डॉक्टर अंबेडकर द्वारा लिखे संविधान का युग जाने वाला है। तू संविधान को मनुस्मृति से बड़ा बता रहा है।''

'' जिस दिन दलित,पिछड़े,आदिवासी, अल्पसंख्यक और गरीब सवर्ण एक हो जायेंगे तब तुम्हारे जैसे अविवेकी लोगों और मनुस्मृति का पता नही चलेगा।''

''देख ! हिंदू राष्ट्र आने वाला है। मनुस्मृति संविधान को हटा देगी। अब उसका राज होगा। देखता नही है एक महराज हिंदूराष्ट्र बनाने के लिए गांवों, शहरो में रात दिन प्रवचन कर रहा है। हजारों लोग चाहे नेता हो या अभिनेता उसकी शरण में जाकर उनका आशीर्वाद ले रहे हैं। तू महा अज्ञानी है।''

'' ऐसे महात्मा जो राष्ट्र को बाटने के कार्य में जुटे हों। विश्व स्तरीय संविधानको हटाने का नारा दे रहे हों। ऐसे फालतू प्रचारकों के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करके जेल में डाल देना चाहिए।''

'' तू ऐसे संतों की बेइज्जती कर रहा है जो किसी भी आदमी को देखकर उसका नाम और उसके जन्म स्थान का पता बता देता है।''

''फेस रीडिंग एक विज्ञान की कला है जो इस कला में पारंगत होता है वह मनुष्य का फेस देखकर उसका नाम और उसके जन्म स्थान का पता बता देता है। वह आदमी का फेस रीडिंग करने में माहिर है।वह पहाड़ों में निवास करता है। वह पहाड़ों में घट रही विपदाओं को क्यों नहीं रोक पा रहा है? वह वहां से मुंह छिपाकर अपनी जान बचाने के लिये और पहाड़ी लोगो को मुशिबत में छोड़कर समतल स्थानों पर चला जाता है।''

हिम्मत कुर्मी पंचायत भवन से बाहर निकल आता है। वह जिला मजिस्ट्रेट और एस एस पी को फोन द्वारा सूचित करता है–

''पंचायत सचिव अभिमान धानुक को सरपंच पण्डित नोखेलाल और उसके गुंडों ने दुलारी भारद्वाज प्रकरण में बंदी बना लिया है। पंचायत के अनैतिक वा कानून विरुद्ध आदेश पर उसने हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था।''

डीएम और एसएसपी के कान खड़े हो गए। तुरंत गांव बेनरू पर पुलिस फोर्स के साथ धावा बोल दिया। अभिमान धानुक को सरपंच और उसके गुंडों से मुक्त कराया। पण्डित नो खेलाल और उसके सभी लठैतों को अरेस्ट कर लिया गया। दुलारी भारद्वाज और उसके साथियों को नौकरी करने के लिए मुंबई रवाना कर दिया गया।

ग्रामीण भारत की शासन व्यवस्था जब से ग्रामीण लोगों के हाथों में आई है तब से वहां के पदाधिकारियों की आर्थिक उन्नति आसमान छूने लगी है। सरकार द्वारा गांवो, कस्बों, और नगरों के विकास के लिए ना जाने कितना पैसा दिया जाता है। ग्राम प्रधान, ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत अध्य क्ष नगरपालिका अध्यक्ष, महानगरपालिका मेयर को सरकार द्व ारा उत्तरदायित्व सौंपा गया है कि वे लोग गांवो, ब्लॉकों, नगरों और महानगरों का विकास करें। वहां पर, स्कूल, कॉलेज विश्व विद्यालय खोलें। वहां पर अस्पताल बनवाएं। खेल मैदानों और पार्कों का निर्माण करवाएं। चारो तरफ फलदार वृक्ष लगवाएं। बेकार पड़ी सरकारी भूमि पर जंगल लोक का निर्माण करवाएं।स्कूल कॉलेज में टॉयलेट बनवाएं और प्रत्येक घर में में भी टॉयलेट बनवाएं।सरकारी नल प्रत्येक घर में पहुंचाए ताकि टॉयलेट साफ करने के लिए प्रत्येक समय पानी उपलब्ध रहे। कहीं ऐसा ना हो कि टॉयलेट बनकर तैयार हो गए ले. किन पानी की व्यवस्था ही नही है। मक्खी, मच्छर चारों तरफ मंडराएं और बीमारियां फैलाएं।सभी जगह सफाई की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

ग्राम प्रधान, ब्लॉक प्रमुख, नगरपालिका चेयरमैन, और मेयर बनते ही बड़े बड़े कृषि फार्म, आलीशान महल और एयर कंड. ीशन गाड़ियां खरीदने लगते हैं। उनका स्वयंम का विकाश ध ारती पर तुरंत दिखाई पड़ने लगता है।उनके क्षेत्रों का विकास शून्य रहता है।

ग्राम प्रधान द्वारा मनरेगा योजना के अंतर्गत गांव के विकास के लिए आवंटित धन अपने और अपने परिवार के विकास में लगा देता है।यह बहुत ही चिंताजनक है। इसमें सबसे ज्यादा शोषण मजदूरों का होता है। प्रधान जॉब कार्ड तभी बनाता है जब कार्य के बदले मजदूरों को मिलने वाले ध ान में से आधा धन ग्राम प्रधान को देता रहे।सरकार इस भ्रष्टाचार को रोकने के लिए मजदूरों के बैंक अकाउंट में पैसा भेजने लगी। ग्राम प्रधान ने मजदूरों का शोषण करने की एक नई तरकीब निकाल ली। जिस दिन मजदूर बैंक से पैसा निकालने जाता है। ग्राम प्रधान बैंक के बाहर खड़ा रहता है। मजदूर के बैंक से बाहर आते ही आधा धन उससे ले लेता है। यह कहना उचित होगा की वह मजदूर का आधा धन लूट लेता है।

पूरे देश का प्रत्येक जगह ड्रैनेज सिस्टम ध्वस्त है। एक ही दिन की वर्षात् में गांव ,कस्बा और शहर पानी में डूब जाते हैं। जनता त्राहि त्राहि करने लगती है। अनगिनत जान माल की हानि होती है। कुछ ईमानदार जनसेवक होते हैं जो सरकारी पैसे का उपयोग गांवों, कस्बों और शहरों के विकास में लगाते हैं। लेकिन उनको बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे पदाधिकारी जनता की नजर में उद्धारक कहलाते हैं।

सनसनी सिंह ग्रेजुएट है। वह कोई नौकरी नहीं प्राप्त कर सका। उसने बी एड भी किया लेकिन वह मास्टर नही बन पाया।उसे गांव में मन नहीं लगता है। वह मुंबई जाकर नौकरी करना चाहता है। कुछ गांव के लोग उसको भड़का रहे हैं। एक सवर्ण पंडित जगतार उससे कहता है–

'' गांव में रहकर खेती बाड़ी का काम करो। बाहर जाकर मजदूर बन जाओगे।तुम्हे दलितों, पिछड़ों और मुसलमानों के साथ रहना पड़ेगा। उनके बर्तनों में खाना खाना पड़ेगा। उनके

बिस्तरों में उनके साथ सोना पड़ेगा। तुम उच्च जाति के हो अपने परिवार की गरिमा का ध्यान रखो। तुम अपनी ठाकुर बिरादरी में मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहोगे। तुम्हारी दो बहिनों की शादी होना है। तुम्हारे कारनामों से उनकी शादियां रुक जाएंगी। मुसलमानों, शूद्रों के साथ रहने,खाने पीने से तुम्हारा धर्म नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा।''

''ये सभी बेकार की बातें हैं। एक इंसान का दूसरे इंसान के साथ रहने से धर्म भ्रष्ट नहीं होता है बल्कि दूसरे धर्मों की अच्छी अच्छी बातें सीखने का अवसर मिलता है। खुदा, अल्लाह, मसीहा ईश्वर गाड सभी इंसानों के बीच रहते हैं। कोई सर्व शक्तिमान ताकत है जो इस ब्रह्मांड को चलाती है और वह ताकत प्रकृति है। प्रकृति की गोद में वनस्पतियां, जीव जंतु सभी एक साथ रहते हैं । तब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ क्यो नहीं रह सकता है? यह विज्ञान का युग है। विज्ञान ने समाज में फैले अंधकार को दूर किया है।''

''गांव में खुसर फुसर चल रही है मैं उसको तुमसे बता रहा हूं।''

'' गांव इसीलिए शहरों की अपेक्षा बहुत पिछड़े हैं।गांव के लोगों की सोंच ,शहर के लोगों की सोच से अंधकारमय है। उन्नति नाम की कोई चीज नहीं है।गांवों में आज भी औरतों को घूंघट के अन्दर रहने को मजबूर किया जाता है। ग्रामीण भारत की औरतों की दुनियां अपने घर और गांव तक ही सीमित है। बहुत सारी औरते मिल जायेंगी जिन्होने अपने जीवन काल में ट्रेन तक का सफर नही किया है।''

''यह गांव की सभ्यता है। इस सभ्यता को तुम लोग छिन्न भिन्न कर रहे हो। एक युवा लड़की का पांच युवा लड़कों के साथ एक कमरे में रहना लिविंग इन रिलेशनशिप जैसा है।इससे हमारी सनातन सभ्यता खण्ड खण्ड हो जायेगी।''

''महाभारत काल में द्रौपदी पांच पांडव बंधुओं के साथ शादी किए बगैर उनके साथ सभी की पत्नी बनकर रहती थी। यह एक तरह का लिविंग इन रिलेशनशिप जैसा था।जब उस युग में किसी को भी परेशानी नहीं हुई थी अब इस वैज्ञा. निक युग में गांव वालों को क्यों परेशानी हो रही है? लिविंग इन रिलेशनशिप की बुनियाद महाभारत काल में पड़ गई थी।''

'' छोटी जाती के लोगों के साथ एक उच्च जाति का लड़का उन्हीं लोगो की तरह रहेगा। छूत अछूत सभी मिलकर एक थाली में खाएंगे। एक दूसरे के जूठे बर्तन साफ करेंगे''

'' इसमें क्या बुराई है। धीरे धीरे छूत अछूत की भावना समाज से लगभग मिट गई है। आप जैसे पुरातन पंथी लोगों के दिमाग में यह अब भी जीवित है जो निंदनीय है।''

''अभी अपना देश, विदेश नही बना है।इसके बनने में सदियों लगेंगी।''

'' हमारा देश विदेश बनता जा रहा है।उन देशों के खुले विचार, भारतीय लड़के और लड़कियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं।वे सही मानवता का पाठ पढ़ा रहें हैं''।

गौरव धनगर एमएससी बॉटनी से था। उसने सब जगह नौकरी पाने की कोशिश की थी। उसने बैंकों में भी कोशिश की थी लेकिन बैंको का प्राइवेटाइजेशन की वजह से उसे नौकरी नहीं मिली। रेलवे विभाग में नौकरियां निकलना बंद हो गया है। रेलवे विभाग प्रतिवर्ष लाखों लोगों को नौकरियां देता था। रेलवे विभाग प्राइवेट हाथों में दे दिया गया है। जब पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अधिकतर बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था । उस समय इंटर, बीए, बीएससी पास युवा नौकरी पा गए थे। उस समय बहुत कम युवा बेरो. जगार रहते थे। दलितों और पिछड़ों की जो उन्नति आज हम देख रहे हैं वह विश्व स्तरीय राजनेता इंदिरा गांधी को देन है। राजनेता को दूरदर्शी होना चाहिए। देश की समस्त प्रजा को अपना मानना चाहिए। वही राजनेता बहुत दिनों तक देश में शासन करता है जो राजनेता किसी विचारधारा के तहत कार्य करता है। वह बहुत जल्दी शासन सत्ता से विलीन हो जाता है। जनता उसे एक वर्ग विशेष का नेता मानती है पूरे देश का नही।

तत्कालीन सरकारों ने बेरोजगारी दूर करने एवम देश के विकास के लिए ग्राउन्ड लेबल पर कार्य किया। गांवों में प्राइमरी पाठशालाएं, जूनियर हाईस्कूल, इन्टर कॉलेज खोले। बड़े बड़े शहरों में विश्वविद्यालय स्थापित किए। जिनकी गूंज आज भी सुनाई देती है। लोगों को रोजगार मिला। उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगी। सभी युवाओं और युवतियों की शादियां होने लगी। बज रही शहनाइयां लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने की धुनें निकालने लगी। एलएलबी, बीएड पास लड़के लड़कियां स्कूल कॉलेज में सरकारी नौकरी करने लगे। शिक्षा का प्रसार हुआ। प्राइमरी पाठशाला के गुरुजन गांवों में घर घर घूमने लगे और नहीं पढ़ रहे बच्चों को पाठश. ालाओं में नाम लिखकर पढ़ाने लगे। उस समय के गुरु जनों का देश के प्रति यह महान सेवा भाव था। सरकारी शिक्षा संस्थानों की संख्या बढ़ने लगी। नौकरियां भी उसी तेजी से बढ़ने लगी।

आज के हालात बहुत ही दुखदाई हैं। सरकारी शिक्षण संस्थानो की संख्या तेजी से घटती जा रही है। प्राइवेट शिक्षण संस्थानों की संख्या मल्टीपल ग्रोथ के हिसाब से बढ़ रही है। गरीबों के बच्चे नही पढ़ पा रहे हैं क्योंकि इन प्राइवेट संस्थ. ानों की फीस बहुत ज्यादा है।

गरीबों के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं करने के कारण बाबू, ऑफिसर, डॉक्टर, इंजीनियर, टेक्नोक्रेट, लेक्चरर और प्रोफेसर नही बन पा रहे है। वह सेना वा पुलिस के ऑफिसर नहीं बन पा रहे है। वे पायलट नही बन पा रहे है। लड़कियों ने एयर होस्टेस बनने का ख्वाब देखना बंद कर दिया है।

लगता है कि वर्तमान सरकार की यह पालिसी बनाई गई है की शिक्षा इतनी मंहगी कर दो जहां गरीब किसान, मजदूर, बढ़ई, सड़कों पर खोमचे लगाने वाला,जूता सिलने वाले के बेटे किसी तरह की शिक्षा ना प्राप्त कर सके वे मजदूर और फटीचर बने रहे।

केवल उच्च वर्ग के बच्चे जो उद्योगपति, बड़े बड़े फार्म हाउस के मालिक, आईएएस, पीसीएस, बने। उनके बच्चे अन्य एलाइड सेवाओं में भी नहीं जा पाएं। वे प्राइवेट स्कूलों कालेजों, विश्व विद्यालयों के बनाने में मजदूर और राज मिस्त्री का ही केवल कार्य करें। बड़े बड़े उद्योगपतियों के फार्म हाउस

पर गुड़ाई, सिंचाई और हल चलाने का कार्य करे। एक जहरीले संगठन की यही सोच है। जिसके इशारों पर वर्तमान सरकार कार्य कर रही है। तभी ये लोग हिन्दू राष्ट्र बनाने में कामयाब होंगे। ऐसे जहरीले लोगों की यही जहरीली सोच है जो भारत को गर्त में ले जाने के लिए काफी है। भारत को गरीब भारत और धनवान भारत में विभाजित किया जा रहा है। मजदूर भारत और पूंजीपतियों का भारत। भारत पर एक उच्च जाति विशेष का आधिपत्य रहे। इसके सिवा सारी जातियां उसके गुलाम रहे।वह जाति केवल शासक रहे और बाकी जातियां उसका गुलाम रहे।सबल भारत और निर्बल भारत। सारे मनोरंजन के कार्य केवल सबल भारत के लोग करें। ज्ञान विज्ञान की प्रतियोगिताएं सबल भारत के लोग करे। स्टेज सजना, बिजली आपूर्ति और जरूरी सामान मुहैया कराने का कार्य केवल निर्बल भारत के लोग करे। जहरीले संगठन की यही वास्तविक विचारधारा है जो लगभग अस्सी पच्चासी सालों सालों से इसी कार्य में लगे हुए है।

यही कारण है कि बिना आईएएस परीक्षा दिए एक सरकारी आदेश के जरिए टेक्नोक्रेट्स को आईएएस बनाकर, सचिव आदि एक उच्च जाति के अज्ञानी लोगों को बनाया जा रहा है। आईएएस की डायरेक्ट भर्ती कम होती जा रही है। अफाशोष इस बात का है कि सारी आई ए एस यूनियनें मौन हैं। उनके अंदर डर समाया हुआ है कि यदि वे लोग इस देश घातक योजना का विरोध करेंगे तो उनके पीछे इनकम टैक्स, सीबीआई, और ईडी लगा दिया जाएगा और उनको नौकरी से डिसमिस कर दिया जाएगा। वर्तमान सरकार के भय से न जाने कितने आईएएस ने नौकरियों से स्तीफा देकर प्राइवेट कंपनियों में काम कर रहे है। यह भारत को कमजोर करने का दौर चल रहा है।

उस एक जहरीले संगठन के लोगों को जो एक विशेष उच्च जाति से जुड़े हैं प्रत्येक विश्व विद्यालय में एचओडी सभी विभागों के वही बनाए जा रहे हैं। वैसा ही तरीका वाइस चांसलर बनाने में अपनाया जा रहा है। विश्व विद्यालयों के अंदर ऐसी नियुक्तियों से, एससी, एसटी, बैकवर्ड और अल्पसंख्यकों को दूर फेंक दिया जाता है। यह एक प क्षपाती, तानाशाही और मजबूत शिक्षा की जड़ें खोदने जैसा है। इस जहरीले संगठन की नीति देश के सभी नागरिकों को समझ में आ गई है। यह जहरीला संगठन शिक्षा, अर्थ, डिफेंस और सामाज व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर देगा।

शहजाद आलम के अब्बू एक टेलर मास्टर हैं।वह गांव के सभी लोगों के कपड़े सिलने का काम करते हैं। फटे पुराने कपड़े भी सिल कर ठीक कर देते है।जब से हिन्दू राष्ट्र बन. ाने की डुग्गी पिटी जा रही है। गांव में सदियों से रह रहे तीन मुस्लिम परिवार बहुत ही चिंतित हैं।यह कृत्य हिंदू और मुसलमान के बीच शंका रूपी खाई बहुत चौड़ी की जा रही है। जिसमे नफरत भरी जा रही है।दंगों के दौरान गांव के इन तीन मुस्लिम परिवारों को निशाना बनाया जा सकता है।गांव का वातावरण विषफोटक बनता जा रहा है। जब से हिन्दू राष्ट्र बनाने की मुहिम तेज हुई है। मुस्लिम समाज के लोग शहरों में उन जगहों पर ठिकाना तलाश रहे हैं जहां पर मुस्लिम आबादी ज्यादा हो ताकि दंगों के दौरान जान बचाई जा सके। यह डर देश के समस्त मुस्लिम भाइयों में समा गया है। मुसलमानों के प्रति हिंदुओं में नफरत भरी जा रही है। पढ़े लिखे,अनपढ़ हिंदू युवाओं की ऐसी खतरनाक टोलियां बनाई जा रही है जो गांव गांव घूमकर हिन्दू राष्ट्र बनाने की वक. ालत कर रहा है। इन सिरफिरे लोगों को माहवारी वेतन भी जहरीले संगठनों द्वारा दिया जा रहा है। भारत में भय और डर का माहौल उत्पन्न किया जा रहा है।

भारत को एक जहरीला देश बनाया जा रहा है। जब से देश में भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाने की मुहिम छेड़ी गई है, मुस्लिमो, दलितों, आदिवासियों पिछड़ों और क्रिश्चियन समुदाय में शंका और डर का वातावरण व्याप्त हो गया है। जिस दिन मुस्लिम इस देश से चले जायेंगे उस दिन दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों पर जोरदार हमले होंगे। हिन्दू राष्ट्र बनते ही उनको गुलाम बना लिया जाएगा। मनुस्मृति लागू कर दी जाएगी। शूद्रों की बहिन बेटियों को सरे आम नंगा करके पैरेड कराई जायेगी। दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और अल्प संख्यक वर्ग को चाहिए कि वे हिंदू राष्ट्र का जबरदस्त तरीके से विरोध करें। हिन्दू राष्ट्र का प्रवचन देने वाले ढोंगी ,फरेबी और नफरती लोगो का बॉयकॉट करें। दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों की औरते और आदमी इन नफरती प्रवचनों को सुनने जाते है। इनकों यह नही पता है की हिन्दू राष्ट्र बनते ही शूद्रों को गाय बकरी की तरह एक उच्च जाति के लोग काटेंगे। उनके हाथ नही कांपेगे।

शूद्रों सावधान हो जाओ।
उन प्रवचनों को सुनने मत जाओ
जो तुमको और तुम्हारे भविष्य को
नष्ट करने वाले हैं
तुम्हारी बहिन बेटियों की इज्जत
मणिपुरी की ही तरह लूटने वाले हैं
इस देश का सुप्रीमो
कुछ नही बोलेगा
जैसे आदिवासी लड़कियों को
नंगा घुमाने पर कुछ नहीं बोला
जहरीला संगठन तुम्हारे घरों में
डेरा डालेगा
तुम्हारा माइंड वाश करेंगा
तुम्हारी बहिन बेटियों के साथ
बदसलूकी करने की कोशिश करेंगा
तब तुम्हारी बहिन बेटियों की
रक्षा कौन करेगा?
इस जहरीले संगठन के लोग
जीवन भर शादी नही करते है
तमाम प्रकार का प्रदूषण
समाज में फैलाते रहते हैं
कसम खाओ
कोई भी शूद्र समाज का आदमी
इन बनावटी संतों के प्रवचन

सुनने नही जायेगा
तब उनको सही भीड़ का
पता चल जायेगा।

हमारे देश के हुक्मरान देश की पांच ट्रिलियन इकॉनामी बनाने का वायदा कर रहे हैं। नफरत और डरावने वातावरण में हमारे देश की मजबूत इकॉनामी बनाने का सपना कहीं अधूरा न रह जाए। इतनी बड़ी इकॉनामी के निर्माण में देश के सभी नागरिकों का रोल अहम होता है। छोटे से लेकर बड़ा काम हिन्दू और मुसलमान मिलकर करते हैं। यदि इस देश के मुसलमान इस देश से बाहर निकाल दिए जायेंगे। तब प्रतिदिन होने वाले कार्यों में बहुत बड़ी बाधा पड़ेगी। हमारा पांच ट्रिलियन इकॉनामी बनाने का सपना ध्वस्त हो जाएगा।

राजमिस्त्री, इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, साइकिल में लादकर कपड़े बेचने वाले, मरे पशुओं को घरों से उठाकर बाहर ले जाने वाले मुसलमान ही होते हैं। तब इन कार्यों को कौन करेगा। ऐसी परिस्थितियों में इन कार्यों को दलितों,पिछड़ों और आदिवासियों से कराया जाएगा।

हमारे देश में बाढ़ आदि से बहुत नुकसान होता है। जान माल की बहुत क्षति होती है। न जाने कितना धन बाढ़ से प्रभावित लोगों को पुना बसाने में लग जाता है। पशु धन की भी बहुत बड़ी क्षति होती है। बाढ़ क्यो आती है?

हमने नदियों, तालाबों, समुद्रों के किनारे बड़े बड़े अपार्टमेंट बना लिए।नदियां सिकुड़ गई। पानी निकलने का रास्ता बंद हो गया। प्रकृति अपना पुराना रूप चाहती है। वह बिना बाधा के कल कल बहना चाहती है। वह नदियों के किनारे बसे लोगों का नरसंहार करके अपना बदला लेना चाहती है। एक समय आएगा जब नदियां अपना विकराल रूप दिखाएंगी। नदियां, शहर के शहर पानी में डुबो देंगी। वह जल प्रलय का समय होगा। आदमियों का नामो निशान नहीं रहेगा। क्योंकि नदियां अपने बंदों को प्रकृति की गोद में रखना चाहती हैं।उनको अपना मानती हैं। जब से हिन्दू राष्ट्र का नारा फैला है। नदियां ऐसे मानवों से नाराज हैं।

हिन्दू राष्ट्र के नाम पर जब मार काट होगी तब इंसानों का खून नदियों के अंदर बहेगा। सन 1947 वाला जीवित दृश्य प्रकट हो जायेगा जब हिन्दू मुसलमान आपस में एक दूसरे को बेरहमी से काट रहे थे। खून से नदियां उफना रही थें। देश का बटवारा हो गया था। हिन्दू राष्ट्र के नाम पर हमारे प्यारे देश को दुबारा मत बांटो । एक बार फिर यह धरती अपने सपूतों को खो देगी। हिन्दू राष्ट्र के नाम पर ऐसा ताण्डव होगा जिसकी कल्पना हिन्दू राष्ट्र के समर्थक भी नही कर पाएंगे। देश फिर एक बार भयंकर त्रासदी में फंस जायेगा।

कला विज्ञान, संगीत, साहित्य, अर्थ आदि के क्षेत्र में भारत ने जो उन्नति की है वह सराहनीय है। भारत ने बड़े बड़े बांध, एटॉमिक पावर प्लांट स्थापित किए हैं। हमने पो खरन में जो एटॉमिक विस्फोट किए हैं। मिसाइल मैन अब्दुल कलाम आजाद जैसे महान वैज्ञानिकों की तपस्या हिन्दू राष्ट्र बनते ही बेकार हो जायेगी। भारत को दुबारा मुसलमान मिसाइल मैन कभी भी नहीं मिल पाएगा। डॉक्टर अंबेडकर ने भारत के लिए विश्व का सबसे अच्छा संविधान दिया है। जिससे पूरा देश एक सूत्र में बंधा है।इस संविधान में भारत के सभी नागरिकों को समता, स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है। हिन्दू राष्ट्र बनते ही देश के नागरिकों से ये सारे अधिकार एक क्षण में छीन लिए जायेंगे।

जो तथाकथित बौने संत महात्मा और सिरफिरे राजनेता विषैले संगठनों के लोग हिन्दू राष्ट्र बनाने के पक्ष में बिघटनकारी प्रवचन दे रहे हैं। उनको तुरन्त रोका जाना चाहिए। उनको संविधान के विरोध में बोलने के कारण तुरन्त जेलों में बंद कर देना चाहिए। उनके प्रवचनों को हेट स्पीच के रूप में लेना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया को स्वतः संज्ञान लेकर ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना चाहिए।

देश के नागरिकों को रोटी, कपड़ा, मकान, अच्छी शिक्षा और अच्छा स्वास्थ्य मिले। सभी को इन समस्याओं पर कार्य करना चाहिए। आज भी देश के अस्सी करोड़ लोग सरकार द्वारा आवंटित पांच किलो अनाज पर जिंदा हैं इन लोगों को अनाज के बदले नौकरियां देना चाहिए ताकि वे अपने पैरों पर खड़ा हो सके। गरीबों को अपंग नही बनाना चाहिए। इन अस्सी करोड़ लोगों को गरीबी के रेखा से बाहर नकलना हमारे देश के प्रशासकों का परम कर्तव्य होना चाहिए।

ग्रामीण भारत में कॉटेज इंडस्ट्रीज, छोटे बड़े उद्योगों का फैलाव करना चाहिए। गांव गांव में मछली, मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहित करना चाहिए। भेड़,बकरी और कुकुट पालन को बढ़ावा देना चाहिए। भैंस और सुअर पालन प्रॉफिट देने वाले बिजनेस हैं। जितनी भी सरकार की खाली जमीन पड़ी है उसमे वृक्षारोपण युद्ध स्तर पर होना चाहिये। इससे हमारा पर्यावरण अच्छा होगा। प्रत्येक सड़क के किनारे फलदार पेड़ लगाना अनिवार्य कर देना चाहिए। पढ़े, गैर–पढ़े युवाओं को नौकरियां मिल जायेंगी।

ग्रामीण भारत में कॉटेज इंडस्ट्रीज के अंतर्गत दैनिक स्तेमाल की वस्तुएं जैसे साबुन,प्लास्टिक टोकरियां, बाल्टी मग्घे ,प्लेट्स आदि बनाने की शुरुआत कर देना चाहिए। जूट और सूत की रस्सियां बनाना भी स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज के अंतर्गत आता है। बड़ी बड़ी फैक्ट्रियां इन चीजों के बनाने में लगी हैं। उन पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। बल्ब बनाने का कारखाना भी ग्रामीण भारत में खोलना चाहिए।

किसी भी सरकार में यदि देश का विकास करने की प्रबल इच्छा शक्ति है तो वह ऐसे कार्य करके ग्रामीण भारत व पूरे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकती है।हमारा देश जो माल चीन से खरीदता है और उसको अरबों डॉलर प्रति वर्ष देता है तब हमारा देश चीन पर निर्भर नहीं रहेगा।चीन तमाम घरेलू वस्तुओं का उत्पादन करके पूरे विश्व में छा गया है।

ऊर्जा का एक अच्छा विकल्प हमे नेचर से मिल रहा है। सोलर पैनल देश भर में लोगों के घरों की छतों, ट्यूब वेल वाले खेतों, फार्म हाउसों व अन्य स्थानों पर लगाए जा रहे हैं। इसका ठेका सरकार ने प्राइवेट कंपनियों को दे रखा है। यदि

सरकार अपने कर्मचारियों से यह कार्य करवाए तो सरकार को अरबों रुपए कंपनियों को नही देना पड़ेगा।

बिजली उपभोक्ताओं को सोलर पैनल से बहुत लाभ होता है। सोलर पैनल से जो बिजली आप पैदा करेंगे उसको सरकार आपसे खरीद लेगी। आप जो बिजली खर्च करेंगे केवल उसका भुगतान उपभक्ता को करना होता है।

यह सरकार की एक ऐसी योजना है जो कई दशक से चल रही है। वर्तमान समय में इसका फैलाव अधिक हो रहा है

सोलर पैनल देश भर में लग रहे हैं। सोलर पैनल लगाने का ठेका प्राईवेट कंपनियों को दिया गया है जो इस काम से अरबों रुपए कमा रहे हैं। सरकार अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके और नई भर्तियां करके इस काम को करवाए तो करोड़ों लोगों को रोजगार मिल जाएगा। जो प्राइवेट कर्मचारी इस काम को कर रहे हैं उनको सरकारी कर्मचारी घोषित कर दिया जाए। उनकी परीक्षा भी कराई जाए। हम प्राकृतिक रूप से सूर्य के प्रकाश से बिजली यानी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। अब सरकार को बिजली बनाने के लिए बिजली के अधिक पावर प्लांट स्थापित नही करना पड़ेगा।यह एक ऐसी योजना है जो कई दशकों से अपने भारत देश में चल रही है। पैनल बनाने वाली कंपनियां सरकार के आधीन होना चाहिए या उनका राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिए।प्राइवेट कंपनियों को इस तरह मुनाफा देने वा. ली योजनाओं से दूर रखना चाहिए।

जिओ कंपनी द्वारा इंटरनेट कनेक्शन घर घर किए जा रहे है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति टी वी, लैपटॉप, मोबाइल चला सकता है। उसको अलग से रिचार्ज करने की आवश्यकता नहीं होती है। यह स्कीम बहुत बड़ी स्कीम है। इस स्कीम के जरिए करोड़ों लोगों को रोजगार मिल सकता है।देश भर में इस योजना का तेजी से फैलाव हो रहा है। इसके जरिए व्यवसायिक शिक्षा का प्रसार बड़ी तेजी से हुआ है। देश के प्रत्येक नागरिक के हाथों में मोबाइल फोन आ गया है। यदि मोबाइल बनाने वाली कंपनियों का राष्ट्रीयकारण कर दिया जाए और वहां कार्यरत कर्मचारियों, इंजीनियरों को सरकारी कर्मचारी और अधिकारी घोषित कर दिया जाए। इसके पहले एक परीक्षा आयोजित कराई जाए। नई भर्तियां करके अन्य बेरोजगार युवाओं को नौकरियां दी जाए तो जितने भी देश में व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त किए युवा हैं उनको रोजगार दिया जा सकता है।

स्मार्ट सिटी बनाने का अरबों खरबों रुपए का ठेका प्राइवेट कंपनियों को दिया गया है। ये कंपनियां बड़ी लाप. रवाही से काम करती हैं। मै देहरादून स्मार्ट सिटी का जिक्र करना अनिवार्य समझता हूं जो देश के लिए उदाहरण हो सकता है। एक प्राइवेट कंपनी देहरादून स्मार्ट सिटी बड़ी लापरवाही और सुस्त तरीके से बना रही थी। इस प्रदेश की सरकार ने उस प्राइवेट कंपनी को इस योजना से हटा दिया। अब स्मार्ट सिटी सरकारी विभाग पी डवल्यू डी बना रहा है। काम बड़ी तेजी से चल रहा है। राज्य सरकार का करोड़ो रूपए बच गए।

प्राइवेट कंपनियों का सड़क बनाने के बाद उनका उत्तरदायित्व समाप्त हो जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। उनका उत्तरदायित्व कम से कम पांच साल तक सड़क टूटने पर सड़क की मम्मत करने का उत्तरदायित्व होना चाहिए। प्राइवेट कंपनियां ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए घ टिया से घटिया मैटेरियल लगाती हैं। इसीलिए सड़कें एक वर्षांत में उखड़ या टूट जाती हैं। प्राइवेट कर्मचारियों और इंजीनियरों पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं होता है। केवल सड़क बनाने वाली कंपनी के मालिक और सरकार के बीच ही समझौता होता है। प्राइवेट कंपनियों द्वारा सड़क बनाने वाले स्टाफ पर सरकारी आफीसरों का नियंत्रण होना चाहिए। ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों को करने के लिए सरकारें स्वयं जिम्मेदारी लें। जो काम सरकारी विभागों का है उन कामों को करने की जिम्मेदारी प्राइवेट कंपनियों को नही देना चाहिए।

प्राइवेट कंपनियां बहुत सारे राजनेताओं के आदमी चलाते हैं।वे बेधड़क निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार करते हैं। सरकार या विपक्ष में बैठा नेता किए गए सभी गलत कार्यों में लीपा पोती करवा देता है। बहुत बड़ा नुकसान सरकार का होता है।जनता को बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ता है। टूटी फूटी सड़कों में बहुत संख्या में एक्सीडेंट होते रहते है। न जाने कितने निर्दोष लोग प्रति दिन मारे जाते हैं। प्रभा. वित लोगों को मुआवजा सड़क बनाने वाली कंपनियों से दिलाया जाना चाहिए।

यदि सभी प्रकार की सड़कें और हाई वे बनाने का काम राज्य और केन्द्र की सरकारें मिलकर करें तब सड़के और हाई वे बहुत अच्छे और मजबूत बनेंगे। सरकार का खजाना खाली नही होगा।

घर घर में टॉयलेट बनाने की योजना आज से लगभग तीन दशक पहले से शुरू हुई थी।टॉयलेट में दरवाजे होते थे और पानी की समुचित व्यवस्था होती थी। उस समय के प्रशासक अपनी इन योजनाओं का गुणगान नही करते थे। आज जो अधिक संख्या में टॉयलेट बन रहे हैं उनमें दरवाजे और छत नही हैं। पानी की व्यवस्था बिल्कुल नही है। टॉयलेट के अंदर बाहर गंदिगी का अंबार लग जाता है।वहां पर बहुत ही घिन्न आती हैं। प्रशासक बहुत ही वाहवाही लुटते हैं की उन्होंने सभी जगह टॉयलेट बनवाएं हैं। इन अधूरे बेकार टॉयलेट बन. ाने में ग्राम प्रधानों ने भ्रष्टाचार किया है। यदि देश भर में सर्वे क्षण कराया जाए तो आधे टॉयलेट बेकार मिलेंगे।

सरकार द्वारा चलाई जा रही आवास योजना का भी यही हाल है। अर्ध निर्मित मकान लाभार्थियों को आवंटित किए जा रहे हैं। कुछ ग्राम प्रधानों द्वारा गरीबों से पैसा पहले ही ले लिया जाता है।तब उनको आधा अधूरा मकान मिलता है। इन मकानों में किसी में छत नही है। दरवाजे नही है। प्लास्टर उ खड़ा हुआ है।मकानों में सीमेंट का प्रयोग नाममात्र का किया गया है। पहले की सरकारों ने इंदिरा आवास योजना और डॉक्टर अंबेडकर आवास योजना के अंतर्गत गरीबों को अधिक संख्या में मजबूत आवास प्रदान किए थे जिनकी गुणवत्ता सराहनीय थी। पांच किलो अनाज प्रति व्यक्ति अस्सी करोड़ लोगों को सरकारी थैलों में सुप्रीम प्रशासक की फोटो के साथ बांटा जा रहा है। इन थैलों को बनाने में अरबों खरबों

रुपए लगे हैं। और इस योजना के प्रचार में भी न जाने कितना धन खर्च हुआ है?

क्या देश के सुप्रीमो को देश के सबसे बड़े उद्योगपति के शानदार जहाज में उसके पास बैठकर सफर करना चाहिए? यह उसके प्रति सुप्रीमों का पक्षपात दर्शाता है। देश में एक गलत संदेश जाता है। सरकारी पद में रहते ऐसा करना संविधान की मर्यादा रोकती है।आप चीफ मिनिस्टर या प्रधानमंत्री के पद पर हों,ऐसा करना जानता के साथ एक धो खा है।

यदि कोई कलेक्टर या जिला जज किसी बिल्डर की कार कही जाने के लिए उपयोग करता है। यह इसका कृत्य सरकारी नियमावली के विरूद्ध है। एक जिला जज ने एक बड़े बिल्डर की शानदार कार का उपयोग कहीं जाने के लिए किया। उच्च न्यायलय के संज्ञान में यह प्रकरण आया। उच्च न्यायालय ने उस जिला जज को निलंबित कर दिया। चीफ मिनिस्टर और प्रधानमंत्री का पद उसी आचार संहिता के अंतर्गत आता है।

मनुस्मृति के समर्थकों द्वारा डॉक्टर अंबेडकर द्वारा लिखित संविधान पार्लियामेंट के सामने जलाया जाता है।देश का सुप्रीमो कुछ नही कहता है। संविधान और डॉक्टर अंबेडकर के विरोध में नारे लगाए जाते हैं। ऐसा लगता है कि ऐसे कृत्यों को करने के लिए सुप्रीमो की मौन सहमति है। हाथरस में एक दलित लड़की के साथ कई सवर्ण लड़के रेप करते हैं। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी केरोसिन तेल डालकर अर्ध रात्रि में उसको जला देते हैं। चिता से उठती बड़ी बड़ी लपटें पूरे देश में दिखाई देती हैं लेकिन सुप्रीमो को दिल्ली में ये आग की भयंकर लपटें दिखाई नहीं देती हैं। मणिपुर में आदिवासियों की लड़कियों को सरे आम नंगा घुमाया जाता है।उनके गोपनीय अंगों को सरे आम छुआ जाता है। इसके बाद वहशी दरिंदे उनके साथ सामूहिक रेप करते हैं। उन लड़कियों की चीख पूरा देश सुनता है। अफशोष! दिल्ली में बैठा सुप्रीमो इनकी चीख नही सुनता है।

लगता है दलितों और आदिवासियों पर प्रायोजित ढंग से हमले किए जा रहे हैं। उनका मनोबल तोड़ा जा रहा है।एक जाति विशेष अपने को सर्वोच्च मानती है। देहतों में दलित आज भी उनके सामने चारपाई पर नही बैठ सकते हैं। पश्चिम उत्तर प्रदेश का एक एमपी जब सवर्णों से मिलने उनके घर जाता है।उसको चारपाई पर नही बैठाया जाता है। वह नीचे फर्श पर बैठता है और सभी सवर्ण चारपाई पर बैठते हैं। जब जनता द्वारा चुना गया एक एम पी जिसको सवर्णों के सामने चारपाई पर बैठने का अधिकार नही है। आप देश की विकराल सामाजिक अवस्था के बारे में अनुमान लगा सकते हैं। मुझे छात्र जीवन की एक घटना याद आ रही है। मैं दलित छात्रावास बिंदकी में रहता था। वहां पर सरकार की नीति के अनुसार दस प्रतिशत सवर्ण छात्रों के लिए जगह आरक्षित थी। एक ब्राह्मण परिवार का लड़का वहां रहता था। खाना बनाने वाला एक नेपाली था। सभी लड़के बारी बारी से किचेन के पास जाकर थाली में खाना लेते थे। मैं थाली में खाना लेकर अपने बेड की ओर चलने लगा तभी मुझे सवर्ण जाति का लड़का देवेंद्र चौबे दिखाई पड़ा। मैने औपचारिकता निभाते हुए उससे कहा–

'' आइए भाई साहब खाना खाइए।''

वह मुझसे बिगड़ कर लाल लाल आंखे दिखाते हुए बोला–

'' साले! अछूत के साथ मैं खाना खाऊंगा।''

'' तू गाली क्यों दे रहा है?अगर तू इतना बड़ा पंडित है तो दलित छात्रावास में क्यों आया?''

वार्डन रामदत्त त्रिपाठी एमएलए थे। मॉनिटर हेमराज द्वारा उनको सूचना दी गई।मैने जोर दिया था की वार्डन सर को बुलाया जाए।वार्डन रामदत्त त्रिपाठी छात्रावास आए और उस उस लड़के को डांटतें हुये कहा–

'' यह दलित छात्रावास हैं। यहां पर कोई छोटा बड़ा नही है। तुमने सोनकर को गाली क्यों दिया? छात्रावास में यह कर्टसी है कि आपस में छात्र एक दूसरे से खाने के लिए पूछते हैं।''

वह बोला –

''गलती हो गई सर ,मुझे माफ कर दीजिए ।''

''तुम सोनकर से माफी मांगो और गले मिलो।''

'' माफ कर दो सोनकर भाई मुझसे गलती हो गई।''

मैंने कहा–

''कोई बात नही है।''

फिर हम दोनो गले मिलते हैं।

यह घटना ग्रामीण भारत की एक सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है।सदियों से दलितों के साथ ऐसा व्यवहार सवर्ण करते आए हैं। अब समय बदल गया है। अब दलित अपने स्वाभिमान की रक्षा लिए ईंट का जवाब पत्थर से देने को तैयार हैं।

*****

कहानी

अटेंडेंट

✍...रूपनारायण सोनकर

जगनंदिनी पैलेस

डांडा लाखउंड

साहस्टरधारा रोड देहरादून

उत्तराखंड 248013

MOB-8279789405
Email- sonkar.roopnarayan@gmail.com

आदमी का जीवन एक फटी छतरी के समान है. वर्षात के तेज झोंके सहने के लिये छतरी विवस हो जाती है तेज हवाएँ छतरी को पलट देती हैं.

रेलगाड़ी तेज दौड़ते हुये एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन को पार करती जाती है. रेलगाड़ी के एक कोच में चलता फिरता अटेंडेंट एक रेलगाड़ी के समान है. रेलगाड़ी को समय से डीजल मिलता है जिससे ट्रैन पटरी पर तेज दौड़ती रहती है.

संदीप नाम का अटेंडेंट मुझे कानपुर से देहरादून ट्रेन में सफर करते वक्त मेरे कोच में मिला जो यात्रियों को वेडिंग सप्लाई कर रहा था. हरिद्वार के बाद ट्रेन बिल्कुल खाली हो जाती है. वह मेरे कम्पार्टमेंट में यात्रियों को दिए गए कम्बल, चादर, तकिये आदि उठाकर एक बड़े थैले में भर रहा था. वह काम समाप्त कर के मेरे सामने वाली सीट में बैठकर आराम करने लगा. मेरी आपस में बातचीत होने लगी . मैंने उससे पूछा -

" आपका क्या नाम है? "

" बाबू जी मेरा नाम संदीप है. "

" आप कहाँ के रहने वाले हैं? "

"मैं इलाहबाद का रहने वाला हूँ "

"आप कब से नौकरी कर रहे हैं?"

" करीब चार साल हो गया है. "

मैंने उससे पूछा-

"क्या विस्तर रेलवे विभाग की तरफ से यात्रीयों को दिए जाते हैं?"

वह निराशा भरी आवाज़ में बोला -

" एक प्राइवेट कंपनी ने यहाँ विस्तर सप्लाई करने का ठेका ले लिया है. "

"आपको कितना वेतन प्रति माह मिलता है?"

" बाबू जी केवल पंद्रह हजार रुपये प्रति माह मिलता है. "

"क्या कंपनी की तरफ से आपको रहने के लिये कमरा और खाना फ्री दिया जाता है?"

वह व्यथित होते हुये बोला -

" हमें रहने के लिये कमरा नही मिलता है. खाना हमें अपनी जेब के रुपये से खाना पड़ता है. "

"आप स्नान कहाँ करते हैं?"

" जहाँ पर रेल गाड़ियों की धुलाई, सफाई होती है वही पर स्नान कर लेते हैं."

" आप पंद्रह हजार रुपये में से माह के अंत में कितने रुपये बचा लेते है? "

" मुश्किल से आठ या नौ हजार रुपये बच जाता है."

यह कहानी एक ऐसे प्राइवेट अटेंडेंट की है जो बी ए तक पढ़ा था. प्राइवेट कंपनियों में काम करने वाले करोड़ों उच्च शिक्षित युवाओं की दर्द भरी कहानी है. उनको कोई ग्रेचिटी, इन्सुरेंस, टी ए, डी ए आदि कुछ नही दिया जाता है.

यदि ये लोग रेल विभाग के सरकारी कर्मचारी होते तब इनको लगभग चालीसा हजार रुपये बेतन प्रति माह मिलता. फण्ड, पेंशन, इन्सुरेंस, डी. ए,टी ए आदि की सारी सुविधाएँ प्रदान की जाती जो एक केंद्रीय सेवा में कार्यरत एक सरकारी कर्मचारी को मिलती हैं.

सरकार ज्यादा से ज्यादा सरकारी खजाना इन प्राइवेट देकेदारों और कंपनियों पर लुटाती है और देश के नौजवानों का भविष्य चौपट करती है.

सरकार आउट सोर्सिंग से सभी विभागों में कर्मचारियों से कार्य कराने की प्रथा चालू कर दिया है. सरकार की मंशा एक यह भी है कि दलितों, पिछड़ों का रिजर्वेशन समाप्त कर दिया जाये.आउटसोर्सिंग से जितनी भी सरकारी विभागों में नियुक्तियाँ हो रही हैं वहां रिजर्वेशन का सिद्धांत लागू नही है.

बहुत सारी प्राइवेट संस्थाएं कार्य कर रही हैं जो आउटसोर्सिंग के जरिये प्रत्येक केंद्रीय व प्रांतीय कार्यालयों में युवाओं को नौकरी दिलाती हैं. वहां पर भी युवाओं का शोषण किया जाता है. सरकार से प्रत्येक कर्मचारी के लिये बहुत सारा पैसा लेते हैं लेकिन कार्यरत कर्मचारी को बहुत कम बेतन देते हैं. इन कंपनियों पर सरकार का कोई अंकुश नही है.

संयोग से उसी ट्रेन पर एक नौजवान केसरलाल भी यात्रा कर रहा था. वह मेरे बगल वाली सीट पर बैठा हम दोनों की बातें गौर से सुन रहा था. वह कुछ पहचाना पहचाना सा लग रहा था. मैंने उससे कहा -

" आप सायद मुझसे मिल चुके हैं. "

उस युवा ने ख़ामोशी से उत्तर दिया-

" श्रीमान जी मैं आपके घर एक स्टोर के समान का प्रचार करने आया था "

मैंने कहा -

" याद आया आप एक फार्मिस्ट हैं नौकरी न मिलने के कारण आप एक स्टोर की दुकान पर काम कर रहे है. "

" जी श्रीमान जी, आपने पूछा था की आप फार्मिस्ट होकर यह काम क्यों कर रहे है मैंने कहा था की यह सर्वाइवल का सवाल है."

आज देश में न जाने कितने युवा एम ए, पीएचडी, इंजीनियर, डॉक्टर, एम बी ए, एम टेक. कानून की डिग्री लिये सड़कों पर नौकरी पाने के लिये चारो तरफ घूम रहे हैं. नौकरी न मिलने के कारण हताश होकर आत्महत्याएँ कर रहे हैं. ऐसा दौर पछत्तर सालों में कभी नही आया है.

ये युवा पीढ़ी जिसको देश के निर्माण में अपना योगदान करना चाहिए था. वह अपना और अपने परिवार का अस्तित्व बचाने के लिये संघर्ष कर रही है. बहुत सारे युवा क्रिमिनल गतिविधियों में शामिल हो गए हैं. वे अपनी कुंठा मिटाने के लिये ड्रग्स सेवन केआदी हो गए हैं और ड्रग्स सप्लाई के धंधे में सम्मिलित हो गए हैं. देश की इस नौजवान पीढ़ी के लिये बहुत ही ख़राब दौर चल रहा है.

इसका फायदा हमारे पडोसी देश उठा रहे हैं. वे चाहते हैं की भारत की युवा पीढ़ी बर्बाद हो जाये और सेना में भर्ती न हो पाए. उससे भारतीय सेना बहुत ही कमजोर हो जाएगी. जिन प्रदेशों से युवा अधिक संख्या में सेना में भर्ती होते हैं उन्ही प्रदेशों में युवाओं को ड्रग्स सेवन का आदी बनाया जा रहा है. इस धंधे में अधिकारी और कर्मचारी भी भाग ले रहे हैं. पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड और अन्य प्रदेश भी इस कुरूप ड्रग्स के धंधे में प्रकट हो रहे हैं. यह देश के लिये बहुत ही चिंता का बिषय है.

इसका उपाय यही है की सरकार सभी निजी संस्थाओं का निजी करण बंद करे. देश के अंदर लगभग सरकारी विभागों में कई करोड़ नौकरियां खाली पड़ी हैं उनको तत्काल भरा जाये. समस्त बैकों का राष्ट्रीयकारण कर दिया जाये. प्राइवेट संस्थानों में रिजर्वेशन तत्काल प्रभाव से लागू किया जाये.तभी संदीप और केशरलाल जैसे युवा हताश नही होंगे. इन जैसे युवा रूस और उक्रांइन की सेनाओं में मरने के लिये भर्ती नही होंगे.

देश में रोजगार की कमी नही है. देश भर में मेट्रो ट्रेन का जाल बिछाया जा रहा है. बड़े बड़े हाईवे बन रहे हैं. खेल स्टेडियम बनाये जा रहे हैं.बाढ़ से बचने के लिये नया ड्रेन सिस्टम बनाया जाना चाहिए. नदी, नालों का निर्माण ऐसा हो जो बड़ी बड़ी नदियों और समुद्र में गिरे.बाढ़ की समस्या से निजात पायी जा सकती है. बाढ़ से देश का खरबों रूपये बर्बाद हो जाता है. लोगों के जान माल की बहुत ही क्षति होती है. हजारों लोग प्रति वर्ष बाढ़ में मरते हैं. लोगों के लाखों घर बाढ़ की विभीषिका में तहस नहस हो जाते हैं. लाखों हेक्टयर जमीन में खड़ी फसल बर्बाद हो जाती है. लाखों जानवर बाढ़ की चपेट में आकर मर जाते हैं. देश को बहुत बड़ी हानि उठानी पडती है.

यदि बाढ़ आने के पहले बाढ़ से निपटने के पुख्ता इंतज़ाम कर लिये जाये तो करोड़ों लोगों को रोजगार मिल सकता है. बड़ी बड़ी सड़कें और स्मार्ट सिटी बनाने का ठेका बड़े बड़े लोगों की बड़ी बड़ी कंपनियों को दिया जाता है. सरकार और कंपनियों के मध्य अरबों रूपये का एग्रीमेंट होता है.

बफी बड़ी कंपनियां जो यह ठेका बिभिन्न निर्माण कार्यों का सरकार से लेती हैं वे स्वयं कार्य नही करती हैं. छोटी कंपनियों से कम कीमत पर कार्य करवाती हैं प्रत्येक जगह निर्माण कार्य बहुत ही रद्दी होता है. सड़कें, ब्रिज, बड़ी बड़ी सरकारी ईमारते एक बर्षात के पानी में ढह जाती हैं. बड़ी बड़ी कंपनियों के मालिक मुफ्त में करोड़ों और अरबों रुपये कमाते हैं. यह एक नया सिस्टम है जो लगभग दस वर्षों में विकसित हुआ है.

मेट्रो रेलवे ब्रिज बनाने का ठेका चाइना की कंपनियों को दिया जाता है. चाइना हमारा दुश्मन देश रहा है. आज का युग साइंस और टेक्नोलॉजी का युग है. यदि छोटे छोटे विफोटक तार बम ब्रिज के अंदर डाल दिए जाय और उनका कंट्रोल चाइना इंजीनियर के हाथों में हो तब यह देश के लिये एक भयंकर स्थिति होगी. चाइना में वैठे इंजीनियर भारत और चाइना के बीच युद्ध छिड़ने पर वहां से ही भारत के निर्माण कार्यों को उड़ा सकते हैं.

हमारे देश में करोड़ों प्रतिभावान इंजीनियर नौकरी की तलाश में धक्के खा रहे हैं. इन इंजीनियर लोगों से प्रत्येक निर्माण कार्य करवाना चाहिए. देश से बेरोजगारी दूर होगी हमारा देश एक समृद्धशाली देश बनेगा.

भारत देश में प्रतिभाओं की कोई कमी नही है. देश से बेरोजगारी और मंहगाई एक साल के अंदर ख़त्म की जा सकती है.भारत का खरबों का खजाना बचाया ज सकता है. पूर्णतया निजीकरण व ठेकेदारी प्रथा समाप्त कर दी जाये. हमारे देश का पैसा कुछ कॉर्पोरेट घरौंनों के हाथों में जा रहा हैं जो अपने बेटों की शादी में अरबों रुपये खर्च करते हैं. शादी में खर्च किये गए पैसों की वसूली अपने उत्पाद की कीमत बढ़ा कर करते हैं. मोबाइल एक ऐसी जरुरी चीज बन गयी है जिसके वगैर इंसान का जीना मुश्किल हो जायेगा. इसी मज़बूरी का फायदा उठाकर मोबाइल कंपनी के निर्माता मोबइल रिचार्ज के दाम बढ़ाते रहते हैं. यह बहुत खेद का बिषय है. उनकी पीढ़ी दर पीढ़ खरब पति होती जा रही हैं. भारत देश में प्रति वर्ष गरीबों की संख्या करोड़ों में बढ़ती जा रही है. जिनके पास जीने की जरुरी चीजें नही है. यदि यही हालात रहे तब पूजीपतियों के खिलाफ बगावत हो जाएगी. ये कॉर्पोरेट घराने छोटे छोटे लोगों का रोजगार छीन लेते है. कुछ साल पहले एक कॉर्पोरेट घराना फुटकर सब्जी बेचने के व्यापार में घुस गया. फुटकर सब्जी बिक्रेताओं के प्रवल विरोध के कारण उस कॉर्पोरेट घराने के मालिक को यह व्यापार बन्द करना पड़ा. अभी बहुत सारे पूजीपति हैं जो यह व्यापार कर रहे हैं. सभी चीजों की ऑन लाइन सप्लाई से छोटे व्यापारियों पर बुरा असर पड़ा है. इन बातों पर सरकार को विचार करना चाहिए. ताकि देश की आर्थिक व्यवस्था केंद्रित न हो. यहाँ पर भी कार्यरत कर्मचारियों का शोषण होता है.

कफन

नाटक

–रूपनारायण सोनकर

"लेखक ने अपनी कहानी 'कफन' का स्वयं नाट्य रूपान्तरण करके देहरादून के टाउन हाल में इसका मंचन किया। छवि फिल्म्स प्रोडक्सन ने इसी नाम से टैली फिल्म का निर्माण किया। विद्वानों ने इस कहानी को मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' से श्रेष्ठ माना। इस नाटक में डिप्टी कलेक्टर का रोल लेखक द्वारा स्वंय अभिनीत किया गया है।"

दृश्य–प्रथम

(शहर फैजाबाद में एक रिटायर्ड अधीक्षण अभियन्ता के बंगले का दृश्य है। सेवानिवृत्त अभियन्ता श्री संगम सक्सेना अपने पुत्र कम्पयूटर इंजीनियर श्री सतनाम सक्सेना से बातें कर रहा है। ड्राइंग रूम करीने से सजाया गया है। सोफासेट पड़ा है। बीच में एक कांच की मेज रखी है। पिता–पुत्र चाय पी रहे है। मेज पर बहुत लड़कियों की फोटो पड़ी है। दोनों लड़कियों की फोटो देख रहे है एवं शादी के लिए फोटो देखकर चुनाव कर रहे है।)

संगम सक्सेना– (लड़के से) लोगों ने 100 से ज्यादा फोटोग्राफ्स अपनी–अपनी बेटियों की भेजी है। पसंद करो।
सतनाम सक्सेना– एस डैड (दो–तीन लड़कियों की फोटो पिता को दिखाते हुए) ये फोटोग्राफ्स बहुत अच्छे है।
संगम सक्सेना– (हंसते हुए) अरे! बेटा वह क्यों नही कहते कि इन तीन लड़कियों में से कोई चुन लिया है।
सतनाम सक्सेना– (शरमाते हुए) जैसा डैडी आप उचित समझे।
संगम सक्सेना– मैने लड़कियों के पिताओं से उनके फोटोग्राफ्स के साथ–साथ उनकी हैसियत का विवरण मांगा था। (हैसियत का विवरण देखते हुए) इनमें कोई ऑफिसर है, कोई मैनेजर है। इन सभी की हैसियत बहुत कम है। कोई भी 20 लाख रूपये से ज्यादा दहेज नही देना चाहता है। हमे एक करोड़ रूपये दहेज में चाहिए। इनमें से एक रूपया कम नहीं।
सतनाम सक्सेना–यस डैडी,
संगम सक्सेना– मैने न जाने कितना रूपया तुम्हारी पढ़ाई–लिखाई में खर्च किया है। वह सब मिलना चाहिए।
सतनाम सक्सेना– आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।
संगम सक्सेना– देखो! लड़की तो उन्नीस बीस चल जाएगी लेकिन भरपूर दहेज मिलना चाहिए। आज के युग में बेटा पैसा ही सब कुछ है। आदमी का रूतबा, शान–शौकत सभी पैसे पर आधारित है। इस दौर में आदमी चाहे जितना बड़ा क्यों न हो लेकिन यदि उसके पास पैसा नहीं है तो वह दो कौड़ी का भी नहीं है।
सतनाम सक्सेना– डैडी, आपको जिन्दगी का तर्जुबना ज्यादा है। आप दुनिया को अच्छी तरह जानते है। आपकी यही व्यहारिकता मुझे ज्यादा पसंद है। डैडी मैं दहेज के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। आप जो फैसला लेंगें मैं मान लूंगा।
संगम सक्सेना– शाबाश बेटा! शाबाश बेटा! शाबाश बेटा! तुमसे मैं यही उम्मीद कर रहा था। मैंने भी तुम्हारी मम्मी के घरवालों से अपनी शादी में उस समय 15 लाख रूपये दहेज में लिए थे। उस समय पन्द्रह लाख रूपये की बहुत बड़ी कीमत थी। आज के एक करोड़ा रूपये से भी ज्यादा।
सतनाम सक्सेना– क्या, डैडी मम्मी के घरवालों ने इतना बड़ा दहेज आसानी से दे दिया था।

संगम सक्सेना– बेटा, इतना बड़ा दहेज कोई भी आसानी से नहीं देता है। तेरे दादा जी दहेज पर, अड़ गये थे। तब उन्होंने अपना एक आलीशान बंगला बेच दिया था।
सतनाम सक्सेना– क्या इस बात को लेकर कोई जिरह–हुज्जत नहीं हुई थी ?
संगम सक्सेना– कुछ दिन उन लोगों को तनाव रहा था। बाद में सभी लोग नॉर्मल हो गये थे। (श्रीमती गायत्री देवी, संगम सक्सेना की पत्नी का कमरे में प्रवेश)
गायत्री देवी– बेटा, बंगला बेचने के बाद तेरे ननिहाल के लोग आज भी किराये के मकान में रह रहे हैं। बेटा! तू ऐसा काम मत करना। यदि कोई खुशी से दहेज दे तो ले लेना। किसी को भी मजबूर मत करना। मैं अपने घरवालों को असहाय होते देख चुकी हूं। मै अपने ही परिवार की कन्या भ्रूण हत्या की घटना बताती हूं। मेरे बड़े भाई के दो बेटियां पिंकी और रिंकी थी। तीसरी बेटी भाभी के पेट में आते ही मजबूरी वश उसकी कन्या भ्रूण हत्या कर दी। क्योंकि इन तीनों बेटियों की शादी में दहेज कहां से देते? आप लोग इसकी शादी में इतना अधिक दहेज मांगकर समाज में दहेज का विकराल दानव मत पैदा कीजिए, जो औरत के पेट के अन्दर पल रही कन्याओं का भ्रूण खाने का जिम्मेदार हो।

(फ्लैश बैक)
भाई शेखर सिन्हा, भाभी पार्वत व बहिन गायत्री देवी आपस में बात करते हुए। यह एक अस्पताल का दृश्य है।

शेखर सिन्हा– (पार्वती से) देखो! पार्वती हमारे पास दो बेटियां पहले से ही है। तीसरी बेटी पेट के अन्दर है। इसका गर्भपात करवा लो।
पार्वती– मेरा मन तो गर्भपात करवाने को नहीं कह रहा है लेकिन हमारे सामने बहुत मजबूरी है। हम अपनी बेटियों की शादी में लाखों रूपयों का दहेज कहां से देंगे?
शेखर सिन्हा– पिताजी ने बहिन की शादी में एक आलीश. ान कोठी बेच दी थी। घर में रखे सोने चांदी के जेवरात भी दहेज में दे दिये थे। आज तक हम लोग दूसरा नया घर नहीं बना पाये है। हम लोग एक छोटे किराये के मकान में रह रहे हैं।
गायत्री देवी– भईया! यह तो अनर्थ है। लेकिन मैं आपकी मजबूरी को जानती हूँ। (शेखर सिन्हा, पार्वती व गायत्री देवी तीनों एक दूसरे को पकड़कर रोते है। स्ट्रेचर पार्वती को ऑपरेशन रूम में ले जाते हुए)
संगम सक्सेना– (गुस्सा होते हुए) तुम बीच में मत बोलो।
गायत्री देवी– क्यों न बोलूं ? मै अपने घरवालों की पीड़ा को देख चुकी हूँ। बंगला बेचने व मेरी शादी निपटाने के बाद मेरे पिता जी एक साल बाद हर्ट अटैक से मर गये थे।
संगम सक्सेना– उसका दोषी मैं नहीं था। उनको हार्ट की बीमारी थी। इसलिए उनका स्वर्गवास हो गया था।
गायत्री देवी– मेरे भाई आज भी अपना निजी मकान नही बना पाये है। बेचारे किराये के मकान में रहते हैं।
संगम सक्सेना– (क्रोधित होते हुए) तुम रसोई में जाओ। थोड़ा दूध मंगवा लो एक डिप्टी कलेक्टर साहब अपनी पुत्री का रिश्ता लेकर आने वाले है। तुम हम लोगों के बीच में मत आना। (गायत्री देवी कमरे से बाहर निकल कर कीचन में चली जाती है)
सतनाम सक्सेना– मम्मी जी, पुराने विचारों वाली है। मम्मी जी आज की दुनियां को नहीं जानती हैं। लेकिन डैडी जी, आप एक दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति है।
संगम सक्सेना– गिरधारी (नौकर जिसकी उम्र लगभग 36 साल है कमरे में आता है।)
गिरधारी– जी हूजूर।
संगम सक्सेना– (जेब से 50 रू0 का नोट निकाल कर देता है) देखो आधा किलो दूध, एक पैकेट नमकीन, एक पैकेट बिस्कुट लेकर तुरन्त आओ। कुछ लोग आने वाले है।
सतनाम सक्सेना– क्या डिप्टी क्लेक्टर साहब अभी आने वाले हैं ?
संगम सक्सेना– हाँ बेटा, मैंने तुम्हें बताया नहीं था।
सतनाम सक्सेना– कोई बात नहीं है डैडी, आप जो करेंगे सही करेंगे।
संगम सक्सेना– बेटा, जब कोई रिश्ता पक्का होने लायक होगा तब मैं तुमको लोगों से मिलवाऊंगा। (उसी समय रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर एस0के0 सक्सेना अपनी पत्नी श्रीमती रोहिणी सक्सेना के साथ कमरे में प्रवेश करते है। पिता–पुत्र उनका स्वागत करते हैं) आइए–आइए डिप्टी कलेक्टर साहब (हाथ मिलाते हुए) यह मेरा पुत्र कम्प्यूटर इंजीनियर सतनाम सक्सेना है।
सतनाम सक्सेना– नमस्ते अंकल, आंटी जी (पुत्र कमरे से निकल कर लान में चला जाता है।)
संगम सक्सेना– अरे! डिप्टी कलेक्टर साहब आप कब रिटायर हुए।
एस0के0 सक्सेना– सक्सेना जी, अभी लगभग 6 माह हुआ है।
संगम सक्सेना– क्या आप डायरेक्ट पी0सी0एस0 से भर्ती हुए थे।
एस0के0 सक्सेना– नहीं, मैं नायब तहसीलदार से भर्ती हुआ था। फिर तहसीलदार बना। इसके बाद डिप्टी कलेक्टर। मै 15 वर्ष तक डिप्टी कलेक्टर रहने के बाद रिटायर हुआ हूँ।
संगम सक्सेना– प्रदेश स्तर की यह सबसे बड़ी पोस्ट है।
एस0के0 सक्सेना– (गर्व से) आप बिल्कुल सही कह रहे है। मैने गर्वमेन्ट के प्रति कादारी पूर्वक कार्य किया है।
संगम सक्सेना– आप तो एक काबिल व सक्षम डिप्टी कलेक्टर रहे है।
एस0के0 सक्सेना– (हंसते हुए) आज का युग बड़ा चैलेजिंग है। बिना किसी व्यवधान के यदि आदमी अपनी सेवा का कार्यकाल पूरा कर ले तो बहुत संतोष मिलता है। (अपनी बेटी की फोटो संगम सक्सेना को पकड़ाते हुए) यह मेरी बेटी का फोटो है। आप इसको देख लीजिए।
संगम सक्सेना– अरे फोटो को क्या देखना ? आप दोनों इतने सुन्दर हैं तो बेटी सुन्दर ही होगी।
एस0के0 सक्सेना– धन्यवाद सक्सेना जी। आप मेरी बेटी को भी मेरे घर आकर देख लें तो बात आगे बढ़े।
संगम सक्सेना– बात तो आपको ही आगे बढ़ानी है।
एस0के0 सक्सेना– क्यों नही हम लड़की वाले है। पहल तो हमारी ही तरफ से होगी।
संगम सक्सेना– क्या तहसील में रेव्युनू कार्यो के अलावा बहुत सारे अन्य कार्य भी करने पड़ते है। मसलन टैक्स वस. ूली, इलेक्शन आदि के कार्य।
एस0के0 सक्सेना– एस!
संगम सक्सेना– तो इलेक्शन कराने का बजट भी आता होगा।
एस0के0 सक्सेना– बजट कई करोड़ का आता है। मैं डिप्टी कलेक्टर रहते विधानसभा और लोक सभा के कई इलेक्शन करवा चुका हूँ।
संगम सक्सेना– तब तो आप कई करोड़ के आदमी है। (हंसते हुए)
एस0के0 सक्सेना– हम तो सरकारी बैंक है। जो खर्चा इलेक्शन में लगे निकाल लीजिए। दोनों खिलखिलाकर हंसते है। बेटी की जन्म पत्री संगम सक्सेना को पकड़ाते

हुए आप, मेरी बेटी की जन्म पत्री अपने बेटे की जन्म पत्री से मिला लीजिए।

संगम सक्सेना– ये सारी दकियानूसी बातें है। मैं इन पर विश्वास नहीं करता हूँ। देखो! डिप्टी कलेक्टर साहब मैं फॉरमैल्टीज पर विश्वास नहीं करा हूँ। साफ–साफ कहने पर यकीन रखता हूँ।

एम0के0 सक्सेना– क्या चाहते है, आप, साफ–साफ बताएं?

संगम सक्सेना– देखो! मेरे पास 100 लोगों ने अप. नी–अपनी बेटियों के फोटोग्राफ्स भेजे है। कोई दहेज में 50 लाख रूपये दे रहा है तो कोई एक करोड़। आप क्या देंगे डिप्टी कलेक्टर साहब।

एम0के0 सक्सेना– (नाराज होते हुए) देखो! मै एक ईमानदार अधिकारी रहा हूँ। मेरी हैसियत इतना दहेज देने की नहीं है। (खड़ा होता है)

संगम सक्सेना– आपकी हैसियत तो बहुत है लेकिन आप अपनी बेटी की शादी बिना दहेज के ही करना चाहते है।

रोहिणी– नहीं भाई साइब! ऐसी बात नहीं है। शादी की जो भी रीति–रिवाज है हम उनको पूरा करेगें। हम लड़की के लिए सोने की चेन व अंगूठी की व्यवस्था भी करेंगे।

संगम सक्सेना– और क्या व्यवस्था करेगी। बस इतना ही दहेज देना चाहती हैं।

रोहिणी– भाई साहब हमने लड़की के पैदा होते ही पांच–पांच सौ रूपये प्रत्येक माह इक्कीस सालों तक उसके नाम जमा किया है। विभिन्न योजनाओं व एल0आई0सी0 आदि से पन्द्रह लाख रूपया इकट्ठा हो गया है।

संगम सक्सेना– यह दहेज तो ऊंट के मुंह में जीरा है।

रोहिणी– हमने बैंक वालों से बात कर लिया है। एक अच्छी कार भी दहेज में देंगे। टी0वी0, फ्रीज व ए0सी0 अलग से देंगें और अच्छी क्वालिटी का फर्नीचर भी देंगे।

संगम सक्सेन– इसके अलावा हमें दहेज में एक करोड़ रूपया भी चाहिए।

एस0के0 सक्सेना– यदि मेरी हैसियत दहेज देने की होती तो भी मैं कदापि न देता।

संगम सक्सेना– क्यों ?

एस0के0 सक्सेना–क्योंकि दहेज लेना व देना एक बहुत बड़ा जुर्म है।

संगम सक्सेना– जुर्म कैसे है ? मैंने अपने लड़के को इंजी. नियर बनाने में लाखों रूपयें खर्च किये है। उसकी तो भरपाई होनी ही चाहिए।

एस0के0 सक्सेना– मैंने भी तो अपनी बेटी को पढ़ाने में ला खों खर्च किये है। वह पी0सी0एस0 (अलाइड) सेवा में आ गयी है।

संगम सक्सेना– आप अधीक्षण अभियन्ता रहे है। आपका लड़का इंजीनियर है, लेकिन आप दोनों बहुत ही कन्ज. रवेटिव है। बिना मेहनत के ही सोना पाना चाहते है। सोना पाने के लिए सोने की खदानों को खोदना पड़ता है। बहुत गहराई में जाना पड़ता है। तब कहीं सोना हाथ लगता है। लेकिन कुछ लोग सोना पाने के लिए औरतों और आदमियों का सोना छीन लेते है। ऐसे लोगों का सोना जेल में होता है। उनका सोना टट्टा होता है।

संगम सक्सेना– डिप्टी कलेक्टर साहब, आप साहित्यिक भाषा बोलकर हमें झांसे में लेना चाहते है। हमारे अरमानों पर पानी फेरना चाहते है।

एस0के0 सक्सेना– आमों से लदा हुआ पेड़ समय आने पर चूना पसंद करता है। आंधी–तूफान से आमों का झड़ना पेड़ को नागवार लगता है। आंधी–तूफान इतने लालची होते है कि सारे के सारे फल, पेड़ से उजाड़ कर अपने साथ ले जाना चाहते है।

संगम सक्सेना– आप हमारे दहेज पाने के अधिकार को लालच कह रहे है।

एस0के0 सक्सेना– लालच बिल्कुल गू की तरह होता है, जिस तरह बड़ी–बड़ी मक्खियां गू के ढेले बना–बना कर उनको लुढ़काते हुए एक जगह इकट्ठा करती जाती है। उसी तरह लालच रूपी गू के ढ़ेले मानव के मन मस्तिष्क पर इकट्ठे होते जाते हैं।

संगम सक्सेना– देखिए डिप्टी कलेक्टर साहब, यह लालच नही है। हम तो आपसे एक अपार्टमेन्ट में एक फ्लैट के बराबर दहेज मांग रहे है। फ्लैट में हम सभी के साथ–साथ आपकी बेटी भी रहेगी, क्योंकि फ्लैटों में सारी सुख–सुविधाएं मौजूद रहती है। सेक्यूरिटी से लेकर बिजली, पानी की सुविधा चौबिसों घंटे उपलब्ध रहती है। आप मुझे जो दहेज देंगे, मैं उससे फ्लैट खरीदूँगा, जिसमें आपकी बेटी राज करेगी।

एस0के0 सक्सेना– सक्सेना जी आप दहेज को उचित ठहराने की कोशिश मत कीजिए, जिस तरह शहरों में गगन चुम्वी इमारतें होती हैं। बहुत माले होते है। उसी तरह आप ख्वावों के इतने ऊँचे– ऊँचे माले बना रहे है, जो गगन चुम्बी इमारतों को भी मात दे दें। आप दहेज को उन्हीं मालों में रखना चाहते है।

संगम सक्सेना– आप हमारी प्रथाओं और मान्यताओं पर प्रहार मत कीजिए। आप बताइए एक करोड़ रूपये दहेज में देंगे की नहीं देंगे। मैं आपकी ऊल–जलूल बातें नहीं सुनना चाहता हूँ । दहेज देंगे कि नहीं ?

एस0के0 सक्सेना– कदापि नहीं। जब मैं प्रथम श्रेणी मजि. स्ट्रेट था मैनें न जाने कितने दहेज लोभियों को जेल भेजा था।

संगम सक्सेना– आप धमकी दे रहे हैं।

एस0के0 सक्सेना– मैं, आपको बता रहा हूँ। आपको पता है कि आप जैसे लोगों की वजह से बहुत सारी लड़कियाँ कुंवारी रह जाती हैं। असहाय माँ–बाप अपनी जम. ीन–जायदाद बेचकर अपनी सारी जमा पूंजी आप जैसे दहेज लोभियों को दे देते है। तुम जैसे लोग दहेज के कारण बहुओं को आग में जलाकर व पंखे में लटाकाकर मार देते है।

संगम सक्सेना– (गुस्सा होते हुए) आप मेरें घर में ही मेरी बेइज्जती कर रहे हैं ? हम दहेज लोभी नहीं है। हमने

लड़के की पढ़ाई में जो खर्च किया है वही मांग रहे हैं।
एस0के0 सक्सेना– (दांत पीसते हुए) आप लोगों की वजह से मां–बाप पेट में पल रही लड़कियों को मार देते है। पता है आपको! यदि यही हाल रहा तो लड़कियाँ इस धरती से गायब हो जायेगी जैसे डायनासोर गायब हो गये हैं।
संगम सक्सेना– आपने एक पैसा भी दहेज का नहीं दिया और मुझ पर झूठा आरोप लगा रहे है। अपनी जुबान संभ. ाल कर बात करो।
एस0के0 सक्सेना– दहेज लोभी रूपी काला नाग घर–घर में घुस आया है। फन काढ़ कर बैठा है। (हाथ से फन बनाते हुए) बिना इस नाग को मारे घर में प्रवेश नहीं किया जा सकता है। यही काले नाग औरतों के पेट के अन्दर पनप रही कन्याओं के भ्रूण खा रहे है। इसलिए लड़कियों का अनुपात लड़कों के मुकाबले तेजी से घट रहा है। तुम जैसे दहेज के दानव ही कन्या भ्रूण हत्याओं के जिम्मेदार है।
संगम सक्सेना– (क्रोधित होकर जोर से बोलते हुए) यानि आप हमारे घर के अन्दर हमें मारोंगे।
एस0के0 सक्सेना– तुम लोगों को सबक सिखाना जरूरी है। दहेज मांगने की तुम्हारे खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जायेगी। (जोर की आवाजें सुनकर उनका लड़का कमरे के अन्दर आ जाता है। उसके बाप और एस0के0 सक्सेना में लपटा–झपटी होने लगती है। लड़का दोनों को छुड़ाता है)
सतनाम सक्सेना– यह दुष्ट आदमी कहां से आ गया डैडी ? आपने इसको क्यों बुलाया था ?
संगम सक्सेना–मैं इन गीदड़ भभकियों में नही आता हूँ। दे खता जा तेरी शादी तभी होगी जब तुझे एक करोड़ रूपये दहेज में मिलेगा। यह डिप्टी कलेक्टर सनकी है। रिटायर होने के बाद भी अपनी डिप्टी कलेक्टरी दिखा रहा है। तूने रोक दिया नही तो इस दुष्ट को नंगा करके यहां से भेजता।
एस0के0 सक्सेना– बन्दर सदैव दूसरों का घर उजाड़ता रहता है। उसे दूसरों का घर उजाड़ने में बहुत मजा आता है। उस घर में उसे जो भी सामान मिलता है वह उसे छीनकर खा जाता है। लेकिन जब वह मरता है घर विहीन मरता है।
सतनाम सक्सेना– डैडी! इसको समझाइए! वरना अनर्थ हो जायेगा।
एस0के0 सक्सेना– ऐ! सृष्टि के विनाशकर्ताओं दहेज के नाम पर मजबूर लड़की के मां–बाप की सम्पत्ति छीनने वाले वहशी लुटेरों, इस धरती पर तुम जैसे लोग कलंक हो। तुम लोग इस धरती पर बहुत बड़ा भार हो। पढ़े–लिखे होकर बड़े–बड़े सरकारी पदों में रहने के बाद भी तुम लोग दहेज के लिए इतना अधिक भूखे हो कि सारा ब्रह्माण्ड ही निगल जाओ।
संगम सक्सेना– किसान, मजदूर, उद्योगपति, छोटी नौकरी से लेकर बड़ी नौकरी करने वाले तक सभी बिना दहेज के शादी नहीं करते है। जो कानून बनाते व लागू करने वाले हैं वही दहेज लेते है, तो हम क्या बुरा कर रहे हैं।
एस0के0 सक्सेना– जो भी धरती पर शादी में दहेज लेता है वह बहुत बड़ा गुनहगार है। देखो! दुष्टों तुम लोगों की वजह से लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा तेजी से घ ाट रहा है। इन पंक्तियों को सुनो–

मेल–फी–मेल का टेस्ट
जहां लड़कियों का भ्रूण होता है नष्ट
एक दिन ऐसा आयेगा
जब संसार में केवल लड़के ही लड़के नजर आयेगें
लड़कियों को आप खोजते रह जायेगें। डायनासोर की तरह
मानव प्रजाति को
इस धरती से विलुप्ते पायेंगे।"

दृश्य द्वितीय

(संगम सक्सेना अपने बड़े बंगले के लान में टहल रहा है। उसी समय बनारस से एक डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल श्री जीतलाल श्रीवास्तव अपनी निजी डॉक्टर अमय के साथ अपनी बेटी का रिश्ता लेकर आते है। आपस में दुआ–सलाम करते है। लॉन में ही कुर्सियां डाल देते है। बातों का सिलसिला शुरू होता है। काली–काली चाय पीने को आती है। उसमें दूध की कंजूसी की गई है।)

संगम सक्सेना– प्रिंसिपल साहब! आपसे मेरी फोन पर बात हो गयी थी। हम लोग पहले नहीं मिले थे। आज पहली बार मिल रहे हैं।
जीतलाल श्रीवास्तव– आपकी शर्तों के अनुसार मैं अपनी हैसियत का लेखा–जोखा लाया हूँ। (सम्पत्ति का विवरण पत्र सक्सेना को पकड़ाते हुए और टेबल पर रखी काली–काली चाय पीते हुए)
संगम सक्सेना– (सम्पत्ति का विवरण पत्र पढ़कर बूढ़ी आंखे, चमकने लगती है) आप तो करोड़ों की सम्पत्ति के स्वामी है।
जीतवाल श्रीवास्तव– सक्सेना जी, अंग्रेजों ने हमें बहुत ही अचल सम्पत्ति बनारत शहर में दी थी। हमारे पास 24 दुकाने है। लगभग 15 लाख रूपये इन दुकानों से सालाना किराया मिलता है। हमारे पास बैंक बैलेंस भी अच्छा खासा है।
डॉक्टर अमय– (काली चाय का प्याला उठाते हुए और संगम सक्सेना की ओर व्यंग्य करते हुए) आप काली चाय बहुत पसंद करते है।
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– जिस घर में चाय बिल्कुल काली–काली बनती है दूध नाममात्र का डाला जाता है। चाय में मिठास बिल्कुल नही होती है। एक प्याला चाय उस घर की असलियत खोल देती है। चाय में घुला चाय का एक–एक काला–काला कण उस घरवालों के काले–काले विचारों को उजागर करता नजर आता है। आप एक प्याले चाय से उस घर की असलियत जान सकते

है। उस घर की चाय पीना जहर पीने जैसी होती है। (उछल–उछल कर डांस करता है।)

संगम सक्सेना– आप तो राजा हैं, राजा। आपने अपनी बेटी का बायोडाटा भेजा था उसकी फोटो देखकर मेरे बेटे ने कहा है कि यह तो कोई अप्सरा है।

जीतलाल श्रीवास्तव– यह तो मेरा सौभाग्य है कि मैं अपनी बेटी का पिता हूँ। मेरी बेटी अंग्रेजी और मैथ में एम0ए0 है। इस समय मेरी बेटी उ0प्र0 की एक यूनिवर्सिटी में गणित की प्रवक्ता है।

संगम सक्सेना– और क्या खूबियां है आपकी बेटी में ?

जीतलाल श्रीवास्तव– वह खाना बहुत अच्छा बनाती है। सारे घरेलू कार्य उसे अच्छी तरह आते हैं। देशी व विदेशी संगीत में पारंगत है। भारत नाट्यम में उसे राष्ट्रीय स्तर के अवार्ड मिल चुके हैं।

संगम सक्सेना– यह तो मेरा सौभाग्य है कि ऐसी सुशील व सभी गुणों में पारंगत एक खूबसूरत बहू मुझे मिल रही है। यह मेरे बेटे की खुश किस्मती है कि ऐसी लड़की से उसकी शादी हो रही है।

जीतलाल श्रीवास्तव– (फोटो और जन्म पत्री देते हुए) यह लड़की का फोटो और उसकी जन्म पत्री है। आप अपने लड़के की जन्म पत्री से मिलान कर लें। आज के इस वैज्ञानिक युग में आप चाहें तो मेरी बेटी और अपने बेटे का ब्लड टेस्ट करवा लें मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

संगम सक्सेना– श्रीवास्तव जी, मेरा बेटा एक कल्चरल प्रोग्राम में आपकी बेटी को देख चुका है। लड़की उसको पसंद है। दोनों की जन्म पत्रियों का मिलन दकियानूसी बातों को दर्शाता है। दोनों के ब्लड टेस्ट करवाने का प्रचलन अभी भारत देश में शुरू नहीं हुआ है।

(फ्लैश बैक)

(सलीला श्रीवास्तव एक फंग्शन में भारतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत करते हुए।)

जीतलाल श्रीवास्तव– धन्यवाद, यह मेरा सौभाग्य है कि आपके लड़के ने मेरी बेटी को पसंद कर लिया है।

संगम सक्सेना– श्रीवास्तव जी, मै पुराने विचारों का आदमी हूँ फिर भी अपनी बातें कहने में संकोच नहीं करता हूँ। मेरे पास लगभग 100 लोग अपनी–अपनी बेटियों का रिश्ता मेरे बेटे के साथ लेकर आये। उनमें से 15 आदमी मेरे द्वारा बताये दहेज को देने हेतु तैयार भी हो रहे थे, लेकिन मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं उनकी सारी सम्पत्ति छीन रहा हूँ।

जीतलाल श्रीवास्तव– सक्सेना जी, आप अपनी बात खुल कर कह सकते है। यह मेरा सौभाग्य है कि एक खूबसूरत नौजवान इंजीनियर मेरा दामाद बन रहा है।

संगम सक्सेना–देखिए! श्रीवास्तव जी, दहेज के बारे में खुलकर बात कर लीजिए।

जीतलाल श्रीवास्तव– आप बतायें क्या बात करना चाहते है।

संगम सक्सेना– आप तो बहुत बड़े विद्वान है। बहुत समझदार है। लड़की वालों को क्या–क्या बातें करना चाहिए।

जीतलाल श्रीवास्तव– सक्सेना साहब, मेरी लड़की पश्चिम उत्तर प्रदेश के एक विश्वविद्यालय में प्रवक्ता है। उसकी बहुत अच्छी तनख्वाह है। हर गुण में निपुण है। मेरे विचार से इससे ज्यादा दहेज और क्या चाहिए आपको ?

संगम सक्सेना– श्रीवास्तव साहब, प्रैक्टिकल बात करिए। आप तो बहुत ही घनाड्य आदमी है। अपनी बेटी के बारे में क्या सोचा है ?

जीतलाल श्रीवास्तव– आप बताएं, मै अपनी बेटी के बारे में क्या सोचू ? अभी तक तो मैने उसके बारे में अच्छा ही सोचा है। मेरी जितनी भी जायदाद है आधी मेरी बेटी और आधी मेरे वैज्ञानिक बेटे समरपाल श्रीवास्तव की है।

संगम सक्सेना– मै अधीक्षण अभियन्ता के पद सें रिटायर हुआ हूँ। मैं चाहता हूँ कि पुणे या बंगलौर में एक फ्लैट, अपार्टमेन्ट में खरीद लूँ। आप तो जानते ही है कि अच्छे फ्लैट की कीमत एक करोड़ के लगभग आती है।

जीतलाल श्रीवास्तव– आप पुणे या बंगलौर में बहुमंजिला अपार्टमेन्ट में इतना कीमती फ्लैट क्यों लेना चाहते है ?

संगम सक्सेना– मैंने नौकरी उन्हीं शहरों में की है। मेरे बेटे की पोस्टिंग भी पुणे में है। उसकी ऑल इंडिया सर्विस है। बेटे के पुणे से बाहर ट्रांस्फर होने पर फ्लैट में मुझे ही रहना है। वृद्धावस्था, मैं फ्लैट में रहकर काटना चाहता हूँ।

जीतलाला श्रीवास्तव– आप मुझसे क्या चाह रहे है ? मेरी बेटी के लिए आप के लड़के से अच्छा वर नहीं मिल सकत. ा।

संगम सक्सेना– मै चाहता हूँ कि शादी में आप हमें एक फ्लैट के बराबर पैसा दें लगभग एक करोड़ रूपयें

जीतलाल श्रीवास्तव– देखिए! मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी सारी जायदाद में से आधी जायदाद की रजिस्ट्री शादी के बाद अपनी बेटी के नाम कर दूँ और शादी के बाद दहेज का एक करोड़ रूपये बैंक में अपनी बेटी के नाम जमा कर दूँ। आप जो दहेज मांग रहे है मैं इस तरह देने को तैयार हूँ।

संगम सक्सेना– आप, इसमें थोड़ा परिवर्तन करें। आप शादी के पहले एक करोड़ रूपयें दें और शादी के बाद आधी जम. ीन जायदाद का बैनामा अपनी बेटी के नाम करें और शादी में हमें सोने–चांदी–हीरे–जवाहरात के गहनें भी दें।

जीतलाल श्रीवास्तव– यह मेरें लिए कोई बड़ी बात नहीं है। आप जैसा चाह रहे हैं वैसा ही करेंगे, देखो! हमारे पास बहुत ही पुराने जमाने के हीरे–जवाहरात व सोने–चांदी के जेवरात है। लोगों की नजरें हम पर रहती है। आप सगाई वाले दिन एक मेटाडोर या ट्रक भेज दें। मै बड़े बाक्स में गहने भेज दूँगा। मैं अपने चार विश्वासपात्र नौकर भी उसी मेटाडोर या ट्रक में भेज दूँगा जो बाक्स को उतारकर आपके घर में रखेगें।

संगम सक्सेना– मैं गदगद हो गया। वास्तव में आप महान है। आप हम सबके बारे में कितना अच्छा सोचते है। हम सब का कितना ध्यान रखते हैं आप।

जीतलाल श्रीवास्तव– अभी तक तो हमने अपने होने वाले दामाद और अपनी बेटी का ध्यान रखा है। हमने तो अभी तक लड़के के बाप यानि आपके बारे में कुछ सोचा ही नहीं है।

संगम सक्सेना– आप कितने दयालु व सहृदय है जो लड़के के पिता के बारे में भी कुछ करना चाहते हैं।

संगम सक्सेना– सारा दहेज का सामान तो दामाद को मिल जायेगा। आप को कुछ नहीं मिल पायेगा। मै चाहता हूँ कि आप को कोई ऐसा तोहफा दूँ जो आप का बुढ़ापा काट दें।

संगम सक्सेना– (मुंह के अन्दर से जीभ निकाल कर होठों में फेरने लगता है) हा–हा–हा आप बताइए, आप जीतलाल श्रीवास्तव जी हमें क्या देंगें ?

जीतलाल श्रीवास्तव– श्रीमान जी, आप धीरज रखें।

संगम सक्सेना– (पुनः होठों पर जीभ फेरते हुए) श्रीवास्तव जी, आपने उत्सुकता पैदा कर दी है। आदमी के अन्दर जिस चीज को पाने की जिज्ञासा पैदा हो जाती है बिना उसको पाये उसको चैन नहीं मिलता है।

जीतलाल श्रीवास्तव– क्या आपने मेरी बेटी का रिश्ता मंजूर कर लिया है ?

संगम सक्सेना– हाँ, मुझे यह रिश्ता मंजूर है।

जीतलाल श्रीवास्तव– लेकिन मुझे आपत्ति है।

संगम सक्सेना– (आश्चर्य से) अरे! श्रीवास्तव जी, आपको क्यों आपत्ति है ? आपत्ति तो लड़के वालों को होती है।

जीतलाल श्रीवास्तव– हमारी बिरादरी के कुछ नियम–कानून हैं। आपको उनका पालन करना होगा।

संगम सक्सेना– आप श्रीवास्तव और मैं सक्सेना हूँ। हमारी और आपकी बिरादरी एक ही है।

जीतलाल श्रीवास्तव– नहीं हमारा पूरा परिवार अपने–अपने नामों के साथ श्रीवास्तव लगाता है लेकिन हम मेहतर जाति के हैं।

संगम सक्सेना– (आश्चर्यचकित होकर) यह आप क्या कह रहे हैं ?

जीतलाल श्रीवास्तव– मैं सच कह रहा हूँ। आपने सामाचार पत्रों में शादी का विज्ञापन दिया था उसमें जाति बन्धन नहीं था इसलिए हम अपनी लड़की का रिश्ता लेकर आपके पास आये।

संगम सक्सेना– (थोड़ा सोचते हुए) हम लोग जातिवाद पर विश्वास नहीं करते है। हम रिश्ता करने को तैयार है।

जीतलाल श्रीवास्तव– हमारी कुछ शर्ते है, उनको आपको मानना होगा।

संगम सक्सेना– आप अपनी शर्ते बातइए। हम भी सुने आपकी कौन–कौन सी शर्तें है ?

जीतलाल श्रीवास्तव– एक मचान या घर की छत के ऊपर हमारी बिरादरी के चौधरी बैठेगे। आप और आपका लड़का मचान के नीचे बैठेगे। हमारे चौधरी सूअर का पका हुआ गोश्त खायेंगे और हड्डियां चूस कर नीचे फेकेंगे। आपको उनकी खायी हुई जूठी हड्डियां चूसना होगा और उनके द्वारा ऊपर से नीचे फेंका गया जूठा गोश्त भी खाना होगा।

संगम सक्सेना– आप ऐसा क्यों करवायेंगें ?

जीतलाल श्रीवास्तव– हमें यकीन हो जायेगा कि आप मेहतर बिरादरी में शामिल हो गये है। क्योंकि मेहतर जाति को जानने के बाद यदि आपने मेरी बेटी को घर से भगा दिया या छोड़ दिया तो हम उसको सहन नहीं कर पायेंगें।

संगम सक्सेना– हम यह करने को तैयार है लेकिन आपको इसके लिए पांच लाख रूपये और देना होगा। इस तरह आपको एके करोड़ पांच लाख रूपये देने होंगे।

जीतलाल श्रीवास्तव– (गर्व से) मुझे मंजूर है।

एक अद्वविक्षिप्त व्यक्ति– लालच और स्वाभिमान की जंग जारी है। लालच धन पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार है। स्वाभिमान सर उठाने के लिए सब कुछ लुटाने को तैयार है। एक धन को सर्वोपरि मान रहा है। दूसरा सम्मान और प्रतिष्ठा को (उछल–उछल कर डांस करता है।)

संगम सक्सेना– यदि और कोई शर्त हो तो बताइए हम आपकी प्रत्येक शर्त मानने को तैयार है।

जीतलाल श्रीवास्तव– देहातों में आज भी मेहतर जाति के पुरूष और स्त्रियां दूसरों के घरों का मैला साफ करते है। आप दोनों को एक–दिन दूसरों के घरों का मैला साफ करना होगा।

सतनाम सक्सेना– अंकल, आप हम लोगों से ऐसा घृणित कार्य क्यों करवायेगें?

जीतलाल श्रीवास्तव– ऐसा करके आप लोग पूर्णतयः मेहतर बन जायेगें। हमें पूरा यकीन हो जायेगा कि आप लोग मेहतर बिरादरी में शामिल हो गये है।

संगम सक्सेना– (नीचे मुंह झुकाते हुए) हमें मंजूर है। लेकिन इसके बदले आपको रूपयें 10 लाख और देना होगा।

जीतलाल श्रीवास्तव– (विजयी मुद्रा में अपना सिर ऊपर उठाते हुए) मुझे मंजूर है। (जीतलाल श्रीवास्तव कमरे के अन्दर कुर्सी में बैठे रहते है। संगम सक्सेना व सतनाम सक्सेना लान में आकर बातें करते है) (सतनाम से) अरे! बेटा यह तो बहुत ही धनाड्य आदमी है। इसको मैंने पूरी तरह जान लिया है।

सतनाम सक्सेना– अभी तक यह आदमी कहां छिपा था ? इसकी दलित भावनाओं को उकसाकर इससे बहुत सारे रूपये निकाले जा सकते हैं। मैंने भी डैड इसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर लिया है।

संगम सक्सेना– यदि यह आदमी दो साल पहले मिल गया होता तो पुणे या बंगलौर में एक करोड़ का फ्लैट खरीद लिया होता। आज उसकी कीमत कई करोड़ रूपये हो गयी होती। हम लोगों को इस मेहतर की शर्तें पूरा करने के लिए कोई पछतावा नहीं है। हमें पछतावा इस बात का है कि काश! इससे और कई शर्ते रखने को कहो।

सतनाम सक्सेना– यस डैडी,

संगम सक्सेना– (दोनों कमरे के अन्दर आ जाते है। जहां जीतलाल श्रीवास्तव बैठ है।) श्रीवास्तव जी, हम लोगों के सामने कठिन से कठिन शर्त रखे हम उसको पूरा करेंगें।
सतनाम सक्सेना– आप, गन्दी से गन्दी शर्त हमारे सामने र खे हम उसको पूरा करके दिखायेंगें।
जीतलाल श्रीवास्तव– नहीं, मेरे पास अब कोई शर्त नहीं है।
संगम सक्सेना– आप विद्वान है। अपने मस्तिष्क में कोई कठिन शर्त उपजाइए। देखो! हम अकेले कैसे पूरा करते हैं ?
जीतलाल श्रीवास्तव– बस! रहने दीजिए।
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– लालच जितना नीचे जा सकता था जा रहा था। स्वाभिमान और दलित अस्मिता आसमान की ऊँचाईयों को छू रही थी। एक पैसे को सर्वोच्च मान रहा है दूसरा अपने स्वाभिमान को। देखते हैं जीत किसकी होती है ? (उछल–उछल कर डांस करता है।)
संगम सक्सेना– देखिए! श्रीवास्तव साहब, हम लोग आपको एक ऐसी शर्त स्वयं सुझायेगें जिसको सुनते ही उस शर्त को आप हमारे सामने रखने को तैयार हो जायेंगे।
सतनाम सक्सेना– अंकल, हम लोगों द्वारा सुझायी शर्त को, हमारे सामने रखने के लिए आप विवश हो जायेगें।
जीतलाल श्रीवास्तव– ऐसी कौन सी शर्त है ?
संगम सक्सेना– आपने सुना होगा मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों को अंतिम वर्ष की पढ़ाई में प्रैक्टिकल कराते समय मानव मल चखाया जाता है।
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– ये लोग दहेज और पैसे के लालच में सुअर बन गये है। जीतलाल श्रीवास्तव इनको सुअर बना दो (उछल–उछल कर डांस करता है।)
जीतलाल श्रीवास्तव– नहीं, मैं तुम लोगों के सामने ऐसी गन्दी शर्त नही रखूँगा।
संगम सक्सेना– अंकल, हम शर्त को पूरा कर हम कभी न बदलने वाले मेहतर बन जायेगें।
जीतलाल श्रीवास्तव– मैं आपके सामने आप द्वारा सुझायी गई ऐसी गन्दी शर्त नहीं रखूँगा। मै आपके सामने तीसरी शर्त अपने आप रखूँगा। यदि आप लोग इसको पूरा कर देंगे तो मैं अलग से आप लोगों का एक करोड़ रूपये दूँगा। (जीतलाल श्रीवास्तव द्वारा तीसरी शर्त रखे जाने व उसके पूरा करने पर एक करोड़ रूपये अलग से देने की बात सुनकर दोनों के मुरझाये चेहरों पर चमक आ जाती है)
संगम सक्सेना– आप हमारे सामने शर्त रखिए।
जीतलाल श्रीवास्तव– सबसे पहले इस शर्त को कौन पूरा करेगा पुत्र या पिता।
सतनाम सक्सेना– मैं तीसरी शर्त पूरा करूंगा क्योंकि पिता जी मै उच्च तकनीकी शिक्षा के लिए विदेश जाना चाहता हूँ। मुझे पैसों की बहुत आवश्यकता है।
संगम सक्सेना– अरे! बेटा यह शर्त मुझे पूरा करने दे। हम लोगों की वृद्धावस्था में यह रूपये मेरे और तेरी माँ के काम आयेगें।
सतनाम सक्सेना– नहीं पिता जी, यह शर्त मै पूरा करूंगा।
संगम सक्सेना– नही बेटा! तू नहीं, मै शर्त पूरा करूंगा (दोनों आपस में झगड़ने लगते है। उसी समय संगम सक्सेना की पत्नी श्रीमती गायत्री देवी को मिर्गी का दौरा पड़ता है। अन्दर कमरे में छटपटाती है लेकिन पिता पुत्र दोनों कोई भी श्रीमती गायत्री देवी को बचाने नहीं जाता है।)
जीतलाल श्रीवास्तव– (पिता–पुत्र से) अरे! आप यहां खड़े है। कमरे के अन्दर आपकी पत्नी तड़प रही है। उनके गिरने की आवाज आयी है।
संगम सक्सेना– (बेटे से) सतनाम देखों! तुम्हारी माँ को क्या प्रॉबलम है ?
सतनाम सक्सेना– डैडी, आप ही जाकर देखे माँ क्यों तड़प रही है ?
जीतलाल श्रीवास्तव– (दोनों से) आप लोग कैसे आदमी है ? अन्दर एक ही पत्नी दूसरे की माँ बिलख रही है आप लोगों को उसकी कोई चिन्ता नही है ?
संगम सक्सेना– थोड़ी देर बाद अपने आप ठीक हो जायेगी। आप चिन्ता न करें।
सतनाम सक्सेना– माँ की यह आदत में शुमार हो गया है।
जीतलाल श्रीवास्तव– (अपने साथ आये डॉक्टर अमय से) डॉक्टर साहब अपनी किट लेकर जाओ और देखो अन्दर क्या बात है ? लगता है सक्सेना साहब की पत्नी को कोई समस्या है।
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– पिता पुत्र दोनों लालची और दहेज लोभी हैं। पिता पुत्र दोनों में से कोई अन्दर इसलिए नहीं जा रहे है कि यदि पिता अन्दर गया तो पुत्र जीतलाल श्रीवास्तव द्वारा बतायी गई तीसरी शर्त पूरा कर एक करोड़ रूपये ले जायेगा यदि पुत्र अन्दर गया तो पिता शर्त पूरी कर एक करोड़ रूपये पा लेगा। (उछल–उछल कर डांस करता है।)
डॉ0 अमर– जी सर, (अन्दर जाकर उसका इलाज करता है मिर्गी का दौरा सीरियस था। उसको इंजेक्शन लगाता है कुछ और दवाएं खिलाता है) (श्रीमती गायत्री देवी से) अब आप बिल्कुल ठीक है।
गायत्री देवी– मेरा पति और मेरा बेटा मेरे प्रति कितने लाप. रवाह है। यदि आप समय से इंजेक्शन न लगाते और दवाइयां न खिलाते तो पता नहीं क्या हो जाता ?
डॉ0 अमर– माता जी! आप बच गयी क्योंकि मैं मौजूद था। वरना कुछ भी हो सकता था।
गायत्री देवी– धन्यवाद डॉक्टर साहब, आप दिन रात तरक्की करें। (डॉक्टर पुनः वापस सभी लोगों के पास आ जाता है)
जीतलाल श्रीवास्तव– (डॉक्टर अमय से) सक्सेना जी की पत्नी को क्या हुआ था, अब तबियत कैसी है ?
डॉ0 अमर– सर! मिर्गी का दौरा पड़ा था। तुरन्त इलाज न मिलता तो कुछ भी हो सकता था। अब बिल्कुल नॉर्मल है।
जीतलाल श्रीवास्तव– (पिता पुत्र से) आप लोग श्रीमती गायत्री देवी का ध्यान रखा करें।

संगम सक्सेना– ऐसा कभी हुआ नहीं।
सतनाम सक्सेना– मै तो मिर्गी के दौरे के बारे में पहली बार सुन रहा हूँ।
जीतलाल श्रीवास्तव– चलो, आप सभी भाग्यशाली है कि कोई अनहोनी घटना घटित नहीं हुई नहीं तो आप लोग यही कहते है कि मेरी बेटी अपशकुन है।
संगम सक्सेना– ऐसी कोई बात नहीं है।
सतनाम सक्सेना– अंकल जी, आप दकियानूसी बातों में मत पड़े। यह वैज्ञानिक युग है।
संगम सक्सेना– (जीतलाल श्रीवास्तव से) आप हमें कुछ तोहफा देना चाहते थे। आज तक कोई भी लड़की वाला कभी भी लड़के के माता–पिता को कुछ देने के बारे में नहीं सोचता है। आप बहुत ही दयालु और नेक इंसान है। आप बताइए हमें क्या देगे। (जीभ अपने होठों पर फेरते हुए)
जीतलाल श्रीवास्तव– आप, कसम खाइए कि हम जो तोहफा आपको अभी देंगे, आप उसको उस समय खोलेगे जब मेरे द्वारा भेजा गया सोने–चांदी का बॉक्स आपको मिल जाए।
संगम सक्सेना– मैं कसम खाता हूँ कि मै आपके द्वारा दिया गया तोहफा तभी खोलूंगा जब आपके द्वारा भेजा गया बॉक्स मेरे पास पहुंच जायेगा।
जीतलाल श्रीवास्तव– धन्यवाद (अपनी अटैची से निकाल कर एक सुनहरे कपड़े में लपेटा हुआ छोटा बॉक्स संगम सक्सेना को देता है)

दृश्य तृतीय

(जीतलाल श्रीवास्तव का बंगला है। यह बंगला बनारस शहर में स्थित है। बहुत बड़ा बंगला है। ड्राइंग रूम का दृश्य है। बेटी सलिला श्रीवास्तव बहुत ही दुःखी है।)
जीतलाल श्रीवास्तव– बेटी दुःखी मत हो। मैनें जो भी निर्णय लिया है, सोच समझकर लिया है। तुम दहेज को लेकर परेशान मत हो।
सलिला श्रीवास्तव– डैडी, मै आपके निर्णय को काट नही रही हूँ, लेकिन डैडी, जो परिवार इतनी बड़ी रकम दहेज में मांग रहा हो, मै उस घर में शादी कैसे करूं ?
जीतलाल श्रीवास्तव– बेटी, हमारे पास पैसे की कोई कमी नही है। यदि वे लोग हमसे दहेज की मांग न करते तब भी हम उनको और ज्यादा दहेज देते।
सलिला श्रीवास्तव– बस यही बात है जो मुझे विचलित किये हुए है। दहेज मांग कर अपनी निकृष्ट भावनाओं को दर्शा दिया हैं।
जीतलाल श्रीवास्तव– बेटी, लड़का कम्प्यूटर इंजीनियर है। उसकी ऑल इंडिया सर्विस है। तू उसके साथ देश–विदेश घूमेगी। लड़का बहुत ही खूबसूरत है।
सलिला श्रीवास्तव– लेकिन उसके अन्दर बदसूरती है। डैडी, आदमी को अन्दर से सुन्दर होना चाहिए।
जीतलाल श्रीवास्तव– बेटी, मैंने जो निर्णय लिया है तुम्हारी भलाई के खातिर लिया है। मेरी बात मत काटो।
सलिला श्रीवास्तव– डैडी, ऐसे घटिया विचारों वाले आदमी के साथ मेरा जीवन नहीं कट सकता है। जो परिवार इतना बड़ा लालची हो। जिस परिवार ने 100–100 लड़कियों को ठुकरा दिया हो। महज दहेज के लिए ठुकराई गयी लड़कियों के दिलों में क्या बीत रही होगी डैडी ? उनकी मजबूरियों के बारें में भी विचार कीजिए।
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– जीतलाल श्रीवास्तव यदि तुम बेटी की बात मानते हो तो लड़का हाथ से निकल जायेगा। यदि तुम अपनी बात पर अड़े रहे तो लड़की दहेज लोभियों के हाथों चली जायेगी। (उछल–उछल कर डांस करता है।)
जीतलाल श्रीवास्तव– बेटी मैं क्या करूँ ?
सलिला श्रीवास्तव– (आँखों में आंसू भरे हुए) डैडी, आप यह रिश्ता कैसिल कर दो। डैडी, उन सौ लड़कियों के बारे में सोचो जिसको सक्सेना जी और उसके लड़के ने दहेज न मिलने के कारण ठुकरा दिया है। क्या हम सब की जिम्मेदारी उनके प्रति कुछ भी नहीं है। हम पढ़े–लिखे लोग समाज को नहीं बदल पायें तो फिर कौन बदलेगा ? मै यह शादी हरगिज नहीं करूंगी।
जीतलाल श्रीवास्तव–बेटी, मैं तुझे इस सोच के लिए शाबासी भी नहीं दे सकता क्योंकि मैने तेरा रिश्ता पक्का कर दिया है, बेटी, मै मजबूर हूँ। (बाप बेटी दोनों गले लग कर बिल खते हैं)
एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– ऐसे ही समय मनुष्य की कठिन परीक्षा होती है। जो इस परीक्षा में पास होता है वह सफल मनुष्य कहलाता है। जो इसमें फेल होता है वही असफल मनुष्य कहलाता है। जीतलाल श्रीवास्तव तुम सफल मानव बनना चाहते हो। विचार करो–विचार करो–विचार करो। (उछल–उछल कर डांस करता है।)

दृश्य चौथा

श्रीमती गायत्री देवी– (पति और पुत्र से कहती है। घर के सामने का दृश्य) शाम ढल रही है। सूर्य दिनभर चमकने के बाद धीरे–धीरे अपने गंतव्य स्थान की ओर जा रहा है। चिड़ियां चहचहाते हुए अपने–अपने घरों की ओर तेजी से जा रहे है। रात अपने वाली है। अंधेरा होने वाला है।
संगम सक्सेना– गायत्री देवी! रात में भी उजाला होने वाला है।
स्तनाम सक्सेना– माँ, डैडी की बात पर विश्वास करो।

दृश्य पंचम

(संगम सक्सेना, जीतलाल श्रीवास्तव द्वारा भेजे गये सोने, चांदी के बॉक्स आने की प्रतीक्षा कर रहा है। एक मेटाडोर आने वाली है। घर के बाहर वह चहल–कदमी कर रहा है। उसका पुत्र सतनाम सक्सेना पत्नी श्रीमती गायत्री देवी सभी उत्सुकता से दरवाजे की ओर ताक रहे है। एक मेटाडोर आ

जाती है। चारों नौकर मेटाडोर से लम्बे लकड़ी के बॉक्स को उतार कर एक कमरे के अन्दर रखते है। नौकरों के जाने के बाद कमरा अन्दर से बंद कर लेते है। सभी प्रसन्न मुद्रा में है। एक चाबी से संगम सक्सेना बॉक्स खोलता है। बॉक्स के अन्दर से एक घड़ा निकलता है। घड़े के अन्दर हाथ डालकर अशर्फियां हाथ पर रखकर खूब हंसता है)

संगम सक्सेना– हा–हा–हा, देखो बेटा! मेरे दृढ़ रहने का नतीजा।

सतनाम सक्सेना– क्या बात है डैडी। यू आर दि ग्रेट डैडी।

संगम सक्सेना– यह दहेज हमारी उम्मीदों से कई हजार गुना ज्यादा है। हम कई करोड़ के आदमी हो गये। हा–हा–हा।

सतनाम सक्सेना– अब मैं विदेश जा सकता हूँ। मैं अपने सारे ख्वाबों को पूरा कर सकता हूँ।

गायत्री देवी– (दोनों से) इतनी अधिक खुशी अपने द्वारा कमाये धन पर मनानी चाहिए दूसरों के द्वारा दिये गये धन पर नहीं।

संगम सक्सेना– (धन की ओर अंगुली से इशारा करते हुए) यह सारा धन हमारा है।

सतनाम सक्सेना– डैडी, इस घड़े के नीचे एक लेटर है। लेटर के नीचे दो फोल्ड किए हुए डिब्बे रखे हुए है।

संगम सक्सेना– लेटर पढ़ो।

सतनाम सक्सेना– (लेटर पढ़ते हुए) यह तोहफा श्रीमती गायत्री देवी के लिए है।

संगम सक्सेना– यह डिब्बा पहले अपनी माँ को पकड़ाओ क्योंकि यह तोहफा उन्हीं के लिए भेजा गया है।

सतनाम सक्सेना– माँ यह तोहफा पकड़ो।

गायत्री देवी– (तोहफा पकड़ कर खोलती है। तोहफा देखकर दहाड़ मारकर रोने लगती है) अरे! जीतलाल श्रीवास्तव ने मेरे लिए चांदी की चूड़ियां भेजी है। यह कैसा मजाक है ? (खूब रोती है) मेरे पति के जीते जी उसने मुझे विधवा बना दिया।

संगम सक्सेना– बेटा! जरा इन अशर्फियों और सोने–चांदी के जेवरातों को जमीन पर पटको (दोनों घड़े से मोहरें निकाल कर फर्श के ऊपर पटकते हैं। अशर्फियां, सोने–चांदी के जेवरात टूटने लगती हैं) अरे! उस मेहतर ने हम लोगों को उल्लू बना दिया है। ये अशर्फियां सोने की नहीं है। इनमें सोने का पानी चढ़ा है। (सर पकड़ कर रोता है।)

सतनाम सक्सेना– डैडी, दूसरे तोहफे के ऊपर एक पत्र और है।

संगम सक्सेना– क्या लिखा है ?

सतनाम सक्सेना– (पत्र पढ़ते हुए) यह तोहफा संगम सक्सेना के लिए है। यह तोहफा आपको बहुत पसंद आयेगा। (तोहफा संगम सक्सेना को पकड़ाते हुए)

संगम सक्सेना– (पन्नी में फोल्ड एक डिब्बे को खोलते हुए) अरे! उस मेहतर ने मेरे लिए यह कफन भेजा है। (कफन को हाथ में फहराते हुए) उस मेहतर ने हमें जीते जी मार डाला। (उसी समय उसको हार्ट अटैक हो जाता है। जमीन पर गिर कर दम तोड़ देता है। कफन उसके मृत शरीर को ढक लेता है।

एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति– दहेज के दानव ही कन्या भ्रूण हत्याओं के जिम्मेदार है। ऐसे लोगों को कफन भेजते जाइए, सृष्टि बच जायेगी। समाज में "कफनगिरी" शुरू हो जायेगी। (उछल–उछल कर डांस करता है।)

*****

कफन

–रुपनाराण सोनकर

सोना पाने के लिए सोने की खदानों को खोदना पड़ता है। बहुत गहराई में जाना पड़ता है। तब कहीं सोना हाथ लगता है। लेकिन कुछ लोग सोना पाने के लिए औरतों और आदमियों का सोना छीन लेते हैं। ऐसे लोगों का सोना जेल में होता है। उनका सोना घरों में नहीं होता है। उनका सोना टट्टा होता है।

जीतलाल श्रीवास्तव बनारस के एक कॉलेज में प्रिंसिपल थे। दो विषयों में एम0ए0 थे। उनकी दो संताने थी, एक लड़का और एक लड़की। लड़का समरपाल श्रीवास्तव बहुत बड़ा वैज्ञानिक था। लड़की सलिला श्रीवास्तव ने गणित विषय से एम0ए0 किया था पूर्वांचल के एक विश्वविद्यालय में उसको प्रवक्ता की नौकरी मिल गई थी। साढ़े पांच फीट की ऊँचाई बड़ी–बड़ी आंखे, सुडौल शरीर, ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई अप्सरा हो। साड़ी, ब्लाउज में उसके बड़े–बड़े उरोज खजुराहों की मूर्तियों को भी मात करते थे। वह पेंटिंग और संगीत में दक्ष थी। पेंटिंग की आलीशान प्रदर्शनियाँ आयोजित होती थीं जिसमें उस की पेंटिंग को सराहा जाता था। भारतीय शास्त्रीय नृत्य में वह प्रवीण थी।

यह कहना बिल्कुल गलत है कि बिना बेईमानी के धनाढ्य आदमी नहीं बना जा सकता है। इस संसार में बहुत आदमी मिलेंगे जो मेहनत, लगन और ईमानदारी से बहुत मालदार आदमी बने हैं।

पूरे परिवार में देशभक्ति खून में रच–बस गई थी। सीध ा–साधा परिवार था। किसी को भी इन प्राणियों ने कभी ध ोखा नहीं दिया था। चाहे स्वयं धोखा खा गए हों। मेहनत की कमाई पर जीते थे। दंद–फंद से कोसों दूर थे। चालाकी, चापलूसी इनको पसंद नहीं थी। सीधी बात करना ज्यादा आता था। झूठ–फरेब से नफरत थी। लालच इन तीनों प्राणियों में कभी नहीं आया था। अपनी मेहनत की कमाई से सारी सुख–सुविधायें जुटा ली थी। बंगला–गाड़ी, बैंक–बैंलेंस सब इनके पास था। इनके अल. ावा अंग्रेजों ने इनको करोड़ो की अचल सम्पत्ति प्रदान की थी। लेकिन बेटी की शादी की चिंता प्रिंसिपल साहब को सता रही थी। वे अपनी बेटी के लिए कोई अफसर, इंजी. नियर या डॉक्टर लड़का चाहते थे।

आमों से लदा हुआ पेड़ समय आने पर चूना पसंद करता है। आंधी–तूफान से आमों का झड़ना पेड़ को नागवार लगता है। आंधी–तूफान इतने लालची होते हैं कि सारे के सारे फल पेड़ से उजाड़कर अपने साथ ले जाना चाहते हैं।

फैजाबाद का सक्सेना घराना बहुत ही मध्यम आय वाला था। उस परिवार में 60 साल का मुखिया संगम सक्सेना बहुत ही लालची था। उसके केवल एक लड़का था जो कम्प्यूटर इंजीनियर था। इंजीनियर सतनाम सक्सेना सरकारी गाड़ी, बंगला पाकर अपने को सबसे बड़ा अधिकारी समझता था। वह इंटर करने के बाद मोतीलाल नेहरू इंजी. नियरिंग कॉलेज, इलाहाबाद से इंजीनियर बना था। पिता की तरह वह भी बहुत ही लोभी था।

लालच बिल्कुल गूँ की तरह होता है, जिस तरह बड़ी–बड़ी मक्खियाँ गूँ के ढेले बना–बनाकर उनको लुढ़काते हुए एक जगह इकट्ठा करती जाती है। उसी तरह लालच रूपी गूँ के ढेले मानव के मन मस्तिष्क पर इकट्ठे होते जाते हैं।

संगम सक्सेना ने अपने इंजीनियर बेटे की शादी के लिए सौ लोगों की बेटियों की फोटो मंगाई थी। एक से एक खूबसूरत लड़कियाँ, लेकिन दहेज की मांग इतनी अधिक थी कि कोई भी माँ–बाप उसको पूरा करने में असमर्थ थे। वह पचास लाख से लेकर एक करोड रुपये की डिमांड करता था वह कहता बड़े–बड़े शहरों में एक अच्छा फ्लैट पचास लाख रुपये से लेकर एक करोड़ रुपये में मिलता है। बस, मुझे शहर में एक फ्लैट चाहिए।

क्योंकि फ्लैटों में सारी सुख–सुविधाएं मौजूद रहती हैं। सिक्योरिटी से लेकर बिजली पानी की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। फ्लैटों में सबसे बड़ी सुविधा लिफ्ट की रहती है। बेटे की आल इंडिया सर्विस है। जीवन भर मैं ही फ्लैट में रहूंगा। बेटा–बहू तो नौकरी में शहर–शहर घूमते रहेंगे।

जिस तरह शहरों में गगन–चुंबी इमारतें होती है, बहुत माले होते हैं। उसी तरह संगम सक्सेना ख्वाबों के इतने ऊँचे–ऊँचे माले बनाता जा रहा था। जो गगन–चुंबी इमारत को भी मात दे दे। दहेज को उन्हीं मालों में रखना चाहता था।

एक रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर एस0 के0 सक्सेना अपनी बेटी का रिश्ता लेकर संगम सक्सेना के घर आए थे। डिप्टी कलेक्टर का नाम सुनकर संगम सक्सेना बहुत दहेज पाने के सपने देखने लगा। डिप्टी कलेक्टर का खूब स्वागत किया।

डिप्टी कलेक्टर ने संगम सक्सेना से कहा–

"आप घर आकर मेरी बेटी को देख लें तब बात आगे बढ़े।"

"बात तो आप को ही आगे बढ़ानी है।"
"क्यों नहीं हम तो लड़की वाले हैं बात तो हमें ही आगे बढ़ानी पड़ेगी।"
"अपनी बेटी के लिए और क्या–क्या आप करेंगे?"
"आप ही बताइए मैं अपनी बेटी के लिए क्या करूँ?"
"देखिए डिप्टी कलेक्टर साहब मैं सीधी बातें करने में ज्यादा विश्वास रखता हूं। लोग अपनी–अपनी बेटियों का रिश्ता लेकर आ रहे हैं। कोई पचास लाख रुपये दे रहा है तो कोई एक करोड़ रुपये देने की बात कर रहा है।"
डिप्टी कलेक्टर एस0 के0 सक्सेना नाराज हो गए और बोले–
"मैं दहेज लेने और देने में विश्वास नहीं करता"
"आप भी तो कई करोड़ के आदमी हैं।"
"मैं ईमानदारी से नौकरी करके सेवानिवृत्त हुआ हूं। मेरी हैसियत दहेज देने की नहीं है। यदि हैसियत भी होती तो मैं अपनी लड़की को आप जैसे दहेज लोभियों के हवाले नहीं कर सकता था। फिर दहेज लेना और देना कानून के खिलाफ है और एक जुर्म है। मैंने प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट की हैसियत से कई दहेज लोभियों को जेल भिजवाया है। अब, तुम कानून के शिकंजे से बचोगे नहीं।"
उसके घर से बाहर निकल कर डिप्टी कलेक्टर अपनी पत्नी के साथ बाहर आकर अपनी गाड़ी में बैठकर अपने घ ार आ गया। डिप्टी कलेक्टर सोचता है–
"दहेज एक काला नाग है जो घर के दरवाजे पर फन काढ़ कर बैठा है। इसको मारे बगैर घर में प्रवेश करना संभव नहीं है। घर–घर में ऐसे ही काले नाग बैठे है। यही काले नाग लड़कियों के भ्रूण को पेट के अंदर ही खा रहे हैं।"
भ्रूण हत्याएं संगम सक्सेना जैसे दहेज लोभियों की वजह से हो रही हैं। समाज में दहेज ने ऐसा विकराल रूप धारण कर लिया जो प्रत्येक मानव को निगल रहा है। बिना दहेज के लड़कियों की शादियाँ नहीं हो रही हैं। लोग जम. ीन–जायदाद घर–द्वार बेचकर एवं अपनी गाढ़ी कमाई बैंकों से निकालकर दहेज लोभियों को दे रहे हैं और अपनी पुत्रियों की शादियां कर रहे हैं। भारतवर्ष में दहेज न दे पाने के कारण बहुत सारी लड़कियाँ अविवाहित रह जाती है। जीवन–भर अविवाहित लड़कियों की पीड़ा और उनका दर्द माँ–बाप नहीं देख पा रहे हैं। इसलिए इस दहेज रूपी दानव से छुटकारा पाने के लिए बच्चियों को जन्म होने के पहले ही पेट के अंदर मार रहे हैं। संगम सक्सेना अपने लड़के से कहता था– "लड़की तो उन्नीस–बीस चल जाएगी लेकिन कम से कम बंगलौर या पुणे में तीन बड़े–बेड के फ्लैट की कीमत जरूर मिलना चाहिए।"
"एस डैड आप बिल्कुल ठीक कह रह है। मैं कुछ नहीं कहूंगा लेकिन आप जो निर्णय लेंगे मैं उसे मन लूंगा।"
"शाबाश बेटा। मैंने भी अपनी शादी में तेरी माँ के घर वालों से उस समय पन्द्रह लाख रुपये दहेज में लिए थे। थोड़े दिन तक लोगों में आपस में थोड़ा तनाव रहा फिर सभी लोग नॉर्मल हो गए थे।"

गायत्री देवी ने पिता–पुत्र की बातें सुनकर कमरे में प्रवेश किया जैसे तेज हवा का झोंका प्रवेश करता है और पुत्र से बोली–
"बेटा, अपने डैडी की बातों में मत आना। किसी को मजबूर करके दहेज मत लेना।"
"तुम बीच में मत बोलो।"
"क्यों न बोलूं? आपने और आपके पिता ने दबाव डालकर मेरी शादी में बहुत अधिक दहेज लिया था। आपने मेरे पिता का घर भी बिकवा दिया था। इस सदमें से उनकी मृत्यु हार्ट–अटैक से हो गई थी। मेरे भाई आज भी अपना निजी घर नहीं बना पाए हैं। वे बेचारे किराए के मकन में रह रहे हैं।"
"आप किचन में जाइए। मेहमान आने वाले हैं। किचन संभालिए।"
"ठीक है मैं जा रही हूं।"
गायत्री देवी के कमरे से बाहर जाने के बाद पिता–पुत्र में फिर सलाह–मशवरा प्रारंभ हो जाता है। पुत्र कहता है "डैडी, माँ पुराने विचारों की हैं। उनको नहीं पता है आज के युग में पैसा ही सब कुछ है।"
बंदर सदैव दूसरों का घर उजाड़ता रहता है। उसे दूसरों का घर उजाड़ने में बहुत मजा आता है। घर उजाड़ते वक्त उस घर में जो भी सामान उसे मिलता है वह उसे छीनकर खा जाता है। लेकिन जब वह मरता है, घर विहीन मरता है।
जीतलाल श्रीवास्तव अपनी लड़की का रिश्ता लेकर अपने निजी डाक्टर अभय के साथ संगम सक्सेना के शहर फैजाबाद गए। संगम सक्सेना ने लड़की के बायोडाटा के साथ–साथ उनकी हैसियत की भी सूची मांगी। जीतलाल श्रीवास्तव और संगम सक्सेना एक दूसरे से गले मिलते हैं। फिर सोफासेट पर बैठकर बातों का सिलसिला शरू होता है। जीतलाल श्रीवास्तव के सामने बिल्कुल काली–काली चाय पीने को आती है। शायद उसमें दूध की कंजूसी की गई थी।
जिस घर में चाय बिल्कुल काली बनती है। दूध नाममात्र का डाला जाता है। चाय उस परिवार की काली भावनाओं जैसी होती हैं। चाय में मिठास बिल्कुल नहीं होती है। एक प्याला चाय उस घर की असलियत खोलकर रख देती है। चाय में घुला चाय का एक–एक काला–काला कण उस घर वालों के काले–काले विचारों को उजागर करता है। उस एक कप चाय में उस घर की असलियत जान सकते हैं। उस घर की चाय पीना जहर पीने जैसी होती है।
लालची संगम सक्सेना बात शुरू करते हुए जीतलाल श्रीवास्तव से बोला–
"हां– मैंने आप की हैसियत का विवरण पढ़ लिया है। हमें इस बात का गर्व है कि आप एक बहुत ही धानाढ्य आदमी है। आप अपनी बेटी की शादी में हमें एक करोड़ रुपये नकद दे रहे हैं। दहेज का सारा सामान देने के लिए तैयार हैं।"

"आपने जो भी शर्तें रखी थी हमें वह सभी मान्य है। आपका लड़का इंजीनियर है। उसकी आल इंडिया सर्विस है। हमारी बेटी के लिए आपके लड़के से अच्छा लड़का नहीं मिल सकता है। हमने जो कमाया है अपनी बेटी और अपने लड़के के लिए कमाया है।"

"आप कितने नेक इंसान है। आप जैसे बाप इस दुनिया में कहां मिलेंगे?" मेरे पास सैकड़ों लोग अपनी बेटियों की शादी करने के लिए मेरे बेटे के साथ रिश्ता लेकर आए। सभी को मैंने दहेज देने के नाम पर गिड़गिड़ाते हुए, मजबूरी दर्शाते हुए और अपने पैरों में गिरते हुए पाया। अपनी पुत्री की सुंदरता, कुशलता सभी कलाओं में प्रवीणता का गुणगान बखारते पाया। लेकिन दहेज देने के नाम पर सिसकते हुए, लाचारी दर्शाते हुए पाया। आप वास्तव में प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को जीवित रखने वाले पिता है। आप इस आधुनिक समाज में पहले पिता है जो अपनी बेटी की सुख–सुविधा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है।"

"मैं, बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं मानता हूं। बेटी का भी अपने पिता की जायदाद पर अधिकार होता है। वास्तव में मैं अपनी बेटी के नाम आधी धन–दौलत करने वाला था। आप कहें तो मैं शादी के बाद उसके खाते में एक करोड़ रुपये जमा कर दूं और आधी सम्पत्ति की रजिस्ट्री भी बेटी के नाम कर दूं।"

संगम सक्सेना इतनी बड़ी दहेज की रकम को सुनकर अधीर होता जा रहा है। वह कहता है–

"वास्तव में आपके विचार बहुत नेक है। आप एक फरिश्ते हैं लेकिन मैं चाहता हूं कि शादी के बाद आधी जायदाद अपनी बेटी के नाम करें लेकिन एक करोड़ रुपये हमें सगाई पर दें और सगाई के समय सोने–चांदी के बर्तन भी दे।"

"देखो सक्सेना जी, हमारे पास सोने–चांदी के बहुत बर्तन हैं। आजकल लोगों की निगाह हम पर रहती है। आप सगाई के एक दिन पहले एक मेटाडोर भेज दें। मेटाडोर, वाला आपका विश्वासपात्र होना चाहिए। मैं एक बड़े बक्से में सोने–चांदी के बर्तन भेज दूंगा।"

संगम सक्सेना बोला–

"बहुत अच्छा सोच रहे हैं आप।"

"दहेज का सारा सामान मेरे दामाद और मेरी बेटी को मिल जाएगा। आपको कुछ भी नहीं मिल पाएगा। मैं चाहता हूं कि मैं लड़के के पिता यानी आपको भी कोई अच्छा उपहार दूं।"

यह बात सुनकर संगम सक्सेना मुंह में लार टपकाने लगा। जैसे भेड़िया या कुत्ता माँस का टुकड़ा देखकर मुंह पर जीभ फेरने लगता है उसी तरह संगम सक्सेना मुंह पर जीभ फेर रहा था।

जीतलाल श्रीवास्तव ने कहा–

"दुल्हा–दुल्हन को तो बहुत कुछ दिया जाता है। लेकिन दूल्हे के जन्मदाता को शायद कोई चीज नहीं मिलती है। मैं चाहता हूं कि आपको भी कोई कीमती चीज दूं। जो आपका बुढ़ापा काट दे।"

यह सुनकर संगम सक्सेना, जीतलाल श्रीवास्तव की तरह मंत्रमुग्ध हो गया और बोला–

"आज तक कोई भी लड़की वाला लड़के के बाप के बारे में कुछ नहीं सोचता है। आप वास्तव में बहुत ही महान है। आप इस लड़के के वृद्ध पिता का भी इतना ध्यान रख रहे हैं। आप हमें ज्यादा इंतजार मत करवाइए, आप हमें क्या देंगे?"

जीतलाल श्रीवास्तव ने संगम सक्सेना से कहा–

"आप धीरज रखें और हमारी बातें गौर से सुनें।"

"मैं तो आपकी महानता का कायल हो गया हूं।"

"आपने समाचार–पत्रों में अपने बेटे के लिए एक योग्य, रुपवान, उच्च शिक्षित और सुशील लड़की की चाहत दर्शायी है। आपने शादी के लिए कोई जाति–बंधन नहीं रखा है।"

"आप बहुत सही फरमा रहे हैं। सभी इंसान एक हैं, ऐसा मेरा मानना है।"

जीतलाल श्रीवास्तव ने संगम सक्सेना से कहा–

"आपने हमारी हैसियत के बारे में जानकारी चाही है। लगभग हमारे पास करोड़ो की सम्पत्ति है। हमारे पास शहर में चौबीस दुकानें हैं, जिसमें करीब पन्द्रह लाख रुपये सालाना किराया मिलता है। मेरे पास एक लड़का और एक लड़की है। हमारी सम्पत्ति में आधा भाग हमारी बेटी का तथा आधा भाग हमारे बेटे का है।"

संगम सक्सेना यह सुनकर पुनः लार टपकाने लगा और पुनः जीभ ओंठों पर फेरने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे दहेज रूपी पकवान उसके मुंह में आने वाला है।

संगम सक्सेना ने कहा–

"हमें आपकी लड़की से शादी करने में कोई आपत्ति नहीं है।"

जीतलाल श्रीवास्तव ने कहा–

"लेकिन हमें आपत्ति है।"

"आपको आपत्ति है? आपत्ति तो लड़के वाले की तरह से होती है। आपकी बेटी का रिश्ता हम अपने बेटे के साथ स्वीकार कर रहे हैं।"

"हमारी बिरादरी के कुछ नियम कानून हैं, उनको आपको मानना होगा।"

"आप श्रीवास्तव और मैं सक्सेना हूं। हमारी और आपकी बिरादरी एक ही है।"

"नहीं हमारी और आपकी बिरादरी अलग–अलग हैं। मैं और मेरा पूरा परिवार अपने–अपने नामों के आगे श्रीवास्तव लगाता है लेकिन हम मेहतर जाति के हैं।"

यह सुनकर संगम सक्सेना दंग रह गया और सोच–विचार में पड़ गया लेकिन करोड़ो रुपये दहेज के लालच में उसे कुछ सोचने को मजबर कर दिया।

"हम लोग जातिवाद पर यकीन नहीं करते हैं।"

"लेकिन यदि आप कुछ दिन बाद हमारी लड़की को ताना देने लगे। मेहतर कहकर गालियां बकने लगे तो हमारा और

हमारी लड़की का बहुत अपमान होगा। आप जो दहेज मांग रहे हैं, हम देने को तैयार हैं लेकिन हमारी कुछ शर्तें हैं। "

"आप अपनी शर्तें बताइए, हम भी सुनें, आपकी क्या शर्तें हैं।"

"आपको और आपके लड़के को हमारी बिरादरी में बैठना पड़ेगा। हमारी बिरादरी के मुखिया एक ऊँचे मचान या घर की छत के ऊपर बैठेंगे। वे लोग सूअर का पका हुआ गोश्त खाएंगे, मचान के नीचे बैठकर उनकी खाई हुई हड्डियां आप दोनों को चूसना होगा और उनके द्वारा ऊपर से नीचे फेंका गया जूठा गोश्त भी खाना होगा।"

आप ऐसा क्यों करवाएंगे?

"हमें यकीन हो जाएगा कि आप हमारी बिरादरी में शामिल हो गए हैं। आप मेहतर बिरादरी के हैं। संगम सक्सेना अप. ना सर नीचे किए हुए बोला–

"आपको फिर पांच लाख रुपये और देना होगा। इस तरह आपको दहेज में एक करोड़ पांच लाख रुपये देने होंगे।"

मेहतर जीतलाल श्रीवास्तव गर्व से बोला–

"हमें मंजूर है।"

संगम सक्सेना ने कहा–

"यदि आपकी और कोई शर्त हो तो बताइए।"

"आजकल भी देहातों में कुछ लोगों के घरों का विष्ठा देहात में रहने वलो मेहतर जाति के लोग उठाते हैं, आपको एवं आपके लड़के को एक दिन उनके साथ दूसरों के घरों का विष्ठा साफ करने जाना होगा।"

संगम सक्सेना व उसका लड़का सोच में पड़ गए, फिर दोनों बोले–

"हमें मंजूर है लेकिन इसके लिए आपको दस लाख रुपये और देना होगा।"

मेतर जीतलाल श्रीवास्तव का स्वाभिम्गन से सीना चौड़ा हो गया वह बोला–

"मुझे स्वीकार है।"

लालच और स्वाभिमान की जंग जारी थी। लालच धन पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। एक पैसे को सर्वोपरि मान रहा था, दूसरा सम्मान और प्रतिष्ठा को। एक तरफ लालच जितना नीचे जा सकता था जा रहा था, दूसरी तरफ सामाजिक प्रतिष्ठा और दलित अस्मिता आसमान की ऊँचाई को छू रही थी।

पिता–पुत्र एक दूसरे कमरे में जाकर सलाह–मशवरा करने लगे। वे अपने निर्णयों पर कोई ग्लानि महसूस नहीं कर रहे थे। बल्कि ग्लानि उन्हें इस बात पर हो रही थी कि जीतक. ाल श्रीवास्तव जैसा मेहतर घराना उन्हें पहले क्यों नहीं मिला? यदि वह घराना दो साल पहले मिल गया होता तो पूणे में दो फ्लैट खरीद लेते, जिनकी कीमत आज तिगुनी हो गई होती। पिता ने पुत्र से कहा–

"जीतलाल श्रीवास्तव की शर्तें मानकर और अधिक रुपये वसूले जा सकते हैं। मैंने मेहतर जीतलाल श्रीवास्तव का मनौवैज्ञानिक अध्ययन कर लिया है।"

पिता–पुत्र दोनों कमरे से बाहर आ गए जीतलाल श्रीवास्तव को बाहर खड़ी उनकी कार के अन्दर बैठाने के पहले दोनों ने जीतकाल श्रीवास्तव से कहा–

"यदि और कोई शर्त हो तो आप बताइए, हम दोनों उसको भी मानने को तैयार है। कठिन से कठिन शर्त आप हमारे सामने रखिए, हम दोनों उसको पूरा करके दिखाएगी।"

जीतलाल श्रीवास्त ने कहा–

"मेरे पास करोड़ो रुपये हैं लेकिन मेरे पास और कोई शर्त नहीं है।"

पिता बोला–

"आप विद्वान है, कोई और शर्त अपने मस्तिष्क में उपजाइए।"

"बहुत हो गया, अब रहने दीजिए।"

"अंकल अभी तक आपने हमारे सामने अपने आप दो शर्तें र खी हैं। अब हमारे कहने से कोई शर्त रखें, हम स्वयं आपको बता रहे हैं कि आप हमारे सामने कौन–सी शर्त रखेंगे? हम आपको ऐसी शर्त बताएंगे जिसको आपने कभी भी सोचा नहीं होगा।"

पिता–पुत्र दोनों में लालच में लालच आ जाता है जीतलाल श्रीवास्तव कुबेर का ऐसा खजाना था जिसके स्वाभिमान व दलित भावनाओं को ऊपर उठाकर मनमाना धन ऐंठा जा सकता था। पिता–पुत्र में अलग–अलग पैसा पाने की लालसा जाग गई। दोनों एक दूसरे से बचकर अकेले जीतलाल श्रीवास्तव से बात करना चाहते थे। पिता–पुत्र की आँख बचाकर श्रीवास्तव से पैसा निकलवाना चाहता था। पुत्र, पिता की आँख बचाकर वहीं कारनामा दोहराना चाहता था। दोनों जीतलाल श्रीवास्तव को छोड़ नहीं रहे थे।

पिता–पुत्र ने आपस में विचार–विमर्श किया, फिर पिता बोला–

"हम लोग अपनी तरफ से कोई ऐसी शर्त बताएं जो जीतलाल श्रीवास्तव की दलित भावना को जगा दे और हम लोगों को पचास लाख रुपये और दे दें। यह तो छह करोड़ से भी अधिक का आदमी है। इस मेहतर को अंग्रेजों ने बहुत बड़ी जायदाद लिख दी थी। ये साले! पहले हमारे यहां का मैला साफ किया करते थे, अब नवाब बन गए हैं।"

बाप ने लड़के से पुनः कहा–

"तू इंजीनियर है, कंप्यूटर में बड़ी–बड़ी इमारतों के नक्शे व पुल बनाता है। अपना कोई दिमाग लगा और इस भंगी का पूरा पैसा किसी तरह इधर ले आ।"

"पिता जी, मैं भी यही चाहता हूं। इस मेहतर की लड़की से पहले शादी रचा लूं फिर तलाक देकर अपनी सजातीय लड़की से शादी करूंगा। उसका पैसा पहले खींच लूं।"

"तो कोई तरकीब निकालो।"

"एक तरकीब आई है जैसे मेडिकल छात्रों को उनकी अंतिम वर्ष की पढ़ाई में उनको पखाना टेस्ट कराया जाता है उसी तरह की शर्त मेहतर के सामने रखते हैं।"

पिता–पुत्र दोनों कमरे से निकलकर जीतलाल श्रीवास्तव के पास आ गए–

"श्रीवास्तव जी, हम लोग आपको एक शर्त सुझा रहे हैं,

जिसको आप हमारे सामने रखने के लिए मजबूर हो जाएंगे।"

जीतलाल श्रीवास्तव, पिता–पुत्र से बोला–

"मैं आप लोगों द्वारा सुझाई कोई भी शर्त आप लोगों के सामने नहीं रखूंगा। मैं स्वयं शर्त बताऊँगा यदि आप लोग उसको पूरा करेंगे तो मैं उसके लिए आप लोगों को एक करोड़ रुपया दूंगा। कौन इस शर्त को पूरा करेगा, पहले पिता या पुत्र या दोनों साथ यह शर्त पूरी करेंगे?"

पिता–पुत्र के मुरझाए चेहरे पर दोबारा चमक आ गई जैसे बिजली के चमकने से काला बादल भी चमकने लगता है।

"आप लोग तुरंत बताइए कौन इस शर्त को पहले पूरा करेगा?"

पिता बोला–

"आप जो भी शर्त बताएंगे मैं उसे पूरा करूंगा।"

लड़का पिता जी से बोला–

"आप इनके द्वारा बताई गई शर्त पूरा न करें। मैं इस शर्त को पूरा करूंगा।"

"बेटा! मैं इस शर्त को पूरा करके एक करोड़ रुपये पा जाऊँगा। मेरा और तेरी मम्मी का बुढ़ापा कट जाएगा।"

"पिता जी, अंकल द्वारा बताई गई शर्त को पूरा करने से जो एक करोड़ रुपया मिलेगा उससे मैं विदेश जाकर और उच्च तकनीकी शिक्षा ग्रहण कर लूंगा। आप मुझे इस शर्त को पूरा करने दें।"

जीतलाल श्रीवास्तव गुस्सा होते हुए बोले–

"आप दोनों आपस में निर्णय नहीं ले पा रहे हैं।"

दोनों गाड़ी के पास चुपचाप खड़े रहे। जीतलाल श्रीवास्तव गाड़ी में बैठा रहा। उसी समय संगम सक्सेना की पत्नी को मिर्गी का दौड़ा पड़ा। वह छटपटा रही थी लेकिन पिता–पुत्र में से कोई भी अंदर इस लालचवश नहीं गया कि यदि पिता अंदर गया तो पुत्र जीतलाल श्रीवास्तव द्वारा बताई तीसरी शर्त पूरा कर एक करोड़ रुपये ले जाएगा और यदि पुत्र अंदर गया तो पिता शर्त पूरी कर एक करोड़ रुपये ले जाएगा। तीसरी शर्त रखने से कहीं जीतलाल श्रीवास्तव मुकर न जाए। इसलिए बात बदलते हुए पिता ने जीतलाल श्रीवास्तव से कहा–

"आप मुझे और कोई कीमती उपहार देना चाहते थे।"

"अरे! पहले आप लोग कमरे के अंदर जाकर श्रीमती गायती देवी को देखें कि क्या बात है? वह जमीन पर क्यों गिर पड़ी?"

पिता बोला–

"श्रीवास्तव जी, आप बिल्कुल परेशान न हो। गायत्री अभी थोड़ी देर बाद ठीक हो जाएगी।"

"हां अंकल जी, आप बिल्कुल चिंता न करें, मम्मी जी बिल्कुल ठीक है।"

जीतलाल श्रीवास्तव ने डॉ0 अभय को बुलाकर कहा–

"डॉ0 अभय, आप फौरन अंदर कमरे में जाकर देखो श्रीमती गायत्री देवी जमीन पर क्यों गिर पड़ी है?"

"जी सर, मैं जाकर देखता हूं।"

"श्रीमान जी धीरज रखें, हम किसी को भी निराश नहीं करेंगे। बड़े–बड़े लोग बारातियों तक को सोने की एक–एक गिन्नी देते हैं। आप तो लड़के के पिता हैं। मैं आपको ऐसा तोहफा दूंगा जो सबसे कीमती होगा।"

"लेकिन आप मुझे अभी कुछ तोहफा देना चाहते थे।"

"हां–हां–हां लेकिन आपको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि आप इस तोहफे को उसी समय खोलेंगे जब सगाई के एक दिन पहले भेजा गया सोना–चांदी वाला बॉक्स आपके घर में मिल जाए।"

गायत्री देवी का मिर्गी का दौर गंभीर नहीं था दवाई का इंजेक्शन लगाने के बाद वह सामान्य हो गई थी। गायत्री देवी डॉक्टर का हाथ पकड़े हुए कमरे से निकलकर बाहर आ जाती है।

संगम सक्सेना ने जीतलाल श्रीवास्तव से कहा–

"मेरी पत्नी बिल्कुल सही–सलामत है।"

"मम्मी जी को कुछ नहीं हुआ अंकल।"

डॉक्टर अभय ने कहा–

"तुरंत उपचार मिल जाने के कारण इनका मिर्गी का दौरा ठीक हो गया। गनीमत है कि ये चारपाई के ऊपर गिरी अगर फर्श पर गिरती तो चोट आ सकती थी।"

वह अपनी धर्मपत्नी गायत्री देवी को बुलाता है।

"देखो! गायत्री देवी– श्रीवास्तव साहब हमें ढेर सारा दहेज दे रहे हैं। वह लड़के के माता–पिता का भी ध्यान रख रहे हैं। कहते हैं लड़के के जन्मदाता मां–बाप को भी कोई नायाब तोहफा मिलना चाहिए। लेकिन इनकी एक शर्त है कि अभी श्रीवास्तव साहब हमको जो तोहफा दे रहे हैं, वह सगाई के एक दिन पहले सोना–चांदी से भरा बॉक्स आने के बाद खोलें।"

जीतलाल श्रीवास्तव ने संगम सक्सेना से कहा–

"आप अपने पुत्र की कसम खाकर कहो कि आप इस शर्त का पालन करेंगे।"

पिता ने कसम खाई–

"मैं अपने पुत्र की कसम खाकर कहता हूं कि हम आपकी शर्त का पालन करेंगे।"

जीतलाल श्रीवास्तव, संगम सक्सेना को एक ज्वैलरी का बॉक्स जो चमकीली पन्नी में अच्छी तरह फोल्ड था, पकड़ा देता है और चार नौकर भी फैजाबाद में उसके घर छोड़ देता है ताकि सामान उतारने में परेशान न हो।

संगम सक्सेना, उसका लड़का, पत्नी सभी सोने–चांदी से भरा बॉक्स आने की प्रतीक्षा करने लगते हैं।

जीतलाल श्रीवास्तव की पुत्री सलिला श्रीवास्तव इस शादी का बहुत विरोध करती है और कहती है–

"डैडी, मैं ऐसे घर में शादी नहीं कर सकती हूं जो इतना लालची हो। दहेज की इतनी बड़ी रकम मांग रहा हो। मेरी जिंदगी उस घर में नहीं निभ सकती है।"

"नहीं पिता जी मैं यह शादी हरगिज नहीं करूंगी।"

जीतलाल श्रीवास्तव उलझन में पड़ गए कि बेटी की बात मान लें या काट दें। यदि वे बेटी की बात मानते हैं तो

लड़का हाथ से निकल जाएगा। यदि वह बेटी की बात काटते हैं तो बेटी दहेज लोभियों के हाथों चली जाएगी। कभी–कभी ऐसी परिस्थितियों में आदमी कोई भी निर्णय नहीं ले पाता है।

संगम सक्सेना सगाई के दिन पहले बनारस से सोने–चांदी से भरा बॉक्स आने की प्रतीक्षा कर रहा था। सुबह से शाम तक एक–टक दरवाजे पर खड़ा–खड़ा बाहर निहार रहा था। घर तक आने वाली सड़क पर भी कुछ दूर तक टहल आता था। उसके घर, जीतलाल श्रीवास्तव ने चार आदमी भेज रखे थे। जो बॉक्स को उठाकर संगम सक्सेना के घर में रखते।

"शाम ढल रही थी। सूर्य दिन–भर चमकने के बाद धीरे–धीरे अपने गंतव्य स्थान की ओर जा रहा था। चिडियां चहचहाते हुए अपने–अपने घौंसलों में पहुंच रही थीं। सभी थके मांदे लोग अपने–अपने घरों की ओर तेजी से जा रहे थे। रात आने वाली थी। अंधेरा होने वाला था।"

अंधेरे को चीरता हुआ एक मेटाडोर क्षणिक उजाला फेंकता हुआ संगम सक्सेना के घर के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। भोंपू की आवाज से संगम सक्सेना की बूढ़ी आंखों में लालच की चमक आ गई। वह एक ऐसी चमक थी जो मेटाडोर की दोनों आंखों को चौंधिया रही थी। चारों आदमी सोने, चांदी से भरे बहुत लंबे लकड़ी के बॉक्स को उठाकर उसके घर के अंदर ले गए। संगम सक्सेना, गायत्री देवी और उसके लड़के ने आदमियों के जाने के बाद बाहर व अंदर के दरवाजे बंद कर दिए। तीनों के दिलों में उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। जीतलाल श्रीवास्तव ने बॉक्स की दो चाभियों में से एक चाभी पहले ही संगम सक्सेना को सुपुर्द कर दी थी। संगम सक्सेना ने ज्यों ही बॉक्स का ताला खोला उसमें एक पत्र मिला जो जीतलाल श्रीवास्तव का था। उसमें लिखा था–

"कृपया मैं दो तोहफे भेज रहा हूं। एक तोहफा आपकी पत्नी के लिए और दूसरा तोहफा आपके लिए है। उम्मीद है आपको बहुत ही पसंद आएंगे।"

घड़ों में सोने–चांदी के जेवरात, गिन्नी, ठसाठस भरे थे। तीनों ने घड़े निकालकर बाहर फर्श पर रख दिए। हाथ डालकर सोना–चांदी निकालने लगे। संगम सक्सेना ने अपनी पत्नी और लड़के से कहा–

"हम लोगों की मन की मुराद पूरी हो गई। बहुत दिनों से हम ऐसे ही दहेज की उम्मीद कर रहे थे। यह दहेज हमारी उम्मीदों से अधिक है।"

गायत्री देवी ने कहा– "अपनी कमाई पर खुश होना चाहिए। दूसरे के भेजे धन पर नहीं।"

लड़के ने अपने पिता और मां से कहा–

"घड़ों के नीचे भी एक जेवर का डिब्बा है।"

डिब्बे में लिखा था–

"श्रीमती गायत्री देवी के लिए यह तोहफा है।"

श्रीमती गायत्री देवी ने पहले वाला तोहफा पहले खोला बाद में दूसरा तोहफा खोला। पहेल वाले में कुछ नहीं था, दूसरे वाले में चार चांदी की चूड़ियां थीं। चांदी की चूड़ियां देखकर गायत्री देवी जोर–जोर से रोने लगी–

"यह कैसा मजाक किया गया है मेरे साथ (वह दहाड़ मार कर रोने लगी) श्रीवास्त ने जीते जी मुझे विधवा बना दिया।"

संगम सक्सेना व सतनाम सक्सेना को कुछ संदेह हुआ। दोनों जेवरों को उलटने–पलटने लगे। जेवरों को धरती पर पटकने लगे। जेवर, अशर्फियां धरती में गिरकर टूटने लगी। संगम सक्सेना ने कहा– "यह तो मिट्टी के जेवर और अशर्फियां हैं। इनमें सोने का पानी या रंग चढ़ा है। मेहतर ने हमें धोखा दिया है।"

"लड़का बोला– "यह तो सरासर हम लोगों का अपमान है।"

अंत में एक डिब्बा था जिसको बड़े ही अच्छे ढंग से रैपर से फोल्ड किया गया था उसके ऊपर लिखा था– "केवल संगम सक्सेना के लिए।"

डिब्बे को संगम सक्सेना ने ही खोला। तोहफा देखकर दंग रह गया। उसमें सफेद 'कफन' था। कफन देखते ही उसको दिल का दौरा पड़ा और उसने तड़पते–तड़पते दम तोड़ दिया।

वास्तव में यह एक कफनगीरी थी। दहेज लोभियों को ऐसे ही कफन भेजते जाइये। सृष्टि बच जायेगी और समाज में कफनगीरी शुरू हो जायेगी।

*****

सद्गति

–रूपनारायण सोनकर

जिस तरह पेन में भरी स्याही लिखते–लिखते समाप्त हो जाती हैं उसी तरह मनुष्य का जीवन चलते चलते समाप्त हो जाता है। पेन में स्याही समाप्त होने पर उसको दुबारा भरा जा सकता है। लेकिन जीवन की गति रूकने पर उसे गतिमान नहीं बनाया जा सकता हैं। हाँ, उसके नेक कार्य, समग्र समाज के प्रति उसके उत्कृष्ट विचार ही उसको अमर बनाये रखते है यह विचार एक ऐसी स्याही के समान है जो शरीर के अन्दर कभी समाप्त नहीं होते है।

स्थानीय निकाय शिकस्तीपुर और जिला पचांयत सोनपुर के चुनाव की रणभेरी बज गई थी। हर कोई ग्राम प्रधान, ग्राम पचांयत सदस्य, क्षेत्रीय पचांयत सदस्य और ग्राम सभा का सदस्य बनना चाहता था। चुनाव घोषित होते ही उम्मीदवार अपने अपने निर्वाचन क्षेत्रों के लोगो के मसीहा बन गये थें। युवा, अधेड़ और औरते सभी में चुनाव लड़ने का जोश था। गाँव, ब्लॉकों और जिला का कायाकल्प हो जायेगा। एक महिला ग्राम प्रधान उम्मीदवार संतोष देवी कुम्हार ने कहा 'जिस तरह हम लोग मिट्टी का खोद कर, उसके लोंदे बनाकर चाक घुमाकर एक से अधिक नक्काशीदार सुन्दर सुन्दर बर्तन बनाते है, उसी तरह से इस गॉव को बहुत ही सुन्दर और प्यारा गॉव बना दूंगी।'' एक दूसरा उम्मीदवार शीशपाल यादव, जो क्षेत्रीय पंचायत शंसनाबाद से चुनाव लड़ रहा था, बोला '' मैं अपनी भैंसो और गायों का दूध पॉच साल तक गरीबों को आधी कीमत पर दूँगा, मुझे विजयी बनाओं''। एक तीसरा उम्मीदवार सल्लन राजगीर ग्राम सभा सदस्य सरवनडेरा का चुनाव लड़ रहा था। कहता था– 'मैं लोगो के मकान बनाने में आधी दिहाड़ी लूँगा। यदि मुझे 300 रू0 रोज मिलते है तो मैं केवल 150 रू0 ही लूगा।'' और ऐसे न जाने कितने लुभावने वायदे कर रहे थे जो एम0एल0ए0, एम0पी0, मंत्री मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक नहीं करते हैं। जैसे वायदे चुनाव लड़ रहे उम्मीदवार कर रहे थे। उम्मीदवारों के पास गॉव, ब्लॉकों और जिले भर के एक एक आदमी, औरत और लड़कों का लेखा जोखा था कौन क्या धंधा करता है ? कहॉ रहता है ? बाहर कहा नौकरी करता है ? कितनी लड़कियां अविवाहित है ? कौन बीमार रहता है? सभी

.2.

का बायोडाटा उनके पास था ऐसा उत्साह विधानसभाओं और लोकसभा के चुनावों में भी नहीं होता हैं। युवा जोशीले उम्मीदवार वोट मांगते समय वोटरो के पैर छूना नही भूलते लेकिन दलितों के पैर छूना अब भी वर्जित समझते हैं। उनसे दबंगई के बल पर ही अपनी तरफ वोट डलवा लेते हैं। कही कही विवेकशील युवा सवर्ण उम्मीदवार दलित बुजुर्गो के पैर छूते देखे गये हैं। एक 60 साल की उम्र का श्यामानन्द रतूड़ी ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ रहा था। अपनें गॉव कीरतपुरा में घूम घूम कर वोट मंगा रहा था। उसके साथ 15 आदमी थे जो उसके पीछे पीछे चल रहे थे।

वह सवर्णो के पैर छू–छू कर बोल रहा था 'इस बार मुझे ही ग्राम प्रधान बनाइए। मैं इस गांव की तरक्की के लिए अपना शेष जीवन अर्पण कर दूंगा।' एक ब्राह्मण बुजुर्ग बोला–'बेटा! हम तुम जैसे सुलझे आदमी को वोट नहीं देंगे तो किसको वोट देंगे ? आप बिल्कुल चिंता न करें। आप ब्राह्मण जाति के गौरव को बनाए रखने वाले सबसे योग्य उम्मीदवार है।'

'धन्यवाद! दादा जी'

उसके पीछे चल रहा एक नौजवान बोला–'दलितों के मुहल्ले चलकर उनके भी पैर छूकर वोट मांग लो।' 'दलितों के पैर छूकर अपना मान–सम्मान और इज्जत थोड़े ही घटानी है। दलित तो हमारी एक घुड़की में ही हमें वोट दे देंगे।' एक दूसरा चौबीस साल का ब्राह्मण धनंजय बहुगुणा इसी गांव से ग्राम प्रधान का तगड़ा उम्मीदवार था। वह अपने इक्कीस समर्थकों के साथ दलित मोहल्ले के बुजुर्ग दलित वोटरों से मिल रहा था। उनके पैर छूकर वोट मांग रहा था। ''देवीदीन चाचा, हमारी इज्जत आपके हाथों में हैं, आप सभी का आर्शीवाद चाहिए, मुझे भारी मतों से विजयी बनाकर इस गांव का ग्राम प्रधान बनाइये। मैं इस गांव की असामानताओं, विकृतियों, विषमताओं और कूप मंडूकता को दूर कर दूंगा।''

दलित देवीदीन गद्गद् हो गया। मोहल्ले के समस्त दलितों ने धनंजय बहुगुणा को कन्धों पर उठा लिया और बोले– ''अगला ग्राम प्रधान धनंजय बहुगुणा होगा। धनंजय बहुगुणा जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।'' इस दहाड़ में दलितों के स्वाभिमान की दहाड़ पूरे गांव में सुनाई पड़ रही थी। गरीबों और दलितों के धार

.3.

शराब की नदियां बह जाती हैं, जिसमें वे लोग इस नदी में डुबकी जरूर लगाते हैं। ऐसा लगता है कि डुबकी से उनकी सारी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। लेकिन कुछ पढ़े–लिखे दलित व पिछड़े इस शराब की नदी में डुबकी लगाने से मना कर देते हैं क्योंकि उनके सारे प्रजातांत्रिक अधिकार इस नदी में डूब जाते हैं। ऐसी डुबकी उनके भविष्य, स्वतंत्र इच्छा और विधिक नियमों और आदर्शो को डूबो देती है। सरकार की प्र. जातांत्रिक प्रणाली ही डूबने–उतराने लगती है। ऐसे ही लोग देश को डूबने से बचा लेते हैं।

कुर्सी की चाहत एक मणि की तरह होती है। इसके लिए वे विषैले सर्प को बांबी से निकाल लेते हैं। सर्प से डसने की भी परवाह नहीं करते हैं।

मियां शब्बीर सोनपुर जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रहे थे। मियां शब्बीर के पूर्वज सदानंद सिन्हा ने मुगलों के शासनकाल में एक बहुत बड़ा ओहदा पाने के लिए इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था।

उसके निर्वाचन क्षेत्र में अल्पसंख्यकों की बनिस्बत हिन्दुओं की संख्या ज्यादा थी। एक बार हिन्दू–मुस्लिम दंगा हो गया था जिसमें मियां शब्बीर ने हिन्दुओं के खिलाफ जहर उगला था। निर्दोश लोगों की हत्या में उसका अहम रोल था। जब वह मुस्लिम मोहल्लों में जाता था। मुसलमान भाईयों से कहता था ''हिन्दुओं को सबक सिखाना है, जिन हिन्दुओं ने मुसलमानों को मारा है उनसे चुन–चुन कर बदला लेना है। इस्लाम धर्म की तभी रक्षा होगी जब हम लोग हर जगह सत्ता पर होंगे। मुझे विश्वास है कि अपनी कौम की रक्षा के लिए आप लोग मुझे विजयी बनायेंगें।''

एक बुजर्ग कलीमुद्दीन ने कहा– ''सत्ता पाने के बाद सभी लोग हम जैसे गरीब मजहबी लोगों को भूल जाते हैं। सत्ता पाकर आप लोग धर्म को गायब कर देंगे। फिर आप वही कार्य करेंगे जिसमें आप का हित है। उस समय गरीबों का हित आप लोगों के हित के सामने दब जाता है।''

''मैं कुरान की कसम खाकर कहता हूं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। दंगों के दौरान मैंने न जाने कितने हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा है। मैंने अपनी वफादारी मुस्लिम समाज के प्रति ऐसा करके सिद्ध कर दी है।''

.4.

एक कट्टर युवा मुस्लिम नेता बख्तावर ने मियां शब्बीर की पीठ थपथपाई और उसका हौसला बढ़ाते हुए कहा–''आप बिल्कुल सही कर रहे हैं। आप जैसा एक खूंखार मुस्लिम नेता हमारे बीच मौजूद है जो हिन्दुओं से न जाने कितनी नफरत करता है। हम तुम्हें ही विजयी बनायेंगे।''

''अगर मेरे नगर पालिका अध्यक्ष रहते दंगा हुआ तो मैं हिन्दुओं को सबक सिखा दूंगा। ऐसा कोहराम मचा दूंगा कि सारे के सारे हिन्दू इस शहर से भागने को मजबूर हो जायेंगे। तब सारी नगर पालिका में आने वाली जमीन व दुकानें सभी मुस्लिम भाईयों को आवंटित कर दूंगा।''

'गरीब दलितों को लाखों रूपये का प्रलोभन देकर और एक आध ा को नगर पालिका के बेकार पड़े प्लॉट आवंटित कर उनसे इस्लाम धर्म स्वीकार करा लूंगा। इस तरह हमारी जनसंख्या बढ़ जायेगी। दंगों के दौरान हमारी ताकत दुगुनी हो जायेगी।'

''शाबास बेटा! हम तुमसे यही उम्मीद करते हैं।''

मियों शब्बीर जब हिन्दुओं के घरों और मौहल्लों में वोट मांगने जाता था तब वह अपनी टोन व भाषण बिल्कुल बदल लेता था। वह हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं से कहता था– ''जो अपराध मेरे बुजुर्गो ने इस्लाम धर्म स्वीकार करके किया है मैं उसका पश्चाताप करूंगा। मैं चुपचाप इस्लाम धर्म छोड़ चुका हूं लेकिन इसकी घोषणा इलेक्शन के दौरान नहीं कर सकता क्योंकि फिर मुझे मुसलमानों का वोट नहीं मिलेगा।''

मियां शब्बीर के सामने धर्म एक मजाक था। स्वार्थ धर्म पर भारी पड़ रहा था। दोनों समुदायों के लोगों को अपने पक्ष में कैसे किया जा सकता है, वह राजनीति के इस मजबूत हथकंडे का सफलतापूर्वक प्रयोग कर रहा था। उसके लिए ध र्म एक ऐसी कश्ती थी जिसके सहारे वह चुनाव के भव सागर को एक कुशल नाविक की तरह पार करना चाहता था।

दूसरी तरफ सुखपाल केवट ने हिन्दू–मुस्लिम दंगा रोकते हुए छह औरतों, तीन आदमियों और तीन बच्चों को बचाया था। ये सभी आदमी अल्पसंख्यक समुदाय के थे। हालांकि इस कार्यवाही में उसको एक युवा लड़के सुमित केवट ने उसका

.5.

साथ दिया था। सुखलाल केवट हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया था। उसका जिला पंचायत सदस्य बनना निश्चित था। इसके बाद वह जिला पंचायत अध्यक्ष बनने वाला था।

हिन्दू–मुस्लिम दंगों के दौरान दोनों समुदाय के लोग एक दूसरे पर बम फेंक रहे थे। चाकू, त्रिशूलों और तलवारों से हमला कर रहे थे। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था। चारों तरफ घर जल रहे थे। कट्टर हिन्दू हाथों में त्रिशूल लिए सरों पर भगवा वस्त्र बांधे छह मुसलमान आदमियों, तीन औरतों और तीन बच्चों को दौड़ा रहे थे। उनको जान से मार डालना चाहते थे। सुखलाल केवट उनके सामने आकर बोला–

''ऐ! धर्म के पहरूओं रूको, इन निर्दोष लोगों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है'' दंगाई कड़ककर बोले– ''ऐ साले ! मुसलमान खुलेआम दंगों में हिन्दू औरतों और लड़कियों के साथ बालात्कार कर रहे हैं। हमारे घर जला रहे हैं। निर्दोष हिन्दुओं को मार रहे हैं। जब ये लोग हम पर रहम नहीं कर रहे हैं तो हम उन पर रहम क्यों करें ?''

''शैतानों से शैतान बनकर बदला नहीं लिया जाता है।''

''आज के युग में शैतानों से बदला महाशैतान बनकर बदला लिया जाता है।''

सुखलाल केवट ने अपने लड़के को आवाज दी।

''मुस्लिम औरतों, बच्चों और आदमियों को बचाओं।''

''जी, पिता जी'' उसका पुत्र सुमित केवट बहुत ही बलवान था। उसने हिन्दू दंगाईयों को ललकारा–''अगर तुम लोगों ने इन पर हाथ उठाया, तो मेरी तलवार तुम लोगों पर उठ जायेगी''।

मुस्लिम समुदाय की औरतें, आदमी और बच्चें सुखपाल केवट के मकान की छत में जीने से चढ़ जाते हैं। उसका लड़का सुमित केवट हाथ में तलवार लेकर जीने की सीढ़ियों के ऊपर खड़ा हो जाता है। कट्टर हिन्दू दंगाई दौड़कर जीने की सीढ़ियों से छत पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। सुमित तलवार हाथों में जोर से पकड़ते हुए हवा में लहराता है और तेज आवाज से बोला–

.6.

'अगर किसी भी आदमी ने छत पर चढ़ने की कोशिश की तो उसको तलवार से काट डालूंगा।'

एक कट्टर हिन्दू त्रिशूल को उसकी तरफ निशाना बनाते हुए बोला–

''अगर तू मुसलमानों को बचायेगा तो तू भी मारा जायेगा। तेरी इसी में भलाई है कि तू हमारे रास्ते से हट जा। नहीं तो तेरी लाश बिछ जायेगी।''

''जो भी मेरी लाश उनको बचाने में बिछायेगा मैं उनकी लाश पहले बिछा दूंगा।''

कटटर हिन्दू दंगाई जो बहुत अधिक संख्या में थे जीने से चढ़ने लगते हैं। त्रिशूल लंबे थे। सुमित केवट की तलवार छोटी थी। एक दंगाई ने त्रिशूल से सुमित केवट पर वार कर दिया। सुमित वार बचा गया। एक साथ तीन दंगाईयों ने उस पर हमला कर दिया। वह उछल कर छत पर चला गया। सुखपाल

केवट एक टंकी में खौला पानी रखे हुए था। वह मग्गे से दंगाईयों पर खौला पानी फेंकने लगा। दंगाई चिल्लाते हुए भाग. ने लगे। सुमित केवट तलवार लेकर दंगाईयों के पीछे जीने से उतरने लगा। उसी समय एक हिन्दू दंगाई ने उस पर बम फेंक दिया और सुमित मर कर शहीद हो गया।

बहिला और बच्चे देने वाली गाय की पहचान लोग तुरंत कर लेते हैं। लेकिन बहिला गाय बच्चे देने का ढोंग करती है और बच्चे देने वाली गाय के समकक्ष आकर उससे आगे निकलना चाहती है।

जंगल में शेर सभी जंगली जानवरों को मार कर खा जाता है। लेकिन साही को मारकर नहीं खा पाता है। उसके नुकील कांटे मुंह में चुभ जाते हैं, शेर लहुलुहान हो जाता है।

समाज की तहे दिल से सेवा करने वाले लोग बिल्कुल साही ही तरह होते हैं। उनके नेक कार्य विरोधियों के लिए साही के कांटे बन जाते हैं। जो भी उन पर हमला करता है रक्त रंजित हो जाता है।

मियां शब्बीर एक घायल शेर की तरह था। वह किसी भी सूरत में चुनाव हारना नहीं चाहता था। चुनाव के प्रचार के दौरान हिन्दुओं और मुसलमानों का

.7.

उद्धारक और मसीहा नजर आ रहा था। उसने सुखपाल केवट को डराया धमकाया और चुनाव से हटाने के लिए उस पर दबाव डाला।

''सुखलाल केवट तुम मेरा सामना मत करो। मैं एक बहुत ही खतरनाक आदमी हूं।''

''मैं प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत चुनाव लड़ रहा हूं। मुझे आप धमका कर चुनाव से हटाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते हो।''

''अपने बच्चों की परवाह करों।''

''हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए एक बेटा शहीद हो चुका है। प्रजातंत्र की रक्षा के लिए दूसरा बेटा शहीद हो गया तो भी गम नहीं होगा।''

''फिर तुम्हारी जान लेनी पड़ेगी।''

''मैं अपनी जान इस देश के लिए न्यौछावर करने को तैयार हूं।''

मियां शब्बीर बहुत ही धनाढ्य था। करोड़ों की संपत्ति थी। जब सच्चे आदमी ताकत के बल पर नहीं झुकते हैं तब उन्हें औरतों और पैसे के बल पर झुकाया जाता है। मियां शब्बीर ने सुखपाल केवट से कहा–

''तुम जितना चाहो पैसा ले लो, एक से एक खूबसूरत लड़की तुम्हारी सेवा में हाजिर कर सकता हूं। लेकिन मेरे विरूद्ध इलेक्शन मत लड़ो। तुम, यदि इलेक्शन से हट गए तो मैं इलेक्शन जीत जाऊंगा। फिर जिला पंचायत अध्यक्ष बन जाऊंगा। मेरे सामने कोई भी दूसरा आदमी जिला पंचायत अध्य क्ष के लिए आगे नहीं आएगा। मैं निर्विरोध जिला पंचायत अध्यक्ष चुन लिया जाऊंगा।''

''आप पैसे, भडुवागिरी और गुण्डागर्दी के बल पर जिला पंचायत अध्यक्ष बनेंगे। आप सत्ता पाकर जनता पर जुल्म करेंगे। उल्टे–सीधे कार्य करेंगे। सरकार का पैसा बेईमानी करके हड़प जाएंगे। सड़कें ऐसी बनवाएंगे जो एक बरसात बाद टूट जाएं। सरकार की विकास संबंधी जिन योजनाओं के लिए जो पैसा आयेगा, बंदरबांट कर लेंगे। इसलिए आप जिला पंचायत अध्यक्ष बनना चाहते हैं। सरकार जिले का विकास चाहती है लेकिन आप विनाश का रास्ता अपनाएंगे।''

''ईमानदार रहकर तुम क्या कर लोगे।''

.8.

''ईमानदारीपूर्वक सरकार द्वारा निर्धारित विकास की योजनाएं पूरा करूंगा। सारा पैसा गरीबों के हित में लगाऊंगा। जिले को देश का आदर्श जिला बना दूंगा।''

''लेकिन हमारे जैसे लोग तुम्हें ज्यादा वक्त नहीं देंगे।''

''जो भी वक्त मिलेगा उसी में पूरे जिले को विकास की तस्वीर दिखा दूंगा। मैं जो आधारशिला रखूंगा। उसी पर मंजिल खड़ी होगी।''

''इलेक्शन के समय मैं तुम्हें जान से नहीं मारना चाहता हूं। इलेक्शन ठप्प हो जाएगा। मैं जिला पंचायत अध्यक्ष नहीं बन पाऊंगा। मैं तुमसे इलेक्शन बाद निपटूंगा।''

''मैं आपका इंतजार करूंगा।''

कुर्सी बिल्कुल शहद के छत्ते की तरह होती है। जिस तरह शहद पाने के लिए बहुत सारी निर्दोश मधुमक्खियों को मारना पड़ता है, उसी तरह कुर्सी पाने के लिए राजनीति में बहुत सारे निर्दोश व्यक्ति मारे जाते हैं।

मियां शब्बीर गुंडई छोड़कर कुछ सामाजिक कार्य इलेक्शन के दौरान करने लगता है ताकि उसकी छवि में कुछ सुधार हो। जैसे गिरगिट अपना रंग बदलता है उसी तरह मियां शब्बीरें अप. ना रंग बदल रहा था। जैसे बंशी में चारा लगा कर जल के अंदर मछलियों को पकड़ने के लिए धोखा दिया जाता है मछलियां चारा खाने के लिए लोहे के कांटे में फंस जाती है वैसे ही वह हिन्दुओं के सुख–दुख में शामिल होने लगता है।

इलेक्शन में प्रचार के दौरान एक मृत व्यक्ति को चार आदमी कंध ा देते जा रहे थे। वह मृत व्यक्ति टट्टा में बंधा था। मियां शब्बीर ने देखा इससे बढ़िया मौका हिन्दुओं का दिल जीतने का नहीं हो सकता है। उसने तुरंत एक आदमी को हटाकर कंधा दे दिया। मैयत के पीछे चले रहे आदमी बूढ़े थे।

मुस्लिम समाज में मैयत ले जाते वक्त लोग थोड़ी–थोड़ी देर बाद बारी–बारी से कंधा देते रहते हैं।

.9.

वहां से शमशान घाट छह किमी दूर था। एक किलोमीटर कंधा देने के बाद उसने सोचा कोई न कोई उसके स्थान पर कंधा देगा। कोई भी आदमी उसके स्थान पर कंधा देने नहीं आया। वह मन ही मन बुदुबुदा रहा था।

''कहां बुरे फंसे वोटों के लिए, सत्ता के लिए क्या–क्या करना पड़ता है।''

उसने तीन किमी बाद लंगड़ाने की कोशिश की, तभी पीछे से एक बुजुर्ग ने आवाज दी ''बेटा संभलो ! तुम तो बहुत ही हट्टे–कट्टे हो ! देखकर चलो। तुम्हारे साथ कंधा दे रहे तीनों आदमी बूढ़े हैं ? लेकिन वे लोग, लड़खड़ा नहीं रहे हैं। तुम्हें क्या हो गया है ?''

वह मन ही मन बुदबुदाया। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसने बिना सोचे–समझे किसी पहाड़ को उठा लिया हो। सांप के बिल में हाथ डाल दिया हो। चलती ट्रेन को रोकने की को. शिश कर रहा हो।

जब आसमान में कोई एरोप्लेन किसी पक्षी से टकराता है तब ऐरोप्लेन दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है।
मियां शब्बीर से मैयत टकरा गई थी और वह बिल्कुल धराशायी हो गया था। उसका ढोंग व बहुरूपियापन खुलकर सामने आ गया था। वह बार–बार कह रहा था।
''आप लोग कहें तो मैं एक गाड़ी की व्यवस्था कर दूं।'' दूसरे बुजुर्ग ने कहा– ''नहीं बेटा ! गाड़ी की क्या जरूरत हैं ? आधा रास्ते से ज्यादा रास्ता तो आ गए हों। तुम शहर जाओंगे। फिर गाड़ी लाओगे। तब तक बहुत समय लग जाएगा। बढ़े चलो बेटा, तुमने पुण्य का काम किया है।''
मियां शब्बीर ऐसा बर्ताव कर रहा था कि जैसे मैयत को फेंककर चला जाएगा लेकिन जिला पंचायत की कुर्सी उसे ऐसा न करने के लिए मजबूर कर रही थी।
तवा काला होता है। उसे कितना ही माजिए वह सदैव काला ही रहता है।
मियां शब्बीर ने छह किमी का सफर किस अधेड़–बुन में काटा, बयान करना बड़ा मुश्किल है। जैसे आसमान को नापना बड़ा ही कठिन होता है।

.10.

मियां शब्बीर जब शमशान घाट में पहुंचकर मैयत को जमीन पर रखा, वह ऐसा महसूस कर रहा था जैसे आजीवन कैद काटकर बाहर आया हो। उसका चेहरा धूल से भर गया था। उसके चेहरे से चमक गायब थी। वह ऐसा दिखाई पड़ रहा था जैसे बगैर पारे के थर्मामीटर दिखाई पड़ता है।
पीछे आ रहा बुजुर्ग जब मियां शब्बीर के पास आया तो उसको देखकर दंग रह गया। मृत व्यक्ति शीशपाल का बेटा भीमपाल एक वर्ष पहले हिन्दू–मुस्लिम दंगों की भेंट चढ़ गया था। मियां शब्बीर ने भीमपाल को करोली से मार दिया था। उसके गम में शीशपाल आज मरघट पर था। दलित गगन का पूरा परिवार व भविष्य बर्बाद हो गया था। दूसरा अपना घर व भविष्य उज्जवल बनाने की सोच रहा था।
लगता है आज का राजनीतिक भविष्य खून–खराबे पर ही फूलता–फलता हैं। लाशों के ऊपर ही निर्मित होते है। लेकिन सच्चे लोग, उनका निष्कपट आचरण और निःस्वार्थ भाव से की गई उनकी समाज सेवा, निर्भीकता, देश प्रेम, कमजोर व दलितों के प्रति दिली हमदर्दी, न–पिशच लोगों को धनराशायी कर देती हैं। फरेबी की असलियत खुल गई थी वह एक अपराधी की भांति वहां खड़ा अपने गुनाहों को याद कर रहा था। वहां जमा सारे लोग उसको देखकर स्तब्ध थे। मियां शब्बीर भी भोचक्का था। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। जमीन पर रखी मैयत उन सभी को निहार रही थी और कह रही थी।
''मुझे यह आदमी कंधा देकर यहां तक लाया हैं। इसको माफ कर दो अनजाने या स्वार्थवश इतना तो त्याग किया ही है। मियां शब्बीर सोचता हैं।
''में गुनाहगार हूं, मैने निर्दोश लोगो को मारा हैं। हिन्दू और मुसलमानों को शमशान घाट का कब्रिस्तान तक जाना पड़ता हैं। हिन्दू मुस्लिम दंगे के नाम पर एक दूसरे समुदाय के लोगों को मारना वास्तव में जघन्य अपराध है''। वह मृत्यु और जन्म के बधंन के बारे में आगे सोचता हैं– ''जब मानव शमशान या कब्रिस्तान में होता है तब संसार के बारे में उसका नजरिया बिल्कुल साफ होता हैं। उसके नीच विचार और नीच कार्य सभी विलुप्त हो जाते है क्योंकि वह पापों की गठरी बाधांकर यहां नहीं आना चाहता हैं। उस समय वह दुनिया को एक दार्शनिक की तरह देखता हैं।''

.11.

दलित गगन बोला ''मत सोचो पुरानी बातें। यह शमशान घाट हमारी आंखे खोलता हैं। जीवन का रहस्य बताता है त्याग, मौहब्बत और भाईचारा जीवन की अमूल्य निधि हैं। जो आदमी इन खूबियों के साथ यहां पर आता है वह सुख की नींद सोता हैं।''
''मैने गुनाह किये हैं। मैं मानवता को भूल गया था। स्वार्थ, अंधे धर्म और महजब ने मुझे बिल्कुल अंधा कर दिया था। हम दोनों समुदाय के लोग भाई हैं। मैंने भाईयो को मार कर बहुत बड़ा अपराध किया हैं। मुझे सजा मिलनी चाहिये।''
जब तीव्र गति का भूचाल आता है तब वह भूचाल बड़ी–बड़ी इमारतों को धरायशी कर देता है। उसी तरह जब मनुष्य के अंदर ज्ञान का तूफान आता हैं तो उसके स्वार्थी, अहंकार और अंध धार्मिक व सृष्टि को मिटाने वाले विचार धराशयी हो जाते हैं।
धूं–धूं करके चिता चल रही थी। तेज लपटे आसमान को छू रही थीं। दिन को रात बनाने वाले काले–काले बादलों की लपटे चीरकर चारों तरफ प्रकाश फेंक रही थी। दूसरी तरफ पश्चाताप और गुनाह इन लपटों में जल रहा था। मियां शब्बीर एकाएक उछल कर चिता में कूद गया।
दो बुजुर्गो ने अपनी जान की परवाह न करते हुए उसको जलती चिता से बाहर निकाला। उसकी अंतिम सासें चल रही थी। उसको कंधो पर लादकर अस्पताल ले जाने लगे। लेकिन उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। थोड़ी दूर पर कब्रिस्तान था। उसको वही पर ले जाया गया।
आसमान में बहुत काले–काले बादल लदे थे, बिजली जोर जोर से चमक कर आसमान को फाड़ देती थी। आसमान में डरावनी गर्जना के साथ बड़े–बड़े सफेद बमों को बौछार होने लगी थी। फिर बहुत जोर की बारिश हुई। पूरा कब्रिस्तान पानी से भर गया था। बिल्कुल गहरा तालाब नजर आ रहा था। वे लोग उसको कब्रिस्तान के अंदर छोड़कर चले गये। मृत शरीर पानी में तैर रहा था। गिद्ध आसमान में मंडरा रहे थे। कुत्ते लाश पर झपट पड़े थे। जंगली सुअरों के एक झुण्ड ने कुत्तों पर हमला बोलकर उनको कुछ दूर भगा दिया था। सुअर मिट्टी को नोच–नोच कर खाने लगे थे।

*****

दूध का दाम

–रूपनारायण सोनकर

जब आदमी जानबूझ कर धधकती आग में कूदता है तब धधकती आग उसको जलाकर राख कर देती है। जवान स्त्री एक धधकती आग के समान होती है। यदि पुरूष मे उस आग का बुझाने लायक पानी न हो तो उसमें कदापि नहीं कूदना चाहिए।

सी–जर्जा जोजेफ एक अधेड़ उम्र के आदमी थे और पुलिस फोर्स में एक जवान थे। मिसेज सी–जार्ज जोजेफ एक कम उम्र की खूबसूरत महिला थी। उनका गठीला बदन, हिरनी जैसी आँखें और गोलाकार नुकीले बड़े–बड़े उरोज अनायास ही अप्सराओं की याद दिला रहे थे। छः साल शादी को हो चुके थे, कोई संतान उनके घर में किलकारी करने नहीं आयी थी। उस स्त्री का जीवन कितना कष्टमय होता है जो अपने पति की बाहों में समा नहीं पाती है। पति–पत्नी के सहवास का लुत्फ उठा नहीं पाती है। उनका घर स्त्रियों के लिये जेल नजर आता है। एक ऐसी कैद जिसकी सजा बिना किसी गुनाह के मिलती है। आदमी और औरत केवल एक बार पृथ्वी पर जन्म लेता हैं। कुछ लोग एक– एक क्षण का आनन्द उठाते है। कुछ लोग दुःख भरी जिन्दगी का एक–एक कतरा जीते है। ऐसी ही स्त्रियां तनाव की शिकार हो जाती है। डिप्रेशन में चली जाती है। मिसेज सी–जार्ज एक पढ़ी लिखी युवती थी। इस तनाव से निकलने का कोई न कोई रास्ता निकाल रही थी। यदि घर में पति का प्यार न मिले लेकिन बच्चे का प्यार मिल जाए तो जिन्दगी कट जाती है। लेकिन दोनों का प्यार न मिलने पर औरत की जिंदगी तबाह हो जाती है। तेज तूफान में नाव समुद्र के अन्दर डगमगाती रहती है। कभी भी डूब सकती है, यदि नाव खेने वाला होशियार है तो नाव समुद्र को पार कर जाती है किन्तु छेदयुक्त नाव कभी समुद्र पार नहीं कर पाती है।

सी–जार्ज जोजेफ अपने निवास स्थान बागेश्वर से दूर मेरठ शहर में नौकरी करते थे। तीन चार माह बाद घर आना होता था। पति का इतने दिनों बाद घर आना कोई मायने नहीं रखता था। मिसेज जोजेफ की प्यास बुझ नहीं पाती थी। अकाल पड़ने से जैसे खेत फट जाते है। मिसेज जोजेफ की जिन्दगी सूखकर फट गई थी। अकाल के बाद जब पानी की बौछारें पृथ्वी पर पड़ती हैं तो आग निकलती है। पृथ्वी गीली नहीं हो पाती है, जब तक लगातार मूसलाधार वर्षा न हो।

मिसेज जोजेफ के तनाव को देखकर डाक्टरो ने कहा कि आप लोग एक छोटे लडके को गोद ले लें। हिन्दू परिवारों की वनिस्बत ईसाई परिवारो में भेदभाव, छुआछूत नहीं होती है। कोई भी हिन्दू अपने बच्चे को गोद नहीं देना चाहता था। गोद देने वाली संस्थाओं से सम्पर्क किया। असहाय बच्चें की सहायतार्थ समिति, मेरठ, उ0प्र0 ने एक डेढ़ साल के बच्चे को मि0 एण्ड मिसेज जोजेफ को नियमानुसार गोद दे दिया। गोदनामा रजिस्ट्रार ऑफ हिन्दू विवाह, मेरठ के कार्यालय में रजिस्टर्ड कराया गया। जैसे बसंत ऋतु के चारो तरफ हरियाली ही हरियाली दिखायी पड़ती है। पेड़ो में फूल खिल जाते हैं, उसी तरह मिसेज जोजेफ की जिन्दगी खिल गई थी। उनका तनाव दूर हो गया था। उन्होंने महसूस किया कि इससे बढ़कर इस धरती पर और कोई दूसरा सुख हो ही नहीं सकता है। जब आमों के पेड़ में फल पक जाते है तो आम अपने आप धरती पर चूने लगते है। डेढ़ साल के बच्चे को जब उन्होंने अपनी छाती से लगाया, तब मिसेज जोजेफ के स्तनों से दूध अपने आप उतर आया।

दूसरी ओर डॉ0 जैन सेक्सोलॉजिस्ट से सी–जार्ज जोजेफ अपनी नपुसकता का इलाज करवाना शुरू कर दिया। डेढ साल लगातार इलाज के बाद उसकी कुछ कमजोरी दूर हो गयी। उसने मिसेज जोजेफ की गोद में एक अपना पुत्र व पुत्री डाल दियां। तीन फूलों के खिलने से पूरा घर महक गया। मिसेज जोजेफ पहले से ज्यादा जवान व सुन्दर दिखने लगी। गोद लिये बच्चे का नाम लारेंस जार्ज, निजी बच्चे का नाम पीटर जार्ज और लड़की का नाम मारिया जार्ज रखा गया।

लारेंस जार्ज व मारिया जार्ज ने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त

की। पीटर जार्ज केवल हाईस्कूल तक ही पढ़ पाया।

पीटर जार्ज शहर के आवारा लड़को की संगत में बिगड़ गया। घूम्रपान का आदी हो गया। शराब की लत लग गई। ड्रग्स भी लेने लगा। कोई कमाई नहीं करता था। केवल घूमने–फिरने, ताश खेलने में अपना वक्त काटता था। लारेंस जार्ज व मारिया जार्ज को एक अंग्रेजी स्कूल में टीचर की नौकरी मिल गई। उन्हीं दोनों के पैसों से घर चलता था। पीटर छीन–छपटकर दोनों की अधिक से अधिक तनख्वाह ले लेता था। मिसेज जार्ज पीटर को उसकी हरकातों के लिये बुरा भला कहती थी और कोई न कोई काम करने के लिये दबाव डालती थी।

कहते हैं कि जिस आदमी को हराम की रोटी मिल रही हो तो उसको कमाई की रोटी में स्वाद नहीं आता है।

मिसेज जार्ज ने कहा – "पीटर तुम दिन–रात आवारागर्दी करते हो कुछ काम किया करो। तुम्हारी जिन्दगी कैसे कटेगी?"

"मैं तुम्हारा अपना बेटा हूं। मेरे हक को छीनकर आपने लारेंस को गोद ले लिया उसकी तनख्वाह से कुछ तो भरपाई करने दो।"

माँ बिगड़ कर बोली–"भविष्य में दोबारा ऐसी बात मत करना बेटा, पीटर, लारेंस तुम्हारा बड़ा भाई है।"

मारिया बिगड़ कर बोली– "पीटर तुम्हें शर्म नहीं आती है। ऐसी बातें कहते हुए।"

"शर्म तो तुम लोगों को आनी चाहिए। एक डोम को मेरा भाई बना दिया है।"

माँ बिगड़ कर बोली – "यदि जबान से एक शब्द भी और निकाला तो मैं तुम्हारी जबान काट लूंगी।"

"मॉम हकीकत यही है।"

मारिया ने कहा – "क्या डोम इंसान नहीं होते हैं?"

"होते हैं, नीच जाति के होते है। दूसरो के घर की सफाई करने वाले होते है। दूसरों का मल– मूत्र साफ करने वाले होते है।"

लारेंस बोला – "पीटर मैं केवल इतना जानता हूं कि मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूं। यदि मैं डोम हूं तब भी मैं एक मानव हूं। आज कल डोम, मिनिस्टर, आई0ए0एस0 बड़े–बड़े उद्योगपति, कलाकार, वैज्ञानिक और प्रोफेसर है। जहां तक इस जाति द्वारा सफाई करने की बात है, तो हिन्दुस्तान की सभी जातियां सफाई का कार्य कर रही है।" लारेंस यह कह कर सिसक रहा था। जैसे बरसात में घर के छप्पर से बड़ी –बड़ी बूदें टपकती रहती थी। उसी तरह उसकी आँखों से आंसू टपक रहे थे। वह ऐसा महसूस कर रहा था कि जैसे बादल फट गया हो और उसके तेज पानी में वह बहता चला जा रहा हो, बड़े–बड़े पत्थरों से टकराते हुए।

पीटर ने मारिया से छः हजार रूपये मांगे और कहा – "मुझे तुरन्त रूपये दे दो" मारिया ने गुस्सा होते हुए कहा – "तुम्हें शराब पीने के लिये और अय्याशी के लिये रूपये नहीं मिलेंगे।"

लारेंस को जोर से गुस्सा आया लेकिन वह गुस्सा चुपचाप जहर का घूंट समझकर पी गया। जब लड़की में दीमक लग जाती है तब लकड़ी चूर–चूर हो जाती है। पीटर एक दीमक की तरह था जो घर के दरवाजों, खिड़कियों के अन्दर विराजमान था।

लारेंस अलमारी से छः हजार रूपये निकाल लाया और बोला – "लो पीटर रूपये"।

"तू ये रूपये देकर मुझ पर कोई एहसान नहीं कर रहा है।"

मां और बहिन ने लारेंस के हाथों से रूपये छीन लिए। मां ने कहा– पीटर इसी तरह रूपये ले लेकर बिगड़ गया है। यह बिल्कुल एक परजीवी की तरह है। इस जौंक को पैसे देकर अपना खून नहीं चुसवाना है। इसको जो करना है, कर ले।"

"जौंक तो तुमने खुद घर में पाल रखा है।"

मारिया ने कहा – "अपनी जुबान पर लगान दो पीटर।"

पीटर बिल्कुल एक मानव बम की तरह था, जो घर को स्वाहा करके स्वयं स्वाहा होना चाहता था। पीटर वहां से नाराज होकर आवारा लड़को के पास चला गया। आवारा लड़के राम, कृष्ण और इन्द्र निठल्ले बैठे–बैठे जुआ खेला करते थे। इनकी महफिलें दिन–रात चला करती थी। इन तीनों सवर्ण लड़को की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी।

पीटर तीनों लड़को के साथ ताश के पत्तों से जुआ खेलने के लिये बैठ गया। पीटर के दिमाग में खलबली मची हुई थी। उसके हाथ में आये पैसे निकाल गये थे। उसकी जेब में जो रूपये थे वह हारता चला जा रहा था, किन्तु वह अपने हारे रूपये किसी तरह पाना चाहता था।

राम बोला – "आपको रूपये प्राप्त हो सकते है।"

"कैसे"?

कृष्ण बोला – " आपको थोड़ा कष्ट उठाना होगा।"

तालाब में जलकुम्भी, कमल को ढक लेती है। जलकुम्भी का कोई भी उपयोग नहीं होता, जबकि कमल फल देता है और फूल भी। उसी तरह समाज में निठल्ले, बद्चलन और आवारा मानव होते है, जो बिल्कुल जलकुम्भी की तरह होते

है, जो खिल रहे कमल जैसे इंसानों को ढक लेते है। इनके नीच कार्य, समाज और देश को शर्मसार कर देते है। उनके मन–मस्तिष्क में गंदगी सदैव तैरा करती है। राम, कृष्ण और इन्द्र खेल खेलना चाहते थे, जिसमें समस्त मानव जाति उस गन्दगी में डूब जाए।

इन्द्र बोला – "आपको पाँच हजार रूपये दिये जायेंगे, यदि आप अपने हाथ की हथेली में थूंके।"

सुनकर पीटर हिचकिचाया – "यारो! मैं अपनी हथेली में नहीं थूक सकता।"

राम ने कहा – "हम तीनों के सिवा यहां और कोई नहीं है।"

कृष्ण ने साहस बंधाया – "यह भी एक तरह का खेल है।"

"नहीं यार, यह खेल गन्दा है।"

इन्द्र ने उसका और हौंसला बढ़ाया – "किसी भी नौकरी या बिजनेस में इतनी देर का इतना अधिक धन नहीं मिलता है। गन्दगी हाथों में नहीं दिल में होती है। हाथ तो सदैव साफ होते है। जब गन्दगी दिल में भरी होती है, तो वह दिल से निकलकर हाथों पर आ जाती है।"

पीटर पांच हजार रूपये के लालच में अपने दायें हाथ की हथेली पर थूंक लिया और उसको हाथ की हथेली पर भरे खड़ा रहा। राम, कृष्ण, इन्द्र तीनों मुस्करा रहे थे।

कुछ मिनट मौन रहने के बाद इन्द्र ने पीटर से कहा "यदि तुम एक और खेल खेलो तो हम तुम्हें दस हजार रूपये और दे सकते है।"

पीटर उत्सुकतावश बोला – "ऐसा कौन सा खेल है जिसमें मुझे दस हजार रूपये और मिल सकते है।"

कृष्ण ने इन्द्र से कहा – पीटर को दस हजार रूपये वाला खेल समझायें।"

"यदि तुम अपना बैक खोलकर दिखा दो तो तुम्हें इसी समय दस हजार रूपये दे देंगे।"

पीटर सकुचाया और बोला – "यार, यह खेल मैं नहीं खेल सकता।"

तीनों ने एक साथ कहा – "यहाँ हम तीनों के सिवा और कोई नहीं देख रहा है। पीटर! यह तो खेल है। तुम तो पहले ही अपनी हथेली पर थूंक कर पांच हजार रूपये प्राप्त कर चुके हो। तो अपना बैक आसमान की तरफ खोलकर दस हजार रूपये और प्राप्त कर लो। आज तुम पन्द्रह हजार का जुआ जीत जाओंगे।"

समाज में पीटर जैसे कुछ आदमी होते है जो रूपयों के हथौड़े से अपने को पीट ही डालते है। उनका मान, सम्मान और अस्मिता लहुलुहान हो जाती है। ऐसे लोग समाज में एक मजाक बन जाते है। ऐसे लोग पहले रूपयों से अप. नी भूख मिटाते हैं फिर अपने आपको स्वयं खाने लगते है, समाज को ऐसे लोगों से सतर्क रहना चाहिए नहीं तो ऐसे लोग समाज को भी खाने लगते है।

पीटर आसमान की तरफ अपना बैक खोलकर खड़ा हो गया। यह सब देखकर पेड़ो से पत्तियां हिलना बंद कर दिया था। पशु–पक्षी मूक बन गये थे। बेशर्म चारों थे। पीटर सबसे ज्यादा बेशर्म था। तीनों के दिमागों में फिर खुराफाती विचार उमड़ने लगे।

तीनों ने बारी–बारी से कहा – "हम लोग तुम्हें पन्द्रह हजार रूपये और दे सकते हैं, यदि तुम अपने बैक में हम तीनों से थुकवा लो।"

पीटर में शर्म बची नहीं थी। उसे घर की मान–मर्यादा का कोई ध्यान नहीं था। उसका ध्यान केवल पैसे पर केन्द्रित हो जाता है तब उसके शरीर के सारे अच्छाई के केन्द्र बन्द हो जाते है। उसके शरीर के अन्य केन्द्रो से पीब निकलने लगती है। जो समाज में बदबू और रोग फैलाने लगती है। तीनों ने उसके बैक में बारी–बारी से थूका।

पीटर की हरकत पूरे जिले में फैल गयी जैसे जंगल में आग फैलती है। जो भी सुनता उस पर थू–थू करता था।

जब लारेंस को इस बात का पता चला तो वह तिलमिला गया। उसने राम, कृष्ण और इन्द्र से बदला लेने की सोची। लारेंस को डेढ़ लाख रूपये का फंड मिला था, वह तीनों के पास गया और कहा – "मैं आए लोगों को डेढ़ लाख रूपये दूंगा, यदि आप तीनों हमारी एक शर्त मान लोगे।"

तीनों ने कहा –"हां, हम तीनों डेढ लाख रूपये के पीछे कोई भी शर्त आपकी मानने को तैयार है।"

"मैं आप लोगो के मुंह थूकूंगा। प्रत्येक को पचास–पचास हजार रूपये दूंगा।"

तीनों सोच में पड़ गये। तीनों बहुत बड़े आय्याश थे। राम, कृष्ण और इन्द्र ने कुमकुम, प्रिया और मेनका नाम की तीन कॉल–गर्ल्स को रात के लिये बुलाया था।

तीनों बोले – "हमें रूपये अभी चाहिए"

गड्डियां देखकर तीनों में लालच आ गया। राम, कृष्ण और इन्द्र ने अपने–अपने मुंह खोल दिये। लारेंस ने तीनों के मुंह में बारी–बारी से थूका और डेढ़ लाख रूपये देकर चला गय। उसकी चाल तेज हो गयी थी। जैसे वियजी सेना अप. ने किले में तेजी से पहुंचती है ताकि वियजश्री की सूचना सभी को दे सके।

उधर सी–जर्जा जोजेफ की नपुंसकता बढ़ गई थी। अब दवाईयां का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। वह पूर्णतः नपुंसक हो गया था। अब उसकी खिन्नता बहुत बढ़ गई थी। नपुसंकता सभी बीमारियों से ज्यादा भयंकर होती है। लोग कैंसर और एड्स से इतना भयभीत नहीं होते हैं और न ही महसूस करते है। इन जानलेवा बीमारियों को ठीक करने में इतना अधिक पैसा खर्च नहीं करते हैं, जितना अधिक पैसा नपुंसकता दूर करने में लगाते हैं।

सी–जार्ज जोजेफ अब अपनी पत्नी और बच्चों से रूखा व्यवहार करने लगा था। अब वह अपनी पत्नी पर शक करने लगा। अतः पत्नी पर निगाह रखता था। पत्नी, बेटी और लारेंस तीनों व्यवहारिक आदमी थे। तीनों सी0जॉर्ज जोजेफ की कमियां जानते थे। मिसेज जोजेफ अपनी तरह अपनी बेटी की जिन्दगी बर्बाद नहीं करना चाहती थी।

उसने अपनी बेटी मारिया से कहा – "बेटी, शादी के बाद बहुत पछताना पडता है, यदि लड़का शारीरिक रूप से कमजोर हुआ।"

बिना शरमाए बेटी बोली – "मम्मी, आप इसके लिये जो भी उपाय करेंगी मैं आपका साथ दूंगा।"

लारेंस ने हामी भरी – "आप ठोंक बजाकर मारिया के लिये लड़का चुनें।"

एक खूबसूरत लड़का सिकन्दर जो पशु चिकित्सक था। मारिया से शादी करना चाहता था। लेकिन मारिया, उसकी माँ और लारेंस भयभीत थे, कहीं वह नपुसंक न हो। माँ ने लारेंस से कहा – "इसके परीक्षण का कोई उपाय बताओ। डॉक्टर से इसके पुरूषत्व का प्रमाण पत्र लिया जाये। लड़का अपनी डॉक्टरी जांच करवाए।"

"आजकल पैसे के लोभ में डॉक्टर भी बिक कर मनचाहा प्रमाण पत्र लिया जाये। लडका अपनी डाक्टरी जाँच करवाए।"

"आजकल पैसे के लोभ में डॉक्टर भी बिक कर मनचाहा प्रमाण पत्र दे देते है।"

मारिया ने कहा – "मैं आप पर छोडती हूं। जिस तरह इसकी प्रैक्टकली जॉच करेंगी मैं आपका साथ दूंगी।"

जब मारिया और लारेंस कॉलेज पढ़ाने गये तब सिकन्दर को अपने घर एकान्त वाले कमरे में बुलाया और कहा – "मेरे पति नपुसंक है। ऐसा कोई भी पैमाना नहीं है कि वर की ऊपर से जॉच हो सकें।"

"आप क्या चाहती है? आप जिस तरह से सन्तुष्ट हो मैं वह परीक्षण करवाने की तैयार हूं।"

"समाज में अभी तक इस तरह के परीक्षण शुरू नहीं हुए है।'

''मैं तैयार हूं।''

''यदि आप इस परीक्षण में सफल हो गये तो मैं अपनी बेटी की शादी आपसे कर दूंगी।''

शायद धरती पर होने वाला यह पहला परीक्षण था। इसमें समाज की सड़ी गली मान्यताएं ध्वस्त हो रही थी। वास्तव में यह एक अटपटा परीक्षण लगता था। लेकिन यह सबसे बड़ा परीक्षण था। इसमें सृष्टि के निर्माणकर्ता शामिल थे। भविष्य की नींव इस परीक्षण पर टिक गयी है।

''मैं यह परीक्षण देने को तैयार हूं।"

कमरे के अन्दर जोर का कम फट गया था। वास्तव में वह शक्तिशाली बम था। वैटनैरी डॉक्टर परीक्षण में पास हो गया था। कुछ दिनों बाद मारिया और सिकन्दर की शादी हो गयी और अपने पति के वहां चली गई, उसका पति नौकरी करता था। वहीं मारिया ने भी एक अंग्रेजी स्कूल में नौकरी कर ली।

शादी के पहले लड़की के घर वाले मिसेज जोजेफ के यहां लड़की के वर के साथ परीक्षण के लिये आने लगे। मिसेज जोजेफ औरत के भविष्य के लिये यह परीक्षण करने लगी। नपुसंक पति सी जार्ज जोजेफ को अपनी पत्नी पर शंका होने लगी। नपुसंक आदमी जितना अन्दर से कमजोर होता है, वह बाहर से बहुत मजबूत नजर आता है। समाज के सामने वह अपनी बाहर की मजबूती से अपने अन्द की कमजोरी को दूर करना चाहता था। वह बहाना बनाकर मेरठ नौकरी करने चला गया, लेकिन एक हफ्ते बाद रात्रि में भेष बदलकर अपने दरवाजे की कुण्डी खटखटाई। अन्दर से आवाज आई "अभी तेरा नम्बर नहीं है।"

पति की शंका विश्वास में बदल गई। उसने दरवाजा तोड़ दिया। वहां पर मिसेज जोजेफ एक पुरूष का परीक्षण कर रही थी।

उसने कहा – ''हमरामजादी! रंडी बन गई है।"

वह कड़क आवाज में बोली – ''तू क्या जाने रन्डी क्या होती है,'' जोर से आवाज सुनकर लारेंस आ गया। उसने अपने पिता से कहा – '' आप बेकार में परेशान हो रहे है। आप जो सोच रहे हैं ऐसा कुछ भी नहीं है।''

''जो मैं देख रहा हूं क्या वह सब झूठ है।''

''जी, हां''

''तू तो साले! भड़वा बन गया है। साले डोम, अपनी औकात पर आ गया। अपनी माँ को वेश्या बना दिय।''

''आप तो भड़वा बनने लायक भी नहीं है।''

''साले! मैं तुम दोनों को खत्म कर दूंगा। पहले मैं इस रंडी को समाप्त करूँगा।'' कहकर उसने रिवाल्वर अपनी पत्नी पर तान दिया।

लारेंस बोला – ''डैडी, माँ को शूट मत करना।''

''साले! माँ की दलाली करता है। इस घर को वेश्यालय बना दिय।''

''यह वेश्यालय नहीं बल्कि औषधालय है।''

ज्यों ही सी0 जॉर्ज जोजेफ रिवाल्वर पर ट्रिगर दबाने वाला था लारेंस माँ के ऊपर गिर पड़ा। गोली लारेंस के बॉए हाथ को चीरती हुई निकल गई। खून की धारा बहने लगी। उसने दोबारा मिसेज जोजेफ को शूट करना चाहा। लारेंस ने एकाएक उठकर रिवाल्वर पकड़ ली। मिसेज जोजेफ भी मि0 जोजेफ से लिपट गई। छीना झपटी में गोली चल गई और मि0 जोजेफ के सीने को पार कर गई।

माँ का दूध बेटे को पालता है। बेटा अत्याचारियों के लिये विषैला सर्प बन जाता है और उसके पेट के अन्दर गया माँ का दूध जहर बन कर माँ की इज्जत पर हाथ डालने वालो को मार डालता है। माँ के दूध में यही ताकत होती है। इस ताकत के सामने तलवार, बन्दूक और एटम बम की ताकत धराशाही हो जाती है।

पुत्र और माँ को गिरफ्तार कर लिया गया। एक जज सी0एम0 खरोड़ा थे जो मिसेज जोजेफ की सुन्दरता पर मुग्ध हो गये। उन्होंने दोनों को जमानत दे दी और दोनों को अपने बंगले में बागवानी के लिये रख लिया। आशिक मिजाज जज अकेले में मिसेज जोजेफ से मिलता था। वह एक रात उसके साथ सोना चाहता था। उसने नियम कानूनों को ताक पर रख दिया था। उसे शहर में हो रही खुसर–फुसर से कोई मतलब नहीं था। किसी भी तरह वह उसको पा लेना चाहता था। जब अदालत न्याय के एक पलड़े में सेक्स रख लेती है तो न्याय का पलड़ा हल्का हो जाता है।

उसने मिसेज जोसेफ से कहा – ''मैं तुम्हारे साथ एक रात्रि बिताना चाहता हू, वैसे तुम बहुत लोगों के साथ सो चुकी हो।''

''जज साहब, आप गलत समझ रहे हैं, मैं वैश्या नहीं हूं।''

''मैं आप दोनों को बाइज्जत छोड दूंगा।''

''ऐसा कभी नहीं हो सकता है, चाहे मुझे फांसी लग जाए।''

चोर और कामी आदमी की मनोदशा एक जैसी होती है। चोर चोरी करते समय सभी से छिपता है। कामी आदमी भी यही करता है। जब चोर चोरी करते समय पकड़ा जाता है जब वह समाज के सामने बेइज्जत होता है। लेकिन जब कोइ ओहदेदार इस कुकृत्य में पकड़ा जाता है तब वह अपना ओहदा गंवाने के साथ–साथ अपना सब कुछ गंवा देता है।

दूसरे दिन रात्रि में जज ने मिसेज जोसेफ का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुलते ही जज उससे लपटा–झपटी करने लगा। उसने मिसेज जोसेफ के सारे कपड़े फाड़ दिये। मिसेज जोसेफ चिल्लाने लगी। उसी समय लॉरेंस आ गया और फावड़े का डंडा मारकर जज को घायल कर दिया।

जज ने अपने सुरक्षा कर्मी को आवाज लगाई – '' दीवन सिंह''।

'' जी हजूर'' जज के सर से खून बहता देखकर वह दंग रह गया। वह बोला– '' क्या बात है सर?''

''लारेंस ने मुझ पर हमला किया है। ये दोनों मेरे घ ार में चोरी कर रहे थे। मुझे मारकर घर के रूपये और जेवरात लिए जा रहे थे।''

''जब साहब झूठ बोल रहा है। इसने मेरी माँ के साथ बलात्कार करने की कोशिश की है''।

जज गुर्राया – ''क्या मैं इस वेश्या के साथ बलात्कार करूंगा'?''

अपनी इज्जत को दांव पर लगता देख उसने दीवान सिंह को आदेश दिया – '' लारेंस को शूट कर दो।''

''यस सर!'' और उसने एक गोली लारेंस के सीने पर दाग दी। मिसेज जोसेफ तड़प रहे बेटे के ऊपर गिर पड-ी। मिसेज जोसेफ के स्तनों से दूध टपक–टपक कर लारेंस के मुँह में गिर रहा था।

*****

दो देश

–रूपनारायण सोनकर

मकान बनाते समय बीम का उपयोग करते हैं ताकि मकान मजबूत रहे। समाज की मजबूती प्रदान करने के लिये, समाज के निचले पायदान के लोग बिल्कुल बीम का काम करते हैं।

तीन नौजवान युवक संदेश, दिनेश और बिन्देश एक नाले की सफाई कर रहे हैं। संदेश गटर के अन्दर घुसा है। उसके हाथा में फावड़ा और तसला है। सर पर मोटी साफी बांधी है। आधे पैर तक के दोनों पैरों में बड़े बड़े जूते पहिने है। बिन्देश और दिनेश खुली गटर के दोनों ओर ऊपर खड़े है। गटर का ढक्कन खोल कर जमीन पर रखा गया है। गटर के अन्दर से भयानक दुर्गन्ध आ रही है और गैस निकल रही है। जब कभी भी गैस प्लाटों से एकाएक गैस का रिसाव होता हे तो अनजाने में लोग मारे जाते हैं। जो लोग जानते हुए भी गटर के अन्दर से निकलने वाली गैस का सामना रोटी के लिये करते हैं अपनी जान की परवाह तक नहीं करते हैं। उनकी लाचारी और मजबूरी का अंदाजा सहज लगाया जा सकता है। जिस देश में धनाढय् रहते हैं वह उनका देश नहीं हो सकता है। आजादी के पछत्तर वर्ष बीत जाने के बाद भी ऐसे लोग सीलन व तंग गलियों में रहते हैं। उनके जानवर सूअर, गाय, भैंस बकरी उनके साथ रहते हैं। मलमूत्र कीचड़ के बीच बड़ी मुश्किल से दो जून की रोटी जुटा पाते हैं। ऐसे लोगों मे ज्यादातर दलित, कुछ पिछड़े मुस्लिम और नाम मात्र के सवर्ण होते हैं। इन मालिन बस्तियों में कोई सरकारी डाक्टर नही होता है। मच्छर मक्खी इनका खून चूसते हैं। संदेश ने नाक, सर को साफी से बांध लिया हैं। दोपहर का समय हैं। सूरज आसमान से अंगारे फेंक रहा है। संदेश नाले के अन्दर का काला काला कीचड़ तसले में भरकर ऊपर अपने दोनो साथियों को पकड़ा रहा है। तीनों पसीने से तर बतर हैं।

.2.

कीचड़ ने तीनों को बिल्कुल काला कर दिया है। कोयले की खदानो में हीरा पाया जाता है। संदेश समाज का अमूल्य हीरा है। खानों में पाया जाने वाला हीरा हैं, जो अस्प्रष्य है जिनकी कोई कीमत नहीं है। शानदार हवेलियों, ''फ्लैटों और राज घरानों का मल मूत्र नालों के अन्दर प्रवाहित होता है जिसको तीन दलित नौजवान साफ कर रहे हैं। समाज को भंयकर दुर्गन्ध से बचाने वाले लोग स्वयं भंयकर दुर्गन्ध का शिकार हो जाते हैं। फिर भी कोई परवाह नहीं। कोई गम नहीं। अपना एवं अपने परिवारों का पेट भरने के लिये वे नौजवान अपना अपना जीवन सूली पर चढ़ा लेते हैं लेकिन समाज को सूली पर नहीं चढ़ने देते हैं।

दिनेश और बिन्देश चिन्तित है कि कहीं कोई विपत्ति न आ जाये। बिन्देश जोर जोर से आवाज लगाता है।

''भइया संदेश कोई नीचे खतरा तो नहीं है? आवाज नीचे से तुरन्त नहीं आती है। बिन्देश घबराता है। दिनेश भी जोर से आवाज देता है।

''बड़े भइया आप ठीक हैं कि नहीं? कोई खतरा हो तो तुरन्त ऊपर आ जाओं।

सदेश की आवाज नहीं निकल पाती है। गटर के अन्दर अनहोनी होने वाली है। संदेश की बोलती बंद है। एक काला नाग गटर के अन्दर फन ताने संदेश के समाने घिन्डी मारे बैठा है। संदेश के हाथ में फावड़ा है। दोनों अपनी जान बचाने के लिये एक दूसरे पर हमला कर सकता है लेकिन वह भी संदेश के फावड़े का वार बचाना चाहता है। खुले गटर की ओर से नाग ने मोर्चा संभाल रखा है। रणभूमि में कभी कभी ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं जब दोनों सेनाएं युद्ध करने के लिये मजबूर हो जाती है। एक को परास्त होना ही पड़ता

.3.

है। यदि समझौता या युद्ध विराम दोनों सेनाओं में हो जाता है तो दोनों की जान बच जाती है।

लेकिन यहाँ पर दोनों सेना नायकों में समझौता होना संभव नहीं हैं। युद्ध निश्चित है। या तो दोनो मारे जायेगें या कोई एक। काला नाग दूर से ही विष संदेश की ओर फेंकता है। संदेश पीछे हटता है और नाग से कहता है– ''मेरे और तुम्हारे बीच दूरी बहुत कम है। यदि तुम मुझ पर हमला करो. गें तो मैं मजबूर होकर तुम पर फावड़े से वार करूगाँ।''

नाग बोलता है –

''यदि तुमने मुझपर प्रहार किया तो मैं अपने विष तुम पर फेंकूंगा। मैं तुमको काटूंगा'' नाग अपने फन को संदेश की ओर फेंकता है।

संकेत कहता है –

''मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता हूं। तुम कोबरा नाग हो। इस धरती पर तुम्हारे वंशज कम हैं।''

''मैं मानव जाति पर विश्वास नहीं करता हूँ। तुम लोग धीरे–धीरे हमारी पूरी नस्ल को समाप्त करना चाहते हो जो बचे हैं उनको भी मारना चाहते हो''।

''तुम्हें तो जंगल में रहना चाहिए था। तुम इस गटर के अन्दर क्यों आए?

.4.

''हम सभी भाई, बन्धु जंगलों मे स्वछंदता पूर्वक

विचरण कर रहे थे। तुम लोग हमें जंगलों से दूर भगा रहे हो। अपने फायदे के लिये। हमें पकड़ कर हमारा विष निकालते हो। तमाम प्रकार की दवाइयाँ बनाते हो। फिर हमें मार
देते हो। तुम लोगों से बचने के लिए इस गटर के अन्दर आये हैं। तुम हमें मारने के लिए इस गटर में भी आ गये''।
''हम तुम्हें मारने के लिये गटर के अन्दर नहीं आये हैं। यह एक संयोग है कि तुम मुझसे टकरा गये।''
''तुम मानव हो। सदियों से तुम लोग हमारा विनाश करते आये हो। अब मैं तुमको काटकर पूरी मानव जाति से बदला लूंगा। तुम्हें रसताल में पहुंचा दूगाँ।''
''मैं एक दलित हूँ। मेरा देश अलग है। तभी तो मैं ऐसे घिनौने काम करता हूँ। गैर–दलित दूसरे देश में रहते हैं। वे घिनौना काम कभी नहीं करते है।''
''तुम्हारा देश कौन सा है?''
''जहाँ भुखमरी और लाचारी है। हमारे घर के नाम पर झुग्गी–झोपड़ियाँ हैं। जितने भी घृणित कार्य हैं, गैर–दलित हमसे करवाते हैं। हमारी बहिन माताओं के साथ गैर दलित जो दबंग है उन पर अत्याचार करते है, उनका शारीरिक शोषण करते है। सरकारी गैर–सरकारी नौकरियों में अधिपत्य उन्हीं का है''।
''लगता है तुम्हारी स्थिति हमसे ज्यादा बदतर है''।

.5.

''उन्होने हम लोगों को एक–एक रोटी के लिये मोहताज़ कर दिया है। तभी से हम लोग जीने के लिये इस गटर के अन्दर घुस रहे हैं। गैर–दलित कभी भी ऐसा कार्य नहीं करते हैं। उनको रोटी ऐसे कार्य करके नहीं जुटानी पड़ती है।''
दोनो का वार्तालाप जारी था। ममता, दया दोनों में नहीं थी। दोनों अपनी–अपनी जान बचाने के लिये एक दूसरे को परास्त करना चाहते थे। यहाँ पर ताकत नहीं विवेक और निडरता काम आने वाली थी। ऐसे अवसरों पर आदमी अपना धैर्य खो देता है और परास्त हो जाता है। जो आदमी हिम्मत नहीं हारता है। प्रत्येक विपत्ति का सामना बहादुरी से करता है। वह आदमी मृत्यु को परास्त कर देता है।
वास्तव में यह लड़ाई रासायनिक युद्ध और तलवार के मध्य थी। आज के युग में रासायनिक युद्ध तलवार व बमों के युद्ध को परास्त कर देता है। अगर आप रसायन से भरे बर्तनों को तलवार या बमों से फोड़तें हैं तो सारा विश्व त्राहि–त्राहि करने लगता है। ऐसे में रसायन के बर्तनों को फोड़ना नहीं चाहिए बल्कि उनको ढक देना चाहिए।
यह विचार संदेश के मन मस्तिष्क में समा गया। उसने तुरन्त अपने सर की बंधी साफी उतार दी और हिम्मत करके काले नाग के फन पर डल कर उसे ढक दिया। हिम्मत करके फन को दोनों हाथ से पकड़ा लिया। सर्प को पकड़े–पकड़े गटर के अन्दर से ऊपर तक आ गया।

गटर के अन्दर काले नाग होने की सूचना शहर कानपुर में फैल गयी थी। भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। पंडित नोखेलाल ने अपने लठैत लड़कों को आदेश दिया –

.6.

''नाग को मार दिया जाये।''
उसका लड़का दीपू बोला – ''मैं अभी लाठी से मारता हूं।''
संदेश ने कहा –
''यह विषैला सर्प है। इसको मार देना ही अच्छा है। यह किसी को डस सकता है।''
उसी समय बहुत सारे खुंखार गैर–दलित लाठियाँ तान कर सर्प को मारने के लिये तैयार हो गये। वे सभी संदेश से नाग को जमीन पर छोड़ने के लिये तेज आवाज में बोले।
''साले! भंगी इस नाग को पकड़कर बहादुर बन रहा है। इसको जमीन पर छोड़ दे।''
संदेश उस विशैले नाग को परास्त कर उसको अपने पंजों से जकड़ लिया था। वह अब मृत्यु से भयभीत नहीं था।
जो आदमी एक बार मृत्यु का सामना बहादुरी पूर्वक कर लेता है उस पर विजय प्राप्त कर लेता है। फिर उसको मृत्यु से भय नहीं लगता है। उसने गैर–दलित दबंगों से कहा।
''मैं इसको जमीन पर नहीं छोडूंगा। तुम इसको नहीं मार सकते हों।''
सारे गैर दलित चिल्लाने लगे और संदेश पर लाठियाँ तान दी। संदेश घबराया नहीं उसने कहा।

.7.

''यदि तुम लोगों ने मुझे मारा तो मैं इस जहरीले नाग को तुम्हारे ऊपर फेंक दूंगा।''
संदेश ने साफी को नाग के फन से हटा दिया और दूसरे हाथ से मजबूती से पकड़ कर जीवहन्ता गैर–दलितों की तरफ तेजी से बढ़ा और बोला–
''मेरे साथी सर्प काटों इनको''
यह देखकर सारे के सारे गैर–दलित वहाँ से भागने लगे। कुछ ही क्षण में भीड़ तितर–बितर हो गयी।
संदेश ने वन अधिकारियों को सूचना पहले ही दे दी थी। वन विभाग के कर्मचारी व अधिकारी मौके पर आकर सांप को पकड़कर आरक्षित वन में छोड़ दिया।
गटर के अन्दर रहने से काले नाग को मुक्ति मिल गयी लेकिन दूसरा बिना जहर का काला नाग गटर के अन्दर सवर्ण दंबगों द्वारा फिर जबरदस्ती घुसा दिया गया था पता नही उसे गटर के अन्दर जाने से कब मुक्ति मिलेगी।
संदेश गटर के अन्दर से गाता है। दिनेश और बिन्देश गटर के ऊपर खड़े होकर उसका साथ देते हैं।
मेरा देश यही है यारो, रहने को गटर और झोंपड़ी
पहनने को फटे पुराने चिथड़े लत्ते और यही घिनौने काम।
मेरे देश में रहती है हरदम शाम।
मेरे जैसे काले नागो को गटर के अन्दर से बाहर निकलो
शोषण करने वालों के अत्याचारों का,
कर दो काम तमाम।
देश दो नहीं एक बनाओं
डा0 अम्बेडकर के पथ पर आगे बढ़ जाओं
कराहती जनता का उद्धारक बन जाओ।

कफ़न बनाम कफ़न (मुंशी प्रेमचन्द बनाम सोनकर)

डॉ.पान सिंह
प्रोफेसर हिंदी विभाग/विभागाध्यक्ष,
हिमांचल विश्वविद्यालय, सिमला

मुंशी प्रेमचन्द प्रतिष्ठित तथा उच्च कोटि के कहानीकार थे। उन्हें 'कहानी सम्राट' माना जाता है। प्रेम. चन्द के कथा–साहित्य का मुख्य ध्येय जन–सामान्य के जन–जीवन को प्रस्तुत करना रहा है। उन्होंने गरीबों, दलितों, बेसहारों, कृषकों, श्रमिकों और छोटे साधनों से आजीविका कमाने वालों को आधार बनाकर अपना कथा–साहित्य रचा। प्रेम चन्द ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सभी प्रकार की परिस्थितियों का वर्णन किया है। उन्होंने अपने युगबोध के अनुरूप कथा–साहित्य रचा। तत्कालीन समाज की तस्वीर उनके साहित्य में पूर्ण रूप से झलकती है।

आज की परिस्थितियां उस काल से बिल्कुल भिन्न हैं। उस समय देश गुलाम था, आज देश आजाद है। आज आम आदमी की सोच आजाद है। देश में अपनी सत्ता, कानून, संविधान है। विचारों की स्वतन्त्रता हर तरफ दि खाई देती है। फैशन के दौर में आदमी काफी आगे निकल गया है। पीछे मुड़कर देखने के लिए आदमी के पास समय नहीं है। अब मनुष्य 'आधुनिक–मानव' कहलाने लगा है। वह सभी प्रकार की चुनौतियों से लड़ने के लिए तत्पर रहता है। पुराने समय में जातिगत भेदभाव, आडम्बर, रीति–रिवाज, सभ्यता–संस्कृति को मद्देनजर रखकर ही कुछ किया जाता था, लेकिन आज मनुष्य अपने परिवार की नहीं सोचता तो समाज की क्या सोचेगा? आज हर पहलू बदला नजर आता है। तत्कालीन समाज में स्त्री दशा बहुत निम्न थी, स्त्री को कुछ नही समझा जाता था, ले. किन आज स्त्री, पुरूष को कुछ नहीं समझती। उसका मानना है कि वह हर तरफ से परफैक्ट है। वह हर क्षेत्र में पुरूष को टक्कर देने के लिए तैयार है। उसका दावा पुरूष पर हर दिन हावी होता नजर आ रहा है।

प्रेमचन्द द्वारा रचित 'कफन' कहानी आज से लगभग 90 वर्ष पूर्व लिखी हुई तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप पूर्ण रूप से सामाजिक ढांचे के अनुरूप गढ़ी हुई कहानी है। जिसमें उसके कथानक, पात्र, कथोपकथन, वातावरण, उद्देश्य शैली सभी पर पूर्ण रूप से ख्याल रखा गया है। जबकि सोनकर की 'कफन' आज की कहानी है, जो आधुनिकता के लिए हुए हैं। प्रेम चन्द ने जो कथानक उठाया है वह तत्कालीन परिस्थितियों से मेल खाता है और सोनकर ने जो थीम उठाया है वह आज से मेल खाता है। उस समय जो कीमत एक रूपये की थी, वह आज बहुत अधिक है। प्रेमचन्द के पात्र घीसू को ठाकुर द्वारा कफन के लिए दो रूपये दिये जाते हैं और सोनकर का पात्र श्रीवास्तव एक मामूली शर्त के लिए करोड़ इनाम देने की घ ोषणा करता है। दोनों की परिस्थितियां युगानुरूप हैं, समयानुरूप हैं। प्रेमचन्द के पात्र दलित, जीर्ण–शीर्ण, गरीब, श्रमिक वर्ग से सम्बन्धित है, जो आदमी को लालची होने पर मजबूर कर देता है। लेकिन सोनकर की कहानी में आदमी के अधिक लालची होने का कोई कारण नहीं दि खता फिर भी आदमी लालची और पैसे का पुजारी बना हुआ है।

प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' में आए पात्र घीसू और माधव इसलिए लालची हैं कि उनके पास रखने के लिए कुछ नहीं। वे अपने पेट की आग के लिए किसी के खेत में आलू चुराकर भूनते हैं और सर्दी में ठिठुरते हुए रात बिताते हैं। वे बुधिया की परवाह इसलिए नहीं करते, क्योंकि उन्हें डर था कि एक के जाने से दूसरा आलू न खा जाए! उन्हें डर था कि कहीं बुधिया के पेट से निकलने वाले बच्चे का भोजन कहां से जुटाएंगे। इसलिए वे उसका मर जाना ही अच्छा समझते हैं। उनकी गरीबी और भूख उन्हें स्वार्थी बना देती है। तभी तो वे ठाकुर द्वारा कफन के लिए मांगे गये पैसों की शराब पीते हैं और खाना खाकर मजे करते हैं।

'कफन' के पात्र घीसू को अपने जीवन में एक बार अच्छा भोजन और भरपेट खाना मिला था इसलिए उसे आज भी ठाकुर की बारात याद है। वह माधाव से कहता है

– ''वह भोज नहीं भूलता। तब से फिर उस तरह का खाना और भरपेट नहीं मिला। लड़की वालों ने सबको भरपेट पूड़ियां खिलाई थी, सबको! छोटे–बड़े सबने पूड़ियां खाई और असली घी की! चटनी, रायता तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, मिठाई अब क्या बताऊं कि उस भोज में क्या स्वाद मिला, कोई रोक–टोक नहीं थी, जो चीज चाहो, मांगो, जितना चाहो खाओ। लोगों ने ऐसा खाया कि पानी भी नहीं पिया गया। ..... ऐसा दिल दरियाव था यह ठाकुर!'' आगे घीसू कहता है– 'अब कोई क्या खिलायेगा। वह जमाना दूसरा था।

'तुमने बीस एक पूड़ियां खाई थी!

बीस से ज्यादा खाई थी!

मैं, पचास खा जाता!

पचास से कम मैंने भी न खाई होंगी। अच्छा पट्ठा था। तू तो मेरा आधा भी नहीं है।''

लेकिन सोनकर के पात्र अच्छे–खासे नौकरी पेशा हैं, धन–दौलत से पूर्ण। उन्हें पेट की भूख से कोई सरोकार नहीं। कहीं भी पेट की भूख की तड़फन नहीं दिखाई देती। उन्हें सिर्फ, पैसे की भूख है। उन्होंने पैसे के नशे में चूर आदमी की हालत का चित्रण किया है। प्रेमचन्द ने घीसू और माधव के माध्यम से दलित वर्ग की दीन हीन दशा का चित्रण किया है। जिसमें उनके पास दो वक्त की रोटी का भी कोई साधन नहीं होता है। कभी वे लकड़ी काट तथा बेचकर रोटी कमाते हैं तो कभी आलू टमाटर चुराकर पेट भरते, उनके पास तन ढकने तक पर्याप्त पकड़े भी नहीं होते। उच्च वर्ग से उधार लिया पैसा भी वे हजम कर जाते और वापिस का कोई नाम नहीं। मजदूरी ही उनका पेशा था। प्रेमचन्द घीसू और माधव की दरिद्रता का चित्रण करते हुए लिखते हैं– 'मैं सोचता हूँ, कोई बाल–बच्चा हुआ तो क्या होगा? सौंठ गुड, तेल कुछ भी नहीं है घर में।''

घीसू और माधव की दरिद्रता और कुलीनता के विषय में प्रेमचन्द आगे लिखते हैं– ''सब कुछ हो जायेगा। भगवान दे तो। जो लोग अभी तक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुलाकर रूपये देंगे। मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ न था, मगर भगवान ने किसी न किसी तरह बेड़ा पार लगाया।''

लेकिन सोनकर के सभी पात्र पैसे वाले हैं, कलैक्टर, श्रीवास्तव तथा सक्सेना सभी धनवान हैं।

प्रेमचन्द की कहानी में नारी त्रासदी है लेकिन सोनकर की कहानी में जातिगत भेद। समस्या दोनों कहानियों की लगभग मिलती–जुलती है। प्रेमचन्द ने बुधिया के साथ हुई घटना को केन्द्र बनाया है और सोनकर ने दहेज प्रथा को केन्द्र बनाकर कहानी कथानक तैयार किया है। प्रेमचन्द कहानी में 'कफन' के लिए रास्ता बताते चलते हैं, लेकिन सोनकर कफन को दिखाकर कफन बनाते हैं। कफन दोनों ने ही तैयार किया, लेकिन अलग–अलग तरीके से। कथा कहने का दोनों का अपना–अपना अंदाज है। प्रेमचन्द ने जहां कहानी को दो टुक में कहा है, वहां सोनकर ने बात को घुमाते हुए कहा। प्रेमचन्द ने कहानी की तरह बात कही है और सोनकर ने बात की कहानी बनायी है।

कहानीकार सोनकर द्वारा लिखी कहानी 'कफन' का आरम्भ बड़े ही गजब तरीके से किया है। ऐसा लगता है कि मानों किसी गोताखोर ने डुबकी इस निश्चय के साथ लगायी कि वह मोती अवश्य ही लेकर लौटेगा। कहानी के आरम्भ में सोनकर दिखते हैं: ''सोना पाने के लिए सोने की खदानों को खोदना पड़ता है। बहुत गहराई में जाना पड़ता है। तब कहीं सोना हाथ लगता है। लेकिन कुछ लोग सोना पाने के लिए औरतों और आदमियों का सोना छीन लेते हैं। ऐसे लोगों का सोना जेल में होता है। उनका सोना घरों में नहीं होता। उनका सोना ट्टटा होता है।'' इन पंक्तियों के दोहरे अर्थ में आदमी के अन्दर तक झकझोरने की पूरी क्षमता है। सोनकर वास्तव में चतुर कहानीकार हैं और इनका वाक्चातुर्थ बहुत ही जबरदस्त है।

सोनकर की कहानी 'कफन' का कथानक आधुनिकता को लिए हुए समाज की भयंकर संड़ाध 'दहेज प्रभा' को उजागर करती हुई आगे बढ़ती है और उच्च वर्ग के खोखले विचारों की पूरी पोल खोल देती है। पैसे के लिए उच्च वर्ग के लोग अपना धर्म, जाति, ईमान सब कुछ भूल जाते हैं। तभी तो सक्सेना तथा उसका लड़का दलित वर्ग के श्रीवास्तव की सभी शर्ते मन्जूर कर लेते हैं। वे उस काम के लिए तैयार हो जाते हैं, जिसके लिए आज भी वे दलित वर्ग से घृणा करते हैं। पैसा ही उच्च वर्ग का धर्म–कर्म है। सोनकर लिखते हैं– ''लालच बिल्कुल गू की तरह होता है, जिस तरह बड़ी–बड़ी मक्खियां गू के ढेले बनाकर उनको लुढ़काते हुए एक जगह इकट्ठा करती जाती है। लालच रूपी गू के ढेले मानव के मन–मस्तिष्क

पर इकट्ठे होते जाते हैं।'' कहानीकार सोनकर ने इस कहानी के माध्यम से दहेज लोभियों को चेतित किया है कि उनका अंत बहुत ही निर्दयी एवं भयानक होता है। जैसे कि सक्सेना का हुआ, उसका लाचत ही उसका 'कफन' बना। सोनकर ने कहानी को फिर्फ कहानी न कहकर अपनी दार्शनिकता का पुट भी कहानी में मिल. ाकर ऐसे पेश किया है जैसे कोई दूध में पानी मिला देता है।

यह कहना समीचीन नहीं होगा कि सोनकर की कहानी प्रेमचन्द की कहानी से श्रेष्ठ है, लेकिन सोनकर द्व ारा नारी उत्थान के लिए उठाया गया कथानक प्रेमचन्द की कहानी से श्रेष्ठ है। जहां प्रेमचन्द ने नारी की त्रासदी को मुख्य बिन्दु न बनाकर उनकी भूख और उनकी दलित सोच को अधिक प्राथमिकता दी है, वहीं सोनकर ने दहेज–लोभियों तथा भ्रूण हत्या के खिलाफ जोर का थेपड़ा मारने की सफल कोशिश की है। लालच दोनों कहानियों में मुख्य बिन्दु है, लेकिन कारण अलग–अलग है। दोनों कहा. नियों का कथानक अलग–अलग दिशाओं में जाता हुआ 'कफन' की ओर बढ़ता है।

चेतना के स्तर पर दोनों कहानियां अपनी दस्तक देने में कामयाब रही हैं। प्रेमचन्द की कहानी में दलित चेतना है, जबकि सोनकर की कहानी में सामाजिक चेतना मौजूद है। सोनकर की कहानी नारी समस्याओं तथा मनुष्य के लालच की कहानी है। वर्तमान समय में सोनकर की कहानी अपना अधिक प्रभाव डालती है। आधुनिक समय में ऐसी परिस्थितियां अक्सर आती हैं, जिन्हें सोनकर ने प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द के समय भूख समस्या थी, ले. किन आज लालच बड़ी समस्या है।

प्रेमचन्द की कहानी कफन में पात्र अपनी भूख से जूझ रहे हैं और दायित्वहीन होकर पशु की भांति व्यवहार करते नजर आते हैं। शराब और भूख में, वे कफन तक के पैसे खा जाते हैं। कहानी में मनुष्य का इतना गिर जाना ही मनुष्य के पतन का निशान है। लेकिन सोनकर ने अप. नी कहानी में पात्रों के अत्यधिक लालच के कारण अपने ध ार्म, जाति तथा सभ्यता–संस्कृति से गिर जाना दिखाया गया है। यदि उन्होंने एक स्थान पर दायित्वहीन मनुष्य का चित्रण किया है, वहीं श्रीवास्तव और कलेक्टर जैसे लोगों का चित्रण किया है जो अपना दायित्व निभाते हुए अपने परिवार के बारे में सोचते हैं तथा इन दहेज लोभियों से नाता तोड़ देते हैं। सोनकर की कहानी में अस्मिता है, चेतना है, कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्व की समझ है। सोनकर ने बुरे पात्रों का अंत दिखाकर कहानी को एक नया मोड़ दिया है जो समाज के उत्थान के लिए सहायक है।

सोनकर द्वारा उठाई गयी समस्या समाज में व्यापक प्रभाव डाल रही है। दहेज के दानव भ्रूण हत्या के लिए काफी हद तक उत्तरदायी है। आज गरीब मां–बाप दहेज न दे पाने की असमर्थता में भ्रूण हत्या के लिए मजबूर हो जाते हैं। भ्रूण हत्या समाज के लिए एक भयानक खतरा है, जिससे समाज का पतन भी हो सकता है। अतः सोनकर द्वारा उठाया गया कथानक प्रेमचन्द की कहानी से अधिक पुख्ता है क्योंकि आधुनिक समय में दहेज प्रथा और भ्रूण हत्या समाज की मुख्य समस्याएं हैं तथा समाज के लिए एक सिरदर्द बनी हुई हैं। दहेज लोभी इस समस्या को पाल रहे हैं। वे इन समस्याओं के उद्गाता हैं, जिनका अंत होना मनुष्य के लिए शुभकारी है।

निष्कर्षतः कहा जाता है कि दोनों की कहानीकारों का अंदाज अलग–अलग है। प्रेमचन्द तो कहानी कहने में माहिर थे, उनके विषय में जितना कहा जाये कम है। लेकिन सोनकर भी कम नहीं, उन्होंने कहानी को जिस अंदाज में कहा वह किसी जादू से कम नहीं। पाठक को पकड़कर रखना तथा उसके मन में एक गहरी छाप छोड़ना ही कहानी की कला है और सोनकर इस कला को पहचानते और जानते हैं।

*****

जूता पालिस

–रूपनारायण सोनकर

सार्वजनिक स्थानों पर जैसे बस स्टैण्ड, रेलवे प्लेटफार्म, सरकारी व प्राईवेट कार्यालयो के सामने कम उम्र के लड़के व जवान जूतो में पॉलिस करते मिलते है– ''बाबू जी पालिस करवा लो जूतो में'

अपटूडेट आदमी आते हैं और अपने जूते लोहे के एक स्टैण्ड के ऊपर पैरों मे पहने हुए बारी–बारी से रख देते है। लड़का बारी–बारी से दाये बाये पैर के जूतो मे पालिस करता है। फिर बारी बारी से जूतों को एक लम्बे सफेद कपड़े से दोनो हाथो से पकड़े हुए जूतों मे बड़ी तल्लीनता से रगड़ता है। यह दृश्य देखकर सौरभी विचलित हो जाता है। जूतो मे पॉलिस करने वाले संभवतः चमार जाति के दलित भाई होते है। वह लड़का एक जेन्टलमैन से जूतो की पॉलिस करायी के 10 रूपये मांगता है।

वह आदमी पांच रूपये फेंक कर कहता है

''साले ! पांच रूपये पड़ते हैं।''

''बाबू जी गाली मत देना 10 पैसे पड़ते है।''

''साले, ठग रहा है, साले, तुम लोगो ने लूट मचा रखी है।''

लड़का बहुत ही स्वाभिमानी था, वह तुरन्त बोला–

''पालिस व ब्रश भी मंहगे हो गये है। मैंने मेहनत करके तुम्हारे जूते साफ किये है। मेरा शोषण क्यों करते हो ?'

''उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। पांच रूपये के बदले दस रूपये मांग रहा है। मेरे पांच रूपये लूट रहा है। नीच कहीं का।''

लड़का बोला–''हम लोग तुम्हारे जूतों की गन्दगी साफ करते है, हमारे द्वारा चमकायें गये जूतो की चमक से तुम्हारी जिन्दगी चमकने लगती है। नही तो सारी जिन्दगी कीचड़ साथ–साथ लिये हुए घूमोगें।''

आदमी उच्च जाति का था और गुस्सेबाज भी था, अकड़कर बोला–

''ये साला ! छोकड़ा दर्शन सिखाता है। चमार कहीं के''।

लड़का यह शब्द सुनते ही विचलित हो जाता है। लपक कर उसका हाथ पकड़ लेता है। चार–पांच पालिस करने वाले लड़के उसको घेर लेते है। लड़का गगन जिसका उस आदमी से झगड़ा हो रहा था। उस उच्च जाति के आदमी के हाथ छोडकर उसकी गर्दन पकड़ लेता है। उसको अपनी जगह बैठाकर उसके हाथ में ब्रश और पालिस पकड़ा देता है और अपने जूते निकाल कर उसके सामने रख देता है और कहता है–

''मेरे जूतो मे पालिस करों मैं तुम्हें पन्द्रह रूपये दूंगा।''

''मैं बहुत बड़ा इंजीनियर हूँ और उच्च जाति का भी। मैं यह नीच काम करा सकता हूँ। अफसोस ! यह है कि यहां पर दूसरो की गन्दगी साफ करने वालो को नीच समझा जाता है।''

इंजीनियर बोला–

''जिसका जो काम होता है वहीं अच्छे ढंग से कर सकता है।''

''जूतों में पालिस करना केवल चमारो का काम नही है, जो आदमी परेशान है। जूतो मे पालिस करके अपना गुजारा कर सकता है, संविधान मे कहीं नही लिखा है कि केवल चमार ही जूतों में पालिस करेगें।''

''तुमने पढ़ा लिखा नहीं है। तभी तो तुम लोग डाक्टर, इंजी. नियर आफिसर नही बन पाये।''

''मैं इंटर फर्स्ट क्लास हूं। ये मेरे समस्त साथी पढ़े लिखे है। तकनीकी शिक्षा बहुत मंहगी है। हमारे मां–बाप बहुत गरीब है। हम लोग जूतों मे पालिस करके पैसा इकट्ठा कर रहे हैं ताकि हम लो बी–टेक में दाखिला ले सके।''

''मैं आपके जूतों में पालिस नही कर सकता''

''क्यों नही कर सकते ? आपके जूतों में मैंने पालिस किया है। मेरे जूतों में तुम्हें पालिस करना पड़ेगा।''

''यह सरासर ज्यादती है।''

''यह ज्यादती नही है। इंसाफ है। अगर यह ज्यादती है तो समाज बहुत दिनों से हम पर ज्यादती करता आ रहा है। आप लोग इस ज्यादती को चुपचाप देखते रहे''

''मुझे क्षमा कर दो''

''इंसान हम भी हैं। यदि हम इतने दिनों से आपके समाज के लोगो के जूतो में पालिस करते आ रहे है। क्या आप एक भी दलित आदमी के जूतों की पालिस नहीं कर सकते है। आप भी इंसान हैं और मैं भी।''

''ऐसा मत कराईये''

''आप जिस काम को करने में इतनी ग्लानि महसूस करते है तो आप ऐसा काम दूसरों से क्यों कराते है ?''

अभयंकर एक नौजवान कम्प्यूटर इंजीनियर होने के कारण जोश मे था और इस अप्रत्याशित घटना को तकनीकी दृष्टि से हल करने हेतु अपने तीन सहयोगी इंजीनियरों को घटना स्थल पर बुला लिया। अब टक्कर बराबर की हो गयी थी। एक तरफ सदियों का अत्याचार, शोषण जो कमजोर वर्गो पर ढाया जा रहा था। स्वाभिमान एक भंयकर ज्वालामु खी बनकर फटने वाला था। एक तरफ इंसान की गौरव, गरिमा, अस्मिता और स्वाभिमान को कुचला गया था। दूसरी तरफ ये अत्यचारी उस शोषण को समाज मे बरकरार रखना चाहते थे। पढ़े–लिखे होकर के भी झूठी शान शौकत की र क्षा के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। समाज मे बदलाव नही चाहते थे। अपनी गलती स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे। उनमें ऊंची जाति और उच्च पद का नशा सवार था।

अभंयकर अपने तीन दोस्तों को देखकर उसमे पुनः सामंती गरूर नदी के पानी मे मगरमच्छ की तरह तैरने लगा। कुछ समय पहले सहमा अभयंकर अब अपने दोस्तों के सामने उन बूट पालिस करने वाले लड़को को निगल जाना चाहता था लेकिन वे लड़के बहुत बड़े अजगर के समान थे जो बडे बडे मगरमच्छो को जिंदा निगल जाते हैं।

इंजीनियर अभयंकर ने कहा–'' साले, चमारों मुझसे अपने जूतो मे पालिस कराना चाहते थे। तुममें इतनी हिम्मत कहां से आ गयी ?''

''डा0 अम्बेडकर की शिक्षाओं से, तुमने मेहनत–मजदूरी करने वाले लोगों की हिम्मत देखी नही है ?''

''अब दिखाओ ताकत''

अभयंकर के तीनो साथी गुस्से मे आ गये। गगन की मजबूत जकड़ से अभयंकर को छुडाने लगे। गगन के तीनों साथियों ने अभयंकर के तीनों साथियों की कमर पकड़ कर अपनी–अपनी ओर खींचने लगे।

सड़क के किनारे यह एक छोटा युद्ध चल रहा था। एक तरफ युद्ध करने वाले समाज की परंमरावादी, जातिवादी व सड़ी गली प्रथाओ को कायम रखने के लिए जान देना चाहते थे। दूसरी तरफ समाज परिवर्तन करने वाली बयार बहाने के लिए शहीद होना चाहते थे। सड़क पर धीरे–धीरे मजमा लगने लगा। सड़क पर बहुत बड़ा जाम लग गया। एक जज महोदय पुलिस फोर्स के साथ घटना स्थल के पासं वहां आ गये। दोनो पक्षो की सारी बातें सुनी। पुलिस ने दोनो गुटो को अलग किया। जज साहब ने गगन के पक्ष में मौखिक फैसला सुना दिया। दिन भर कचहरी मे वकीलों के मध्य जज साहब के द्वारा दिये गये मौखिक फैसले पर बहस चलती रही।

अन्त में इंजीनियर को गगन के जूतों की पालिस करनी पड़ी। गगन ने कहा–''यही सही इंसाफ है।''

इंजीनियर पन्द्रह रूपये लेकर सड़क पर अपने साथियों के साथ तेजी से जा रहा था। उसको समाज में घट रही ऐसी शर्मनाक घटनाओ का जिसेका वह स्वयं एक भाग था पता चल गया था। दबंग समाज, निर्बलों, बेसहारा और असहाय लागों पर जुल्म ढा राह था। गगन ने इंजीनियर से अपने जूतों में पालिस इसलिए करायी थी कि वह ऊँच नीच की भावना को त्याग दे। कोई काम छोटा बड़ा नही होता है। हम ही उसको छोटा बड़ा बनाते है।

प्रसिद्ध समाज सेवी सौरभ, गगन के पास चौराहे पर आ गया था। वह भी उन्हीं के पास रहता था। घटना सुनकर कहा–''समाज परिवर्तन तुम्हारे जैसे नवयुवको के द्वारा ही होगा इस समाज की सड़ी गली सोच को बदलना होगा।''

*****

SALVATION PLAY

CM OF THE VILLAGE

ROOP NARAYAN SONKAR
MOB-8279789405
Email id-sonkar.roopnarayan@gmail.com

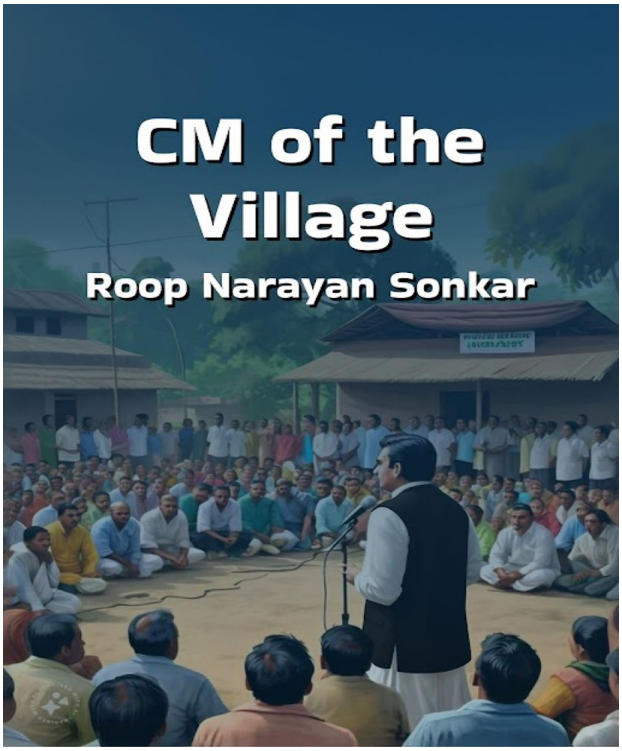

CHARACTERS

Miya Sabbir

Sukhlal Kewat

Sumit Kewat

Gagan

Santosh Devi Kumhar

Shispal Yadav

Sallan Rajgir

Shyamanand Raturi

Dhananjay Bahuguna

And

Others

SCENE-1

(The elections of local bodies, Jila Panchayat, Block Panchayat and Village Panchayats to be held. All the candidates who are contesting the elections are revealing their plans and schemes before the voters)

A Voice- While writing with a pen its ink runs out. In the same way man's life comes to end while walking. The pen can be refilled with ink. If the pace of man's life falls then it can not be made to move forward. His noble deeds keep him immortal. These works are like ink which do not end even inside the body.

Santosh Devi Kumhar- The way we dig the soil from the ground. Then we have to make small balls of that clay then carved utensils are made from the wheel. In the same way I'll make this village lovely and beautiful. Elect me as Village Head.

Shishpal Yadav- (Candidate for Block Panchayat Member)

I'll give the milk of my buffaloes and cows to my voters at half price for five years. Elect me for member of Block Panchayat.

Sallan Rajgir-(A candidate for the member of the Village Panchayat)

I will take half wages for building of your houses. Please elect me as village Panchayat Member.

Shyamanand Ratudi -(A candidate for Village Head. He was convassing in the street of Village and touching the feet of upper caste people.)

This time elect me as Village Head of your Village. I'll dedicate the rest of my life for the progress of the village

A Brahmin -My son, we will caste our votes only for a sensible man like you. Please don't worry. You are the most worthy candidate to maintain the pride of Brahmins.

Shyamanand Ratudi -Thank you Sir.

A Young Man -(To Ratudi) You should touch the feet of elderly Dalits in their locality and ask them for

casting of the votes in your favour.

Shyamanand Ratudi - By touching the feet of Dalits, my honour, respect and prestige will diminish. The Dalits will cast their votes for me after our one call.

Dhanjay Bahuguna-(He was asking for votes by touching the feet of elderly Dalits)- Devideen uncle, my prestige is in your hands. I need blessings from all of you. Make me victorious with huge margin of votes and make me the Village Head of this village.

Devideen -What will you do for Dalits after becoming the Village Head?

Dhannjay Bahuguna -I'll remove inequality, distortion and poverty of Dalits. I promise.

Devideen - I am overjoyed . I give my order to all Dalits who are present here to lift Bahuguna on their shoulders.

All Dalits (Raising their voice)- The next Village Head will be Dhananjay Bahuguna.

Dhananjay Bahuguna - Jindabad.

Dhananjay Bahuguna - Jindabad.

A Voice- The roar of self respect of dalits was heard in the entire village. The rivers of alcohol flow into the houses of Dalits and poor people during elections. In which they definitely take a dip in this river. But educated Dalits and Backward people refuse to take a dip in this river. Such drowning drowns their future, free will and legal rules. The democratic system of the government itself begins to sink. It is the people like this who save the country from sinking.

The desire for a chair is like a snakepearl for this they take out poisonous snakes from the hole. They don't even care about getting bitten by a serpent.

Miyan Sabbir-(To Muslims)., I am contesting the election of Sonpur District Panchayat Member. My ancestors had accepted Islam religion at time of Mughal Empire to get a big position of the government.

A Voice- There was riots once between Hindus and Muslims. Miyan Sabbir had spewed venom against Hindus. He had an important role in the killing of innocent Hindus.

Miyan Shabbir-Hindus have to be taught a lesson. The Muslims who were killed by the Hindus. We have to take a revenge selectively from them. Religion will be protected only when we are in power everywhere.

I am confident that you people make me victorious to protect our community.

An elderly Kalamuddin - After getting power everyone forgets religious people like us. As soon as they come to power the welfore works done for the poor are forgotten.

Miyan Sabbir -I swear on the Quran, I won't do that. I have killed alot of Hindus during the riots. I have proved my loyalty towards our society.

Bakhtawar (Young Muslim Leader)- It is a great pleasure . A dreaded leader like you is leading to all of us. We will make you victorious.

Miyan Shabbir- If a riot occurs while I am the Chairman of the Municipality. Then I'll show a lesson to the Hindus. I would create a huge uproar. All Hindus will be forced to run away from this city. Then I'll allot all the shops and plots in the municipality to the Muslim brothers. By luring the poor Dalits with lakh of rupees. I'll allot unused municipal plots to some Dalits. They'll accept our religion. In this way our population will get increased. Our strength would be double during riots.

Kalimuddin- Well done my son, this is what we expect from you.

Miyan Shabbir- (He says himself before mirror)- When I go to Hindus localities , I'll change my tone and language.(He says to Hindus) The crime that my ancestors had committed by accepting Islam religion. May I repent of that. I have quietly quitted Islam religion . But I can't announce it during election. Because of that I'll not get the votes of Muslims.

A Voice- Religion was a joke in front of Miyan Shabbir. Selfishness was overpowering religion. He was using this political tactic successfully. Religion was such a boat for him with the help of it he wanted to sail the ocean of election like a skilled sailor.

Miyan Sabbir-I'll apply political vendetta to capture the power.

SCENE -2

(The people of the both communities of Hindu and Muslim were throwing bombs at each other. They were killing each other with knives, tridents and swords. The houses and shops were burning all around. The staunch Hindus were holding tridents in their hands and wearing saffron clothes around their heads. They're running and chasing the men, women and children of Muslim community. They wanted to kill all of them.)

Sukhlal Kewat (Comes in front of rioters)- Hey! stop, the protector of religion. What harm have these innocent people done to you ?

A Staunch Hindu Rioter- Listen, these Muslims bas-

tards! are raping Hindu women. They are burning our houses and killing our innocent Hindus. When those people do not have any mercy on us. Why should we show sympathy for them?

Sukhlal Kewat- One doesn't take revenge on devils by becoming devil.

One Rioters- In today's era the revenge is taken from devils by becoming fierce devil.

Sukhlal Kewat-(Called out his son, Sumit Kewat)- Protect Muslim women, men and children.

Sumit Kewat- Yes, father.

(He warned them)- If you people raise your hands against them then my sword will be raised against all of you. (All Muslim Men, Women and Children got shelter on the roof of the house of Sukhlal Kewat).

Sumit Kewat-- (To one Hindu Rioters) Don't try to climb up into the roof. I'll cut down you with my sword.

Sukhlal Kewat- (To all rioters)- It is better for all of you to run away from here. Otherwise I'll throw boiling water on all of you.Yes,I am throwing go away.

(Hindu rioters started running away from there.Two rioters were hidden under the ladder of the house. When Sumit Kewat was coming down from the roof. One hidden rioter attacked to him with trident. He died.)

SCENE -3

A VOICE- The people can immediately identify the cow that can give birth to a child. The cow that doesn't give birth to a child that cow pretends to have a baby. That cow wants surpass the cow that is capable to give birth a child.

In the forest a lion kills and eats all the animals. But the lion can't kill and eat the porcupine. It's sharp thorns prick to the mouth of lion. The lion bleeds. The people who serve the society deligently are just like porcupine. His noble deeds become the thorns of porcupine for his opponents.

Miyan Shabbir was like a wounded lion. He didn't want to lose the election under any circumstances. During election he seemed to be savior of both communities.

Miyan Shabbir (Threatening Sukhlal Kewat)-Don't face me.I am a very dangerous man.

Sukhlal Kewat- I am contesting the election under the democratic system. You can not put pressure on me and ask me to withdraw from the election.

Miyan Shabbir -Take care of your children.

Sukhlal Kewat – One of my son has been martyred for Hindu - Muslim unity. I'm ready to martyr my second son to protect democracy

Miyan Shabbir - Then , I'll kill you.

Sukhlal Kewat -Yes, I am ready to sacrifice my life for the sake of this country.

A Voice- Miyan Shabbir was a very rich . He had property worth many crores. When a true man does not bow down to force. Then he is made to bow down on the strengths of money and woman.

Miyan Shabbir (Said to Sukhlal Kewat)- You can take as much money as you want. I'll present most beautiful girls at your service. But don't contest election against me. If you withdraw your name from the election then I easily win the election.

Sukhlal Kewat -You will become Chairman on the strength of money, arrogance and hooliganism. After getting power you will oppress the people. The government money would be embezzled dishonestly. The roads will be built in such a way that it will break after six months. The government money that will come for devlopment. You will divide that money among themselve. That's why you want to become District Panchayat Chairman. The government wants the development of the district. But you will adapt the path of its destruction.

Miyan Shabbir- What will you do by becoming honest?

Sukhlal Kewat- I'll honestly complete the development plans set by the government. I'll invest all the money in the welfare of the poor people. I'll make this District an ideal District of the country.

Miyan Shabbir -- But the people like us will not give you much time.

Sukhlal Kewat -- But whatever time I get, I'll show the picture of development in that. The floor will stand on whatever stone I lay for.

Miyan Shabbir -- I don't want to kill you during elections. The election will get stopped. I may not be able to become District Panchayat Chairman. I'll deal with you after the elections.

Sukhlal Kewat -- I'll wait for yoy.

SCENE -4

A chair is exactly like a honeycomb. Just as many innocent bees have to be killed to get honey. Similarly to get the chair one has to kill many innocent people in politics

Miyan Shabbir (To his supporters)- I engage myself in doing good works during the election. I try to make my image like a social reformer. I quit hooliganism from today.

A Voice- Like a chameleon who changes its color. Similarly Miyan Shabbir was changing his colors. Just like fishes are deceived under water by putting flesh on the hook. The fishes get trapped in iron hooks to eat the meat. Similarly he starts getting involved in the sufferings of Hindus.

Miyan Shabbir, (To his another supporter)- I am looking for an opportunity to join the sorrows of Hindus.

Third Supporter- Look brother ! four men are shouldering a dead man.

Miyan Shabbir- (After watching dead body)- This is a very good opportunity to win the hearts of Hindus.

(He joins the funeral party. He says a man who was shouldering dead body.

Miyan Shabbir - Please, give me a chance for shouldering this dead body.

A man-- Yes, yes, you are going to do a good job.

Miyan Shabbir -- Hey! it would be good for me.

A Voice --In Muslim Society the shouldering keeps changing after sometime while carrying the dead body. The crematorium was six kilometres away from there. After shouldering one kilometer distance he thought that some other man would definitely provide his shoulders in his place.

Miyan Shabbir (He was mumbling)-I got badly trapped here for votes. What does a man not have to do to win the election?

(After walking three kilometres he started pretending to stumble)

A Man (who was shouldering)- Son! don't stumble, be careful. You are a very strong. Let's take a look.The three men shouldering with you are old people. But they are not faltering. What has happened to you?

A Voice--He was feeling like this as if he had lifted a mountain without thinking. He has put his hands in the snake's hole. He has tried to stop a running train. When an aeroplane hits a bird in the sky then the aeroplane crashes. Miyan Shabbir had collided with dead body. He had collapsed. His hypocrisy had come to light.

Miyan Shabbir-- If you guys ask, I can arrange a Vehicle

Second Elderly Man- No, son. Why do you need a car. More than an half way we have covered. Son you have done a noble work.

A Voice-- He was behaving like this that he would leave dead body behind. But his desire to get the District Panchayat Chairman's chair was stopping him from doing so.

SCENE -5

A Voice- He covered a distance of six kilometres way with puzzlements. It is a very difficult to describe it. Just as a very difficult to measure the sky. He reached crematorium and placed the dead body on the ground. He was feeling like this if he had returned after passing a life imprisonment in jail. His face was filled with dust. The glow was missing from his face. He looked like this, as thermometer is seen without mercury.

When a elderly man came to Miyan Shabbir, then he was stunned to see him. Dead Shishpal 's son Bhimpal was assassinated by Miyan Shabbir in the Hindu - Muslim riots a year back. Shishpal is at crematorium in his sorrow. Dalit Gagan's entire family and future was over. Other was thinking of making his bright future. Looks like today's political future thrives on bloodshed. The political bets are played on dead bodies only. The big posts are created only over dead bodies. The people who are truthful and dedicated to the society destroy such bloodthirsty people

A Youth (To Miyan Shabbir)- Due to you we are here.You have come here therefore we can't say anything against you.

A Voice -Standing there, Miyan Sabbdir was remembering his all crimes which he inflicted to innocent people. All people gathered there were stunned to see him. Miyan Shabbir was too surprised. No one was talking to anyone. The dead body placed on the ground was looking at everyone and said -"This man has brought me here by giving his shoulder. He has sacrificed so much unknowingly or selfishly.All of you should forgive him."

Miyan Shabbir -- I am a big culprit of you all. I have killed innocent people . Once Hindus have to come

burial site and Muslims have to come graveyard. Then his vision about the World becomes absolutely clear. He repents of all his bad actions and though. He doesn't want to come here with a bundles of sins. At that time he looks at the World like a philosopher.

Dalit Gagan-- Don't think about old things. This crematorium opens our eyes. It tells the secret of our life. The man who comes here with these qualities, sleeps happily.

Miyan Shabbir -Selfishness and dirty politics had made me completely blind. The people of both communities are brothers. I have committed a big crime by killing my brothers. I deserve to be punished.

A Voice-When a strong earthquake has occurred then skyscrapers fall to earth. Similarly the storm of knowledge enters to a human being. His all evil thoughts get destroyed. The funeral pyre was burning rapidly. The sky was losing its brightness. The flames of fire were touching sky heights. Now remorse and guilt were burning in it.

(Miyan Shabbir suddenly jumped into the funeral pyre.)

One man- I have to bring him out of funeral pyre.

Second Man-I am with you. We will both bring him out of the funeral pyre.

(His last breaths were taking place.They carried him on their shoulders and started carrying him to the hospital. But he died on the way. There was a graveyard at some distance and he was taken there.)

A Voice- There were very dark clouds in the sky. Electricity used to roar loudly and tear the sky. Then it rained heavily. The entire cemetery was full of water. It looked like a deep pond. They left him inside the cemetery and went away. The dead body was floating on the water. Vultures were hovering in the sky. The dogs have pounced on the dead body. The wild pigs had attacked to dogs. The wild pigs started scratching and eating the soil.

That time Chief Minister Of Dehli Smt. Sheila Dixit awarded Dr. Ambedkar National Literary Award to Author Roop Narayan

Sonkar.Legendary author and critic Professor Namvar Singh released Roop Narayan Sonkar's SAMAJDROHI (Collection of plays). The famous writers like Sri Rajendra Yadav, Vishavnath Tirupathi, Mohandas Nemisray, Dr.Ajay Navaria were present in this grand function.

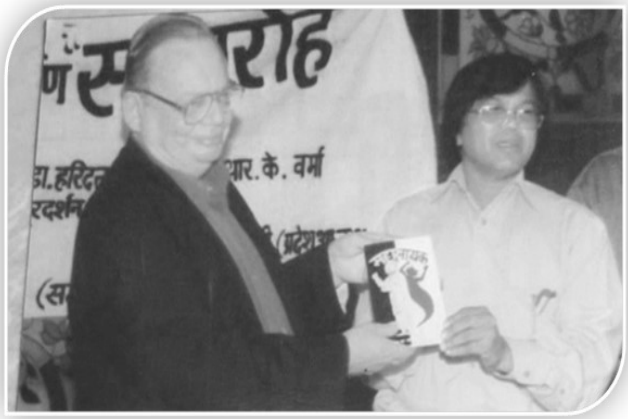

The World Known English Writer Sri Ruskin Bond released Roop Narayan Sonkar's play MAHANAYAK and he commented

" Being a Civil Servant Mr. Sonkar is writing superb continuously."

Hon'ble Sri V P. Singh, Ex- Prime Minister Of India released Rahasy

(collection of plays)

written by Roop Narayan Sonkar.

Roop Narayan Sonkar a veteran Dalit Author is reciting a poem which is full of patriotism with Ex-Prime Minister Of India Sri V. P. Singh. He praised Mr Sonkar and said-

" Mr. Sonkar is a young veteran literary figure who writes for downtrodden people. His literature talked about socialism. He believes in love and universal brotherhood. "

Gift of a pig is a novel of science fiction. It eradicates blind faith and hypocrisy from the society.

-Dr. Shelly Sonkar
M. A. English, B.Ed.
Jagnandini Palace, Danda lakhaund Sahstra dhara Road Dehradun U.K.

Roop Narayan Sonkar is a veteran Dalit author. He writes in hindi and English both. His books are being taught in various universities of India and abroad. His book 'Poisonous Roots' is a collection of English stories which is based on the atrocities inflicted over Dalits by some upper cates people in rural India.This book is being taught in Indira Gandhi National Tribal University Amarkanta M. P., Bombay University Mumbai, Dr. Homi Bhabha Stste University Mumbai, Maharashtra and Torino University Torino Itlay (one story Of jahrili jaden titiled katic kaa ghar)

World known English writer Ruskin Bond has praised writer Roop Narayan Sonkar. " Being a civil servant Sonkar is writing superb continously. " Professor Namvar Singh had said-" Sonkar is a topmost Dalit writer. " Ex-Prime Minister of India Sri V. P. Singh had remarked -" Sonkar is a young Dalit writer he writes for establishing communal harmony, love and brotherhood in the society."

Honourable Governors and Chief Ministers of the states have honoured him.

Gift Of A Pig (Suardaan) is a very famous novel. A famous film producer of Bollywood Rakesh Roshan produced a superhit film Krrish3. Author of this novel had claimed that the story of this novel stollen by him. Legal litigation was started between writer and film producer. At last author got success in High Cort and Supreme Court of India. Settlement was done between the parties before Supreme Court if India.

The begining of the novel reveals the future of the novel. This is a very interesting -"From time to time, the war between religion and action goes on. The religion always overshadows the action. Now the action is overshadowing the religion. The religion is a fanciful thing whearas the action is real. Often there is genocide due to fundamental approach to religion. There is no problem till the universe comes to end. The true action makes and saves the universe. "

Really novelist believes in action. Action can build the society, Nation and World. The action is that chant which can reform the society. It can remove the hunger and illiteracy from the World. According author the blind faith can destroy the society. This is an era of science and technology. Science and technology is that weapon which can destroy all the burning problems.

The novelist has described the attitude of some upper caste people of India towards professon. Some professon have been considered very mean by them. In foreign countries such thinking does not exist. They honour every professon.

" The natives of America, England, Russia and other western countries sweep the streets with brooms bearing suit with tie. But there is no looking down to their social reputation. In India, if an individual of general caste does any frivolous work, his social prestige goes down drastically. It seems that he has put the the Ganges in revese direction.Ramchandra Trivedy has revelled against all the Brahmins of the village. None of Brahmins of the village touch him. They have stopped eating food with him or his family members. Whenever he walked through the streets, the Brahmins used to see him with disdain. "(Page 4,Gift of a pig)

The Brahmins of the Village were behaving badly because RamchandraTrivedy was doing the business of Pigeryfarm with the Dalits and backward people. Ranchabdra Trivedy explained his views after esting the pork -"The cooked meat of that small pig was tastier than all the dishes of the

World.... The Brahmins have kept us away from such delicious food for thousands of years by bringing the orthodox religion in the social milieu. The same way the Hindus are kept away from eating beef and Muslims consider eating pork against their religion."

Ramchandra Trivedy, Sajjan Khatik, Ghasitey Chamar and Salwant Yadav were highly qualified from the university of London. They were getting good jobs there. They all denied it. They returned from London to their village Singhasankheda and started the business of Piggeryfarm after getting the loan from the bank. They wanted to remove the poverty from rural India. They were interested to give the job to the unemployed youths of the villages. They tried to remove casteism and inequality from the society. They believed in the progress of rural india.

Munshi Premchand was a great novelist and a storey writer. He had been titled as 'Katha Samraat'. His novel Godaan (Gift of a cow) was very famous that time. The author raised the problems of farmers. He was much worried about their pitable condition. The casteism and untouchability was prevailing in the society much in that era. He tried to remove the social evils. The credit goes to Premchand for establishing the concept of living in relationship. A upper caste character of the novel was living in relstionship with a Dalit girl. He was dening to get mary with that Dalit girl. The people of Chamar cate objected it and made pressure on him to get marry with that girl. After his denial they held him and put an animal bone into his mouth forcibly.

In novel of Gift Of A Pig Miss Hary Silva had been living in relationship with four partners of the Pigeryfarm in London during their studies. She was English and came to India to live with them. She wanted to become the wife of four parteners jointly as Paanchali became the wife of five Pandav brothers. Hary Silva took keen interest for the women education of the village. She had a laptop with him and gave education to women through it. She also taught the lesson of cleanliness of their houses. She used to make bath the poor children of the village. She had soap tablets with him. She became much familiar in the village.

Piggeryfarm describes the functioning of Panchayat Raj system in rural India. Author has created a new word titled 'Pradhan Pati', this word was created by author in his collection of plays titled 'Samajdrohi' and his novel 'Dank' in 2003.Pradhan Pati became too famous throughout India. Pradhan Pati means the husband of an elected lady as Gram Pradhan. The elected lady as Village Head is not allowed to function but on behalf of her , her husband functions all the activities of Panchayat.The author has drawn the attention of the government towards these malpractices.

The author has also described the reality of the functioning of the Panchayat Raj system .If any village is reserved for the people of scheduled caste. Then the upper caste people opposed it. Satynarayan Tripathi Village Head opposed it. How the scheduled caste man can rule over us. Satynarayan Tripathi put Bhagtu pasi as his dumy candidate against Sanktaprasad Khatik to cotest the election for Village Headship. (Page 36,37 Gift of a Pig,,)

In this novel intercaste and international marriages have been promoted. Three girls of Pujari Dayashankar got married with Sajjan Khatik, Ghasitey Chamar and Salwant Yadav. These three youths belong to Dalit and backward classes.Ramchandra Trivedy became the life partner of Miss Harry Silwa. Brahmins of the village opposed the marriage of Brahmins girls with lower caste people. The administration helped and put the Brahmins into jails who were protesting.

(Page 86 Gift Of A Pig)

This novel is a science fiction. The imagination of author is praisworthy. The author thinks scientifically -"If the offsprings are produced from the female animal and human semen and offsprings born should be named Maanwar then the Maanwar will be able to speak like a man. The only scientists can tell about

it.When a clone of a man can be made to look like his. Then the scientists will be able to make an animal to speak like a man. Then the dogs will show their faithfulness in a man' voice to their masters."

(Page 141 The Gift of A pig

Another a new creation can be watched in this novel -

"With the help of Indian, British and American scientists they built up labotaries and started new inventions on cows and pigs. The partners of Pigeryfarm started cross breed 'Sugaay' from the cross fertilization of cows with pigs. Sugaay was amazing for the people.

(Page 135 The Gift Of A pig)

The author has suggested to the government to solve the problems of desperate people. The condition of these people are very worst. They are suffering of hunger. There are no schools for their children. There are no medical facilities for them. The partners of piggryfarm suggested the government to remove these problems of these desperate people. They will not indulge themselves in committing violence. They will come in the main stream of the Nation. They will certainly surrender before the partners of piggryfarm. The government should recruit these people in army and police force. They can face the enemies with valour.

This novel attracts the intellectuals because they have read Godaan (The Gift Of A Cow). Suardaan (The Gift Of A Pig) is a new myth. In the Gift of a cow a man donates a cow at the end of his life. Munshi premchand did not break this blind faith. He rooted it firmly in his novel. But Sonkar rooted out this blind faith in his novel. He had broken this ill concept that a man should donate a cow at the last breath of his life.After doing so he can cross the river of troubles. He may approach to heaven.

The Gift of a pig talks about this misconception which is prevailing in the society. When a Brahmin Pujari Dayashankar was dying. Then some Brahmins brought a cow near his bed and said-

"Pujari Dayashankar this cow will take you to the heaven. It is heard that there is fierce sea, you will hold the tail of it and cross the ocean of worldly existence. You donate the cow now."

"I will not donate the cow. The heaven and hell are things of imagination. After dying a man gets dissolved in soil. After stopping the breath of a man, he does not have any knowledge. All his activities get stopped. He becomes absolutely soil. The soil can never hold a cow's tail."

"Then how will you cross such a sea of troubles."

" For him after the death of a person talking to imaginary whirlpool is deceit. If I had to donate, I would donate love, brotherhood, communal harmony and attachment to humans and animals. I 'll donate the teachings of non-violence so that the peace would prevail in the whole World. I would like to donate this message that the whole World be free from pollution. I'll donate this resolution that every citizen of India be ready to sacrifice his life for the defence of our pious Nation. "

He always loved the pigs when he was serving pigs. A pig came near Pujari Dayashankar. After putting his hand on the pig he said-

"I love it too much..."

The Brahmis were surprised to see the Priest Dayashankar 's hand placed on the pig and took the last breath of his life. Markandey Agnihotri cried-

"The disaster has happened. The priest Dayashankar has donated a pig in the place of a cow."

George Orwell's Animal Farm, the pigs talk. The same way in another creation of Roop Narayan Sonkar "Yadi Geedad Neeta Hota, (Satire) pigs also talk. For example all the animals are doing meeting to elect a leader in the forest. Lions, donkeys, horses, bears and pigs are participating in this meeting. They are telling their own characteristics to become a leader. The pig is attracting everyone by showing its qualities " The pig spoke baring his teeth His growl adds to the atmosphere Listen to me carefully Today's politics is run like pig-like politics Otherwise the politician's fortune sinks Today's politics needs people like pigs to move forward Who can spread mud all around Can clear the mud when opportunity arises I have one hundred percent qualities of politicians

Like politicians, I am covered in fat Like black money of politicians My black hair is in demand abroad. The people have made classification amongst human beings such as upper caste, backward caste and lower caste. The lower caste people are treated very inferior than other caste people. Mehtar caste has been considered a very low caste. Similarly the pigs are treated very low among all animals. "As the dog indulges with the owner, the same way the pigs used to cling to him. They used to make sound. They roamed like dogs and danced. The love is such a thing that pulls the man and beast towards one another. The animals do not know that they are lowest of the low. The Brahmins believe that the pig is the most inferior animal in the world. But they don't know that this animal has an important role played in improving the economy of the so many countries of the world. It has eliminated the hunger of the people of the world. The heart, kidney and pancreas of pigs are being implanted in man' body." (suardaan page 81 English Verson)

George Orwell's Animal Farm talks about the people who are passing very miserable life. They have no grains to eat, no shelter to live. George Orwell had called them as Comrades. Comrades believe in communism. They want equality and proper distribution of wealth among all.

,, No animal in England is free. The life of an animal is misery and slavery:That is plain truth.... "(1 Animal Farm,)

The same ideas have been described in Roop Narayan Sonkar's Suarthaan.

"The desperate people includes labourers and poor people....." We have captured your six trucks full of pigs that you were sending abroad. "

"Why are you doing so?"

"Our children are starving."

" If your children are starving you can use our pigs to stop the appetite of your children"

The poverty is the main theme of Animal farm and Suardaan.

" Man is the only real enemy. We have to remove man from the scene, and the root cause of hunger and overwork is abolished for ever. "(1 Animal Farm)

" We have captured the real estates, industries, trade and business. We have also captured the every fields like education, administration, police force etc. The powerful people are seen in Government and private jobs etc. The desperate people have no right on it. Their children are very hungry. Their girls and women do not have clothes to cover their bodies. They don't even have a hut to live in. "

****